পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতন

ৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতনপৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতন পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতন

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ



গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

ৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতন পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতন পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতন

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) पेटारसँ

ISSN 2229-547X VIDEHA ***सम्पादक:*** गजेन्द्र ठाकुर।



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



कवर डिजाइन (फ्रण्ट आ बैक): ओम गजेन्द्र ठाकुर

अनुक्रम

(लघु, दीर्घ आ बीहनि कथा)

पाठकक लेल किछु निर्देश बा सुझाव (पृ. ५-९)

लघु कथा खण्ड

सिद्ध महावीर (पृ. ११-२०)

नवी मुम्बै (पृ. २१-२८)

नई दिल्ली (पृ. २९-३५)

तस्कर (पृ. ३६-४१)

संघर्ष (पृ. ४२-४८)

लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी (पृ. ४९-६३)

डोमा, बुधन आ... (पृ. ६४-७२)

आत्महत्या (पृ. ७३-७८)

गंधर्व लेटरबम (पृ. ७९-९२)

दीर्घ कथा खण्ड

मधुबनी मोड्यूल (पृ. ९४-११५)

शब्दशास्त्रम् (पृ. ११६-१३६)

महिसबार ब्राह्मणक गाम (पृ. १३७-१६३)

बीहनि कथा खण्ड

३९ टा बीहनि कथा (पृ. १६५-२१८)

Annexure

(Maithili Short-Stories by Gajendra Thakur translated into English by the author himself)

Annexure One: The Proven Mahavir (Siddha Mahavir) (Page 220-234)

Annexure Two: The Robber (Tashkar) (Page 235-243)

Annexure Three: The Science of Words (ShabdaShastram) (Page 244-272)

Annexure Four: The Cattle Grazer Brahmin Village (Mahisbar Brahmanak Gaam) (Page 273-291)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



गजेन्द्र ठाकुर

𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

गजेन्द्र ठाकुर विदेह, मैथिली ई-पत्रिका *http://videha.co.in/* *ISSN 2229-547X* VIDEHA (since 2004) केर सम्पादक छथि आ आइ-काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant- Robert Louis Stevenson

………………………………………………………………………………

Videha: Maithili Literature Movement

पाठकक लेल किछु निर्देश बा सुझाव

ऐ पोथीकेँ पढ़बा लेल किछु निर्देश बा सुझाव देल जा रहल अछि जइसँ अहाँकेँ एकरा पढ़ैमे आ एकर कथा सभक विवेचनामे सुविधा हएत, आ अहाँ ऐ संग्रहकेँ पूर्ण रूपेँ बूझि पाएब आ आनन्द लऽ सकब।

ऐ पोथीक चारिटा कथाक अंग्रेजी अनुवाद हम स्वयं केने छी जे अन्तर्राष्ट्रिय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित हेबाक संग विभिन्न पत्रिकामे सेहो प्रकाशित/ ई-प्रकाशित भेल अछि।

हमर किछु रचना नेपालक गोरखापत्र, आंगन, धुआ धजा, मिथिला डट कम आ आन मैथिली पत्र-पत्रिका/ स्तम्भमे सेहो प्रकाशित अछि। विदेह, मैथिली ई-पत्रिका http://videha.co.in/ ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) मे मोटामोटी हमर सभटा मूल आ अंग्रेजी अनूदित रचना ई-प्रकाशित अछि।

ऐ पोथीक किछु कथा हमर सन् २०२३ सँ पूर्वमे प्रकाशित/ ई-प्रकाशित कथाक परिवर्धित रूप अछि, ऐ पोथीक कथा सभकेँ ओइ कथा सभक प्रामाणिक संस्करण घोषित कएल जा रहल अछि (जँ कियो ऐ कथा सभक कोनो संग्रहमे संकलन बा उल्लेख बा अनुवाद करऽ चाहि रहल होथि, तिनको लेल ई लागू अछि) । किछु पूर्व प्रकाशित/ ई-प्रकाशित कथामे परिवर्द्धनक संग नाममे सेहो परिवर्तन कएल गेल अछि।

लघु कथा खण्ड

सिद्ध महावीर- ई कथा कबिलपुरमे योगानन्द झा केर संयोजकत्वमे भेल 'सगर राति दीप जरय' मे पढ़ल गेल आ अंतिकामे सेहो छपल। एकर अंग्रेजी अनुवाद www.museindia.com (Issue 63 September-October 2015 under Highlight- Indian Short Stories in Translation) पर ई-प्रकाशित भेल (Annexure 1) आ से अन्तर्राष्ट्रिय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित भेल। ई एकटा विधवा दीदी अनमनाक कथा अछि, आ भक्ति आ वैज्ञानिक दुनू दृष्टिकोणसँ दू पक्षक लोक एकटा घटनाक वर्णन करैत छथि। कथामे परिवर्द्धनक संगे नाममे सेहो परिवर्तन अछि।

नवी मुम्बै- एतऽ सामाजिक व्यवस्था संग कोरोना सेहो मिज्झर भऽ गेल छै।

नई दिल्ली- नई दिल्लीमे पलायन आ अर्थनीति छै आ छै एकटा मृत्यु। आ आगाँ प्रतीक्षा...

तस्कर- पूर्वोत्तर मैथिलक प्रेमकथा विशेषांकमे ई छपल छल, तकरे ई परिवर्द्धित रूप अछि। ई पञ्जी-प्रबन्धमे वर्णित सत्य घटनाक आधारपर रचित कथा अछि। राजा लेल निहुछल कान्याँक ई अपहरण छल बा कोनो प्रेम प्रसंग... के अछि तस्कर? एकर अंग्रेजी अनुवाद (Annexure 2) अन्तर्राष्ट्रिय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित भेल । कथामे लेखकीय स्वतंत्रता लेल गेल अछि।

संघर्ष- ईहो विधवाक कथा अछि, जकरा अपन बेटाक हत्या बा आत्महत्याक बाद अनुकम्पाक नोकरी भेटै छै। न्याय-व्यवस्थाक चक्रचालि सेहो ऐ मे आयल अछि।

लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी - ड्रग, आतंकवाद आ प्रोटैगोनिस्टक हारि बा जीत बा किछु नै...

डोमा, बुधन आ...- एकर आरम्भिक रूप कएक बेर परिवर्तित भेल, आब ई बीहनिसँ लघुकथा बनि गेल अछि। जातिपर सरकारी नीतिक सार्थक हस्तक्षेप। दलित विमर्शक राजनीतिक पाछाँक इतिहास। मुदा कथा जारी अछि...

आत्महत्या- आत्महत्याक मनोविज्ञान। पूर्व प्रकाशित ऐ कथामे परिवर्द्धनक संग नाममे सेहो परिवर्तन कएल गेल अछि।

गंधर्व लेटरबम- अंकुरमे पूर्व प्रकाशित ई कथा गल्पगुच्छमे २००९ मे संकलित भेल, ऐ कथाक नाममे परिवर्तन भेल आ कथा सेहो परिवर्द्धित भेल।

दीर्घ कथा खण्ड

मधुबनी मोड्यूल- एकर आरम्भिक रूप लघुकथा रूपमे अंतिकामे प्रकाशित अछि, मुदा आब ई दीर्घकथामे परिवर्तित भऽ गेल अछि, कथाक नाममे सेहो परिवर्तन छै।

शब्दशास्त्रम्- मिथिलाक नव्य-न्यायक जनक गंगेश उपाध्याय, जिनकर जन्म पिताक मृत्युक ५ बर्ख बाद भेल आ सभ शिक्षा प्राप्त केलाक बाद ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलनि, मुदा हुनकर इतिहास नुका देल गेल मुदा ओ जीवित रहल ब्लैक बुक माने दूषण पञ्जीमे। रमानाथ झा

दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यकेँ झूठ बतेलन्हि जे हुनकर परिवार मिथिलासँ समाप्त भऽ गेल आ हुनकर पिताक बा पुरुखाक नाम जनबाक सेहो हुनका कोनो आवश्यकता नै छै (देखू हिस्ट्री ऑफ नव्य न्याय इन मिथिला)। दूषण पञ्जीसँ निकलल ई प्रेम कथा 'जखन तखन' क प्रेम कथा विशेषांकमे प्रकाशित भेल। एकर अंग्रेजी अनुवाद साहित्य अकादेमीक पत्रिका इण्डियन लिटरेचर [Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93] मे प्रकाशित भेल (Annexure 3) आ अन्तर्राष्ट्रिय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित भेल। ऐ कथामे लेल सभटा गीत चर्मकार टोलसँ उमेश मण्डल जी द्वारा डिजिटल रेकॉर्डिंग द्वारा प्राप्त भेल अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/video.htm पर, आ तेँ ई कथा समर्पित अछि उमेश मण्डल जी केँ। संकलित गीत मे मात्र एक ठाम 'बाझिन' केँ बाघिन कऽ देल गेल अछि, स्त्री विमर्शकेँ देखैत (कथामे, रेकॉर्डिंगमे नै)। कथामे लेखकीय स्वतंत्रता लेल गेल अछि।

महिसबार ब्राह्मणक गाम- मनुक्खक नै, एकटा गामक कथा। एकर अंग्रेजी अनुवाद (Annexure 4) सेहो भेल अछि, मुदा अनुवाद ग्लोबल पाठक वर्गक पाठ-प्रवेश सुगमताकेँ ध्यानमे राखि कऽ कएल गेल अछि।

बीहनि कथा खण्ड

३९ टा बीहनि कथा

रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर, नकली नोट, पानिबला रोड, जी सर, दू टा कैदी, अपन-अपन भाग्य, प्रवचन, गछल गप, भूरा बाल, आत्म-गौरव, छाह, वाटर कूलर, तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छेँ बाउ, एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा, स्निफर डॉग आख्यान, यातायात निअम भाग ०-१-२-३, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति-पाति, अनुकम्पाक नोकरी, पैरवी-पैगाम आ हाकिम, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, 'बाढ़ि, भूख आ प्रवास १-४', नव-सामन्त, चारिम स्थान, भोट, मसुआइ, साइबेरिया कैम्प, मीत भाइ श्रृंखला १-१२, बिहारी, फिल्डिंग, स्किल,

डिसीप्लीन आ *साइंस १-३*।
ऐ सभमे सँ किछु अही नामसँ/ बा आन नामसँ प्रकाशित/ ई-प्रकाशित छै। ई सभटा समाजसँ जुड़ल कथा सभ छिऐ, एकाध-दू पाँति सँ लऽ कऽ पन्ना-डेढ़ पन्नाक कथा सभ। बीहनि कथा *चारिम स्थान* मे जेना मूलधारा सभकेँ ठकैत रहैत अछि चारिम स्थानक लालच दऽ कऽ तइपर टिप्पणी अछि। *बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा* स्त्री विमर्शक तँ *जाति-पाति* दलित विमर्शक कथा थीक। *अनुकम्पाक नोकरी* अस्थिर विचारधाराक लोकक कथा थीक। *नूतन मीडिआ* आइ काल्हिक पीत पत्रकारितापर टिप्पणी अछि जतऽ ब्रेकिंग न्यूज नव विधान बनल अछि। *मिथिलाक उद्योग* अपन रोजगार करैमे होइत झमेलक वर्णन करैत अछि। *बाढ़ि, भूख आ प्रवास* मे बाढ़ि आ पलायनक बीच हास्यकेँ मिज्झर होइत देखायल गेल अछि। *पैरवी-पैगाम* आ *हाकिम* मे अपन कर्त्वय पालन लेल कोनो बहन्ना नै अछि से देखाओल गेल अछि आ सएह दोसर ढंगसँ आयल अछि *आत्म-गौरव* मे। *पानिबला रोड* मे गएर बाढ़िबला इलाकाक लोकक माध्यमसँ, बाढ़िक इलाका बला लोक नव स्थितिमे जीबाक नव-विधि केना तकने अछि, तकर वर्णन अछि। ई देखबैत अछि जे कोसीपर तटबन्ध बनलाक बाद, बीसम शताब्दीक सत्तरिक दशकमे कुशेश्वर स्थान क्षेत्र जलप्लावित भेलाक बाद, ओतुक्का लोक केना अपनाकेँ अनुकूलित केलन्हि। ई पर्यावरण विमर्शपर कथा अछि । रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर आ *नकली नोट* मे कानून व्यवस्था आ नोटक ठगीपर टिप्पणी अछि तँ *जी सर* मे चमचागिरीपर, *दू टा कैदी मे* जेल प्रशासनपर*, अपन-अपन भाग्य* आ *स्निफर डॉग आख्यान* मे भ्रष्टाचार, *प्रवचन* मे ढोंगी*, गछल गप* मे काटर व्यव्स्थापर टिप्पणी कएल गेल अछि। *भूरा बाल* मे जाति आ मोहाबरापर हास्य रूपेँ टिप्पणी अछि। *छाह* मे एकटा घटना/ मिरर इमेजक वर्णन अछि। *वाटर कूलर* मे समाज कल्याण कार्यक कखनो काल होइबला हास्य परिणामक वर्णन अछि। *तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छेँ बाउ* मे मूलधाराक मनोवृत्तिकेँ हास्यक माध्यमसँ देखाओल गेल अछि। *एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा* किताबी आ जॉब आधारित ज्ञानक द्वैधकेँ देखबैत अछि। *यातायात निअम* मे कानूनक प्रति लोकक धारणा, *जातिवादी मराठी* मे लोकक दोगलापनी आ *थेथर*

मनुक्ख मे मनुक्खक नियतिपर चर्चा भेल अछि। *नव-सामन्त* मूलधाराक ऐंठीकेँ वर्णित करैत अछि। *भोट*मे एलेक्शनक छल-प्रपंच वर्णित अछि। *मसुआइ* मे विभिन्न क्षेत्रक खान-पानक सांस्कृतिक अन्तर आ अनेरे उठाओल जायबला नैतिकताक प्रश्न देखाओल गेल अछि। *साइबेरिया कैम्प* साइबेरियाक व्यापार-उद्योगक कथा थीक। *मीत भाइ शृंखला*मे सभ गामक मीत भाइक हँसी, छल-छद्म आ निश्छलता, सभटा वर्णित अछि। *बिहारी* मजदूरीक पर्यायवाची भऽ गेल अछि, *साइंस* पढ़ाइ व्यवस्थापर टिप्पणी अछि, कोटा जे कोचिंगक हब छिऐ, ततऽ २०२२ मे बाइस टा विद्यार्थी आत्महत्या कऽ लेलक। *फिल्डिंग* खेलक प्रति दृष्टिकोण, *स्किल* काज केनिहारक दुर्गति आ *डिसीप्लीन* ब्यूरोक्रेसीक कारी अंग्रेजपर टिप्पणी अछि। ऐमे किछु नब आ किछु परिवर्द्धित बीहनि कथा देल गेल अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर

लघु कथा खण्ड

सिद्ध महावीर

१

बान्हक कातमे अनमना दीदीक घर।

घर नै एकचारी कहू। गामक मोटामोटी सभ अंगनामे एकटा विधवाक घर रहै छै। मुदा जखने परिवार पैघ होइए तँ क्यो अपन घरक मुँह घुमा लइए तँ क्यो बेढ़ बना दइए। आ कखनो काल ओइ राँड़-मसोमातक घरक स्थान परिवर्तन भऽ जाइ छै, आ से तेहने सन स्थिति छलै अनमना दीदीक घरक।

मुदा अनमना दीदीक घर बान्हक कातमे छन्हि। सोझाँक मजकोठिया टोलक छथि मुदा घुसकि कऽ हमर घर लग आबि गेल छथि। समङगर लोक सभ।

आस-पड़ोसक धी-बेटी दिनमे, दुपहरियामे जाइ छथि। ढील-लीख बिछै लेल। ककर ओ लगक छथि, से मरलाक बाद पता चलत। श्राद्धक समै जे लगक अछि से आगि देत आ तकरा घरारी भेटतै। मुदा सेहो सम्भावना आब नै। झंझारपुरमे सासुर छलन्हि अनमना दीदीक। ओतऽ अपन बहिनक बेटाकेँ अपन बेटा बना राखि लेने छथि। मुदा नैहरक मोह नै छूटल छन्हि।

एकचारी घरमे अबै छथि। मासमे एक बेर तँ अबस्से। अपनेसँ खेनाइ-पिनाइ, भानस-भात। मुदा झंझारपुरमे बेस पैघ घर, आंगन। बेटा-पुतोहुकेँ कहियो मुदा एतऽ नै आनलन्हि।

सौँसे गाम विधवाकेँ दीदी कहैए जँ ओ नैहरमे रहै छथि। आ फलना गाम बाली काकी जँ ओ सासुरमे रहै छथि।

से सौँसे गाम हुनका अनमना दीदी कहै छलन्हि।

खोपड़ीक कातमे एकटा भगवानक मन्दिर बनेने छथि। महावीर बजरंगबलीक। शुरुहेसँ ई कोठाक रहै से नै, मुदा बना देलन्हि ओकरा कोठाक। अन्न-पानि बेचि कऽ। पहिने तँ एकचारीये रहै। जहिया अनमना दीदी झंझारपुर जाइत रहथि, अपन खोपड़ीक फड़की भिरका कऽ जाइत रहथि। बादमे ताला आ सिक्कड़िसँ बन्न सेहो करऽ लागल रहथि। मुदा बजरंगबलीक मन्दिर ओहिना खुजल रहै छल। लोक सभक

लेल..चौपहर। धी-बेटी गामक, साफ-सफाई, झाड़ू-बहारू करैत रहथि। पक्काक मुदा बादमे भेल, पिटुआ छात आर बादमे। जमीनक प्लास्टर करबऽ चाहैत रहथि, मुदा एस्टीमेट बेशी भऽ गेलन्हि। भगवानक घर चुबैत रहत? मुदा ढलाइ आ प्लास्टर लेल पाइ कतऽसँ एतै?
आइ हमरा लगैए जे हम सभ खूब मेहनति करै छी। ककरोसँ सरोकार नै अछि। ओह, समैए नै भेटैत अछि। मुदा अनमाना दीदीक दिनचर्या, भोरसँ साँझ भगवान लेल समर्पित। मुदा पोसपुत्र लेल सेहो समै निकालै छथि। बीच-बीचमे झंझारपुर बजार लग स्थित अपन गाम जाइ छथि। ओतुक्को ब्योँत लगबै छथि। फेर गाम अबै छथि..नैहर। देखू..गीता पढ़ि स्थितप्रज्ञ बनबाक अहाँक प्रयास। मुदा अनमना दीदी। गोर लगै छी दीदी। निकेना रहू। नहिये खुशी, नहिये कोनो दुखे। ने कोनो आवभगतक लालसा आ ने कोनो तरहक सहयोग प्राप्तिक आकांक्षा।
जोन ताकै लेल जाइ छथि धनुकटोली, दुसधटोली। ओतुक्का लोक इज्जतियो दै छन्हि, कोन हुनकर घरारी लेबाक छन्हि हुनका सभकेँ। ओतऽ हँसितो देखै छियन्हि। अपन टोलक लोकसँ हट्ठे कोनो काज लेल कहितो नै छथि। एकटा काज करत आ कनियाँकेँ जा कऽ कहत। आ फेर दस साल धरि ओकर कनियाँ सुनबैत रहत।
-दीदी, हनुमान जीक काज छै, सड़कक कातमे छथि। हमहूँ सभ तँ जाइत-अबैत माथ झुका कऽ पुजबे करबन्हि। से बिनु बोनि लेने हम ई काज करब।
- नै यौ तीर्थ-बर्त आ भगवानक काज मंगनीमे नै करबाक-करेबाक चाही। हम कोनो रानी-महरानी छी जे बेगारी खटा कऽ मन्दिर बनबैब आ पोखरि खुनैब।
मुदा ढलैय्या आ प्लास्टर!

२

सड़कक कातक भगवानक ऐ मन्दिरक सटल एक बीघा खेत, सभटा अनमना दीदीक। ढलैय्या भऽ गेलाक बाद भगवानक नामसँ लिखि देती। जे अन्न-पानि हेतै ओइसँ भगवानक घरक चून-पोचारा आ सफाई होइत

रहत।

कतेक दिनसँ पड़ोसी पछोड़ धेने छन्हि।

“दीदी। तोहर सभसँ लगक भातिज हमहीं छियौ। ई जमीन हमर घरसँ सटल अछि। पहिलुका लोक बान्ह-सड़कक कातमे छोट लोक आ मसोमातकेँ घर बना दैत रहै। मुदा आब जमाना बदलि गेल छै। आब तँ सड़कक कातक घर आ जमीनक मोल बढ़ि गेल छै। तूँ आइ ने काल्हि मरि जेमे। तखन ई जमीन हमरा सभ पटीदार लेल झगड़ाक कारण बनत।”

तूँ आइ ने काल्हि मरि जेमे- कहि कऽ देखियौ कोनो सधवाकेँ। मुदा मसोमातसँ कहि सकै छिऐ- भने ओकर पोसपुत्र- पुतोहु- नैत-नातिन सभ होइ। ठीक छै बाबू।

“भगवानक लेल निहुछल अछि ई जमीन। अहीसँ तँ हमर गुजर चलैए। जे किछु पेट काटि कऽ बचबै छी से कोशिल्या- भगवानक घरक ढलैया आ प्लास्टर लेल। झंझारपुरक जमीन-जालक पाइ सभ बेटा पुतोहुक छन्हि। से हम केना.. ”

“फेर दीदी। तूँ गप बुझबे नै केलेँ। जा जिबै छेँ राख ने। कर ने गुजर। हम तँ कहै छियौ जे तोरा मरलाक बाद जे पटीदार सभ आपसमे लड़त से तोरा नीक लगतौ? आ हम तोहर सभसँ आप्त भातिज...।”

देखियौ, कहै छै जे। भातिज बाहरमे नोकरी करै छथि। जे गाममे रहैए से तँ भेँट करैयोमे संकोच करैए जे किछु देमऽ नै पड़ए। ई मुदा जहिया गाममे अबैए आ हम गाममे रहै छी तँ भेँट करबाक लेल अबिते अछि। आ ऐ बेर तँ हम झंझारपुरमे रही तँ ओत्तौ ऐल रहए। सएह तँ कहलिऐ जे ई केना कऽ फुरेलै। से आब बुझलिऐ। मुदा ई ढलैय्या केना कऽ हएत। प्लास्टर तँ बादोमे करबा देबै। ततेक चुबैए, ऐ साल तँ आरो बेशी चुबऽ लागल अछि। पिट्ठआ छत, दुइयो साल नै चलल। ओकरा ओदारि कऽ ढलैय्या करत करीम मियाँ आ लछमी मिस्त्री, तखने ठीक हएत। देखै छी।

भातिजक आबाजाही बढ़ि गेल अछि आइ-काल्हि।

“ठीक छै दीदी, अदहे जमीन दऽ दे। दस कट्ठामे अहाँक भातिजक बसोबासक संग भगवानक लेल सेहो जमीन बचिये जेतै।”

“मुदा बान्हपर अहाँक घरारीक लागि तँ नहिये हएत। तखन की फएदा

हएत अहाँकेँ।"

"छोड़ू ने। एखनो तँ टोल दऽ कऽ अबिते ने छी, आ हमर घरारीक लागि सड़कऽ कातक जमीनसँ थोड़बे छै, पछुलके जमीनसँ ने छै। चौक-चौबटिया आ बान्हक कातमे घर बनेबाक तँ आब ने चलन भेल छै। आ आब चौबटिया आ बान्हक कातमे तँ भगवानेक घर ने शोभतन्हि। दस कट्ठाक दस हजार जहिया कहब हम दऽ देब। रजिस्ट्री बादेमे बरु हएत।"

"ठीक छै। तखन हम सोचि कऽ कहब। एक बेर बेटा पुतोहुसँ पूछि लै छी।"

कोन उपाय। भगवानक घरक देबाल सभमे कजरी लागि गेल अछि। देबाल छोड़ू, बजरंगबलीक मूर्तिमे सेहो कजरी लागि गेल अछि। अनमना दीदी सोचिते रहि गेलथि। आ सोचिते-सोचिते भोर भऽ गेलन्हि।

दऽ दै छिऐ जमीन। आर उपाइये की। नै!

बेटा-पुतोहु कहलखिन्ह जे माय। ओतुक्का जमीन तँ भगवानक छन्हि। आ हम सभ से शुरुहे सँ बुझै छी। मुदा देखब। ओ कोनो चालि तँ नै चलि रहल अछि।

"कोन चालि। पाइ तँ किछु बेशीये दऽ रहल अछि।"

भगवानक मन्दिरक लेल दस कट्ठा कम थोड़बे होइ छै। पाइ जुटबैत-जुटबैत मरि गेलौं। ई अधखरु मन्दिर की ओहिने रहि जेतै? गप करै छी लछमी मिस्त्री आ करीम मिआँ सँ।

दस हजारमे ढलैय्या, प्लास्टरक संग छहरदिवारी सेहो बनि जेतै। एस्टीमेट बनि गेल। रजिस्ट्रीक अगिले दिनसँ काज आरम्भ। आ भादवक पहिने समापन।

३

चलू रजिस्ट्री भऽ गेल। दासजी कागच-पत्तरमे बड्ड माहिर लोक। पुछबाक काज छै! - धुर। पकिया कागच बनल हेतै।

"भगवानक लेल कागच बनेबाक पहिल अवसर भेटल अछि दीदी"- दासजीक गपसँ अनमना दीदी दासोदास भऽ गेली।

लोक कहै छै झुट्ठे जे लोकक श्रद्धा भगवानपर सँ कम भेल जाइ छै। ई दासजी। कहियो ने भेँट आ ने जान पहिचान। दू टा रजिस्ट्रीक कागच-

एकटा दसकठिया भातिजक नाम आ दोसर भगवानक नाम, मुदा एक्के फीसमे बना रहल छथि। साफे कहि देलखिन्ह- दीदी भगवानक जमीनक रजिस्ट्रीक पाइ हम एकदम्मे नै लेब। जे बेर-बखतपर काज आबय सएह ने अप्पन लोक। ठीके बूढ़-पुरान कहि गेल छथि। यएह सभ देखि कऽ ने कहने छथि।
अनमना दीदी बाइमे छथि। पएरे गाम एली। सोहमे किछु नै फुराइ छन्हि। मन्दिरकेँ अजबारू, काल्हिसँ काजक आरम्भ अछि। लछमी मिस्त्री अपन तेगारी, डोरी, करणी सभ राखि गेल अछि। डब्बुक सभ पानि भरबाक लेल अनमना दीदी जोगा कऽ राखनहिये छथि। पोखरि बगलेमे अछि। लीढ़सँ भरल, मुदा कातमे महीस सभकेँ पानि पिएबा लेल लोक सभ कनेक साफ कइए देने छै।
मुदा भोरेमे घोल-फुचुक्का। करीम मिआँकेँ काज करबासँ रोकि देल गेल। के रोकलक? भातिजकेँ खबरि दियौ। मुदा ओ तँ काल्हि झंझारपुरसँ सोझे नोकरीपर चलि गेला। रजिस्ट्रीक कागच ओना तँ अनमाना दीदी लग सेहो छन्हि। भातिजक सार रोकने अछि काज। छहरदिवारी नै बनबऽ देत। मुदा काल्हि रजिस्ट्री काल तँ रहय ईहो। तखन? कहैए जे बान्हक कातबला जमीन मेहमानक छियन्हि। ऐँ यौ, तखन तँ ई मन्दिरो ओकरे हिस्सामे भऽ गेलै ने। कोनो बुझबामे गलती तँ नै कऽ रहल अछि? भातिज मासक शुरुहेमे जा कऽ तँ एता, दरमाहा लैए कऽ ने। मास भरि अनमाना दीदी गाम आ झंझारपुर करैत रहली। बेटा पुतोहु कहन्हि जे ई भातिजेक चालि तँ नै अछि? नै, से नै कहू। दासजी तँ नीक लोक रहय। देखू।

४

“दीदी। अहाँकेँ कोनो धोखा भऽ रहल अछि।”
“तखन तँ ई मन्दिरो अहींक भेल ने।”
“नै दीदी। ई मन्दिर तँ भगवानक छियन्हि। हुनके रहतन्हि। आ पाछूक जमीनक मालिक सेहो भगवाने।”
“आ तखन तँ हमर ई खोपड़ी सेहो अहींक भेल ने।”
“नै दीदी। अहाँ जहिया धरि जीब तहिया धरि रहू। के मना करत? ”

“बौआ बड्ड उपकार अहाँक। आ पाछू दिसका जमीनक लागि तँ नै बान्ह दिससँ अछि आ नहिये टोल दिससँ।”

“दीदी। अहाँ हमरा जमीन बाटे जाउ ने, के मना करत? आ आरिपर बाटे खेतमे सभ जाइते अछि। जकर खेत बान्हक कातमे नै छै से की अपन खेतपर नै जा सकैए। अहाँ तँ नबका लोकक भिन्न-भिनाउज बला गप कऽ रहल छी।”

“मुदा ई सभ अहाँ पहिने कहाँ कहने रही।”

“दीदी, अहाँकेँ सभटा कहने रही। मुदा लगैए जे अहाँकेँ धोखा भऽ रहल अछि। नै विश्वास होइए तँ दासजीकेँ बजा दइ छी। ओ तँ तेहल्ला अछि।”

“अच्छा तँ ओहो मिलल अछि।”

“दू रजिस्ट्रीक कागच बना कऽ बेचारा एक रजिस्ट्रीक पाइ लेलक आ अहाँ कहि रहल छी जे मिलल अछि।”- भातिजक स्वर तीव्र भऽ गेलन्हि। हाँफऽ लगला आ जोर-जोरसँ बजैत बिदा भऽ गेला।

५

अनमाना दीदीक लेल नैहरक ई भोर सासुरक ओइ भोर जकाँ रहन्हि जइ दिन ओ विधवा भेल रहथि। आइ गामक धी-बेटी ढील-लीख बिछबा लेल नै एली। अनमाना दीदीक राति भरिक वार्तालाप- बजरंग बलीक संग, अखने ऐ भोरमे खतम भेल अछि। लोक सभ अंगनामे बच्चाकेँ ठोकि कऽ सुता रहल अइ। भोरमे किछु गोटे आबि पंचैती करेबाक सुझाव दऽ गेलन्हि। मुदा अनमाना दीदीक रोष तँ बजरंगबलीसँ छलन्हि।

“भगवानक जमीन अदहा बेचि कऽ भगवानक घर बनबइतौं, मुदा मन्दिरक सटल जमीन रजिस्ट्री करा लेलक आ जे जमीन बचल ओइसँ मन्दिरक लागिये नै रहल। लागि तँ छोड़ू ओइपर जेबाक रस्ते बन्न कऽ देलक। आ ई बजरंगबली। महावीर! कोन शक्ति छै एकरामे ? चालीस साल पेट काटि कऽ हिनका खोपड़ीसँ पक्काक घरमे अनलौं। ढलैय्या भऽ जइतय, छहरदिवारी बनि जइतय सएह टा मनोरथ रहय, आ सेहो हिनके लेल। हा... ”

६

ऐ भोरमे भातिजक द्वारिपर ठाढ़ अनमाना दीदी। लोक सभक मोने जे आब आर बाझत झगड़ा। मुदा ई की भऽ रहल अछि। लछमियाँक भाय रिक्शा अनलक अछि। अनमाना दीदी भातिजक संग झंझारपुर जा रहल छथि। के कहलक? हुनकासँ तँ ककरो गपो नै भेल रहै। हम कहनहियो रहियन्हि पंचैती कराउ, मुदा मना जकाँ कऽ देने रहथि। अच्छा, लछमीक भाय कहलक। हँ, रिक्शा बजबै लेल जे गेल रहय, से कहने हएत जे झंझारपुर जेबाक अछि।
दासजीकेँ एकटा आर रजिस्ट्रीक कागच बनबऽ पड़लन्हि। अनमाना दीदीकेँ देखि ओ सर्द भऽ गेल रहथि जे जानि नै बूढ़ी की सभ सुनओथिन्ह। मुदा अनमाना दीदी ततेक ने तामसमे छली जे किछु नै बजली। तामस पीबि गेली। ओहो पाछू बला जमीन भातिजकेँ रजिस्ट्री कऽ देलन्हि। आ झंझारपुर-स्टेशनसँ घुरि कऽ झंझारपुर बजार दिस बेटा पुतोहु लग पएरे बिदा भेली।
लछमीक भाय घुरि ऐल। दू सवारीकेँ लऽ गेल रहय मुदा मात्र एक सवारी लऽ कऽ घुरि ऐल। संगमे संदेश लेने गेल। लछमी मिस्त्री आ करीम मिआँ लेल संदेश। काल्हि भोरेसँ काज आरम्भ। फेरसँ?

७

चहरदेबाली बनल। भगवानक मन्दिर आ अनमाना दीदीक घरकेँ बारि कऽ। कहि देने छियन्हि दीदी केँ। हुनका जिबैत क्यो छूतन्हि नै हुनकर घर।
घर आकि खोपड़ी, एक साल कनेक टूटल। दोसर भदबरियामे खुट्टा सरि कऽ खसि पड़ल। मुदा अनमाना दीदी नै एली। समाद देने रहन्हि नैहरक एक गोटे। ढलैया नहिये भेलन्हि बजरंगबलीक। अनमना दीदी हरिद्वारसँ घुरि एली। लोक पुछलकन्हि- की मांगलौं गंगा मायसँ।
“यएह जे अंधविश्वास हमरा मोनसँ हटा दिअ”।
“आ की देलियन्हि गंगा मायकेँ ?”

“अपन तामस दऽ देलियन्हि”।
अनमाना दीदी यएह कहथि- की करबन्हि। कोनो शक्तिये नै छन्हि बजरंगबलीमे। खसऽ दियौ खोपड़ी। सोंगर लागल घर कतेक दिन टिकत।

८

कएक बरख बीतल। कएक बरख नै पाँचमे साल तँ। भातिज गामपर ऐल रहथि। दरमाहा उठा कऽ। पोखरि दिससँ चप्पाकलपर। लोटा लेने बैसला आकि छातीमे दर्द उठलन्हि। नै बचि सकला। लोक सभ कहय, देखू अनमाना दीदीक श्राप, बड्ड कानल रहथि दीदी ओइ दिन। ओइसँ पहिने बजरंगबलीक मूर्तिमे ठीके शक्ति नै रहय। मुदा हृदयसँ देल श्राप लागै छै यौ। ओही दिन जागृत भऽ गेल रहथि बजरंगबली। आ आइ शक्ति देखा देलखिन्ह।
मुदा समदियाकेँ अनमाना दीदी कहलखिन्ह जे पाथरोमे जान होइ छै? हर्ट अटैक भेल हेतै। परसू एतऽ एकटा मारवाड़ीकेँ अटैक भेल रहै। चिन्ता-फिकिरसँ होइ छै एकर अटैक। एतऽ डाकडर सभ रहै, मारवाड़ी बचि गेल। गाममे देरी भेने जान नै बचै छै। तेँ ने हमहूँ ऐ बुढ़ारीमे बेटे पुतोहु लग झंझारपुरेमे रहि रहल छी।

९

गाम अछि महिसबार ब्राह्मणक गाम। सुखरातिक दिन हूड़ा-हूड़ीक खेल जे ऐ महिसबाड़ ब्राह्मण सभक देखलौं तँ पोलोक खेलमे कोनो रुचि नै रहल। समियाक डोमसँ कीनल सुग्गरकेँ भांग पिआ मातल महीस द्वारा हूड़ा लेब।
चरबाह जे महीसक पहुलाठ पकड़ि कलाकारीसँ बैसल छल सेहो अद्भुते। डोमक काज पाबनि-तिहारमे तँ होइते अछि। पेटार बनेबासँ सूप, बीअनि सभ किछु बनेबामे डोमक काज आ पाहुन परख लेल आ बरियाती लेल जे खस्सी काटल जाइ छै, तइ लेल मिआँटोलीक काज।
धुर कतऽ भाँसि गेलौं।

खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलिमे कमिटी लऽ लइ छै। से मिआँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल कऽ कऽ, गरदनि अदहा लटकले रहै छै, मुदा माउस बना-सोना कऽ ओहो गरदनि लऽ जाइये आ खलरा सेहो। तखन महिसबार ब्राह्मणमे सँ जे हनुमानजी मन्दिरपर भजन आ अष्टजाम करै छथि से ओही खलरासँ बनल ढोलक किनै छथि। आ से कीर्तन भइयो रहल छलै।

सिद्ध महावीरजीक मन्दिरक आगाँ। रामनवमी दिन गाड़ल बड़का धुजा। टनटनाइत घड़ीघण्ट आकि आर किछु। हनुमानजीक धूजा फहरा रहल अछि। साँझक बेर। महिसबार सभक आगम भऽ गेल अछि। कोनो पाबनि हुअए, हूड़ाहूड़ी आकि रामनवमी सिद्ध हनुमानजीक आगाँ कीर्तन होइते अछि। से बाबू गौँआक श्रद्धाक गप छिऐ। से आइयो भऽ रहल अछि।

घूरक धुँआ मालक बिठौरीकेँ मालक देहसँ अलग करबाक प्रयासमे अछि। एक गोटेक संग दोसर गोटे आयल छथि, सप्पत खेबाक लेल। हनुमानजीक मन्दिर गौँआ सभ प्लास्टर करबा देने छथि। ढलैय्या सेहो भऽ गेल अछि। मन्दिरक बरण्डा छूबि कऽ ऋण पचेनहारक संख्या नगण्य, तैयो एकटा अपवाद तँ अछिये- ओ कहै छथि- सप्पत तँ तोड़बा लेल खाएल जाइ छै। हँ भाइ, एक बेर सप्पत खेने जे ऋणसँ विमुक्ति भेटि जाय तँ हर्जे कोन। मुदा एकेटा अपवाद। अनमाना दीदीकेँ आब सभ अनमाना बाबा सेहो कहै छन्हि। कएक बरख भेल मुइना हुनकर। घुरि कऽ नहिये एली। भातिजक घरारीक दोष निवारणार्थ कोनो पंडितक कहलापर खुट्टापर एकटा गाय बान्हि देल गेल छै, जकरा एनहार-गेनहार सदिखन घास खाइत देखै छथि, तइसँ घरारीकेँ नजरि-गुजरि नै लगतै। हनुमानजीक धुजा फहरा रहल अछि। साँझक काल। गोनर भाइ कीर्तनमे ढोलक धेने थापपर थाप लगा रहल छथि।

अनमाना बाबाक गप आब किछु लोको सभ मानलक। ठीके। हनुमानजीक मूर्तिक आगाँ भक्त दूटा गोल बनि गेल अछि। एक गोलक विचार कनेक वैज्ञानिक छै- अनमाना दीदी जे बाँचल दस कट्ठाक रजिस्ट्री

कऽ देलखिन्ह सएह ने पइसा देलकै चिन्ता-फिकिर भातिजक छातीमे। नै सम्हारि सकल अनमाना दीदीक ई आक्रमण ओ। ठीके पाथरमे कोनो शक्ति थोड़बे होइ छै। मुदा दोसर गोल महावीर हनुमानजीक सिद्ध आ जागृत हेबामे विश्वास कऽ रहल अछि- यौ, चुट्टीकेँ माटि दऽ दियौ तँ ओहो मरि जायत मुदा बिकुटि कऽ जे काटत से छोड़त नै। आ ई माटि अनमना दीदी महावीरजी केँ देलखिन्ह तँ ओ केना छोड़ि दितथिन्ह?

गोनर भाइ कीर्तनमे ढोलकपर थापपर थाप लगा रहल छथि, बुझू सिद्ध महावीरजीकेँ मनाइये कऽ छोड़ता, भांगक गोला असरि कऽ रहल छन्हि, आँखि तँ चढ़ले छन्हि, हाथ सेहो रुकै कऽ नाम नै लऽ रहल छन्हि, आ हुनकर नजरिसँ देखी तँ सिद्ध महावीरक पाथरक मुरुत जागृत भऽ गेल देखा पड़त, जेना ओइमे जान आबि गेल हुअय!

(Translation into English of the Maithili Short Story, 'Siddha Mahaveer', by the author himself. Gajendra Thakur: e-published as 'The Proven Mahavir,' Sep-Oct 2015 www.museindia.com)

नवी मुम्बै

१

नवी मुम्बै मे एकटा सर्च ऑपरेशन रहै, बीचेमे एकटा फोन आयल आ हमरा मैथिलीमे बजैत ओतुक्का गार्ड बादमे एकान्तीमे पुछलक-"कोन गाम घर छी?"
"गढ़ नारिकेल।"
"कोन टोल?"
"ठकुरटोली।"
"फुदो कैँ चिन्है छियन्हि?"
"हँ हमर भैयारीये छिअथि।"
पता चलल जे फुदो भाइ नवी मुम्बैमे हिनकर पड़ोसी। ई छथि गार्ड आ हुनकर छन्हि सब्जी-तरकारीक दोकान। गामक आनो बहुत रास लोक।

बादमे नवी मुम्बैमे रहैबाली एकटा भौजी गाममे भेटल रहथि, दुर्गापूजामे, गोंगू भाइक कनियाँ। देखलियन्हि तँ पुछलियन्हि- "बूढ़ भऽ गेलौं यै भौजी।"
चोट्टे जवाब- "बूढ़ भऽ गेलथि हैं अपने आ...।"
"मजाको नै बूझै छिऐ यै भौजी, अहाँ बूढ़ हएब? चारि सालक बाद भेँट भेल छी, चारि सालमे लोक चारि साल पुरान होइए अहाँ तँ चारि साल नबे भऽ गेल छी।"
"अहाँ बम्बै एलौं आ भेँटों नै केलौं। ई फुदबा कहलक जे अहाँ सेठक ऐठाम आयल रहिऐ, हरबिर्रो मचि गेलै। हम तँ एकरा खूब गरियेलिऐ, कहलिऐ रौ टटीबा रौ टटीबा, छोटे बाबू एलखिन्ह आ तूँ हुनका डेरापर किए नै अनलहुन। तँ कहलक जे एकर कोनो संगी ओतऽ रहै, से कहलकै। अहाँ कहलिऐ जे फुदो भाइ तँ हमर भैयारी छथि, से सुनि एकर छाती चाकर भऽ गेलै। कनी टाइम निकालि कऽ किए नै एलौं? हरी भाइ ओत्तै शिवशंकर मिष्टान्न भण्डार खोलने छथि, शिव सेना बला सभ दोकानक नामसँ प्रसन्न छै, से उछन्नर नै करै छन्हि। आब तँ हुनकर स्टाफ

काज करै छन्हि मुदा कहलन्हि जे छोटे भाइ अबितथि तँ अपन हाथसँ जिलेबी छान्हि कऽ खुअबितियन्हि। "

"ऑफिसक काज रहै, ओतऽ सँ फेर तारापुर आ फेर बाहरेसँ बाहर दिल्ली, से नै आबि सकलौं।"

फुदो भाइ सेहो आयल रहथि।

हुनकर बेटीक बियाह छलन्हि। दूर्वाक्षत देबा लेल हुनका संगे हुनकर अंगना गेलौं। नव घरहट देखेलन्हि।

फुदो भाइ संगे पुरनका गप मोन पड़ि गेल। बौआ चौड़ी महीस चरेबा लेल जाइ छलथि, पुरना गप। हमरो एक दिन लऽ गेलथि। ओतऽ जे महिसबार सभक उल्लास देखलिऐ, अद्भुत। ओम्हर गाय बड़द महींस चरैए बौआचौरीमे आ एम्हर महिसबार सभ धरिया पहीरि कूदल कमला-बलानमे। धारक विपरीत अवध भाइ हेलैत। छिछलि कऽ कमला-बलानमे पोन भरे जाइत फुदो भाइ, जेना स्विमिङ-पुलक स्प्रिंग-बोर्ड हुअय, स्प्रिंग बोर्ड नै पार्कक स्लाइडर। अलगे दुनियाँ।

फुदो भाइकेँ एकटा बरियातीमे पुछलकन्हि, कोन स्कूलमे पढ़ै छी? फुदो भाइ चोट्टे जवाब देने रहथि- बौआचौरी हाइ स्कूल। अनगौंआकेँ भेलै जे कोनो स्कूल हेतै, हमरा सभकेँ पेट फुलय।

फुदो भाइ संगे एक दिन जाइ छलौं पुबाइ टोल बाटे। आ फुदो भाइ लुक्खीक सात पुरखाकेँ गारि देनाइ शुरू कऽ देलखिन्ह। टोलबैय्या सभ कहै, ई बताह भऽ गेल छै की? मुदा जखन फुदो भाइकेँ गारि पढ़ैसँ अछौं भऽ गेलनि तँ दलानपर बैसल एकटा गरिपढ़ुआ (हुनकर मौसीक जमाय)केँ कहलखिन्ह- "सार हौ, अनठेने छह जे हमर नाम लुक्खी नै छी!"

आ ओ गरिपढ़ुआ हँसितो आ गरियबितो दौगल मार-मार करैत।

"सभटा मोने अछि बौआ।"- फुदो भाइक अबाजमे आब ओ चंचलता नै छन्हि। हम गम्भीरसँ चंचल भऽ गेल छी आ ओ चंचलसँ गम्भीर।

हरी भाइ गामेमे दोकान खोलने छला, बड्ड मेहनती मुदा बैंक एहेन लोककेँ लोन नै दै छै। जे सभ सरकारक पाइ पचा जाइ छै बा अगिला एलेक्शनमे ऋणक माफी भेट जेबाक इन्तजारीमे रहै छै तकरे बैंक लोन दै छै। कारण ओ कमीशन देतै मुदा दोकान नै खोलतै। हरी भाइ दोकान करै छथि, मेहनती छथि मुदा तइ सँ की। बेइमान नै रहथि जे एकक दू हिसाब लिखितथि बा डण्डी मारितथि, गङ्गाक दोकान अखनो चलिये रहल छै, हरी भाइक उधारी कियो नै देलकन्हि मुदा घराड़ी बेचि कऽ करजा चुकेलन्हि आ बम्बै चलि गेला। ओत्तऽ खोललन्हि मिठाइक दोकान आ दोबरपर फेरसँ घराड़ी दियादसँ किनलन्हि आ हुनको घरहट छलन्हि।
हरी भाइक बेटाकेँ किडनीक दिक्कत छै, मुदा नाति खूब चरफड़। क्रिकेटमे स्थानीय चैंपियनशिपमे डबल सेन्चुरी मारने छलै, शिवसेनाक एम.एल.ए. ट्राफी देलकै। मुदा हुनका परोछ भेलापर गोंगू भाइ कहलथि- धुर, असलका कोर्केट गेन्दबला क्रिकेट चैम्पियनशिप थोड़बे रहै, टेनिस गेन्दबला रहै, नै पैडक जरूरी, ने हेलमेटक, से नै ने कहलथि।
फुदो भाइक बेटा ओना सभ किछु ठीके बाजै छन्हि मुदा कनी झनकाह बुझायल। ओना कोनो गलत बात नै बाजै छै। बुझनुके बूझि पड़त। मुदा कोनो बातपर अड़ि रहत, जेना बाजत- नीलू दीदीकेँ हम बम्बैमे देखने छियन्हि, हुनके तँ ई भाय छथिन्ह। नीलू दीदी कहियो बम्बै नै गेल रहथि ताधरि। मुदा ई अड़ि गेल जे हम देखनहिये छियन्हि।
हरी भाइक समधि दिल्लीमे एकटा रेजीडेन्शियल सोसाइटीमे माली छथि। हरी भाइ मिसरटोलीक छथि, ठकुरटोलीक बगलमे, प्लेगमे मोटा-मोटी पूरा पछिमा टोली आ अदहा मिसरटोली साफ भऽ गेल रहै नै तँ आइ ई टोल रहितै, टोली नै।

बेटाक किडनीक ऑपरेशन दिल्लीमे भेलन्हि, बेटाक नाम सरवन। हरी भाइक सभ दियाद करेकमान। खाली हरी भाइ बम्बैमे छथि, टोलक आन सभ गोटे दिल्लीमे। से बाबू मिसरटोलीमे एकता छै। कोनो काज-उद्यम होउ, दिल्लेमे बा गाममे सभ पहुँचिते टा छै।
"बूड़ि छथि सभ गोटे कि? एडवान्स नै भेल छथि, हमर टोल देखियौ

एडवान्स छै, ककरो ककरोसँ मतलब नै, सभ अपनामे भेर।"- बड़ाबाबू टोलबैय्या सभकेँ सुना कऽ कहै छथि।

फेर कतेक दिन बीत गेल, एक बेर फेर गाममे भेँट भेल रहथि, हुनकर बचियाक बियाह रहन्हि आ हम काकीक काजमे गेल रही।

२

ऐ सँ पहिनहियो नवी मुम्बै कएक बेर ऐल छी। कोरोनाक समय शुरुहे भेल छलै, तखने पहुँचल रही।
जाइते काल एयरपोर्टपर चेकिंग शुरू भऽ गेलै, पुलिसक नै डाक्टरक! कोन ठामसँ आबि रहल छी, दिल्लीसँ आ ओइसँ पहिने कत्तऽ रही? दिल्लेयेसँ आबि रहल छी? जाउ वाम दिस, फॉर्म भरू, सेल्फ क्वारेन्टाइनमे रहऽ पड़त सात दिन। अहाँ, दुबइसँ? दुबइसँ दिल्ली, फेर मुम्बै। दहिन दिस जाउ, फॉर्म भरू, अहाँकेँ सरकारी क्वारेंटाइनमे रहऽ पड़त, सरकारक खर्चापर, मुदा पहिने हिनका टेस्ट लेल लऽ जाउ सिस्टर। हम वाम दिस बला छलौं, से सेल्फ क्वारेंटाइनमे अपन गेस्ट हाउसमे बिदा भेलौं। टैक्सीमे लागल एफ.एम. रेडियो पर कोनो रेडियो जॉकी बाजि रहल अछि जे पहिल विश्वयुद्धक समाप्ति भेल १९१८ मे आ लागल जे एकटा आफद खतम भेल। मुदा तखने दोसर आफद आबि गेल आ ओ आफद छल स्पेनिश फ्लू केर, विश्वमे १० करोड़ लोक मुइल आ भारतमे ८० लाख। ओइ समय जनसंख्यो कम्मे रहै विश्वक।
हमर क्वारेंटाइन अवधि जहिये खतम भेल तहिये लॉकडाउन शुरू भऽ गेलै। स्कूल कॉलेज, दोकान, हाट-बजार सभ बन्द। गेस्ट हाउसमे टी. वी. खोलू तँ डिप्रेशन भऽ जायत।

कहुना लॉकडाउन खतम भेलै, किछु ऑफिसक काज सम्पन्न कऽ हम घुरलौं।

मुदा ऐ बेरुका बात किछु आर छलै।

ऐ बेरुका यात्रा यात्रा नै, कोरोनाक बीचमे हमर प्रस्थान छल, नवी मुम्बै लेल। अनचोक्केमे हमर ट्रांसफर एतऽ भेल छल। आ अनचोक्केमे एतऽ पहुँचिते लॉकडाउन शुरू भऽ गेलै। रोडपर लागल जेना कर्फ्यू लागल हुअय।

रोड मोटामोटी खाली, खाली साइरनक अबाज बला गाड़ी। पुलिसक नै एम्बुलेन्सक साइरन। सड़कक दुनू कात ई साइरन अनवरत बजैत रहल। ऑक्सीजनक लेल लाइन लागल। तहूमे की जे सिलेण्डर अपन आनू आ ओइमे अहाँकेँ ऑक्सीजन भरि कऽ दऽ देत। सिलेण्डर भेटबै नै करै। चारू दिस अविश्वास। लोक कहै जे हॉस्पीटल बला सभ रातिमे झुट्ठे उकबा उठा दै छै। ऑक्सीजन खतम भऽ गेल, रेमडिजविर इंजेक्शन आनू नै तँ पेशेण्ट नै बचत। पाँच हजारक रेमडिजविर इंजेक्शन २५-३० हजारमे ब्लैकमे भेटै।

मास्क भारतमे बनिते नै छै, से तखने पता चलल। मास्क सेहो कएक तरहक मुदा एन-९५ सभसँ नीक।
“पहिने हॉस्पीटलमे भर्ती कऽ लेलक आ कहलक जे इलाज तावत शुरू नै हएत जाबे कोरोनाक टेस्ट-रिजल्ट नै आओत, मेडिकल काउन्सिलक गाइडलाइन छै। चारि दिनमे कोरोना टेस्टक परिणाम अबै छलै। एक्के दिनुका बाद कहलक जे प्रशासन एकरा कोरोना हॉस्पीटल घोषित कऽ देलकै, एतऽ सँ जाउ। फेर दोसर हॉस्पीटल गेलौं। तीन दिनुका बाद जखन कोरोनाक रिजल्ट आबि जेतै तखन इलाज शुरू हएत, ओत्तौ सएह कहलक, मेडिकल काउन्सिलक गाइडलाइन छिऐ। तीन दिनुका बाद रिजल्ट आबि गेल, कोरोना पोजीटिव। आब ओ हॉस्पीटल कोरोना हॉस्पीटल नै छलै से ओतऽ कहलक, एतऽ सँ जाउ। फेर पहिलुक्का हॉस्पीटल एलौं, फेर इलाज शुरू भेल। लोककेँ एक्कोटा सिलिण्डर नै भेटै, हम आठ टा क इन्तजाम कऽ देलिऐ, लोककेँ एक्कोटा रेमडिजविर नै भेटै हम छअ टा देलिऐ। चौदहम दिन ओ मरि गेला। पाइ पैरवी किछु काज नै आयल।“
“हमर ऑक्सीजन ६०क नीचाँ चलि गेल, ऑक्सीमीटरमे। ककरो

हॉस्पीटलमे बेड नै भेटै। हेल्थ सेक्रेटरीक फोन हॉस्पीटलबला सभ नै उठबै। हमर कनियाँ कहियो घरसँ नै निकलल छलि, हाउसवाइफ। पता नै कतऽ सँ ओकरामे शक्ति आबि गेलै, केना हॉस्पीटलमे बेडक इन्तजाम कऽ लेलक, केना रेमडिजविरक इन्तजाम कऽ लेलक, पता नै। घर घुरा आनलक। एक मासक बाद हमहीं कहलिऐ जे आब कने ऑफिस जाय दिअ, देखि आबै छी। पहिने हम खाइमे कोनो परहेज नै करै छलिऐ, आब कनियाँ चार्ट दऽ देने अछि, भोरमे ई , बेरूपहर ई, दिनमे ई आ रातिमे ई। ओकर कोनो गप आब केना नै मानबै? हमर मामाक फोन आबै कनियाँ लग, लॉकडाउनमे आबि तँ नै सकै छल। कनियाँ मना केलकै, मुदा जबर्दस्ती अकाउन्टमे पचास हजार दऽ देलक। मुदा कम्पनी एक मासक दरमाहा काटि लेलक।“

गेस्ट हाउसमे एकटा निराशा आ एकटा आशाक स्वर, भारत दर्शन सन। कखनो समाचार भेटय जे महिन्दर भैयाक जमाय ग्रेटर नोयडामे हॉस्पीटलमे १४ म दिन समाप्त भऽ गेला तँ ऑफिसक कलीग घानेकर सेहो १४म दिन खतम भऽ गेल।

“यदि सातम दिन बोखार नै उतरल तँ बुझू जे कोरोना जीत गेल, आ अहाँक शरीर हारि गेल। आ तकर बाद ऑक्सीजन सिलेण्डर आ रेमडिसविर दुनू मात्र संतोख लेल छै। आब तँ ऑक्सीजन सिलेण्डरक बदला एकटा कंसेण्ट्रेटर सेहो आयल छै, अस्सी-अस्सी हजारक। मुदा एक तरहेँ ई बीमारी नीक छै, चौदह दिनमे ऐपार कि ओइ पार, केन्सर, बा किडनीबला बिमारीमे तँ घर-घराड़ी बिकेलाक बाद मृत्यु होइ छै बा जान बचै छै। मुदा सुनै छिऐ जे कोरोनाक वैक्सीन फाइनल स्टेजपर छै, मुदा डब्लू.एच.ओ. आ मेडिकल काउन्सिल दुनूमे एजेंट सभ छै, भारतक वैक्सीनकेँ देखबै फेल कऽ देतै। देखै नै छिऐ पहिने जखन मास्क नै बनै छलै तँ कहै छलै जे गमछे लपेट लिअ, आ आब कहै छै २-२ बा ३-३ टा मास्क पहिरू। टेलीविजनपर कहै छै रेमडिसविरक जरूरी नै छै, आ तखन ई गप हॉस्पीटलक डॉक्टरकेँ किए नै कहै छै, जे ओसभ सभकेँ दौगेने फिरबै छै? पहिने कहै जे साबुनसँ हाथ धोउ, आब कहै छै जे सेनीटाइजरसँ साफ करू। कखनो कहै छै स्टीरोइड जरूरी नै अछि, आ

सप्लाइ आबि गेलापर जरूरी भऽ जाइ छै। “

ऐ तेसर मास्क बला व्यक्तिक समर्थन निराश आ आस दुनू स्वरबला व्यक्ति केलक।

“सातम दिन बोखार नै उतरल तँ?”- हम पुछै छिऐ।
“तखन बुझू मृत्यु जीत गेल।”

३

छअम दिन छिऐ, बेटाक बोखार १०२-१०३ सँ घटिये नै रहल छै। कोरोना पोजिटिव अछि। ओ सभ नई दिल्लीमे आ हम नवी मुम्बैमे। इम्हर दिनेशजीक बेटा सेहो दिल्लीमे गुजरि गेलन्हि। ऑफिसक एकटा बड़का हाकिम संगे गेल कर्मचारी बत्रा हॉस्पीटलबला डॉक्टरसँ बकझक कऽ लेलकै, तँ बेडक भेल गप मना कऽ देलकै। फेर हुनका दिल्लीक बगलमे बहादुरगढ़मे भर्ती कएल गेलन्हि।
“मरि गेला, कोरोना निगेटिव भऽ गेल छला। सात दिनमे बोखार नै उतरलनि, जा कऽ उतरलनि बारहम दिन। ठीक भऽ रहल छला। मुदा लंग खतम भऽ गेल छलन्हि। हम देखने छिऐ एकटा एक्स-रे, जेना मूस कुट्टी-कुट्टी कऽ काटि दै छै तहिना कोरोना लंगकेँ कुट्टी-कुट्टी कऽ दै छै। कोरोना निगेटिव भैयो जायत तैयो जान नै बाँचत। सर, हमर छोट भाइ इण्डियन स्पाइनल इंजरीज सेण्टरमे अछि, मुदा कहि देने अछि जे बेड ओ नै दिआ सकत। हम देहरादूनक रस्तामे एकटा हॉस्पीटलमे बेडक इंतजाम कऽ लेने रही, जे सातम दिन जेहने बोखार नै उतरतै बहीनकेँ, दिल्लीसँ लऽ कऽ बिदा भऽ जायब। वएह बहीन जकर किरायेदार घर खालिये नै कऽ रहल रहै, जकरा चारि चमेटा दऽ कऽ हम सोझाँमे रिवाल्वर राखि देने रहिऐ जे जँ हमरा रहैत तूँ हमर बहीनक घर पचा लेमे, तँ सएह होइ ने जे हम जहर खा ली, खिस्सा सुनेनहिये तँ रही। मुदा छअम दिन बोखार उतरि गेलै।“- दिल्लीसँ एकटा परिचितक फोन आयल।
पत्नी चिन्तित छथि। मेदान्तासँ ऑनलाइन कंसलटेन्सी करबेलन्हि।

ओकर प्रेस्क्रिप्शन ह्वाट्सैपपर हमरो आ अपनो भौजी-भाय सभकेँ पठा देलखिन्ह। हमरो ह्वाट्सैपपर आयल। हरी भाइ, फुदो भाइ सभ कहलन्हि पठबैले। सभकेँ पठा देलियन्हि। असीन भाइ कहलन्हि जे वएह पुर्जा काज एलै, कतेको गोटेकेँ ओ देलखिन्ह, गामोक लोककेँ आ बाहरीयोकेँ, आ बादोमे। झंझारपुरमे सेहो, नई दिल्लीमे सेहो आ नवी मुम्बैमे सेहो पोजिटिविटी रेट ३३ प्रतिशत रहै, माने जँ ३ गोटे कोरोना टेस्ट करेलक तँ एक गोटेक पोजिटिव आ दू गोटेक निगेटिव रिपोर्ट आबै, माने एक तिहाइ लोककेँ कोरोना संक्रमित केने रहै। आ गाममे सभकेँ पटपटा देनै रहै बोखार, पूरा गाम दुखीत, गाम माने गामेटा नै, संगमे नवी मुम्बै, दिल्ली, नोयडा आ ग्रेटर नोयडा आ आनो आन ठाम रहनिहार गामक लोक। मुदा चारिये-पाँच दिनमे असली गाममे लोक सभ ठीक भऽ जाइ गेल, मुदा नवी मुम्बै, दिल्ली, नोयडा आ ग्रेटर नोयडा आ आनो आन ठाम वएह सभ जे बसौलक गाम ओतऽ सँ सभ दिन कोनो ने कोनो मृत्युक समाचार आबिये रहल अछि। गामसँ बेशी गामक लोक तँ आब ऐ सभ ठाम बसैए। नवी मुम्बैक बसाओल गामसँ लोक गाड़ी घोड़ाक आस छोड़ि पाँव पैदल बिदा भऽ गेला, अपन असली गाम दिस। रेडियो जॉकी कहि रहल अछि जे ई १९४७ क भारत विभाजनक समय भेल पलायनक बादक सभसँ पैघ पलायन अछि।

फुदोभाइ ठीक भऽ गेला। हरी भाइक बेटाकेँ १५ सालसँ किडनीक शिकाइत छलन्हि। हे आइ हे काल्हि, ओ खेप गेल, आ हरी भाइ ओकरासँ पहिनहिये कोरोनाग्रस्त भऽ सिधारि गेला।

-गाममे चारिये-पाँच दिनमे सभ ठीक भऽ जाइ गेलै? बेशीसँ बेशी छअम दिन धरि? सातम दिन तँ एक्को गोटेकेँ बोखार नै रहै। तेँ गाममे एकोटा घटना नै घटलै कि? ओतुक्का हबा साफ छै तेँ लंग (फेफड़ा) मजगूत छै।

हम एतऽ नवी मुम्बै मे लॉकडाउनमे छी आ ओतऽ नई दिल्लीमे ई अछि सातम दिनक राति। आइ सातम दिन छिऐ, बेटाक बोखार नै उतरल छै।

नई दिल्ली

१

नई दिल्ली।
३१ दिसम्बरक राति। आब एक तारीख भऽ गेलै। रतुका शिफ्टमे हम छी। कोरियासँ ऐल एकटा स्त्री हमरासँ पुछैए, ई नव एयरपोर्ट अछि की? हम कहै छिऐ- हँ। आ पुछै छिऐ- किए?
ओ स्त्री कहैए- नै, हमरा लागल, किएक तँ छह मास पहिने ऐल रही।
-हँ पहिने टर्मिनल दू पर अहाँ ऐल हएब, ई नव टर्मिनल छिऐ, टर्मिनल-तीन। नीक लागल अहाँकेँ?- हम पुछै छियन्हि।
-बड्ड नीक लागल। एयरपोर्ट नै, होटल सन लागि रहल अछि। इण्डिया आब मजगूत भऽ रहल अछि।- महिला बजै छथि।
रतुका शिफ्टमे हम छी। तखने गामसँ एकटा फोन हमर मोबाइलपर अबैए। हमर महिला सहकर्मी हँसी करै छथि- गामसँ फोन ऐल हेतन्हि, आब फेर ई मैथिलीमे गप करता, हम सभ भाषा बुझै नै छिऐ, मीठ भाषा छै, तेँ हमर सभक खिधांशो करैत हेता तँ हमरा सभकेँ पता नै चलत।
३१ दिसम्बरक राति छिऐ। आब एक तारीख भऽ गेलै। मुदा दुर्घटना बारह बजे रातिक पहिने भेल छलै। लहाशक जेबीमे मोबाइल रहै। तीन चारिटा अंतिम बेर डायल कयल गेल फोन नम्बरपर पुलिस ओही मोबाइलसँ फोन केलकै आ सूचना देलकै जे जकर फोनसँ पुलिस फोन कऽ रहल अछि, से आब ऐ दुनियाँमे नै रहल।
मध्य रात्रि। एक्स-रे मशीन आ स्निफर डॉगकेँ छोड़ि ऑफिससँ छुट्टी लऽ हम बिदा होइ छी।
ई एयरपोर्ट बाहरसँ कोनो सजल-धजल नवकनियाँ सन लागि रहल अछि। रातिमे बाहरसँ हमहूँ नै देखने रहिऐ ऐ नवकनियाँकेँ। ठीके कहै छल ओ महिला। होटले लागि रहल अछि, प्रकाशमे चमचमाइत।
गाड़ी आगाँ बढ़ि रहल अछि। नई दिल्लीक रोड एतेक चाकर केना भऽ गेलै। दिनमे तँ तीन मिनट प्रति किलोमीटरक गति रहै छै ऐ सड़कपर। मुदा रातिमे खाली रहने चकरगर लागि रहल अछि।

मुदा फेर जमुना-पार अबैए, नई दिल्लीसँ दिल्ली। रोड पातर होइत जाइए। भजनपुरा, खजूरी खास। दिनमे तँ गाड़ी एतऽ आबियो नै सकितय। बिजली सेहो कटि गेल छै। सड़कक दुनू कात गन्दा पसरल। गाड़ी गलीक कोनमे लगा कऽ आगाँ बढ़ै छी। गली पार कऽ हिलैत सिरही बाटे अमरक घर पैसै छी। कन्नारोहट उठल छै।

दिल्ली.. इण्डिया, मजगूत इण्डियाक राजधानी नई दिल्लीक ईहो एकटा इलाका अछि। कोरियन महिला एतऽ नै आबि सकत, भजनपुरा, खजूरी खास। भजनपुरा, खजूरी खास, एतुक्के लोक नई दिल्लीक चमचमाइत घर, ऑफिस, आ व्यापारक पाछाँ अछि, एकर सभक अगिला खाढ़ी भऽ सकैए फएदामे रहतै.. तइ आसमे जान अरोपने अछि।

पता चलैए जे लहाश गुरु तेग बहादुर अस्पतालमे राखल छै।

ओतऽ सँ बिदा होइ छी। बोल भरोस देबा योग्य परिस्थिति नै छै।

गुरु तेग बहादुर अस्पतालक मुर्दाघरमे मोहित बाबूक बेटाक लहास पोस्टमार्टमक बाद ओकर रक्तसम्बन्धीकेँ देल जेतै। पुलिस कहने रहय- पिता जीवित छथिन्ह तखन दोसराकेँ देबाक बाते नै छै, नै जिबैत रहितथिन्ह तखन देल जा सकै छल- उच्च न्यायालयक आदेश छै। पछिला बेर दऽ देल गेल रहै आ जखन असली रक्त-सम्बन्धी आबि कऽ केस कऽ देलकै तँ तीनटा पुलिसबला निलम्बित भऽ गेलै। आ कने काल लेल मानि लिअ जे पुलिस दैयो देत, मुदा डॉक्टर पोस्टमार्टमे नै करत। हम घर घुरि जाइ छी।

२

अमोदक घरमे हरबिर्रो उठि गेलै। दिल्लीसँ एक बजे रातिमे फोन ऐल छै, मोहित बाबूक बेटा अमर मरि गेलै। दिल्लीमे सड़क दुर्घटनामे मरि गेलै। अमोदक फोनपर फोन ऐल छै। अमोद मोहित बाबूकेँ केना की कहतै। तत्ता-सिहर कटा कऽ एक्केटा बेटा मोहित बाबूकेँ, चारिटा बेटीपरसँ। परुकेँ बियाह भेल छलै।

अमोद मोहित ककाक दरबज्जा लग पहुँचैए। हाक दैए। काकी अबै छथि। मोहित बाबू गाममे छथिये नै। बहनोइक मृत्यु-संस्कारमे भाग लैले

गेल छथि। अमोदकैँ ई गप काकी कहै छथिन्ह।
-से की भेलै एतेक रातिमे?- काकी चिन्तित भऽ पुछै छथिन्ह।
-नै भोरमे अबै छी। काज छल।
अमोद मोहित बाबूक घरसँ पुछारी कऽ बहरा जाइए। अमोद आगाँ बढ़ि जाइए।
सरवनक दरबज्जापर जाइए। हँ एकरे कहि दै छिऐ, काकीकैँ भोरमे कहि देतन्हि।
सरवन चौकीपर सूतल अछि। अमोद ओकरा उठाबैए आ सभ गप कहैए। सरवन भोरमे काकीकैँ कहि देतै आ काकाकैँ तखने फोन कऽ दइए।
भोरमे भरि गाम हाक्रोस ....। काकी तँ बताह भेल जाइ छथि। मोहित बाबूकैँ फोन गेलन्हि जे जहिना छी तहिना आबि जाउ, काकीक मोन बड्ड खराप छन्हि।
मोहित बाबू गामपर एला तँ दोसरे गप।
दिल्लीमे टोलक बड्ड लोक छै, मुदा पुलिस लहास ककरो नै देतै। रक्त-सम्बन्धीकैँ लहास भेटतै।
मोहित बाबू दिल्ली नै जेता, संताप देखैले नै जेता।
मुदा पुलिस लहास दोसराकैँ नै देतै।
मोहित बाबूकैँ पंडितजी भरोस दइ छथिन्ह। ओतऽ के केना दाह संस्कार करतै, से पण्डीजी संगे जेता।
साँझमे पटनासँ नई दिल्लीक ट्रेनमे रिजर्वेशन भऽ जेतै। विधायक जीसँ अमोद गप कऽ लेने छथि, टिकट कटा, रिजर्वेशन करा कऽ अमोदक भातिज टिकटक संग पटना जंक्शनपर भेटत। नई दिल्लीमे पीअर बच्चाक बेटा कार लऽ कऽ स्टेशनपर ऐत, करोलबागमे कैकटा दोकान छै पीअर बच्चाक बेटाक। ओ सोझे ओतऽसँ मोहित बाबूकैँ मुर्दाघर लऽ अनतन्हि ...
पण्डीजी आ मोहित बाबू पटनाक बस पकड़ै छथि। साँझमे नई दिल्लीक ट्रेन छै। काल्हि भोरमे मोहित बाबू नई दिल्ली पहुँचि जेता आ बेटा जे काल्हि धरि जिबिते रहै आ आइ जे लहास बनल नई दिल्लीक मुर्दाघरमे राखल छै- तकर मृत शरीरकैँ लेता।

३

ट्रेन आशाक नगरी नई दिल्ली पहुँचैबला छै, चिमनीक धुँआ आ फैक्ट्री सभ खतम भेलै आ बड़का-बड़का स्टेडियम, प्रगति मैदान आ की-की आबि गेलै। मोहित बाबूकेँ ई सभ बौस्तु पहिने नीक लागै छलन्हि। दिल्ली हाटमे गमैआ बौस्तु सभक स्टॉलपर बड़का गाड़ीबला सभ उतरि कऽ समान कीनै छल। मोहित बाबूकेँ हँसी लागै छलन्हि। गाममे ई सभ बौस्तु अनेरे पड़ल रहै छै, कियो किननिहार नै। ऐ परदेशी सभकेँ गामक लोक सभ एत्तऽ अनेरे ठकै छै।
मुदा आइ ई नई दिल्ली हुनका लेल मुर्दाघरक पता बनि गेल छन्हि। गुरु तेग बहादुर अस्पतालक मुर्दाघरमे हुनकर बेटाक लहास ओकर रक्तसम्बन्धीकेँ देल जेतै।
पिता रक्तसम्बन्धी बनि पहुँचैबला छथि।
मोहित बाबू मुर्दाघर पहुँचि जाइ छथि, पहिने बुझलो नै छलन्हि जे नई दिल्लीमे सेहो मुर्दाघर होइ छै, बिजली-बत्तीबला शहर नई दिल्लीमे.....

नई दिल्ली। के बसेलकै, केना बसेलकै। अंग्रेज जहिया कलकत्तासँ दिल्ली राजधानी बनेबाक विचार केलक तखन तँ एकोटा गामक लोक एतऽ नै हेतै।
आ आब ...
हम सोझे हॉस्पीटल पहुँचल छी।
मोहित बाबू पण्डीजीक संगे हॉस्पीटल पहुँचि जाइ छथि। हम भरि-पाँज मोहित बाबूकेँ पकड़ि कऽ बैसि जाइ छियन्हि। डॉक्टर कागचपर साइन लऽ लइ छन्हि। पोस्टमार्टम शुरू भऽ जाइ छै। मोहित बाबू हबोढेकार भऽ कानऽ लगै छथि।

-गामक छोड़ू कोन टोलक, कोन घरक लोक एत्तऽ नै छै। सड़क दुर्घटना सेहो भेल छै। मुदा बचि-बचि जाइ छलै। अमरो बचि जइतै तँ कत्ते नीक होइतै। अपंगो भऽ कऽ रहितै तँ देखबो तँ करितिऐ। पीअर बच्चाक बेटा कहलक जे कनियाँ सेहो कलकत्तासँ दिल्ली आबि गेल छै। हे कनियाँकेँ

आगि नै देबऽ देबै, डेढ़मासक बच्चा छै। बच्चा लीलो भऽ जायत। नै, हमहीं देबै आगि.. आन देबो करतै तँ अन्तिम दिन तँ उतरी कनियाँक गरामे आबिये जेतै। तेँ हमहीं देबै आगि। एह.. एक्कैसे बरखक तँ छै, छौंकी सन शरीर छै कनियाँक। चारिटा भाइ छै, सभ कलकत्तेमे, सभ एकरासँ पैघ। ओकर जीवन केना बिततै। ऐ बूढ़ शरीरसँ बच्चाकेँ हम केना पोसबै। कतबो धनीक रहै छै, नोकरी लेल पठबैते छै.. पीअरो बच्चा तँ पठेने छथि अपन बच्चाकेँ। ओकरासँ बेसी के छै धनीक गाममे? हमरा तँ दस कट्ठा जमीनो नै पुरत... रौ दैब... कहै छलिऐ जे हम नै जाएब नई दिल्ली...... संताप देखैले की जायब? मुदा कहलकै जे लाशे नै देत, पोस्टमार्टमे नै हेतै। आ आब आबि गेल छी तँ हमहीं देबै आगि।
-नै, से नै हएत, बाप कतौ आगि देलकैहेँ... अहाँकेँ अश्मसानघाटो नै जेबाक अछि। सभ पुरना गप बिसरि जाउ... ओकर बापसँ ने अछि मतान्तर, पितियौतकेँ देबय दियौ आगि... ऐ परिस्थितिमे पुरान गप बिसरि जाउ।
-नै, से भातिजक प्रति हमरा कोनो तेहन आन भावना नै अछि। ठीक छै... सुमनजी दौ आगि।
पोस्टमार्टम होइत होइत बेरूपहर भऽ जाइ छै। ओतऽ सँ पोस्टमार्टम कयल शरीर, पट्टीमे बान्हल, आंगन लेल पण्डीजीक निर्देशनमे बिदा होइत अछि।

४

एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक अन्तिम रातिक घटना, आ ओकर बादक दूटा भोरसँ साँझ।
एक्कैसम शताब्दी, मुदा नै छै कोनो अन्तर। पहिराबा आ पुरुखपातकेँ छोड़ि दियौ। महिलाक स्थिति तँ वएह, कनकनाइत बसातसँ बेशी मारुख।

हाड़मे ढुकल जाइत अछि। कमला कात नै यमुनाक कात। हजार माइल

दूर गामसँ आबि। मिज्झर होइत अछि खरड़खवाली काकीक श्वेत वस्त्र। साइठ साल पूर्वक वएह खिस्सा, वएह समाज, मात्र पहिराबा बदलि गेल, मात्र धार बदलि गेल।

पोस्टमार्टम कयल पट्टी बान्हल शरीर हॉस्पीटलसँ आंगन आनल गेल। पण्डीजी संगे आयल छथि, स्थितप्रज्ञ, कन्नारोहटक बीच, अपन काजमे लागल, निर्विकार भावेँ। गोपीचानन, गंगौट, माला, उज्जर नव वस्त्र, मुँहमे तुलसीदल, सुवर्ण खण्ड, गंगाजल, कुश पसारल भूमि, तुलसी गाछ लग आंगनमे, उत्तर मुँहे पोस्टमार्टम कयलन्हि शरीर। फेर ओतऽसँ यमुना कात बिदा भेल कटिहारी...
कनकनी छै बसातमे, हाड़मे ढुकि जाएत ई कनकनी, पोस्टमार्टम कयल शरीर आब राखल अछि, यमुना किनारपर, सातटा मोटका शिल्लपर। आब जड़त कनीकालमे, गोइठाक आगिसँ जे अनलन्हिहेँ सुमनजी, राखि देलन्हि नीचाँ।

कनकनाइत पानिमे डूम दऽ सुमन जी सेहो नव उज्जर वस्त्र पहीरि, जनौ, उत्तरी पहीरि, नव माटिक बर्तनक जलसँ, तेकुशासँ पूब मुँहे मंत्र पढ़ै छथि आ ओइ जलसँ मृतककेँ शिक्त करै छथि, वामा हाथमे ऊक लऽ आनल गोइठाक आगिसँ आगि लइ छथि, गोइठाक आगिसँ धधकबैत छथि, तीन बेर मृतकक प्रदीक्षणा कऽ मुँहमे आगि अर्पित होइत अछि। शरीरकेँ गति-सद्गति देबा लेल। आ कऽ देलन्हि अग्निकेँ समर्पित। तृण, काठ आ घृत संग।

सातटा शिल्लपर राखल ओ शरीर, अग्नि लीलि सुड्डाह करत कनीकालमे।

लकड़ी केना राखल जाए तइपर दू गोटेमे बहसा-बहसी भऽ रहल अछि। लगैए झगड़ा भऽ जेतै। पहिल गोटे कहि रहल छथि- एना लकड़ी नै तोपल जाइ छै, कतबो घी कर्पूर देबै आगि नै धरत। पण्डीजी दुनूकेँ शान्त करैत छथि, किछु काल आर।

सातटा शिल्लपर राखल ओ शरीर, अग्नि लीलि रहल सुड्डाह कऽ रहल।

एकटा परिवार फेरसँ बनत आ तीस बर्खक बाद देखब ओकर परिणाम। ताधरि हाड़मे ढुकल रहत ई सर्द कनकनी, ऐ बसातक कनकनीसँ बड्ड बेशी सर्द। सभ ऐ दिल्लीयेमे रहता, दिल्लीसँ लड़बा लेल एकरा नई दिल्ली बनेबा लेल। आ इण्डियाकेँ महाशक्ति बनेबा लेल, अपन प्रगतिक आशामे, अगिला खाढ़ी लेल एतेक तँ बलिदान देबैए पड़त, ई सोचैत।

कपास, काठ, घृत, धूमन, कर्पूर, चानन, कपोतवेश मृतक। पाँच-पाँचटा लकड़ी सभ दइ छथि।

कपोतक दग्ध शरीरावशेष सन मांसपिण्ड भऽ गेलापर, सतकठिया लऽ सातबेर प्रदक्षिणा कऽ, कुरहड़िसँ ओइ ऊककेँ सात छौ मारि खण्ड कऽ, सातो बन्धनकेँ काटि सातो सतकठिया आगिमे फेकि बाल-वृद्धकेँ आगाँ कऽ एड़ी-दौड़ी बचबैत नहाइले जाइ छथि, तिलाञ्जलि मोड़ा-तिल-जलसँ, बिनु देह पोछने, मृतकक आंगनमे सभ पहुँचै जाइ छथि।

फेर द्वारपर क्रमसँ लोह, पाथर, आगि आ पानि स्पर्श कऽ सभ घर घुरि जाइ छथि। डेढ़ मासक बच्चाकेँ कोरामे लेने मायकेँ छोड़ि, एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक दोसर साँझमे।

तस्कर

१

शालिग्राममे छिद्र होइ छै, कारी पाथर मात्र नर्मदामे भेटै छै। जमसम गाममे सभ किछु बदलल अछि, ग्रामदेवताक डिहबार स्थानसँ लऽ कऽ सभ ठाम मुदा किछु ने किछु लाक्षणिक वस्तु देखिये रहल छी। मुदा हमर गाथाक कोनो लक्षण एतऽ नै अछि।
गाछी आ बाध बोन सभटा पतरा गेल अछि। सए बर्ख। बिज्झू आमक ओ गाछी। बीहरि सभसँ भरल। भाँति-भाँतिक चिड़ै-चुनमुनी आ छोट पैघ जीव-जन्तु। नेना रही। जेठसँ अगहन खुरचनिञा लत्ती लग गप करैत हम आ मालती। कहियो फागुन-चैतमे जाइ तँ लवङलताक लत्ती लग गप करी। मलकोका, कुमुद, भेंट, कमलगट्टा कन्द, रक्ताभ बिसाँढ़क ताकिमे कादो-पानिमे घुमैत हम आ ओ। खुल्ले पएर, काँट-कूसक बीच तड़पान-तड़पि कऽ कुदैत। आमक कलममे सतघरिया खेलाइत। हम आ मालती। करबीरसँ बेढ़ैत अपन काल्पनिक-घर। एकहरा, दोहारा, जटाधारीक बीआ भरि साल जोगबैत मालती। मालती सेहो हएत हमरे बएसक। माय कहैत छलय जे मालती छह मासक जेठ छल हमरासँ मुदा पिता कहै छलथि जे छअ मासक छोट अछि मालती हमरासँ। आ पिता से किए कहै छलथि से बादमे जा कऽ ने बुझलिऐ।
भरि आमक मास आमक गाछीक दिनुका ओगरबाहीक भार हमरे दुनू गोटेपर छल। मुदा साँझ हेबासँ पहिने हमर मामा बछरू आ मालतीक बाबू खगनाथजी कलम आबि जाइ छला, रातिक ओगरबाही लेल। मुदा हमर सभक गाथाक कोनो लक्षण एतऽ सेहो नै अछि। हमर सभक माने केशव आ मालतीक।
मुदा ओइ पक्काक डिहबार स्थान लग कारी रंगक शालिग्राम हम ताकि रहल छी। छिद्रयुक्त शालिग्राम। एकटा नुका कऽ रखने छलौं एत्तै कतौ। गौँआ सभ धरि खूब खर्चा केने अछि ऐ डिहबार स्थानक मंडप बनेबामे। पहिने तँ किछुओ नै रहै। राजा जे बनेलक पोखरिक घाट आ तकर कातमे पक्काक मन्दिर सएह। मुदा बेचारो पूजा कैयो नै सकला। लाजक द्वारे

हमर ऐ गाममे आबियो नै सकला।

२

हम केशव, गाम मंगरौनी, नरौने सुल्हनी, पराशर गोत्र, कवि मधुरापतिक पुत्र। मालती- माण्डर सिहौल मूलक काश्यप गोत्री खगनाथ झा, गाम जमसमक पुत्री मालती।
खगनाथजी आ हमर मामा बछरूमे भजार लागल। जमसममे हमर मामा गाम। मामागाम धरि सुखितगर, हम सभ तँ दरिद्रे। से हम एक मास गरमी तातिल आ पन्द्रह दिन दुर्गापूजासँ छठि धरि मामेगाममे रहैत रही। गरमी तातिलमे सपेता पकबासँ लऽ कऽ कलकतिया आम पकबा धरि गाछी ओगरी। आ दुर्गापूजामे खष्ठीसँ लऽ कऽ भसान धरि दुर्गापूजा देखी। फेर दीयाबातीमे कनसुपती जराबी आ छठिमे गाम घुरि जाइ। आ बीच-बीचमे जाइत-अबैत तँ रहबे करी।
मालती संगे खूब झगड़ा सेहो होइ छलय। चौथामे रही प्रायः। गरमी तातिलमे मामा गामक आमक गाछी गेल रही। कोनो गपपर मालतीसँ रूसा-फुल्ली भऽ गेल। धरि बौसलक मालतीये। आ बौसबो केना केलक।
-हम अहाँसँ घट्टी मानै छी ओइ गपक लेल।
-कोन गप।
-जइ गपपर अहाँसँ झगड़ा भेल।
आ ओ गप नै हमरा मोन पड़ल आ ने मालतीकेँ। मुदा फेर मालतीसँ कहियो कोनो गपपर हम झगड़ा नै केलौं। वएह मुँह फुलाबए तँ हमही पुछिऐ जे कोन गपपर मुँह फुलेलौं से तँ मोन नहिये हएत तखन अनेरे ने झगड़ा करै छी।
गरमी तातिलक बाद दुर्गापूजा आ दुर्गापूजाक छुट्टीक बाद गरमी तातिलक बाट जोहै लगलौं। से कहियासँ, से की मोन अछि?

३

पिता गाममे बटाइ करथि। मिडिल स्कूलक बाद कोनो स्कूल नहिये रहै

आस-पड़ोसमे। संस्कृत पाठशाला सभ बन्ने भऽ गेल रहै।
से तातिल बला कोनो बात आब रहबे नै करै। भरि साल बुझू काजे आकि तातिले। नाना-नानी जिबिते रहथि। मायक लियौन कराबैले कियो ने कियो आबिये जाइ छलै। हमहूँ दू चारि मासमे मामा गाम कोनो लाथे भइये अबै छलौं।
गामपर कएक टा समस्या। नै जानि कोन भाँज रहै जे पाँजिक रक्षाक गप पिताक मुँहे सुनैत रहै छलौं। आ से हमर बियाह मालती संगे भेने टा सँ सम्भव, सेहो हुनका मुँहे उचरैत छलन्हि।
मालती हमर संगी मुदा ऐ गप-शपसँ ओकर हमर दूरी बढ़ि जकाँ गेल। जे सहजता हमरा आ ओकरा मध्य छल से खतम हुअय लागल। जेना ओकरा देखिते हमर मोनमे पत्नीक छवि नजरि आबऽ लागल छल, तहिना तँ ओकरो मोनमे ने अबैत हेतै।

४

हमर गाम ऐल रहथि बछरू मामा।
मधुरापति- "बछरू आब अहींक हाथमे हमर सभटा इज्जत अछि। खगनाथक पुत्री केशवक लेल सर्वथा उपयुक्त। सुन्दर सुशील अछि तँ केशव सेहो जबर्दस्त अछि। एक्के बतारीक अछि मुदा किछु दिनुका छोटे अछि मालती। हे, अहाँकेँ तँ ई बुझले अछि जे सात सय टाका लड़कीबलाकेँ दऽ हमर विवाह करा हमर पिता पाँजि बनाओल। मुदा आब जमीन जत्था नै अछि। काल्हि घोड़ीकेँ चिलम पिया ओइपर चढ़ि कऽ ऐल छला पञ्जीकार। साफे कहि देलन्हि जे मात्र खगनाथेक पुत्रीसँ अधिकारमाला बनैत अछि। आ से नै भेने पुबारिपार श्रोत्रियक श्रेणीसँ चुत भऽ जायब हम।"
बछरू- "हम पुछै छियन्हि खगनाथसँ। संगी तँ छथि मुदा हुनकर मोनमे की छन्हि से वएह ने कहता।"

आ ने जानि किए प्रेमसँ भरि गेल छल हमर मोन। बिदा भऽ गेल रही हुनका संगे।

५

मालती- “केशव। तोहर कत्तौ दोसर ठाम बियाह भऽ जेतौ तखन हमरासँ भेँट केना हेतौ।“
केशव- “आ तोहर ककरो दोसरासँ बियाह भऽ जेतौ तँ एहन अनर्गल प्रश्न सभ ककरासँ करमे?”
मालती- “मुदा एकटा गप बुझलहीं। काल्हि तोहर मामा हमर पितासँ हम्मर-तोहर बियाहक चरचा कऽ रहल छला।“
केशव- “तखन।“
मालती- “नै, सभटा तँ ठीके मुदा तखने दरभंगा राजाक दूत बनि एक गोटे आबि गेला आ कहऽ लगला जे राजाक समाद अछि।“
केशव- “राजाक कोन समाद?“
मालती- “कियेने गेलिऐ। मुदा हमर पिताकेँ ओ दूत कहलन्हि जे बेटीक बियाहक चर्च किछु दिन रुकि कऽ करबा लेल।“
केशव- “तोहर सुन्दरताइ तँ छौहे तेहने। राजोक नजरिमे तोरा लेल कोनो लड़का अभरल छै की?”
मालती- “कियेने गेलिऐ।“

६

राजाक मन्त्रीक सवारी खगनाथक दरबज्जापर! दुइये दिनमे की सँ की भऽ गेल। ओ दूत जा कऽ किछु कहि तँ नै एलै जे खगनाथ अपन बेटीक बियाह लेल धरफरायल छथि। से सतर्की देखियौ। लोक सभ गर्दमगोल करैत। सभ स्वागतमे जुटल। आ हमहूँ सभ चीजक जाएजा लैत रही। साँझ होइत-होइत हमर पिता सेहो आबि गेल छला। ओम्हर राजाक मन्त्रीक सवारी गेल आ एम्हर हमर पिता माथपर हाथ रखने गुम्म रहि गेला। खगनाथ सेहो मौन।
राजा अपन बियाह मालतीसँ करबाक प्रस्ताव खगनाथ लग पठेने छला। महाराज बीरेश्वर सिंह। कहू तँ। अपने चालीससँ उपरे हएत आ ऐ तेरह-चौदह बरखक बचियासँ बियाहक प्रस्ताव। खगनाथक की ओकाति जे

ओकरा मना करितथिन्ह।
हमर पिता चिन्तित जे आब पाँजि नै बाँचत।
ओइ दिन साँझमे कोनटा लग मालतीसँ हमर भेँट भेल। करजनी सन-सन आँखि फुलल, जेना हबोढ़कार भऽ कानल हुअय। की सभ गप केलौं मोनो नै अछि। हँ आखिरीमे हम कहने धरि रहिऐ जे सभ ठीक भऽ जेतै।

७

जमसममे बीरेश्वर सिंह लेल लड़की निहुछल गेल!
जमसम गाममे पोखरि खुनाओल गेल। ओतऽ मन्दिर बनल जे राजा दोसराक मन्दिरमे केना पूजा करता।
मुदा हमहूँ रही मधुरापति कविक पुत्र केशव।
बियाहक दिन लगीचे रहै आ दोसर कोनो दिन सेहो नै रहै। आ ओइ दिन मालतीसँ सभ गप भइये गेल छलय।
कटही गाड़ीमे आगूक चाप आ पाछूक उलाड़, आगाँक चाप नीक कारण पाछाँ उलाड़ भेलापर गाड़ी उनटि जेतै। मुदा हम ओहिना गाड़ीकेँ उलाड़ केने बँसबिट्टी लग मालतीक प्रतीक्षामे रही।
ओ आयलि आ गाड़ीपर बैसि गेलि। जे कियो रस्तामे देखय से डरे नै टोकय जे गाड़ी ने उनटि जाइ एकर। एकटा पतरंगी चिड़ै देखि उल्लसित हुअय लागलि मालती तँ आंगुरसँ हम ओकर ठोढ़ बन्न कऽ देलिऐ।
मालतीकेँ लऽ कऽ गाम आबि गेलौं, धोती रंगाइत छल। फेर जे मालतीक पता करबाक लेल ऐल रहय तकरा पकड़ि राखल। आ ’कन्यादान के करत’क अनघोल भेलापर ओकरा सोझाँ अनलौं जे कन्यादान यएह करत।
सलमशाही चमरउ जुत्ता उतारि धोती पहीरि हम विवाह लेल विध सभ पूर्ण केलौं। मालतीक सीथमे सिनुर हमरे हाथसँ देब लिखल जे रहै।

८

तकर बाद राजा बीरेशवर सिंह की करता?

पञ्जीकारकेँ बजा कऽ हमर नाममे तस्कर उपाधि लगबाओल। मुदा मधुरापति अपन पुत्रक प्रति गर्वोन्नत्त। बाघक बेटा बाघ। पाञ्जि आ पानि अधोगामी मुदा खगनाथ झा- श्रीकान्त झा पाँजि, तस्कर केशवक श्रोत्रिय ओइठाम विवाह कयलापर श्रोत्रिय श्रेणी विराजमान रहतन्हि।

आ सए बर्खक बाद आइ ऐ गाममे कोनो नाटक हेतै। सुल्ताना डाकू।

आ हम तस्कर केशव, मंगरौनी नरौने सुल्हनी- पराशर गोत्र, कवि मधुरापतिक पुत्र अपन गाथाक कोनो एकटा लक्षण एतऽ जमसम गाममे ताकि रहल छी। मुदा राजा बीरेश्वर सिंहक वएह पोखरि आ आब ढनमनायल मन्डिल देखै छी, बेचारो घुरि कऽ लाजे ऐ गाममे एबो नै केला। आ ई अछि ओइ पक्काक डिहबार स्थान लग कारी रंगक शालिग्राम, छिद्रयुक्त शालिग्राम, आ यएह पोखरि आ ढनमनायल मन्दिर अछि हमर प्रेमक अवशेष।

('The Robber'- English translation of this short story by the author himself was displayed in Diorama International Film Festival along with other two translated short stories of this collection viz. The Science of Words and The Proven Mahavir https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/)

संघर्ष

१

फाइलक गेँट, गरदासँ सनल। ओइमे सँ एक-एकटा कागच निकालि मुँहपर रुमाल राखि झारि रहल छी। ओइमे सँ किछु काजक वस्तु निकलैए, किछु बेकाजक। विधवा सोहागोक केस-मुकदमाक फाइल। मान-अपमानक खाता-खेसरा। आरोप-प्रत्यारोपक प्रकरणक क्रम। बूढ़ महिलाक युवावस्थाक खिस्सा, किछु सत्य, किछु मिथ्यारोप। पति आ पुत्रक जीवन। बेनग्न होइत हमर सभक सभ्यताक छाप। किए चानन घसने रहैए ई बूढ़ी। भगवान पर एतेक भरोस? ऐ उमेरमे बेटाक स्मारक बनेबाक जिद्द? हारि आ जीतक तारतम्यक बीच, एखन फेर एकटा दोसरे पेटीशन? जितबाक कोन अद्भुत लगन लागल छै ओकरा। हारिते रहल अछि भरि जिनगी, तैयो!

पहिने तँ कुमोनसँ मंडल सरक कहलापर ई काज हाथमे लेने रही। मुदा आब हमरो इच्छा भऽ गेल अछि, इच्छा ओकर पेटीशनकेँ यथाशीघ्र दाखिल करबाक। इच्छा ओकरा जितेबाक। ई फाइलक गरदा, गरदासँ सानल कागच-पत्तर सभ। डस्टसँ एलर्जी अछैत हम ऐमे घोसिया गेल छी। ऐ बुढ़ियाक हारिक नमगर फेहरिस्ट, तकर सोझाँ हमर अपन हारि सभक कोनो लेखा नै। एकरा जितेबाक जिद्दक आगाँ अपन अप्रत्यक्ष विजय देखाइत अछि। सोझाँ-सोझी विजय नै तँ ऐ बुढ़ियाक माध्यमसँ सम्भावित विजयक पेटीशन। हारत तँ ई बुढ़िया आ जे ई बुढ़िया जीतत तँ जीतब हम।

ई बुढ़िया धरि अछि अगरजित। ऑफिसमे सभसँ झगड़ा केने अछि। कार्यालयक क्यो गोटे एकर पेटीशन आगाँ बढ़ेबा लेल तैयार नै। मंडल सर मुदा एकर सभटा नखरा बरदास्त करै छथि। एकर बेटा हुनकर बैचमेट छलन्हि। नीक लोक छथि, सज्जन। कार्यालयक कनीय सदस्य सभसँ हमरा कहियो कोनो प्रतियोगिता नै होइए। मुदा उच्च पदाधिकारी सभसँ फाइलोपर आ ओहिनो किछु ने किछु होइते रहैए। मुदा मंडल सर नीक लोक। सज्जन। आ ऐ पेटीशनकेँ देबाक भार ओ हमरेपर छोड़ने

छथि। बुझल छन्हि जे अधिकारी सभ ओइ पेटीशनमे नेङरी मारत। आ तखन दोसर सभ बीचेमे पेटीशन छोड़ि भागि जाएत। मुदा हम तँ से भेलापर पाछू पड़ि जाएब आ तखन पेटीशन दाखिल भऽ सकत हमरे बुते। ई विश्वास छन्हि मंडल सरकेँ।
“अहाँपर सँ हमर विश्वास उठि गेल अछि । एक महिनासँ झुट्ठे घुमा रहल छी। अखन धरि पेटीशन नै भेल दाखिल कयल।”- बुढ़िया आइ लगा कऽ तेसर बेर ई सभ गप सुनेलक अछि आ चलि गेल अछि। पहिल बेर तँ हम मंडल सरकेँ कहबो केलियन्हि जे कोन फेरमे हम सभ पड़ल छी। ऐ बुढ़िया लेल जान-प्राण अरोपने छी। मुदा देखू, दस टा गप सुना कऽ चलि गेल। मुदा मंडल सर कहलन्हि जे- “नै यौ। समैक मारल अछि ई । जेहन लोक सभसँ आइ धरि एकरा भेँट छै, तेहने ने बुझत ई अपना सभकेँ।“

ई गरदा सानल फाइल सभकेँ मुदा आब घोंटि गेल छी हम, बुझू सोंखि गेल छी। आइ फेर बुढ़िया ई सभ गप कहि बहार भऽ गेल। हम आ मंडल सर एक दोसराकेँ देखि रहल छी। बिनु हँसने। पराजयक छाह दुनू गोटेक मुँहपर अछि।
“भऽ गेल अछि सर। ऐ शुक्र धरि पेटीशन दाखिल भऽ जायत।”
“मुदा अहाँक स्थानान्तरण भऽ गेल अछि, शुक्र दिन धरि अहाँकेँ जेबाक अछि।“
“कहलौं ने हम। भऽ जायत शुक्र दिन धरि। जेबासँ पहिने दाखिल कइये कऽ जायब। परिणाम तँ बादमे पता लागिये जायत।“
बिनु हँसने, बिनु तमसायल मुखाकृति लेने बहराइ छी।
कऽ देबै दाखिल एकर पेटीशन। हारत तँ ई हारत। जीतत जे ई, तँ जीतब हम।

२

सोहागो। गढ़ बलिराजपुरक बसिन्दा एकर परिवार। खेती-बाड़ी नीक, तरकारी बेचि नीक जमीन-जत्था बनेने। छह भाँएपर भेल छली सोहागो। पिताक दुलारि। माताक दुलारि। सभ भाँएक दुलारि। मुदा मात्र दस

बरख। फेर विवाह भऽ गेलन्हि। पतिसँ प्रेम छलन्हि वा नै छलन्हि, ई गप गरदा लागल कोर्ट फाइलमे नै लिखल अछि।

हुनकर नैहरक चर्च मात्र एक पैराग्राफमे खतम अछि। मात्र ई विवरण अछि जे पतिक मृत्यु भऽ गेलन्हि जखन हिनकर उमेर अठारह बरखक छलन्हि।

मुदा एकटा बेटा भगवानक कृपासँ मृत्युक पूर्व पति हुनका दऽ गेल छलखिन्ह। अठारह बरखक उमेर। एकटा बच्चा।

मुदा गरदाबला फाइलमे नहिये सासुरक कोनो लोकक आ नहिये नैहरक कोनो भाय-बन्धुक कोनो गबाही वा किछुओ भेटल। तइसँ ई लागल जे भाय सभ अपन-अपन परिवारमे व्यस्त भऽ जाइ गेल हेता। तखन सोहागोक ई बयान जे ओ नैहरक दुलारि छली! माय-बापक आ छह भाँएक? माय-बाप तँ चलू बूढ़ भऽ मरि गेल हेता, मुदा भाय सभ?

कष्ट काटि अफेलकैँ पढ़ेलन्हि-लिखेलन्हि सोहागो। बीस बरखक बेटा भेलन्हि तँ ओहो मृत्युकैँ प्राप्त केलक। नीक सरकारी नोकरी भेटले छलै। घटक सभ घुरिआइये रहल छलै। आठ बरखक वैवाहिक जीवनक बाद बीस बर्खक वैधव्य। आब पुतोहु अबितै आ नैत-नातिन संगे ओ खेलाइतय। मुदा तखने ई वज्रपात। मुदा हमर तँ तहिया जन्मो नै भेल छल हएत। नै? सत्ते। बुझू जइ बरख ऐ बुढ़ियाक बेटाक मृत्यु भेल छलै, तइ बरख हमर जन्म भेल रहय। आ तकरो बाइस बरख बीति गेल। बूढ़ी आब हमरा समक्ष अछि। ओकर बेटाक बैचमेट हमर मंडल सर। आ हम ओही पदपर छी जइ पदपर ओकर बेटा आइसँ बाइस बर्ख पहिने नोकरी शुरूह केने रहै। छह मास मात्र नोकरी केने रहय आकि...। शुक्र दिन धरि समय बाँचल अछि हमरा लग। की करू? ई बुढ़िया हहाएल-फुफुऐल अबैए। सरकारी कॉलोनीक गेटपर अपन बेटाक मूर्ति लगेबाक आग्रह लोक सभसँ करैए, कइएक बरखसँ। मुदा एकर झनकाहि बला स्वभावसँ, व्यवहारसँ लोक एकरापर तमसा उठैए। एकरा अर्द्ध-बताह घोषित कऽ देल गेल अछि। मुदा ऐ बेर तँ एकर काज किछु दोसरे तरहक छै। अही सप्ताह किछु करऽ पड़त। देखै छी।

३

“अफेलकेँ मरबाक रहितै तँ अहाँक रिवाल्वरसँ अपन माथपर किऐ मारितय। ओकरा लग तँ अपन सर्विस रिवाल्वर रहै।“
“श्रीमान्। हमर बेटाक हत्या कयने अछि जटाशंकर। हमर जीवन नर्क बना देलक। बीस सालक हमर तपस्या समाप्त कऽ देलक। एकरा सजाए देल जाय।“
“मुदा जज साहेब। जटाशंकर आ अफेलक अलाबे ओइ घरमे क्यो नै छल। हमर कानून कहैए जे दस दोषी बहरा जाय मुदा एकटा निर्दोषकेँ सजा नै भेटै। के गबाही देत जखन तेसर क्यो रहबे नै करै?”
“मुदा जज साहेब अपने कहि रहल छथि जे अफेल दोसराक रिवाल्वरसँ अपनापर गोली किए चलाओत? आ अपनापर गोली चलेबाक अर्थ भेल आत्महत्या। हमर बेटा हमरा असगर छोड़ि आत्महत्या कऽ लेत? किए करत ओ आत्महत्या?”
“जटाशंकरकेँ हिरासतमे लेल जाय...अगिला सुनवाई....।“
फाइल पढ़िते रही आकि बूढ़ी बिहाड़ि जकाँ आयलि।
“अहाँक चेलाक तँ ट्रांसफर भऽ गेल मंडल सर! सभ एक्के रंगक छी। हमर बेटाक मूर्ति कॉलोनीक गेटपर लागि जाइत तँ कोन अनर्थ भऽ जइतै। मुदा सभ अपन-अपन घर परिवारमे लागल अछि! जे गेल से गेल। अनका की कहू, हमर भाइये सभकेँ देखू। कहै लेल तँ छह टा....।“
हनहन-पटपट करैत ओ बहरा गेलि।
मंडल सर ओकरा-“सुनू। हिनकर ट्रांसफर भेल छन्हि मुदा एखन शुक्र दिन धरि रहताह...”- ई सभ कहिये रहल छला मुदा ओ भङ्गतराहि नै सुनलक। किए सुनत?
“की भेल? जाय दियौ। शुक्र दिन पेटीशन फाइल भऽ जेतै तँ ओकर तामस अपने ठंढ़ा भऽ जेतै।“

४

“कहू जटाशंकर। हमरा तँ अफेलक आत्महत्याक कोनो कारण नै बुझना

जाइए। ई सत्य जे ओइ मृत्युक गबाह नै अछि। मुदा ओइ कोठलीमे मात्र दू गोटे रहथि। अफेल आ जटाशंकर। आ अहाँक रिवाल्वरक गोली अफेलक माथमे गेलै।"

"मुदा जज साहेब। हमरा किछु सूचना भेटल अछि जइसँ हमर दिमाग घूमि गेल अछि। ओना हम ई सूचना सार्वजनिक करबाक पक्षमे नै छलौं कारण ऐसँ एकटा भूचाल आओत। मुदा जखन हमर क्लाइन्टपर फाँसीक सजाक खतरा घुरमि रहल अछि, हमरा लग एकरा सार्वजनिक करबाक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नै अछि।"

"ई कारी कोट पहीर फेर कोनो बहन्ना अनने अछि। हम गरीब लोक छी सरकार। हमरा कोर्टक तारीखपर आबयमे ढेर खरचा उठबऽ पड़ैए। एकरा सजा देनेसँ हमर बेटा घुरि कऽ तँ नै आओत मुदा ई फेर एहन काज नै करय से टा हम चाहै छी।"

"मुदा सोहागो देवीजी। ई केस कतेक माससँ चलि रहल अछि मुदा नहिये अहाँक परिवारक आ नहिये अहाँक सासुरक क्यो गोटे आयल?"

आगाँक आरोप प्रत्यारोपमे सोहागोपर चरित्रहीनताक आरोप लगाओल गेल रहै आ सिद्ध करबाक प्रयास कयल गेल रहै जे हुनकर पुत्र अपन मायक प्रेमी सभसँ आजिज आबि कऽ आत्महत्या कयने छल।

नेशनल लिटिगेशन पॉलिसी माने राष्ट्रीय मोकदमा नीतिक मानी तँ औसत मोकदमाक फैसला पन्द्रह सालमे होइ छै। सोहागोक फैसला सेहो पन्द्रहम सालमे भऽ गेलै, नहिये एक साल कम, नहिये एक साल बेसी। जटाशंकर बचि गेल रहय। आब तँ ओ रिटायर भऽ सरकारी पेंशन उठा रहल अछि।

५

बिहारशरीफक स्कूलसँ आ पटना स्कूल बोर्डसँ किछु कागच पत्तर आनि हम बूढ़ीक पेटीशन शुक्र दिन दाखिल कऽ दै छी।

पतिक मृत्युक बाद ऑफिस बला सभ सर्टिफिकेटक अभावमे ओकर जन्म तिथि पाँच साल घटा देने रहै, माने उमेर बढ़ा देने रहै। अंदाजेसँ, झमारल शरीर देखि कऽ। कोनो जानि बूझि कऽ से नै। पेंशन ऑफिसर

की करत, ऑफिसक हाल सएह छै।

एक गोटे जीवित रहबाक प्रमाण नै देने रहै तँ ओकर पेंशन एक साल रुकल रहलै। फेर जखन ओ जीवित प्रमाणपत्र दऽ देलकै तँ पेंशन तँ शुरू भऽ गेलै मुदा बकियौता एरियर नै भेटलै, कारण पछिला सालक जीवित प्रमाणपत्र फाइलमे नै रहै। हम कहबो केलिऐ जे रे बूड़ि, ऐ साल जीवित छै तँ पछिलो साल जीविते ने हेतै, तँ उत्तर देलक जे ई गप हम बुझै छी, तूँहूँ बुझै छिहीं मुदा सएह डॉक्टरकेँ लिखि कऽ दइमे की भऽ रहल छै। मुदा बात किछु आर छलै, ओ पेंशनर बकियौताक संग पचास हजार हर्जाना सेहो मांगि रहल रहै, बोर्ड कहलकै जे तखन जो कोर्ट। पन्द्रह साल ओकरो केस चलतै, किंसाइत।

मुदा बुढ़िया तइ जमानामे मैट्रिक छल। मैट्रिकक सर्टिफिकेटक जन्म तिथिक हिसाबसँ पाँच साल आर नोकरी छै। फाइलमे सर्टिफिकेट छै, मुदा सर्विस बुकमे एण्ट्री नै छै। फाइल आन व्यक्ति लग, सर्विस बुक आन व्यक्ति लग। कियो पुटपे नै केलकै। दू दशक पुरान गप, ओ कर्मचारी सभ के रहै, ओ फाइल कतऽ छै किछु थाहे पता नै। पेंशन ऑफिसर की करत? रिटायरमेण्ट सर्विस बुकक अनुसारे हेतै। ओकरो गलती नै छै। अपन नोकरी बचायत आकि सदाव्रत बाँटत। बोर्ड जेना जीवित प्रमाणपत्र बला केसमे निर्णय लेलकै, सएह जँ ऐबेर लऽ लइ तँ पेंशन ऑफिसर तँ मारल जायत। ओकरा फाइलक आधारपर नै सर्विस बुकक आधारपर निर्णय लेबाक छै।

मुदा सोहागो फेर केस लड़त तँ पन्द्रह साल लगतै। तेँ मण्डल सर बोर्डकेँ पेटीशन दियेलन्हि।

चलू, जे भेलै एकरा संग, देखी आब। अगिला साल रिटायरमेन्ट छै, जे पाँच साल बढ़ि जेतै तँ आर नीक। हमर ट्रांसफर तँ भइये गेल रहय से हम अपन झोरा-झपटा आ समान चीज-बौस्तु लऽ कऽ अपन नव गन्तव्य स्थलपर बिदा भऽ जाइ छी। कार्यालयसँ जाइत काल बुढ़िया भेटैत अछि, कल जोड़ने ठाढ़, जेना कहि रहल हुअय- धन्यवाद। हम ओइ काल्पनिक धन्यवादक उत्तर मोनेमोन दइ छी- काज भऽ जाय तखन ने?

६

कइएक साल बीति गेल। किछु व्यस्तताक कारणसँ आ किछु पेटीशन अस्वीकृत भऽ जेबाक सम्भावित सम्भावनासँ परिणामक प्रति उत्सुक नै रहै छी। मुदा मंडल सर एक दिन भेट जाइ छथि।
“ओकर पेटीशन स्वीकृत कऽ लेलकै विभाग। रिटायरमेंटक दिनसँ पहिनहिये आदेश आबि गेल रहै। आब ओ पाँच साल आर संघर्ष करत, सरकारी कॉलोनीक गेटपर अपन बेटाक मूर्ति लगेबा लेल वा ....वा आन कोनो संघर्ष। ”
आह! ऐ बुढ़ियाक जीतक बाद हमर अपन हारि सभक नमगर फेहरिस्टक आब कोनो लेखा नै। आब हमरो इच्छा भऽ गेल अछि। इच्छा जितबाक। सोझाँ-सोझी विजयक इच्छा, ऐ बुढ़ियाक माध्यमसँ भेल अप्रत्यक्ष विजयक बाद।

लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी

१

मुतालिफक पैघ-पैघ आँखि...कोर्टसँ जेल जाइत जालीबला बसमे सवार।
कोर्टक हाजतमे, दौगि कऽ जा रहल छी। ओतऽ सिपाहीकेँ मुतालिफ लेल खेनाइक पैकेट देलिऐ, ई आवश्यक छल, गिरफ्तारीक रातिक भोजन गिरफ्तार करैबला ऑफिसर दै छै, जेलर अगिला दिनसँ भोजन देतै।
..मुदा तखन ओहिना देने रहिऐ, फेर एकटा कर्मचारी कैदीक डाइट सेहो पैक करबा कऽ लऽ अनलक। सिपाही खेनाइक दुनू पैकेट दौगि कऽ बसमे मुतालिफकेँ देलकै।
चौंकल ओ..
ऐ नग्रमे क्यो ओकर नै.. भाषा सेहो नै बुझैए ओ ककरो; आ नहिये ओकर भाषा कियो आन बुझै छै। तमिल अछि। दिल्लीक तिहाड़ जेलमे राखल जेतै ओकरा। ओतऽ तमिलनाडु पुलिसक एकटा टुकड़ी छै, चार्ल्स शोभराजक जेलसँ भगलापर ऐ टुकड़ीकेँ बजाओल गेल छलै, ऐ दुआरे जे ओ सभ स्थानीय भाषा नै बुझै छलै से कोनो अपराधीसँ मेल-पेँच नै कऽ सकतै। मुदा फेर ई हाल भेलै जे दू मासमे ओ सभ स्थानीय भाषा सीख जाइ गेल।
तिहाड़मे मुतालिफ किछु बाजि सकत, ओकरा सभक संग। अपना लेल वकील रखबाक लेल ब्योंत धरा सकत।
चौंकल ओ.. ओ पलटि कैँ हमरा दिस तकलक जेना पुछि रहल हुअय जे अहाँ देने छी खेनाइक ई दोसर पैकेट? हम इशारामे कहलिऐ, हाथसँ इशारामे.. राखि लिअ.. दुनू हाथ जोड़ि कऽ ओ हमरा प्रणाम कयलक।

मुख्य अपराधी कियो आन छै..
जे खेनाइक पैकेट लेल धन्यवाद दैए, आँखिसँ धन्यवाद, से असल खिलाड़ी केना हएत?

कतऽ फँसि गेल छी।
ई अपराधी अछिये नै, कोनो मादक पदार्थक माफिया फँसा लेने छलै एकरा।
हमर सहयोगी मुतुलक्ष्मी मैडम मुतालिफसँ सूचना लइ छथि आ हमरा अनूदित कऽ सुनबै छथि।
चेन्नै बीचपर क्रिकेट खेला रहल छल मुतालिफ।
एक गोटा एलै, पुछलकै जे ओ कोनो रोजगार करैए?
जँ रोजगार करितौं तँ दिनमे चेन्नै बीचपर क्रिकेट खेलाइतौं?- मुतालिफ ई उत्तर देने रहै।
रोजगार चाही?- पुछने रहै ओ!
मुतालिफ लेखेँ तँ ओ भगवान रहै, अवतारी पुरुष जकाँ आयल रहै।
हमरा बुझल छल, मुख्य अपराधी कियो आन छै..

ओ अवतारी पुरुष छिऐ हबीबुल्ला, वएह ओकरा भेटै छै, एकरा पूछै छै... बेरोजगार छी? आ एकरा ओ काज दै छै, एकटा बैगमे प्रेशर कुकर आ ओइमे मर-मसल्ला!! प्रेशर कुकर दू टा चदराकेँ जोड़ि कऽ बनल रहै छै, ओही दुनू चदराक बीचमे नशाक पाउडर भरि कऽ उघै छल ई! हवाइ जहाजसँ एनाइ-गेनाइ, आ तइ परसँ एक बेर गेल-ऐल आ दस हजार टाका बैसले-बैसल भेटै छलै। एकरा किछु बुझले नै छै, बुझले नै छै जे प्रेशर कुकरमे की लऽ जाइ छल। आ मुख्य अपराधी छिऐ हबीबुल्ला..

हबीबुल्ला। मुतालिफक सूचनाक आधारपर चेन्नैमे ओकरा घरमे छापा पड़लै, किछु नै भेटलै। प्रायः सूचना लीक भेलै। आ हबीबुल्ला छुटि जाइए।
मुतालिफ पकड़ेने ड्रगक पाइक ओर नै भेटत।
मुतालिफक सरदार हबीबुल्ला अछि तँ हबीबुल्लाक सरदार के छी?

कोर्टक हाजतमे सरकारी वकील दौगल ऐल । ओ हमरा कहलक जे ई तमिल कैदी छी? ओ हमरासँ पुछलक जे ओ कैदी कोनो वकील केने अछि बा नै? हम कहलिऐ- नै। ओकरा हम अनुरोध केलिऐ जे मुख्य

अपराधी ई नै अछि, कोनो तमिल वकीलकेँ पकड़ू आ ओकरा कहियौ जे एकर केस लड़तै जमानत करबेतै। ओ वकील तमिले छल, ऐ तरहक बहुत मुकदमा लड़ल अछि। खास कऽ ओइ तमिल सभक, जे दिल्लीमे फँसि जाइ छथि, जिनका भाषाक संकट होइ छन्हि, ओ ऑफिसे ऑफिस घुमैत रहैत अछि ऐ तरहक केस लेल। मुदा ऐ केसमे ओ सरकारी ओकील छी, ओ तँ एकर पक्षमे नै बाजि सकैत अछि, मुदा अपन असिसटेण्ट ओकीलकेँ ओ ठाढ़ कऽ देत। ऐ तरहक मारते रास ओकील कोर्टमे, ऑफिसमे घुमैत रहैत अछि। एकबेर एकटा कथाक प्लॉट सेहो ओहने एकटा ओकीलकेँ सुनेने रही, कथाक प्लॉटेमे मारते रास कमी निकालि देने रहय ओ ओकील।

मुदा नार्कोटिक ड्रगक केस छिऐ, ओकील किछु नै कऽ सकत।

बरामदी तँ मुतालिफसँ भेलै। मुदा ई तँ शतरंजक गोटी अछि, पाँव-पैदल सिपाही। नार्कोटिक ड्रग्स केर केस छिऐ। मुतालिफ बीस सालक बाद जेलसँ बहरायत, से रोजगार देलकै हबीबुल्ला एकरा।

२

पाँव-पैदल।

हमरा गामक लुल्हा, पाँव-पैदल सभ साल बाबाधाम जाइए। हमरे गामक पीअर बच्चा हवागाड़ीसँ सभ साल बाबाधाम जाइ छथि। दुनू गोटे बीसो सालसँ लगातार बाबाधाम जा रहल छथि। लुल्हा बीस सालसँ महीसे चरा रहल अछि आ पीअर बच्चाक घरारीपर ऐ बीस सालमे कोठा-कोठामे भेले जा रहल छै। मुदा छोटे भाइक कहनाम छन्हि जे बाबू असल फल तँ पाँव-पैदल गेलेसँ होइ छै।

प्रवीण भाइ टीपि दै छथिन्ह, हँ तैँ ने लुल्हा बीस सालसँ महीसे चरा रहल अछि। आब छोटे भाइकेँ नै रहल होइ छन्हि। परुकेँ साल तँ ओ गेल रहथि बाबा धाम। प्रफुल्ल भाइ गामक बोलबम पार्टीक जमादार छथि। सभ साल पाँव-पैदल जाइ छथि। हुनकर बाबू सेहो जमादार छलखिन्ह। भोला भाइ डाकबम छथि, तीन दिनमे सुल्तानपुरसँ पानि भरि भोलाबाबाकेँ

चढ़ा दै छथि। प्रफुल्ल भाइ सभकेँ संग लऽ चलै छथि, जे निअम भंग करैए तकरा दण्ड लगबै छथि। पीअर बच्चा तँ तते ने मोटाएल छै जे ओकरासँ पाँव-पैदल जाएल हेतै हौ। हे, से नै कहियौ, तखन प्रफुल्ल भाइ की कोनो कम मोटायल छथि। मुदा बाबू, लोक की अपने चलैए, ओकरा तँ बाबा चलबै छथिन्ह।

अहूँ छोटे भाइ गपकेँ बड्ड नमारै छी। पीअर बच्चाक घरारीपर ऐ बीस सालमे कोठा-कोठामे भेले जा रहल छन्हि आ लुल्हा बीस सालमे महीसे चरा रहल अछि तइपर अहाँक कहनाम छल जे असल फल पाँव-पैदल गेलेसँ होइ छै। पीअर बच्चा तँ कहियो पाँव-पैदल बाबाधाम गेले नै छथि, तखन किए ओ कोठा-कोठामे केने जा रहल छथि आ लुल्हा तँ सभ साल पाँव-पैदल जा रहल अछि तखन किए ओ महीसे चरा रहल अछि।

छोटे भाइ खिस्सा आगाँ बढ़बै छथि।

-यौ, आँखिक देखल कहै छी। कोठा कियो बान्हि ने लिऐ, बाबू भोला बाबा मानै छथिन्ह लुल्हेकेँ।

-से केना यौ?

आ फेर वएह खिस्सा। लुल्हा रस्तामे पाछाँ छुटि गेल। प्रफुल्ल भाइ चिन्तित छलथि जे अजश हएत। सौँसे धर्मशाला ताकि लेलन्हि। लुल्हा केना पहिनहिये धर्मशाला आबि जायत? ओ तँ पछुआ जाइ छल। केना गाम घुरलापर लोककेँ मुँह देखेबै।

मुदा भोरमे देखै छथि जे लुल्हा धर्मशालाक कोठलीमे फोँफ काटि रहल अछि।

लुल्हा खिस्सा सुनबै छन्हि, चारू कात बोन रहै। हम हबोढ़ेकार भऽ कानि रहल छलौं। तखने एकटा दाढ़ीबला बुढ़ा ऐल आ चुप करेलक। पूछा-पूछी केलक आ माथपर हाथ रखलक। ओ भगवान रहथिन, अवतारी पुरुष जकाँ आयल रहथिन। आ लगैए निन्न आबि गेल।

निन्न खुजैए तँ देखै छी जे गौंआ सभक संग धर्मशालामे पड़ल छी।

हबीबुल्ला नै छी देश, पीअर बच्चा नै छी देश।

देश छी मुतालिफ।

देश छी लुल्हा।

३

ओइ केसक बाद हमर ट्रांसफर भऽ गेल। अही पाँव-पैदलक लोक सभक ताकिमे बोने-बोन फिरबाक ड्यूटी हमरा भेटल अछि।
लुल्हा सभ लग, मुतालिफ सभ लग पहुँचनाइ।
मुदा पीअर बच्चा सन लोकक सूचना इनकम टैक्सक लोककेँ दऽ दइ छी। ओ हमर काज नै। हमर तँ काज अछि, लुल्हा आ मुतालिफक माध्यमसँ हबीबुल्ला आ आगाँ धरि।

मीठ-मीठ बाजू आ पाँव-पैदल चलैबला लोक सभकेँ, लुल्हाकेँ, मुतालिफकेँ, अपन मीठ गपसँ बझाउ। ओकरा बुझाउ जे सरकार देश नै छिऐ। ओ छी ई देश। पाँव-पैदल बा शतरंजक सिपाही। ताशक राजा-रानी नै छी देश, देश छी ताशक गुलाम आ एक्का।

एकटा आतंकी पकड़ायल छलै।
-बहसक ट्रेनिंग सेहो अहाँकेँ भेटल अछि आ से खाली हमरासँ नै अपनो सिस्टमसँ करू।
-केना हमरा सभक काजक सूचना अहाँकेँ भेटैए? हम नै अहाँ गलत पक्षमे छी। हथियार उठेने छी। कतेक बच्चाक भविष्य खतम कऽ देलिऐ अहाँ सभ।
-कोन भविष्यक गप कऽ रहल छी अहाँ? अहाँ फैक्ट्री खोलि देबै तँ ओ दरबान बनि जायत। अहाँ रोड बना देबै तँ ओकरा ओइपर बाढ़नि बहारबाक नोकरी लागि जेतै!
-अहाँक लोक बेरोजगार युवाक ताकिमे रहैत अछि, समुद्रक किनारपर, जंगलमे, रेगिस्तानमे, जेकरा काज नै छै, रोजगार नै छै ओकरा अहाँ ठकि कऽ ऐ धंधामे लगा दइ छिऐ।
- अहाँक सिस्टममे निर्बलक सुनवाइ नै छै। मुदा तैयो ओइ सिस्टम लेल अहाँ जान अरोपने छी। की देलक अहाँक सिस्टम अहाँकेँ? अहाँक सिस्टममे जे हमरा सभले काज करैए से शहरसँ हिलबो नै करैए, आ अहाँकेँ बोनक पोस्टिंग दऽ देने अछि। अहाँ संगे अन्याय भेल अछि। आ

जखन अहाँ अपना संग भेल अन्याय नै रोकि सकै छी तँ हमरा सभकेँ कोना न्याय दिआ सकब?
-ई अहाँक मोनक भ्रम अछि, कोनो अन्याय नै भेल अछि हमरा संग। हमरा ऐ काज लेल चुनल गेल अछि।
- अहाँक दुरुपयोग कऽ रहल अछि अहाँक सिस्टम। आबि जाउ हमरा सभक संग, नोकरी ओत्तै करू मुदा ओतऽ रहियो कऽ हमरा सभक संग रहू। सोचू, समय लिअ...
हमरा तामस उठैए। बाजै छी- अहाँक दिमाग तँ नै खराप भऽ गेल अछि? हम एक सप्ताहसँ सभ दिन अहाँकेँ बुझेबामे लागल छी मुदा अहाँक अलगे खेरहा अछि। अहाँकेँ हँसी बुझा रहल अछि?
आ ओ हँसऽ लगैए। बाजैए- अहूँकेँ तामस उठैए ने? अहाँ हमरा एक सप्ताहसँ बिनु तमसेने बुझा रहल छी आ हमहूँ अहाँकेँ बुझाबऽमे लागल छी। अहाँकेँ संगठनमे उच्च पद देल जायत!
-हमर विभागमे किछु लोक भयसँ अहाँले काज करैत हेता, तइसँ अहाँक मोन बढ़ि गेल अछि।
-ओ सभ भय बा पाइसँ कीनल जा सकैत छथि, मुदा तैयो ओ सभ देल काज करबे करता, से विश्वास हमरा नै अछि। मुदा अहाँक हृदय हमरा सभक संग अछि, आ तँइ अहाँकेँ अपन संगठनक कोर ग्रुपमे लेबाक निर्णय लेल गेल अछि।

हम तामसे सबिख होइत आतंकीक ठोंठ पकड़ै छी। -निर्णय लेल गेल अछि? नि....र्ण....य..... लेल गेल अछि? हम आस्तेसँ गप कऽ रहल छी तँ....
-अहूँ मचण्ड छी, सरकारी मचण्ड। मुदा सिद्धान्तबला... ... हमरे सभ जकाँ... जकरा मचण्ड बनऽ पड़ै छै... आ तेँ ई निर्णय लेल गेल अछि...।

ओ खोंखी करैत हमर हाथसँ अपन कण्ठ छोड़बैत अछि आ कुर्सीसँ नीचाँ खसि पड़ैत अछि।

ट्रेनिङ हमरे सभक नै, ओकरो सभक होइ छै। मुदा एकर ट्रेनिङ पाँव-

पैदल सिपाही बला नै भेल छै, खाली मारि-धारि बला ट्रेनिङ। ई पाँव-पैदल आतंकी नै छी। एकरा लीडरशिप ट्रेनिङ देल गेल छै। हमर सभक सभ प्रश्नक उत्तर ओकरा लग रहै, हमर सभक प्रश्नावलीकेँ ओ एकरङाह सिद्ध कऽ देने छल! यएह तँ नै अछि....?

४

-कतऽ सँ ऐल छी? दिल्लीसँ तँ नै।
-नै, हम भारतक सिमानसँ ऐल छी।
-चीन, तिब्बत, पाकिस्तान, बांग्लादेश बा म्यांमारक सिमानसँ।
-नै, नेपालक सिमानसँ। सीताक देशसँ।
-मिथिकल खिस्साबला, फूसिबला देशसँ।
-नै, ई मिथिकल नै ऐतिहासिक भऽ सकैए। किछु खिस्सामे तोड़-मरोड़ कएल गेल हएत, मुदा इतिहास प्राचीन अछि। तेँ जिनकर इतिहास ओतेक प्राचीन नै तिनका नै अरघैत हेतन्हि।
-बहस, बहस। हथियारक ट्रेनिंङ अहाँकेँ भेटल अछि, रिवॉल्वर, पिस्टलसँ स्टेनगन धरिक ट्रेनिङ। अहाँक कार्यालयसँ सूचना भेटल अछि। कोनो सूचनाक अधिकारक अन्तर्गत नै, अहाँक सभ काजक सूचना एतऽ आबि जाइत अछि। हमरो बीच अहाँक लोक छथि तँ अहूँक बीचमे हमर लोक छथि।
-ई तँ बुझले गप अछि।
-मुदा तैयो अहाँ हथियार लऽ कऽ नै चलै छी। मिजोरमक लालडेंगा तँ हथियार लऽ कऽ चलै छला मुदा असामक परेश बरुआ कखनो हथियार लऽ कऽ नै चलै छथि। अहाँक देश दुनूसँ समझौता केलक।
-नै, परेश बरुआसँ समझौता नै भऽ सकल अछि।
-मुदा हुनकर संगठनक तँ अधिकांश गोटे समझौता लेल तैयार छथि। मुदा ई परेश बरुआ जे हथियार लऽ कऽ नै चलैए वएह टा तैयार नै अछि। तखन तँ हथियारबला सँ बिन हथियारबला बेशी खतरनाक भेल किने। अहूँ हमरा सभ लेल बेशी खतरनाक छी।
-देखू, एकटा मिजोरमक छात्र हमरा सङे इन्जीनियरिंगमे पढ़ै छलय। ओ

हमरा कहने छल जे लालडेंगा महान नेता छथि। ओइ काल लालडेंगा भूमिगत रहलाक बाद विदेश पड़ा गेल रहथि। देश हुनका आतंकी मानै छल। मुदा ओ एला, देशक सरकारसँ समझौता केलन्हि। सभ हथियार जमा कऽ देलन्हि। दुनू पक्ष समझौताक इमानदारीसँ पालन केलक आ आइ मिजोरम उत्तरपूर्वी भागक एकमात्र एहेन समझौता अछि, जतुक्का समझौता पूर्ण रूपसँ सफल अछि। मृत्युक पहिने लालडेंगा अपन राज्यकेँ शान्तिक पथपर छोड़ि गेला। ओ इन्जीनियरिङक छात्र ठीके कहै छल, लालडेंगा इज अ ग्रेट लीडर। ओइ छात्रकेँ सही ठहरेलन्हि लालडेंगा। महान नेता छथि। महान नेता अपन जनताकेँ बीच मझधारमे नै छोड़ै छै। डुबैत जहाजक कप्तान जकाँ ओ अन्तिम समय धरि जहाजपर रहैत अछि। जखन जहाजसँ सभकेँ सुरक्षित बहार कऽ दइए तखन ओ जहाजक मस्तूल संगे समुद्रमे जँ डूमऽ पड़ै छै तँ डूमि जाइए, जहाज छोड़ि, लोककेँ छोड़ि नै भागैए। जँ लालडेंगा समझौता केलन्हि तँ ओ ओइ जनताक भावनाक अनुरूप छल, जे हुनका महान बुझैए। जँ ओ मृत्युसँ पूर्व शान्ति समझौता नै करितथि तँ भऽ सकैए ओ इन्जीनियरिङक छात्र हुनकापर ओतेक गर्व बादमे नै कऽ सकितय। ओ जखन अखनो भेटैए, हमरासँ कहैए- देखलौं, हम कहै छलौं ने, लालडेंगा इज अ ग्रेट लीडर।

-हमरा ग्रेट लीडर बनबाक सेहन्ता नै अछि। हम सभ हथियार समर्पण कऽ दी आ तखन जँ सरकार हमरा संग धोखा करय?

-जँ लालडेंगा ई सोचितथि तँ की शान्ति सम्भव छल? आ सरकार अछि की? जे टेलीविजनपर अहाँ सभ देखै छी, से अछि सरकार? नै, ओइमेसँ बहुतोकेँ बुझलो छै जे देश लेल के के, की की कऽ रहल अछि? सभ विभागमे देशभक्त सभ भरल छै, दसे प्रतिशत किए नै होउ, आ ओकरे भरोसे ई देश छै। जे टेलीविजनपर अछि, मंत्री-संत्री, ओइमेसँ ककरा की बुझल छै? अहाँ बदलि सकै छी, ई मंत्री-संत्री बदलि सकै छथि, मुदा देश नै बदलत, सरकार नै बदलत। ओ समझौताक पालन करत।

हमर माथपर एकटा भारी डण्टा बजरैए आ ....।

५

हम जखन उठै छी हमरा लगैए जे हम होशमे आयल छी। किएक तँ किछु-किछु मोन पड़ैए आ लगैए जे हम बेहोश भेल रही आ फेरसँ होशमे ऐल छी। पाँव-पैदलसँ लऽ कऽ कतेक स्तरीय लीडरशिप एकाएकी आयल हमरा लग। एत्तौ संगठनमे पहिने छोटका फेर कने पैघ आ फेर आर पैघ हाकिमक श्रृंखला होइ जेना। एक मासमे ओ श्रृंखला खतम हेबाक नामे नै लऽ रहल अछि।
मुतालिफ सोझाँ अछि। हम तँ बिसरिये गेल रहिऐ।
अच्छा, तँ ई ओकर साम्राज्य छिऐ। दुभाषियाक माध्यमसँ ओ हमरासँ गप कऽ रहल अछि।
कोर्ट ओकरा बेल केना देने हेतै? नार्कोटिक ड्रग केसमे बेल केर विधान छैहे नै।

ओ कहैत अछि जे बिना ड्रगक धंधाक आतंकवाद सम्भव नै छै, ऐ लेल जतेक पाइ चाही से ड्रगक धंधेसँ अबै छै।
तँ की आतंकक सेहो सम्बन्ध छै ऐ ड्रगक कारबारमे? तँ की मुतालिफक आब प्रमोशन भऽ गेल छै? आब ओ ड्रगक कैरियर नै वरन् आतंकक खिलाड़ी बनि गेल अछि?

-तँ की अहाँ मुख्य खिलाड़ी छी? हमरा तँ लगै छल जे अहाँकेँ फँसाएल गेल अछि।
-की फर्क पड़ै छै? फँसाएल गेल खिलाड़ी बा मुख्य खिलाड़ीमे की फर्क छै? ओना देखबै तँ ऐ तरहक संगठनमे अस्सी प्रतिशत फँसाएल लोक छै, मुदा तेना फँसाएल गेल छै जे मुख्य खिलाड़ीसँ बेशी खतरनाक वएह छै। अहाँ पहुँचि गेलौं एत्तऽ, संयोग जे हम छी एत्तऽ, नै तँ बुझू जे की होइतय अहाँक? आब अहाँकेँ वएह करबाक अछि जे हम कहब। अहाँक लेटरबॉक्समे कोनो पत्र अबैए आ अहाँ बिदा भऽ जाइ छी बिनु हथियारक। आगाँ पत्र सेहो आओत, जेना ऐबेर आयल, सतर्क रहब। आ फेर....

६

हमरा फेरसँ होश ऐल अछि।
एकटा थानामे छी।
स्थानीय थानामे हम अपन पहचान कोड बतबै लेल एकटा फोन करबाक अनुमति मांगै छी। ओ किछु बुझि नै पबैए मुदा अनुमति दऽ दैए। फेर किछु कालक बाद ओकर हाकिमक फोन ओकरा लग अबै छै। ओ हमरा दिस नजरि गरा कऽ देखैए।

हम घरपर आबि गेल छी।
किछु मोन पड़ि रहल अछि। दुभाषियाकेँ मुतालिफ कहि रहल छल आ ओ हमरा कहि रहल छल। मुतालिफ कहि रहल छल जे हमर ई यात्रा व्यर्थ नै गेल अछि, हम कथा लिखै छी से बुझू ऐ यात्रामे एकटा कथाक प्लॉटे भेट गेल। मुदा मुतालिफ कहि रहल छल जे ओइ कथाक नायक मुतालिफ रहत। कोन एहेन काज ओ केने अछि जे ओकरा हम नायक बनेबै?
मुतालिफ कहै छल जे ओ जेलसँ निकललाक बाद हमरे सभ सन बनऽ चाहलक मुदा पुलिस थाना, पत्रकार ओकरा से नै करऽ देलकै। मुतालिफ कहै छल जे सिस्टम ठीक करबाक आवश्यकता अछि, नै तँ ...
किछु मोन पड़ि रहल अछि।
हमर यात्रा पहिल बेर निरर्थक सिद्ध भेल अछि।
मुतालिफ हमरा हरा देलक, हमर जान बकसि कऽ ओ हमरा हरा देलक।
चिकित्सालयमे सामान्य जाँचक बाद हम अपन घरमे हम आबि गेल छी।
बिन हथियारबला सैनिकक हारि, ई बिध सभ सिखने जा रहल अछि।
मुदा मुतालिफ ई किए कहलक जे बिना ड्रगक धंधाक आतंकवाद सम्भव नै छै, ऐ लेल जतेक पाइ चाही से ड्रगक धंधेसँ अबै छै।
हम तँ ड्रगक केश सोचि कऽ गेल रही। आ ई तँ कोनो आतंकवादसँ जुड़ल तार अछि।
तँ की मुतालिफ हमरा ई संकेत कूट भाषामे देलक।
आ जँ ओ मुख्य खिलाड़ी अछि तँ ओ ई किए कहलक जे फँसाएल गेल

खिलाड़ी बा मुख्य खिलाड़ीमे की फर्क छै?
किए बनेबै ओकरा हम अपन कथाक नायक? ई तँ ओकरो बुझल छै जे खाली हमर जान बकसि कऽ ओ नायक नै बनि सकत।

मुतालिफकेँ मुक्ति चाही?
'आगाँ पत्र सेहो आओत, जेना ऐबेर आयल, सतर्क रहब।'- ई किए कहने छल मुतालिफ?

७

ऑफिस जाइ छी। ओ आतंकी लीडर जेलमे अछि। ओतऽ ओकरासँ पूछताछले कोर्टक परमिशन चाही। सरकारी ओकील परमिशन लऽ लेत, से खूबी छै ओकरामे, कने चुश्त-चलाक अछि मुदा से खूबी छै।

-एतऽ कैमरा लागल छै। ई अहाँक ऑफिस नै छी जे ककरो ठोंठ पकड़ि लेबै, ई जेल प्रशासन छिऐ। एतऽ कैदीक पढ़बा-लिखबासँ लऽ कऽ खेलबा कुदबा धरि सभ तरहक इन्तजाम अछि।
-से मर्डरर आ आतंकी लेल, चोरि-चकाड़ी बला सभक हाल देखू।
-मुदा ई दिल्लीक तिहाड़ जेल नै छिऐ। ई छोट नग्र छिऐ, चारू दिस बोन छै, आ जेलरकेँ जेलक बाहर सेहो निकलऽ पड़ै छै, दोकान-दौरी करै लेल।
-तँ अहाँ ओकरा डरबै छिऐ?
-से तँ अहाँक सिस्टम अछि जइले अहाँ जान अरोपने छी। तइ लेल हम तँ कत्तौसँ जिम्मेदार नै छी ने? अहीं जकाँ ईहो ऐ दूर प्रदेशमे ट्रान्सफर भऽ कऽ आयल अछि। बा एकरा चुनल गेल छै! मुदा ई अहाँ सन जिद्दी नै अछि।
-तँ एकरो अहाँ अपन संगठनमे शामिल करबै? ईहो निर्णय अहाँ लऽ लेने छी?
-नै, ई मेडियोकर अछि। हमरा संगठनमे एक्कोटा मेडियोकर नै भेटत।
- एकटा मिजोरमक छात्र हमरा सङे इन्जीनियरिंगमे पढ़ै छलय। ओ हमरा

कहने छल जे लालडेंगा इज अ ग्रेट लीडर।
-सुनल अछि हमरा ई खिस्सा, सभकेँ अहाँ सुनबै छिऐ। हमरा ग्रेट लीडर बनबाक सेहन्ता नै अछि। मुदा अहाँ हमरे सभ जकाँ सोचै छी, मुदा गलत पक्षमे छी।
-अहाँकेँ ई खिस्सा के सुनेलक?
-एक मासक बाद अहाँ आयल छी, देखनहिये हेबै? लागल हएत जे संगठनक सभ सदस्यमे करेण्ट प्रवाहित भऽ रहल होइ, मेडियोकरक कोनो स्थान नै। आ तेँ अहाँकेँ संगठनमे शामिल करबाक निर्णय लेल गेल रहै, मुदा तइ सूचनासँ अहाँ तमसा गेल रही। आ तेँ अहाँक लेटरबॉक्समे ओ चिट्ठी आयल रहय।
-अच्छा तँ ओ अहाँक संगठन अछि? अहाँक राज अछि ओतय, मुतालिफ अहाँक ऊपर अछि बा नीचाँ?
-हमरा संगठनमे कियो नीचाँ बा ऊपर नै छै। सभक दरमाहा एक्के रङ छै, कोनो काज छोट पैघ नै छै, तेँ कियो कम-बेशी काज नै करैए।
-अहाँक रिमाण्ड लेमय पड़त। ऑफिसेमे अहाँक बकार खुजत, एतऽ सी.सी.टी.वी. कैमरा लागल छै तेँ ...।
हम उठि कऽ बिदा होइ छी।
-आइ साँझमे अहाँक लेटरबॉक्समे एकटा आर चिट्ठी ऐत।
हम अनठाबै छी तँ ओ फेर चिकड़ि कऽ कहैए- ऐ बेरुका चिट्ठी पछिला बेर सन नै रहत जकर पाछाँ अहाँ हमर संगठनक दर्शन केलौं। ओ चिट्ठी जाल छल, मुदा ई चिट्ठी अहाँक नियुक्तिपत्र रहत।

८

एथीना आ पर्सी, हमर दुनू बिलाड़िकेँ गोली लागल छै, दुनू मरि गेल। बेटा कानि रहल अछि। लेटरबॉक्समे चिट्ठी आयल अछि, हम चिट्ठी पढ़ै छी। हमर एक्सीडेण्ट भेल छल, पैटरनिटी लीवपर जाइ बला छलौं। लोक सभ कहै छल जे एक्सीडेण्ट करबाओल गेल छल, मुदा हमरा किछुओ मोन नै अछि। जखन बेहोशी टूटल रहय तँ लोक सभ बाजि रहल छल जे एकटा आर पैसेन्जर कारमे अछि, जिबिते अछि। सभ निकाललक, टाटा

मेन हॉस्पीटलमे भर्ती करबेलक। एम्हर हम्मर ऑपेरेशन आ ओम्हर कनियाँक डिलेवरीक डेट, दुनू दू नग्रमे। कनियाँकेँ सभ कहने रहै जे छोट एक्सीडेण्ट छै, मुदा फेर बात-बातमे पता चललै जे ऑपेरेशन हेतै, पएरमे स्टीलक रॉड देल जेतै। ओ कानय लागलि। अगिला दिन सार फोनपर हमरासँ गप करेलनि, हम कनियाँकेँ कहलिऐ जे अमिताभ बच्चनकेँ शहंशाह फिल्ममे हाथमे स्टील रहै, हमर पएरमे रहत। ओ सहज भेली, बादमे सार फोनपर कहलन्हि जे अहाँ की कहि देलिऐ जे ओ मुस्की देलक आ खेनाइ पीनाइ शुरू कऽ देलक। डिलेवरीक डेट अही सप्ताहक छै। हमर ऑपेरेशन काल्हि हएत, मुदा सारकेँ कहलियन्हि जे हमर ऑपेरेशन परसू हएत, कनियाँकेँ सएह कहल गेल। अगिला दिन ओ निश्चिन्त रहथि। साँझमे जखन हम अनेस्थीशियासँ बाहर निकललौं तँ कनियाँकेँ फोन केलियन्हि जे ऑपेरेशन भऽ गेल। कोनो तरहक चिन्ता नै करबाक अछि। सप्ताहान्तमे डिलीवरी भऽ गेलै। यएह बेटा एथीना आ पर्सी लेल कानि रहल अछि।
मुदा शोनितक टघार?
हम साल भरि बिछाओनेपर रही। बैशाखीसँ बाथरूम जाइ। बेटाकेँ अही बीच माथमे घा भऽ गेलै। बिछाओनपर सुतेलासँ घा दुखाय लागै छलै। अपना पेटपर ओकरा पेट भरे सुता लै छलिऐ। एक्को मिनट नै लागै छलै, सुति जाइ छलै। घण्टो सुतल रहै छलै, हम हिलितो नै छलिऐ। जखन ओकर निन्द पूरा होइ तखन ओ उठैत छल। तखन हम हिलैत छलौं। शोनितक टघार, एथीना आ पर्सीक तँ नै। दू गोटे भागि रहल अछि, साइलेंसरबला बन्दूकसँ एकटा गोली निकलल, आ हमर बेटा...

ऑफिसक एक गोटेक बेटा स्कूलसँ आपस नै एलै, एक सप्ताहक बाद ओकर स्कूलड्रेस आ बैग पार्कमे कियो छोड़ि गेलै। पाँच साल भऽ गेलै। ने बच्चा भेटलै, ने ओकर लाश।

बेटा कने पैघ भेल तँ ओकर एकटा दोस्त रहै मनसा, बड्ड सुन्दर, सरदारजीक बेटी, ओकरे संगे प्ले स्कूलमे पढ़ै। एकटा बच्चा हमर बेटाकेँ गन्दा बच्चा कहि देलकै, मनसा ओकरापर तमसा गेलि, हमर दोस्तकेँ

गन्दा केना कहि देलैँ? बेटाकेँ पुछलिऐ की भेल? अहाँ ओइ बच्चापर किए नै तमसेलौं? मुदा बेटा हमर बालगुरु। कहलक, ओ बच्चा हमरा नै चिन्है छलय, तेँ हमरा गन्दा कहलक।

हमर बेटाक देहक शोनित आ एथीना आ पर्सीक शोनित मिज्झर भऽ गेल अछि। बिन एथीना आ पर्सीक हमर बेटा केना जीअत, एक पल पहिने हम से सोचि रहल छलौं। बिनु बेटा हम केना जीअब आब हम सोचि रहल छी। पत्नी काठ भेल छथि। एथीना आ पर्सीकेँ कनियाँ वेटेरिनरी हॉस्पीटल लऽ जाइ छथि, आ बेटाकेँ हम मनुक्खक हॉस्पीटल लऽ जाइ छी, ब्रॉट डेडक सर्टिफिकेट लेबाक लेल।
तीनटा लहाश अग्निकेँ समर्पित।

९

-नियुक्ति पत्र भेट गेल?
-भेट गेल।
-अहाँक की निर्णय अछि, दूटा बिलाइ हम कीनि कऽ दऽ देब। अहाँक बेटाकेँ ऐबेर गोली छू कऽ निकलल अछि, सएह आदेश छलै। अगिला बेर की हएत से अहाँक निर्णयपर निर्भर अछि।
-नियुक्ति हमरा स्वीकार्य अछि, हमर बेटाकेँ किछु नै हेबाक चाही मुदा।
-किछु नै हएत, अभयदान अछि।
-हमरा की करय पड़त।
-हमरा संगे अहाँकेँ चलय पड़त। स्वाङ करय पड़त जे हम अहाँकेँ हथियार छीनि कऽ अपहरण कऽ लेने छी।
-अहाँ अप्पन अड्डा हमरा देखा देब?
-देखा देब, आब तँ अहूँ अपने लोक भऽ गेलौं।

हम कहियो हथियार नै राखै छलौं, मुदा आइ पिस्टल इशू करबेलौं। ओ आतंकीक लीडर हमरासँ पिस्टल लेलक, हमर माथपर लगेलक। जेलर गार्ड सभकेँ किछुओ करबासँ मना केलकै, बाहरमे ओकर लोक गाड़ी

लेने तैयार।
पहुँचि जाइ छी जंगल मध्य। हम, ओ आ मुतालिफ।

की ओ मुख्य खिलाड़ी अछि? तँ ओ ई किए कहने रहय जे फँसाएल गेल खिलाड़ी बा मुख्य खिलाड़ीमे की फर्क छै?
मुतालिफकेँ मुक्ति चाही?
ओकरा चाही बा नै हमरा चाही।
किए बनेबै ओकरा हम अपन कथाक नायक? किछु तेहेन काज करत तहन ने। ओकरा हमर बेटाक मृत्युक सूचना अवश्ये भेट गेल हेतै, निशाना ठीकसँ नै लगेलकै ओकर लोक।
आ आब ओ की करत तइपर हम निर्णय लेब जे ओ नायक बनत हमर कथाक बा नै। हम बिनु हथियार ठाढ़ छी ओकर निर्णयक प्रतीक्षामे।

डोमा, बुधन आ...

१

बुधनक छोटका भाय सभ जनमिते मरि जाइत रहन्हि।

से बुधनक एकटा छोटका भायकेँ माय-बाप जनमलाक बाद डोमक हाथसँ बेचलन्हि आ फेर पाइ दऽ कऽ किनलन्हि । ई सभटा काज ओना तँ सांकेतिक रूपेँ भेल मुदा ऐसँ ग्रह कटित भऽ गेलै। आ छोटका भाय जे बुधन पासवानसँ बारह बर्ख छोट रहन्हि बचि गेल।

आ तइ द्वारे ओकरा सभ डोमा कहि सोर करऽ लागल ।

बुधन अपन बाप-मायक संग हरवाही करथि मुदा भायकेँ पढ़ेबाक बड्ड मोन रहन्हि ।

'सुनै छिऐ जे हमरा सभमे कनिओ पढ़ि-लिखि लेलासँ नोकरी भेटि जाइ छै। एकरा जरूर पढ़ेबै, चाहे तइ लेल पेट काटऽ पड़य बा भीख मांगऽ पड़य।'

भीख तँ नै मांगलन्हि मुदा चण्डीगढ़क रस्ता धेलन्हि बुधन।

हे हम डोमाकेँ पढ़ा लिखा कऽ किछु बनबऽ चाहै छी।- बुधन पासवान मोने- मोन बजला । चण्डीगढ़मे आब ओ रिक्शा चलबै छथि । आब गाममे खेती बारीमे किछु नै बचलै। भरि दिन रिक्सा चलाबथि आ साँझमे जखन दोसर संगी-साथी सभ देसी ठेकामे अपन ठेही दूर करैले जाथि तखन दस तरहक गप सुना कऽ बहन्ना बना कऽ बुधन अपन घर दिस घुमि जाथि।

“की रे मीता। बामा-दहिना करै छेँ, निन्नी नै होइ छौ। “

” नै रौ भाइ। भरि दिन तँ बाइ मे रिक्सा घिचैत रहै छी मुदा साँझ होइते अंगक पोर-पोर दुखै लगै-ए। “

“रौ भाइ। कहै छियौ जे ठेकापर चल तँ दस बहन्ना बना कऽ घुरि जाइ छिहीँ। देख हमरा आउर केँ, पीबि कऽ फोँफ कटैत रहै छी। एक्के निन्नमे भोर आ सभ ठेही खतम।“

कोरइलाक सभ गप सुनि कऽ गुमकी लाधि दइ छथि बुधन। मोनमे ईहो

होइ छन्हि जे किंसाइत डोमा पढ़त आकि नै पढ़त। जँ आइ कहि देबै जे डोमाक पढ़ाइ लेल ई सभ कऽ रहल छी आ जँ ओ नै पढ़लक, नै किछु बनल तखन?
तखन जे आइ सभ गप पेटसँ निकालि देतथि तँ यएह सभ संगी-साथी सभ काल्हि भेने अही गपकेँ लऽ कऽ हँसी करतन्हि। दू चारि-टा पाइ जे बचत तकरा गामपर पठायब। आ तइसँ डोमा पढ़त।

मुदा गाममे जे स्कूल रहय ओतऽ एक्को टा दलित आकि गरीबक बच्चा नै पढ़ैत रहय।

सरकार एकटा योजना चलेलक, दलितक बच्चा सभकेँ बिना पाइ लेने किताब बाँटबाक । किताब लेबाक लेल घर-घर जा कऽ यादव जी मास्टर साहेब बच्चा सभकेँ स्कूल बजेलन्हि। नाम लिखलन्हि, बिना फीसक, मासूलक। सभ हफता-दस दिन एबो कएल स्कूल। दुसधटोलीसँ, चमरटोलीसँ, धोबिया टोलीसँ सभ। डोमा सेहो। सभकेँ किताब भेटलै आ सभ सप्ताह-दस दिनक बाद निपत्ता भऽ जाइ गेल। देखा–देखी कमरटोली आ हजाम टोलीक बच्चा सभ सेहो एला पढ़ैले, किताब मंगनीमे भेटबाक लोभे । मुदा ओतऽ ई कहल गेल जे अहाँ सभ पैघ जातिक छी, मुफ्त किताब योजना अहाँ सन धनिकक लेल नै छै ।

“बाबू ई काटैबला गप छै की, छोट-छोटे होइत छै आ पैघ-पैघे । स्टेटक आइ धरिक सभसँ नीक चीफ-मिनिस्टर कर्पूरी ठाकुर भेल छै, की नै छै हौ असीन झा।“, जयराम ठाकुर अपन खोपड़ीक टूटल चारसँ हुलकैत सूर्यक प्रकाशक आसनीपर असीन जीक केश कटैत बजला।
-से तँ बाबू ठीके।
से गाममे फेर ब्राहाण आ भूमिहारकेँ छोड़ि आन कियो स्कूलमे पढ़ैबला नै बचल । अदहरमे सभटा किताब ई लोकनि किनैत गेला ।
-हे अदहरसँ बेसीमे नै देब, मानलौं किताब नव अछि, मुदा अहाँ सभकेँ तँ मंगनीयेमे ने भेटल अछि।

आ दुसध टोली, चमरटोली आ धोबिया टोलीसँ सभटा किताब सहटि कऽ निकलि गेल ।

आ पता नै डोमा पढ़लक आकि नै।

२

आ डोमा गामेमे रहि मास्टर बनि गेल।
आ बुधनक बेटा चण्डीगढ़मे पढ़ाइ लिखाइ केलकन्हि।
आ बुधन घुरि कऽ आपस आबि गेला गाम।

३

अमेजनक लोजिस्टिक टीमक उत्तरी परिक्षेत्रक हेड केर रूपमे भेँट भेल बुधनक बेटासँ, गुरुग्राममे।
ओहो हमर चर्चा सुनने रहथि आ हमहूँ हुनकर।
हमर मोन भोथिया जाइत अछि, तकर जिगेसा सेहो करैले आयल रहथि।
हुनका बुझल छलन्हि जे हमरा कोनो खिस्सा ओ सुनेता तखने जा कऽ हमरा किछु मोन पड़त ।
ओना झलफल-झलफल भऽ रहल छल, हुनकर चर्चा सुनने रही, मुदा.. छोड़ू झलफले रहि गेल मोन नै पड़ल।
-हमर पिताजी अहाँक पिताजीक खिस्सा कहने छथि।
हम अखियासै छी जे कोन खिस्सा सुनेता- 'हमर पिताजीक मृत्यु १९९५ मे भऽ गेलन्हि।'
-कहाँदन भोजमे हमर पिताजी भोजक भात लाड़ि रहल छला तँ मिसरटोलीक जगन्नाथ कहलखिन्ह जे- रौ तोहर छूअल कियो नै खइतौ, मुदा घरे अकबाली छिऐ से के बाजत?
-हँ, हमहीं लाड़ैले कहने रहियन्हि, हमरा बुते नै भेल रहय लाड़ल तेँ।
-आ ईहो जे अहाँक मामाकेँ हमर कक्का पानि देने रहथिन्ह तँ ओ बाजल रहथि जे तूँ अनने छेँ? तँ हमर कक्का दबाड़ि कऽ कहने रहथिन्ह जे चुपचाप पीबि लिअ। आ अहाँ दिस इशारा केने रहथिन्ह आ कहने

रहथिन्ह जे हिनकर बाबूजीए हमर सभक पानि चला कऽ गेल छथिन्ह।
-हँ, आ तखन मामा कहने रहथिन्ह जे ला ने, हम मना कहाँ केने छिऔ, हमर बहिनौए पानि चला कऽ गेल छथुन्ह, से तँ बुझले अछि। आ आब तँ ओ दुनियोँमे नै छथि आ हुनके काज तँ छिअन्हि।
-मोन पड़ि गेल?
-हँ, पुरनका गप मोन पाड़लासँ मोन पड़ि जाइए, नबके गपमे दिक्कत अछि।
भारतक नव पीढ़ी।
'गाम आबो ओहिने छै बा बदलल छै?'- हम पूछै छियन्हि।
-बहुत बदलल छै, नीको आ अधलाहो।
-अधलाहो आ नीको?
-देखियौ, गामक तीनू स्कूलमे आब दलितक बच्चा बा पिछड़ा वर्गक बच्चा सभ पढ़ितो अछि आ संगे खाइतो अछि। पहिने किताबेटा भेटै छलै आब खेनाइयो भेटै छै।
-ई तँ नीक अछि मुदा अधलाह?
-पहिने जाति रहै, हमरा बुझि पड़ैए जे ओकर सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक आधार रहै। सभक अपन नायक रहै। सभक अपन माइनजन रहै, अखनो छै। मुदा ई सभ आब एकटा जाति व्यवस्थामे बदलल जा रहल छै। हम अन्तर्जातीय विवाह केने छी, कनियाँ ब्राह्मण अछि। मुदा तकर विरोध ओकर आ हमर परिवारसँ बेशी हमर समाज कऽ रहल अछि। सरकारी आरक्षणक पेंच सेहो छै। सभ जातिक नेता आरक्षण बचबैले अपने जातिमे बियाह करैले कहै छथि, नवका पीढ़ी मानै नै छै।

जाति आ जाति-व्यवस्था दू चीज!

-ऋगवेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गातृ, यजुर्वेदक अध्वार्यु आ अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ तकर सहयोगी पुरोहित सभ, पूरा-पूरी सत्रह तरहक पुरोहित वैदिक कालमे रहथि। अहूँ सभमे तँ पुरोहित होइ छथि। आ आब एक्केटा ब्राह्मण पुरोहित केना भऽ गेल? ओडिसामे अखनो 'होता' टाइटिल होइ छै आ ओतुक्का ऋगवेदी, सामवेदी आ यजुर्वेदी

ब्राह्मण हिंसक (!)पिप्पलाद संहिताक अथर्ववेदी ब्राह्मणमे बियाह-दान नै करै छथि। दलित विमर्शमे वाल्मीकि रामायणक उत्तरकाण्डक शम्बूक वधक चर्चा होइत रहैए, तप करबाक कारण शम्बूकक शिकाइत जे ओ आगाँ नै बढ़ि जाय, आ तइ शिकाइतक निवारणार्थ भगवान राम द्वारा शम्बूक वध। पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि जे राजपूतनी चरित्रहीन होइए। ई दुनू ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकैत अछि बला वक्तव्य, जे सोशल मीडियामे आ अन्तर्जालपर अहाँकेँ भेटत, जकर कोनो सन्दर्भ मूल अथर्ववेदमे ताकैत रहू नै भेटत, बजनहार लुत्ती लगा कऽ निपत्ता, कोनो सन्दर्भ नै देता आ अहाँ अपस्याँत रहू, बर्डन ऑफ प्रूफ आरोप लगेनिहारपर नै, अहाँपर। अहाँक ऊर्जाक क्षय भेल मुदा फेर अन्तर्जाल ठीक कऽ लेलक, पाठ विकृत नै भेल। पहिने आउ पुरुष परीक्षापर, संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जइ राजाक दरबारी रहथि तकर जातिक स्त्रीक विषयमे एहेन लिखबाक हुनका साधांश हेतनि? कोनो कलुषित मानसिकताक परवर्ती लिपिकार अपन भावनाक अनुसार हेरफेर जँ कऽ देलकै तँ आइक टिप्पणीकार आ अनुवादककेँ टिप्पणी दऽ कऽ स्थिति स्पष्ट कऽ देबाक चाही। राम शम्बूककेँ मारलनि बा शम्बूकक शिकाइत केनिहार कलुषित लिपिकार शम्बूककेँ मारलनि? आब आउ अथर्ववेदपर। अथर्ववेदमे लिखल छै हे नारी, हम सामवेद छी आ अहाँ ऋगवेद, हे वधु, अहाँक हाथ हम समृद्धि लेल ग्रहण कऽ रहल छी। आ ओहुनो व्रात्य परम्पराक अथर्ववेद आ सांख्य अछि, व्रात्य जे गायत्री मंत्र नै पढ़लथि तीन खाढ़ी आ तेँ बनि गेला वनचर, बनबीहर। आ अखुनका घर वापसी सन विध छल 'व्रात्यस्तोम' विध, समानान्तर धाराक व्रात्यकेँ घुरेबा लेल। कतौ हुनका शारीरिक आ लैंगिक हिंसक, निशांमे रहैबला सन विवरण भेटत मुदा अथर्ववेदमे हुनका योगीक रूपमे देखब। अन्यत्र ओ सत्यक रक्षक आ शिवभक्त वैद्य सन सेहो वर्णित छथि। मुदा अथर्ववेदी ब्राह्मणकेँ सेहो हिंसक कहल गेल। कलुषित लिपिकार वेदोमे क्षेपकक प्रवेश केलन्हि जे भाषा विज्ञानी आब पकड़ि रहल छथि।

-माने वेद मे सेहो हेरफेर कएल जा सकैए? की ओ ईश्वरीय वक्तव्य नै

अछि?

-वेदक विदेशी भाषा अनुवाद सभमे ऋषिक नाम हटा देल गेल, मुदा मूलमे अखनो भेट जायत।

-मुदा ऋषिकेँ तँ द्रष्टा कहल जाइए, माने ऋषिक नाम अछैतो ईश्वरेक कथन।

-मुदा तखन वैदिक द्रष्टा तँ स्त्री आ शूद्र ऋषि सेहो छथि, तखन शूद्र आ स्त्रीक विरुद्ध रचना के घोसियेलक? जे शूद्र ऋषि कवष ऐलूष वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, से कात-करोटमे किए ठाढ़ रहितथि? मुदा वेदमे ऋषि, देवता आ छन्द यएह तीनटा शब्द सभ सूक्त क्रमांकक संग भेटत, द्रष्टा हम अहाँ कहै छियन्हि, मुदा तकरो दुरुपयोगक प्रयास भेल। वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहै छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतऽ आध्यात्म चेतना, आधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि। ओना ओइ समएमे सेहो सम्मिलित रूपेँ साल भरि ऋचा पाठ करैबलाकेँ पार्जन्यक स्वागतमे टर्र-टर्र करैबला बेङ-मण्डूक सन विशेषण अथर्ववेदमे देल गेल छै। माने गायनमे असहमतिक स्वरक स्वीकृति छलै। ऋगवेदमे सेहो मण्डूक गान छै।

-मुदा 'वेदमे जे छै से प्रमाण छै' कहने क्षेपक सेहो प्रमाण नै भऽ गेल?

-मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य 'यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैए, सएह हमरा हेतु प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे जा कऽ वेदे प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानि। हमरा लेल तँ मंत्रक ऋषि, छथि, देवता छथि, दुनू कवि छथि सूक्तक लेखक, आ सएह हमरा लेल प्रमाण अछि।

-अफ्रीकाक लोककेँ जेना धर्म परिवर्तन केनिहार सभ बुझेलकै जे ओ सभ जंगली अछि ओकरा सभ्य बनक चाही। मुदा सभ कबीलामे झगड़ो होइ तँ तकरा सुलह लेल व्यवस्थो रहै। कनाडाक मूल इण्डियन अबेनाकी कबीला जे हुनका सभ लेल आरक्षित रिजर्व ओडानाकमे रहैए पर्यावरणक लेल कतेक सुन्दर लोकोक्ति बनेने अछि 'तखन जखन

आखिरी गाछ कटि जायत, आ सभ धारमे माहुर दऽ देल जायत, तखन जखन गोट-गोट माँछ अहाँ मारि देब, तखने अहाँ बूझि सकब जे अहाँ पाइ नै खा सकै छी।' मुदा ओकरा सभकेँ पछुआयल समाज कहल जाइए? मुदा अहाँकेँ नै लागैए जे हमर सभक व्यवस्था आ दोसर देशक व्यवस्था एक्के रङक अछि आ अलगो अछि। की दूर आ असगर भऽ गेनाइ मात्र समस्याक समाधान छै?'

'अहाँ अमेजन कम्पनीमे छी ने? अहाँ सभ तँ अमेरिकासँ रॉकेट सेहो छोड़ने छी। एकटा प्राइवेट रॉकेट। किछु दिनमे पर्यटन हेतै, रॉकेटसँ उड़ि जाउ आ देखियौ हरियर रङक ग्रह पृथ्वी। जते दूर जायब तत्ते नीक लागत अपन लोक। आ जत्ते लग आयब तँ धार परक बान्ह लागत पहाड़ोसँ पैघ। दूरसँ देखबै तँ लागत जे ई पृथ्वी अछि एक्केटा, हम सभ ऐ ब्रह्माण्डक छी एकटा क्षीण अस्तित्व। फेर आर कनी लग, आ पानि आ स्थल। आ आर कनी लग तँ श्वेत रङक लोक आ कारी रङक लोक, रङ बिरङक, तेहने रङ बिरङक चिड़ै-चुनमुनी, जानवर, गाछ-बृच्छ। जल-थलमे कीड़ी-मकोड़ी, माँछ, सरीसृप। बहुत तँ देखाइयो नै पड़ैए ततेक सूक्ष्म, जकर दुनियाँ ने हमरा बूझल अछि आ ने हमर दुनियाँ ओकरा बूझल छै। जे ठंढ़ामे रहल लाखक-लाख बर्ख से भऽ गेल उज्जर आ जे गर्मीमे रहल से भऽ गेल कारी। आब फेर रॉकेटकेँ कने दूर लऽ जाउ। फेरसँ देखू। आब मनुक्ख लागि रहल अछि मात्र मनुक्ख। से सभ अछि एक्के डी.एन.ए. केर। कखनो काल सत्य दूर गेलेपर उद्घाटित होइ छै। हजार बर्खक दासत्व अहाँक जाति बा कम्यूनिटीकेँ जाति-व्यवस्थाक अंग बना देलक, हजार सालक साम्राज्यवाद। ओ तँ ताकबे करत राज करबाक सैद्धांतिक आधार। जातिकेँ जाति व्यवस्था बतेबे करत। आ अहाँ जे एकरा मानि लेब आ ओकर व्यवस्था, ओकर संस्कृति, ओकर नीक बा अधला कहब, तँ अहूँ तँ जातिकेँ जाति-व्यवस्थामे बदलबे ने केलौं। आ से ओ सभ ऑस्ट्रेलियामे केलक, अमेरिकामे केलक, अफ्रीकामे केलक। जखन मॉरीशस आ कैरेबियन द्वीपमे सोना नै भेटलै तँ कुसियारक खेती शुरू केलक। भारतोसँ दास लऽ गेल, कुसियारक खेती लेल। आ ओतऽ कियो दलित नै छै, पिछड़ा नै छै। अहूँ गामक लोककेँ लऽ गेलै, सभ समाजक लोककेँ बेसी दलित आ पिछड़ा,

सिक्कड़मे बान्हि कऽ पनिया जहाजमे चढ़ा कऽ, मुदा ओ सभ ओतऽ अगड़ा भऽ गेल, ओत्तऽ एतुक्के लोक जातिकेँ जाति-व्यवस्थामे नै बदलऽ देलकै। से असम्भव किछु नै छै, कखनो काल दूर गेनाइयो जरूरी छै। अहाँ अपन परिचय एक बेर आर दिअ, बजैत-बजैत हम आइ-काल्हि बिसरऽ लागल छी।'

ओ चुप्प छथि। हम चिन्हबाक प्रयास करै छियन्हि। हम रतुका सपनाक विषयमे सोचै छी। भोरमे उठलापर अनेरे तनाव भऽ जाइए। कनियाँक मसियौत बहिनक मृत्यु भऽ गेलन्हि, बेटा अभियन्ता बनलन्हि, बियाह दान करबाबितथि तँ ..। आब तँ गाड़ीक डीजल रिजर्वमे चल जाइए तखनो तनाव भऽ जाइए। रस्तामे कोनो पेट्रोल पम्प अछिये नै, जे छै से फ्लाइओवरक नीचाँ। घुरती काल साँझमे जतऽ पेट्रोल पम्प अछि ततऽ पहुँचैत-पहुँचैत गाड़ी ने बन्द भऽ जाय। दिल्लीमे प्रदूषण बढ़ि गेल रहै से आपात-निअम-तीन लागू छल आ भारत-तीन कोटि केर पेट्रोल आ भारत-चारि कोटि केर चरपहिया डीजल गाड़ी एक सप्ताह लेल बन्न छलै। से ऊबरसँ ऐल छलौं। ओना चौंतीस प्रतिशत प्रदूषण दुपहिया गाड़ी करै छै, मुदा ओ सभ सरकारक वोटर छिऐ तेँ ओकरापर प्रतिबन्ध नै लागल छलै। एक तँ चरपहियाबला लोकक संख्यो कम आ तइपरसँ ई सभ भोट दइ लेल जाइतो नै अछि, तेँ प्रदूषण कम करबाक भार एकरे सभपर, सरकार बुझै छै जे ई सभ वोटर अछिये नै।

- अहाँ अपन परिचय एक बेर आर दिअ।

-हम बुधनक बेटा।

-जी। देखू जे समस्या अहाँ देखि रहल छी, तकर निराकरण भऽ गेल अछि। हमहूँ ओइ निराकरणसँ प्रसन्न नै रही। स्कूलमे खेनाइ, रहैले घर, दू रुपैय्ये चाउर। गहिंकी नजरिसँ देखियौ। आत्मसम्मान एलैहेँ, मलाहकेँ ट्रेनिङ दऽ ओलिम्पिकमे स्विमिंग प्रतियोगितामे पठाउ, चर्मकारक हाथमे बाटा कम्पनी दियौ, प्लाइवुड कमारक हाथमे। जेना अहाँ लेलौं अपन हक, नै रोकि सकत कियो कमारकेँ फर्नीचर फैक्ट्रीक मालिक बनलासँ।

-ऐ ले आर कतेक दिन।

-हमर बेटी जखन दस सालक रहय तहिया धरि ओकरा बुझले नै रहै जे ओ कोन जातिक छी, किण्डल ओकर हाथेमे रहै छै, किताब पढ़बाक

हिस्सक छै। एक दिन टी.वी.पर कोनो सीरियल देखि रहल रहय, दू-तीन टा ब्राह्मण बड़का टीक रखने आ धोती पहिरने रहै। ओ बाजल- 'दीज आर ब्राह्मिन्स' (ई सभ ब्राह्मण छथि)। आ माय पुछलकै जे तोरा बुझल छौ जे तूँ कोन जातिक छैँ, तँ सेहो ओकरा नै बुझल रहै। आ माय जखन ओकरा कहलकै जे तोहर डैडी सेहो ब्राह्मण छौ- तँ बाजै छै- 'नो वे!' (भइये नै सकैए!), आ जखन ओकरा पता चललै जे ओकर भैया, ओकर माय आ ओ स्वयं ब्राह्मण अछि तँ ओ चुप भऽ गेल जे किंसाइत माय ओकरा ठकि रहल छै। फेर महाभारतक बर्बरीक। सभकेँ अर्जुन पसिन्न पड़ै छै, कर्ण पसिन्न पड़ैत छै, हमरा पसिन्न पड़ैए बर्बरीक। ओकर देल वचन जे हम सदिखन कमजोरक पक्ष लेबै, ओकर गुरु ओकरासँ ई वचन लेने रहथि। तखने हम अपन मोनक गुरुकेँ बर्बरीक बला वचन देलिऐ। जनक सहस्र गाय केर शर्त पर शास्त्रार्थ राखलन्हि। याज्ञवल्क्य गाय सभकेँ रोमि बिदा होइपर छला आकि गार्गीक प्रश्न शुरू। याज्ञवल्क्यक उत्तरपर ओ प्रतिप्रश्न पूछऽ लगली। याज्ञवल्क्य बजला- अहाँक माथ ने भंगा जाय, माथक कइएक फाँक ने भऽ जाय प्रश्न पूछि-पूछि। मुदा गार्गी तइयो पुछलन्हि- समय काल ककर अधीन। याज्ञवल्क्य बजला- अक्षरक। हमर मोनमे याज्ञवल्क्य आ गार्गी दुनूक प्रश्नोत्तरी चलि रहल छल,अखनो चलि रहल अछि। जे प्रश्न अहाँ पुछलौं सेहो प्रश्न हमर मोनक गार्गी पुछलन्हि। आ बर्बरीक बला प्रण। मोनमे होइत याज्ञवल्क्य आ गार्गी सम्वाद, अक्षरक अधीन ई जीवन आ बर्बरीक बला प्रणक बाद हमर मोन बिसराह भऽ गेल, देखिये रहल छी। गार्गी सन हमरो मोन जँ संतुष्ट भऽ जइतए तँ बिसराह किए भऽ जइतए? अहाँ अपन परिचय एक बेर आर दिअ, बजैत-बजैत आइ-काल्हि हम बिसरऽ लागल छी।'

आत्महत्या

१

विवाहक उपरान्त ढेरी-ढाकी लोक हमरासँ भेँट करबाक हेतु सासुरमे आबि रहल छला। तइमे छलि एकटा नवम् कक्षाक छात्रा आर्या आ ओकर पितामही आ माय।
ओ माय आ पितामहीक संग नै आबि असगरे ऐल छली। दुबर-पातर, आवश्यकतासँ बेशी अनुशासित आ शिष्ट आ नापि-जोखि कऽ बजनिहारि। हमरासँ सभ गपमे उलटा। हमर कनियाँ आर्यासँ हमर परिचय करओलन्हि आ ओकर प्रशंसा सेहो कयलन्हि, पढ़ैयो लिखैमे तेहने नीक आ चित्र लिखै मे सेहो ओतबे नीक। किछु कालक बाद ओकर पितामही आ माय हमरासँ भेँट करबाक हेतु एली ।
हमरा अनुभव भेल जे हुनकर पितामहीक तँ लेहाज राखल गेल छल मुदा हुनकर मायक अवहेलना सन हमर कनियाँ आ सासु केने छलखिन्ह। गप्प करबामे ओ नीक छली आ जाइत-जाइत कहि गेली जे हम सभ अहाँक ससुरक किरायादार छी आ उपरका महला पर रहै छी। से भीड़-भाड़ कम भेला पर अवश्य आउ।
ई गप्प जाइत-जाइत हमर सासु प्रायः सुनि लेलन्हि से हमर पत्नीकेँ स्थिरेसँ मुदा आज्ञार्थक रूपेँ कहलन्हि जे ऊपर जेबाक कोनो जरूरी नै छै। हम पत्नीसँ पुछलियन्हि जे बेचारी एतेक आग्रहसँ बजओलन्हि अछि। पत्नी कहलथि जे सुनलिऐ नै, माँ मना केने छथि। कारण पुछला पर गप अनठा देलन्हि।
किछु दिनुका बादक घटना छी, अन्हरोखेमे गेट झमाड़ि कऽ खुजबाक अबाज भेल। लागल जे क्यो पीबि कऽ बड़बड़ा रहल अछि। हमर अतिरिक्त क्यो ओइ अबाज पर ध्यान नै देलक आ अनठयबाक स्वांग केलक। हम बाहर एलौं तँ एकटा अधवयसु झुमैत अबैत दृष्टिगोचर भेल। हमरा देखि डोलैत हाथसँ जमाय बाबू कहि नमस्कार केलक। ओ अखन धरि हमरासँ भेँट नै हेबाक कारण हमर पत्नीकेँ फड़िछओलक आ डोलैत ऊपर सीढ़ीसँ चलि गेल। हमर पत्नी हाथ पकड़ि कऽ हमरा भीतर आनि

लेलन्हि आ ईहो सूचना देलन्हि जे ईएह आर्याक पिता थीक। अनायासहि हमरा माथमे ऐल, रंग जे आर्याक छै से बापे पर गेल छै, ओना गढ़नि बड्ड नीक।

बादमे हमर सासु ऊपर जा कऽ भाषण दऽ एलीह आ एक महिनाक भीतर घर छोड़बाक अल्टीमेटम सेहो आर्याक परिवारकेँ दऽ देलन्हि। हमर सार कहलथि जे ई दसम अल्टीमेटम छै मुदा हमर सासु अडिग छली जे किछु बीति जाय ऐबेर ओ नै मानती। जमाय की बुझताह जे केहन भाड़ादार रखने छी हम सभ, पहिने ठकिया-फुसिया कऽ बहटारि लइ छल।

पुछला पर पता चलल जे आर्याक पिता डॉक्टर छै आ सेहो होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक, डेण्टिस्ट किंवा भेटनरी नै वरन् एम.बी.बी.एस.। मुदा लक्षण देखियौ। ओना सासु ईहो गप कहलन्हि जे ई पीने रहबाक उपरान्तो गप्प एकोटा अभद्र नै बजैत अछि, जेना आन पीनहार सभक संग होइ छै। मनुक्खो ठीके अछि मुदा यएह जे एकटा गड़बड़ी छै से बड्ड भारी। देखैमे मुदा बड्ड दब अछि, कनियाँ तँ बड्ड सुन्दर छै।

अगला दिन नशा उतरलाक बाद पति-पत्नी दुनू गोटे नीचाँ एला आ सासुकेँ कहलन्हि जे आर्याक बोर्डक बाद ओ सभ पटना चलि जाइ जेता से हुनका सभक खातिर नै मुदा आर्याक खातिर तावत धरि रहय दिअ। घोँघाउजक बाद से मोहलति भेटि गेलन्हि। तकरा बाद हुनकर पत्नीक नजरि हमरासँ मिलल तँ ओ कहलन्हि जे अहाँ तँ ऊपर नहिये आयब। आ ऐ बेर ऊपर एबाक आग्रहो नै कयलथि।

२

एकटा सारि रहथि, हुनकर कोनो गप मोन पड़ि रहल अछि। एक गोट युवकक विषयमे आर्या कहैत छलि । ओकरा संगीकेँ होइ छै जे ओ युवक ओकरासँ प्रेम करैत अछि। मुदा आर्याक माननाइ छल जे ओ युवक ओकर संगीसँ नै वरन् आर्यासँ प्रेम करैत छल। हम सारिकेँ कहने रहियन्हि जे आर्या बच्चा अछि, ओहिना हँसी कयने हएत। मुदा ओ कहलन्हि, जे नै यौ। बड्ड भावुक अछि आर्या। कहैत अछि जे ओइ युवककेँ पेबा लेल किछुओ करय पड़तै से करत ।

पता लागल जे ओ युवक कोनो पुरान महारानीक बेटीक बेटा छी। ओकर

माता शिक्षिका अछि आ बाप मेरीनमे काज करैत अछि। साल-छह मास पर अबैत छल आ जखन अबैत छल तँ जे मास-पंद्रह दिन रहैत छल से मारि-पीटमे बिता दइ छल। पूरा मोहल्लामे बदनामी छै। मायक शील-स्वभाव बड्ड नीक, बोलीसँ फूल-झड़ै छै। बापकेँ तँ लोक चिन्हितो नै छै। खाली झगड़ाक अबाजे सुनैत अछि लोक।

तकरे बेटा छी ओ युवक। एक बेर आर्याक संगीकेँ स्कूल बससँ उतरबा काल क्यो तंग केने छलै तँ ओ युवक सभकेँ मारि-पीटि कऽ भगा देने छल। ऐ बात पर हम तखन कोनो बेशी ध्यान नै देने रहिऐ।

-आर्या भावुक छै, से मात्र ओकर एकटा गप सुनि कऽ अहाँ केना बाजि देलौं?

-नै यौ, एक्के टा गप नै। बड्ड भारी-भारी गप्प करैत रहै छै।

-जेना?

-जेना डैडीकेँ ओ दुखी नै देखि सकैए, ओ किछु एहेन नै कऽ सकैए जइसँ ओकरा दुख पहुँचै।

-आ आर किछु।

-हँ, कहैए मायसँ ओकरा कोनो लगाव नै छै।

३

किछु दिन बीतल आ फेर सासुर जयबाक अवसर भेटल। किछु दिनमे पता चलल जे किरायादार बदलि गेल छथि। घरक लोक मात्र एतबे कहलथि जे आर्याक पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि आ अनुकम्पाक आधारपर ओकर मायकेँ नौकरी भेटि गेलै। आब ओ सभ कियो पटनामे रहै छथि। घरक लोक आगाँ किछु नै कहलन्हि मुदा कनियाँक एकटा पितयौत भाय ऐल रहथि, से कहलथि जे डॉक्टरी रिपोर्टमे विष खा कऽ आत्महत्याक वर्णन रहय। फेर आगाँ पति-पत्नीक मध्य मचल तुमुलक चर्च भेल। डाक्टरक कनियाँ कहैत रहथिन्ह जे ई डॉक्टर बड्ड पिबैत अछि तइ दुआरे झगड़ा होइत अछि तँ डॉक्टर साहब कहथि जे झगड़ा दुआरे पिबै छी। अस्तु मृत्युक बाद हुनकर कनियाँक भाव एहन सन छल जेना मुक्ति भेटि गेल होइन्हि आ ऐ बातमे सभ क्यो एक मत रहथि। आर्या ऐ शहरसँ दूर चलि गेलि। ओ मायकेँ कहैत रहलि जे परीक्षा धरि रहय दिअ, मुदा माय

विमुक्त भेलाक बाद एको पल पुरान कटु-स्मृतिकेँ देखऽ नै चाहै छली।
४
फेर दिन बितैत रहल।

आ बादमे फोन पर समाचार भेटल जे आर्या सेहो आत्महत्या कऽ लेलक।

बहुत रास बात मोनमे घूमि गेल। आर्या भावुक छलि, किछु बेशी तनावमे रहिते छलि। गपकेँ गंभीरतासँ लैत छलि। सारिक ओइ युवकक सम्बन्धमे कहल गप सेहो मोन पड़ल ।
हम फोन दोबारा लगेलौं।
हम फोन पर अटकारी मारैत पुछलौं जे ओइ युवकक विवाह आर्याक मृत्युसँ पहिने भऽ गेल छल से कतऽ भेल छल? तँ सासुरक लोक अचंभित भऽ पुछलन्हि, जे के ओ? अच्छा ओ!
-ओकर विवाह तँ भेल मुदा अहाँ केना बुझलौं।
पता लागल जे सिलीगुड़ी-दिशक कोनो कन्यागत रहथि ।
आ ओ युवक अपन बाप जकाँ घर-जमाय बनि रहबाक नियार कयने अछि। ऐ शहरक लोककेँ तँ विवाहक हकारो नै भेटलै।

५
आ ओकर आत्महत्याक दोष ककरा पर अछि। ओ जे दारू पिबैत रहय से बाप। आकि ओ माय जे बापक संग तंग आबि गेल रहय। आकि ओ प्रेमी?
हमरा जनैत एकर सभक कारण अछि आर्याक परिवारक सम्बन्धी आ परिवारिक दोस-महीम सभ जे एक तरहेँ आर्या सभकेँ बारि देने रहय। ओ समाज जे ओकर परिवारक घटनाक चटखारा लऽ कऽ चर्च करैत छल । ओ घटना सभ जे ओकर पिताक मृत्युसँ सम्बन्धित रहय । ओकर पिता द्वारा गेट पिटबाक घटनाक चरचा आकि आर कोनो गप। बालिका भावुक रहय, कोना सहि सकैत छली? आत्महत्याक नाम दऽ ओकरा मृत्युदण्ड देलक समाज। हम आर्याकेँ एकटा दृढ़ बालिका बुझैत रही। मुदा ओकर ‘किछुओ करय पड़त से करब’ केर अर्थ आब जा कऽ

बुझलौं। ओइ युवकक बिआह भऽ गेल हेतै से हमर अन्दाज मात्र रहय आ से आर्याक आत्महत्याक घटनाक जानकारी भेलाक बाद ।

६

-हमर कथा 'आर्या' केहन लागल? आ दूषण पञ्जी?

- दूषण पञ्जीमे एकदम असत्य गप लिखल गेल अछि, पूर्णियाँक कोनो माम अपन भगिनी संगे नै भागल अछि, असत्य विवरण अछि। कथा तँ इतिहास नै छिऐ, ओइमे तँ किछु लिखि सकै छी मुदा पञ्जी?

-ई दुनू जे दिल्लीमे रहि रहल छथि से के छथि, वएह असत्य ने जे ब्लैकबुक माने दूषण पञ्जीमे छै? छोड़ू ओ गप्प। आर्या अहूँकेँ बूझल अछि आ हमरो, आर्या एकटा सत्य अछि। ओ आत्म हत्या कऽ लेलक, हमरा ओकर प्रेमीसँ भेँट करबाक अछि। ओकर सिल्लीगुड़ीक पता चाही। वएह बता सकैए जे आर्या किए आत्महत्या केलक?

७

हम सिलीगुड़ी कोनो काजेसँ गेल छलौं। काज पूरा केलाक बाद किछु समय बचल छल से आर्याक प्रेमीक पतापर पहुँचि गेलौं। ओ कलपऽ लागल।

-देखू ई अछि आर्याक पेण्टिंग। ओकर रचनात्मक आ विध्वंसात्मक दुनू रूप ऐमे हमरा देखा पड़ि रहल छल। हम डरि गेल छलौं।

आ ओ डेरायल लागियो रहल छल।

-ओ छोट-मोट आत्महत्या करऽ लागलि छलि।

-छोट मोट आत्महत्या?

-हँ, जेना गपकेँ अनठेनाइ, कोनो काजक प्रति अपन जबाबदेहीसँ बचनाइ।

८

-आर्याकेँ बीमारी रहै। मुदा कियो ओकर रोगकेँ बुझबे नै केलकै। मनः रोगक इलाजक दवाइ छै। जँ अहाँ रोगक इलाज नै करेबै तँ ओकर परिणाम होइ छै मृत्यु।

-मुदा किछु आत्महत्याक प्रयास डरबैक प्रयास होइ छै, ओ कहै छै जे हम किछु कऽ लेब, किछु छोट-मोट कइयो लै छै। एहेन लोककेँ अहाँ ई नै बुझियौ जे ओ किछु नै करत। अहाँ हुथैत रहबै, जे कऽ कऽ देखा, कऽ

कऽ देखा तँ ओ कऽ कऽ देखाइयो देत।
-तँ हमरा सभकेँ आत्महत्याक विरुद्ध किछु काज करबाक चाही, जेना मोटीवेशन टॉक देनाइ।
-काल्हिका न्यूज नै देखलिऐ। शंकर आइ.ए.एस. एकेडमीक संस्थापक डी. शंकरण, वएह जकर पर्यावरणपर पोथी पढ़ि सभ आइ.ए.एस. बनैए, काल्हि आत्महत्या कऽ लेलन्हि। परीक्षामे पास नै भेलापर केना हतोत्साहित नै होइ, आत्महत्या बा कोनो गलत डेग नै उठाबी, तइपर हुनकर भाषण होइ छल, आ तकर बाद थोपड़ी बजनाइ बन्दे नै होइ छल।

९
-आर्याक ओकर मायसँ किए नीक सम्बन्ध नै रहै?
-आवश्यकतासँ बेशी अनुशासित आ शिष्ट आ नापि-जोखि कऽ बजनिहारि छल आर्या। मुदा मायसँ पता नै किए झरकी लगैत रहै। आर्या आ ओकर पितामही दुनू संस्कारी। देखै-सुनैमे ओकर पितामहीकेँ देखिकेँ एक्को रत्ती पता नै चलितय जे ओ डाक्टर ओकरे बेटा छिऐ। बापसँ आर्या मुदा हिलल-मिलल छल। नीकसँ गप होइ छलै, ओहो ओकरा मानै छलै।
-बाप आत्महत्या नै करितै तँ आर्या कऽ लितिऐ?
-पता नै?
-ओकर प्रेमी ओकरा छोड़ि कऽ चलि जैतिऐ, बाप जीवित रहितिऐ, तँ की आर्या आत्महत्या कऽ लइतिऐ?
-नै, ओ बापकेँ कष्ट नै पहुँचाबितै।
-फेर पुछै छी, बाप आत्महत्या नै करितै तँ आर्या कऽ लितिऐ?
-नै करितिऐ।
-आब ओ केकरा कष्ट पहुँचाबऽ चाहै छल, मायकेँ आ प्रेमीकेँ।
-मायकेँ तँ कष्ट पहुँचि गेलै, मुदा प्रेमीकेँ तँ बुझलो नै हेतै। ई भार अहाँपर रहल।
-ओना हमरा बुझने ओकरा प्रेमीकेँ आब बुझल भऽ गेल छै।

गंधर्व लेटरबम

१

“दोसरकेँ सम्मान देनाइ भेल ओकर विचार, ओकर भावनाकेँ सम्मान देनाइ। आ तइसँ सम्मान भेटत ओइ व्यक्तिकेँ आ ओइ व्यक्तिक अपना लेल निर्धारित आ निर्मित अकासकेँ।...”

२

महिसबाड़ ब्राह्मणक गाम गढ़ नारिकेलक बगलमे अछि गड़ अरड़नेबा, पीअर कपीश बनराहा ब्राह्मणक गाम, ओत्तऽ पीअर कपीश बानरो बड्ड अछि। बड्ड अगत्ती गाम, बानर आ मनुक्ख दुनू बड्ड अरबेङल।
ओही गामक छल लेटरा।
साढ़े तीनसँ चारि फीटक बीच लेटराक लम्बाइ छल। सभ कहै छै जे ओकर माय दोसराक बच्चाकेँ देखि कऽ भुट्टा-भुट्टा कहै छलै। से पता नै एक दिन की भेलै, लेटरा तकरा बादसँ बढ़िते ने अछि, ओकर लम्बाइ एकदम्मेसँ बढ़ब रुकि गेलै।
“धुर! माय-बापक कत्तौ नजरि लगै छै बच्चाकेँ।“
“नै यौ, मायक तँ लगिते छै, देखियौ ने लेटराकेँ। “
गौआँ सभ आपसमे गप करथि। जे सभ बच्चा पैघ भेल। बढ़य लागल। मुदा लेटरा घुटमुटाएले रहल। सभ क्यो ओकरा परोक्षमे लेटरा आ मुँहपर लेटरबम कहऽ लागल।
लेटरबमक माय-बापकेँ जमीन-जाल ततेक नै।
अस्तु तावत। लेटरबमक गबैय्या परिवार।
“गबैया परिबार छै। तान जे चढ़ै छै तँ उतरिते नै छै।”
“एकसँ एक कबिकाठी सभटा, परिबारमे क्यो गप छोड़बामे ककरोसँ कम नै। “
“से की कहै छिऐ? परिबारक कोन कथा, सौँसे टोलमे सभटा कबिकाठिये भेटत। “

अस्तु तावत। लेटरबमक हारमोनियमक तानक विवेचन सौँसे गाम कऽ रहल छल।
लेटरबमक बाबू आ काका दुनू गोटे बड्ड पैघ गबैय्या रहथि। खानदानी गायन आ वादन प्रतिभा हुनका लोकनिक रक्तमे छलन्हि। लेटरबम पाँचे वर्षसँ संगीत सीखय लागल छल, ओकर स्वरक स्वाभाविक उदात्त आ अनुदात्त स्वरूपसँ पिता मुग्ध भऽ जाइ छला। मुदा गामक लोकक संगीतक ज्ञान अष्टजाममे मृदंग, झाइल आ हारमोनियम बजेबा तक आ निर्दिष्ट वाक्यकेँ गेबा धरि सीमित छल, आ से प्रायः सभ गोटे सहज रूपेँ कऽ लइ छला। आङ्ल लोकनिक राज्य छल, मैकाले महोदय संस्कृत शिक्षाक स्थानपर आङ्ल भाषा अनबापर उतारू छला। लेटरबमक पिताजी ऐसँ संबंधित एकटा कथा कहै छला। मैकाले महोदय जखन भारत एला तँ एकटा गेस्ट हाउसमे ठहरल छला। खिड़कीसँ बाहर देखि रहल छला तँ देखलन्हि जे गेस्ट हाउसक मैनेजर परिसरमे प्रवेश कऽ रहल छला, आ प्रवेश केला उत्तर गेस्ट हाउसक दरबानकेँ पएर छुबि कऽ प्रणाम केलन्हि। बादमे जखन मैकाले हुनकासँ पुछलन्हि, जे अहाँ मैनेजर छी आ तखन सामान्य दरबानकेँ पएर छुबि किए प्रणाम कऽ रहल छलौं? ऐ पर हुनका प्रत्युत्तर भेटलन्हि, जे ओ सामान्य दरबान नै छल वरन् संस्कृतज्ञ सेहो छल। तइ दिन मैकाले सोचि लेलन्हि जे भारतकेँ पराजित करबाक लेल भारतक संस्कृतिकेँ नष्ट करऽ पड़त। आ ऐ लेल संस्कृतकेँ नष्ट करबाक प्रण लेलन्हि, जकर अछैत भारतीय कला, संगीत आ संस्कृतिसँ पराङमुख भऽ जेता। अस्तु तावत।

मुदा खेती बारी तेहन सन नै छलन्हि। एक बीघा बटाइ करै जाइ छला, सेहो सुनऽ पड़न्हि जे गबैय्याजी बुते की खेती कएल हेतन्हि, मुँहसँ गओनाइ आ हाथसँ काज करबामे बड्ड अंतर छै। मुदा गाबि कऽ गुजर नै चलत, से महीसेपर निर्भर छलन्हि हुनकर सभक जीवन। लेटरा महीसक सेवामे भोरेसँ लागल रहैत छल। भोरमे भोरहा कातमे रगड़ि-रगड़ि कऽ चिक्कन बना दइ छल महीसकेँ। पुआरक नूरीसँ साफ करैत काल गोट-गोट अठौरी निकालि दइ छल। बेरू पहर बौआ-चौड़ीमे महीस चरबैत

काल निसभेर भऽ सूति रहै छल महीसक पीठपर। मुदा भोर साँझ ओकर संगीतक शिक्षा चलै, से लोक सभ हँसीमे कहितो रहय जे लेटरबम बौआ-चौड़ी हाइ स्कूलसँ पढ़ाइ कऽ रहल अछि। महीसो लक्ष्मी रहै ओकर। अनकर माल-जाल चरबाक साती जखन सिंह लड़ाबै छल तँ लेटरबमक महीस घास चरबामे लागल रहै छलै, आ लेटरबमक कण्ठ संगीत निकालैत रहै। कोनो टोटका तँ नै रहै जे अही सङीतक प्रतापे लेटरबमक महीस खूब घास चरै। से साँझमे घर-घुरैत काल जखन आन सभ गोटेक महीसक पेट पाँजरमे धसल रहैत छल, लेटराक महीसक दुनू पेट दुनू दिसन फूलि कऽ लटकि जाइ छलै। बिना परिश्रम पन्हाइ छलै महीस।

लेटरा अपन माय-बापकेँ तैयो प्रसन्न कऽ सकल की? ओ दुनू गोटे लेटराक गुजर कोना चलतै, ओकरासँ बियाह के करतै- ऐ बात सभकेँ लऽ सोचिते रहै छला।

३

“हमर मायकेँ लगै छलै जे ओ जे दोसराक बच्चाकेँ भुट्टा- भुट्टा कहै छलय तेँ हम बाणवीर भऽ गेलौं। मुदा ओ बाणवीरकेँ भुट्टा नै कहै छल। की जकरा सभकेँ ओ भुट्टा कहै छली से बाणवीर भेल? ’नै’। जे बच्चा कनी देरी सँ बजनाइ शुरू करै छै तकर तँ नामे बौका-बौकी भऽ जाइ छै, मुदा की ओ बौक रहैए? ’नै’। मुदा जँ बाणवीरकेँ बौना आ बौककेँ बौका-बौकी कहबै तँ ओकरा नीक लगतै? ’नै’। की बाणवीरकेँ बाणवीर आ बौककेँ बौकी हमर माय कहने छलि? ’नै’। तँ फेर ओकर कोनो दोख नै। दोख तँ ओकर जे बौककेँ बौका, लुल्हकेँ लुल्हा, नाङरकेँ नेङरा आ बाणवीरकेँ बाणवीर कहै छथि। “

४

अस्तु तावत, लेटरबम ऐ तरहक वातावरणमे आगाँ बढ़ऽ लागल। अङरेज लोकनि द्वारा पाश्चात्य सङ्गीतकेँ अनबाक प्रयासक पलुस्कर, भातखण्डे

आ रामामात्य द्वारा देल गेल समीचीन उत्तर शिक्षाक क्षेत्रमे किए नै भऽ सकल, लेटरबमक बाल मोन अकुलाइत छल। लेटरबम संगीतोद्धारक भातखण्डेकेँ आदर्श बना आगाँ बढ़ऽ लागल। लोक गबैय्या कहै तँ कोनो बात नै, एक दिन एतै जखन ऐ गबैय्याक सोझाँ समस्त अखण्ड भारतक मनसि श्रद्धासँ देखत।

काका आ पिताक संरक्षणमे गामक रामलीला मंडली द्वारा प्रस्तुत कएल जायबला नाटकमे सेहो लेटरबम भाग लइ छल, ओकर गाओल गीत गाममे सभक ठोरपर आबि गेल छल। जीवनक रथ आगाँ बढ़ैत रहैत मुदा विदेशीक शासनमे सेहो धरि संभव नै होइ छल। कखनो हैजा तँ कखनो प्लेग तँ कखनो मलेरिआ। अहिना एक बेर गाममे प्लेग पसरल। लोक एक गोटाकेँ डाहि कऽ आबय तँ गाम पर दोसर व्यक्ति मृत पड़ल रहै छल। लेटरबमक मायक सेहो पेट आ नाक चलय लगलै, देह आगि जकाँ जड़ैत रहन्हि, मुदा बेटाकेँ लग नै आबय देथिन्ह जे ओकरो प्लेग नै भऽ जाइ। दू दिनुका बाद बेचारी दुनियाँ छोड़ि देलन्हि। मरैत-मरैत बेटेपर ध्यान जाइन्ह, गुणी तँ अछि, मुदा लम्बाइ किए नै बढ़ि रहल छै?

दुनू बाप-बेटा दाह संस्कार कऽ एला। दुनू गोटेक आँखिमे नोर जेना सुखा गेल छलन्हि। पिता गुम-सुम रहऽ लगला। कण्ठसँ स्वर नै निकलन्हि, मुदा हस्त परिचालनसँ बेटाकेँ अभ्यास कराबथि।

५

"गाममे माय हमरा स्कूल पठेलक, मुदा हम जँ किछु पूछी तँ लोक हँसऽ लागय, किछु उत्तर दी तँ दोसर बच्चा हँसऽ लागय। रस्तापर चली तँ माय आँचरमे नुका लिअय, जे कियो देखि कऽ हमरापर हँसय नै। मुदा हमरासँ बेशी हमर माय-बाप सहने छथि। जेना हम कोनो पापक फल होइ। जेना कोनो शक्ति, हमरा माध्यमसँ, हुनका दुनू गोटेकेँ कोनो सजा देलकन्हि। "

६

दू-तीन बर्ष बीतल प्लेग, खतम भऽ गेलै।
लेटरबमक बयस वएह दस-एगारह साल हेतै।
गामक नाटक मण्डली सेहो बन्दे छल कारण मुख्य कार्यकर्त्ता हर्खित नारायण छला आ ओ बनारस चलि गेल छला कोनो नाटक मण्डलीमे।

गाममे बैतरणी नाटक ऐल रहै। कठपुतली सभ, मनुक्खक मरलाक बाद बैतरणी धार पार करबाक दृश्य, जे भयावहे-भयावह छल, खूब नीक जकाँ प्रदर्शित करै छल ओ कठपुतली सभ।
लेटरबम सेहो नाटक देखि आयल। आ एत्तैसँ लेटराक जीवन एकटा दिशा लऽ लेलक। बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक लेटराकेँ देखि लेलकै।
आ लेटराक बाबूक पाछाँ बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक लागि गेल। धरोहि दऽ देलक, साँझ-भोर ओकर घरपर पहुँचऽ लागल।

लेटरा अपन संगीत आ महिसबारीमे मगन रहै छल। मुदा ओ अनुभव करऽ लागल जे आइ-काल्हि बाप ओकरापर किछु बेशीये ममता राखऽ लागल छथि।

सभ कहैत रहौ जे लेटराक जीवन कोना कऽ चलतै, मुदा लेटराकेँ लागै जे से की ओकर बाबूपर एकर कोनो असरि थोड़बे पड़तै।

मुदा बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक लेटराक बापक पाछाँ पड़ि गेल। कहऽ लागल जे ओ तँ लेटराकेँ नीक नोकरी दिअबा रहल अछि। लेटरबमक बाबू सभसँ पुछथि जे की करी? सभ यएह कहैत रहन्हि जे ओ लेटराकेँ कीनि रहल अछि, नोकरी नै दऽ रहल अछि। ई नाटक कम्पनी सभ बणवीर सभकेँ गामे-गाम तकने फिरैए आ शहरी सर्कस कम्पनी सभकेँ बेचि दइए। फेर एक बेर जे बेटा जायत तँ की घुरिकऽ ऐत? बेटा धन छी, बाणवीरे सही!

अकश-तिकश करैत एक दिन बाप लेटरसँ पुछलन्हि- “भगवानक इच्छा सर्वोपरि। भगवान पेट दइ छथिन्ह तँ ओकरा पोसबाक जोगार सेहो करै छथिन्ह। लोक सभ कहैत रहल जे लेटराक गुजर कोना चलतै तँ ककरो गपक हम मोजर नै दइ छलिऐ। मुदा ई बैतरणी नाटक कम्पनी बला तँ पाछूए पड़ि गेल अछि। लोकसभ कहइ-ए जे ई सभ शहरी सर्कस कम्पनीक लेल बाणवीर सभक ताकिमे गामे-गाम फिरैत अछि आ ओइ कम्पनी सभमे ओकरा सभकेँ बेचि दइए। मुदा ई कहइ-ए जे से नै छै। सभ दिनुका दिनचर्जा छै। शहरे-शहरे घुमैत अछि ई सभ। जखन कत्तौ मण्डलीक नाटक नै लगै छै तँ छुट्टिओ भेटिते छै। नाटकमे रामलीलो होइ छै आ संगीतो होइ छै। आर के नोकरी देत एतेक कम लम्बाइ बलाकेँ? से हम अहींसँ पुछै छी जे की कयल जाय।“

लेटराक तँ आँखिसँ दहो-बहो नोर खसऽ लगलै। गौआँ सभ ठीके कहैत रहै। बाप तँ लागैए निर्णय कऽ लेने अछि।
“बाबू। हमरा बुझल अछि जे हमर बियाह-दान नै हएत। मुदा अपन पेट तँ कोहुना हम गाममे भरिये लइ छी। गुजर तँ कइये लइ छी। लोक सभ कहैत रहय जे तोहर बाप तोरा बेचि देलकउ, से ठीके अछि की?”

आब तँ कन्नारोहट उठि गेल। बापक संग लेटराक कानबसँ अंगनामे अनघोल मचि गेल। बाप कहैत रहलखिन्ह जे अखन धरि ओ ककरो ’हँ’ नै कहने छथिन्ह।

जेना सुति कऽ उठलाक बाद ढेर-रास गप महत्त्वपूर्ण कोटिसँ उतरि कऽ अमहत्वपूर्ण बा ततेक महत्वपूर्ण नै रहि जाइत अछि, तहिना दिन बितैत लेटरा सेहो अपन मोन मना लेलक। कनी देखिऐ बाहरक दुनियाँ केहन होइ छै। बाप तँ बेचिए लेने छथि, ओतेक सिनेह रहितन्हि तँ बेचबे करितथि? तँ हमहीं किए अधभगिया सिनेह राखी?

७

“हम किछु बनऽ चाहै छलौं, आ बैतरणी नाटकमे जेबाक निर्णयक पाछाँ ओ नुकायल इच्छा सेहो छल। भरि जिनगी हम अपन रूपक कारण अपमान सहने छी। मुद ऐमे हमर कोन दोख? ई तँ एकटा जेनेटिक बीमीरी छिऐ, ड्वार्फिज्म। सरकार तँ हमरा साइठ प्रतिशत दिव्यांगताक सर्टिफिकेट सेहो देने छल। मुदा कियो से मानेले तैयारे नै छल, हम लुल्ह नै छी, बौक नै छी, आन्हर नै छी आ नाङर नै छी तँ हम दिव्यांग केना छी, से ओ सोचै छथि। “

८

तखने पिताकेँ मलेरिआ पकड़ि लेलकन्हि।
रातिमे निन्द नै होइन्ह। सिरमामे भातखण्डे स्वरलिपि रहै छलन्हि, तइ आधार पर बेटाकेँ किछु गाबि सुनाबऽ कहै छलखिन्ह। लेटरबमकेँ आभास भऽ गेलन्हि जे माताक संग पिता सेहो दूर भऽ जेता। ई सोचि कोढ़ फाटि जाइन्ह। कुनैनक प्रभाव सेहो आब पिता पर नै होइ छलन्हि। रातिमे थरथरी पैसि जाइ छलन्हि। लेटरबम सभटा केथरी-ओढ़ना सभ ओढ़ा दइ छल, मुदा तैयो थरथरी नै जाइ छलन्हि। लोक सभ दिनमे आबि खोज-पुछाड़ी कऽ जाइ छलन्हि।

बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक जखन सुनलन्हि, जे लेटरबमक पिताक मोन खराप छन्हि तँ फेर पुछाड़ी करऽ एला।

“हम तँ आब जा रहल छी। लेटरबम नेना छथि। काका पर बोझ बनता तइसँ नीक जे अपन पएरपर ठाढ़ भऽ जाथि, संगीत साधना करथि। ई देवक लीला अछि जे ऐ समय पर अहाँ गाम आबि गेलौं। गामक हबामे जेना रोगक कीटाणु आबि गेल छै। एतऽ मत्यु टा निश्चित छै आर किछु नै। एहना स्थितिमे संगीतक मृत्यु भऽ जाय तइसँ नीक जे लेटरबम अहाँक

संग नाटक मण्डलीमे चलि जाथि। मुदा एकर लम्बाइ कम छै, एकरा सर्कसमे नै बेचि देबै।”

“लेटरबम अहाँक पुत्र छी मुदा आब ओ हमर पुत्र भेल। संगीतक पारखीक प्रतिभा सर्कस मण्डलीमे कुण्ठित नै भऽ जेतै? नाटक मण्डली मे ओकर प्रतिभा कुण्ठित नै हेतै, सर्कस लेल तँ मारिते रास बाणवीर भेट जायत। “

“ठीक, ओतऽ लेटरबमकेँ हनुमान आ रामक आशीर्वाद भेटतन्हि। संगीतक कतेक रास पक्ष छै। नव-नव बाधा पार करता आ अल्प समयमे संगीत फुरेतन्हि। ओतऽ सँ हिनकर साधना आगाँ बढ़तन्हि। “

तखने लेटरा ओतऽ आबि गेल।

जेना पिता ओकरे बाट जोहि रहल छला। बजिते-बजिते प्राण जेना उखड़ऽ लगलन्हि।

बेटाक माथपर थरथराइत हाथ रखलन्हि, तँ दौगि कऽ बैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक गंगा जल आनि मुँहमे एक दिशिसँ देलकन्हि मुदा जल मुँहक दोसर दिशिसँ टघरि कऽ बाहर आबि गेल।

९

“हम बच्चा रही तँ हमरो हुअय जे आन बच्चा सन हमरो सडी हुअय, आ आबो हम से ताकिये रहल छी। जखन हमरा संग कियो दोसर संग रहै छथि तँ अहाँ हमरो सँ जे पुछबाक से हुनकासँ पुछै छियन्हि, कने झुकि कऽ सोझे हमरासँ जँ पूछब तँ हमरा कतेक नीक लागत। हमरा जँ सहायता करबाक हुअय तँ हृदयसँ करू, दया स्वरूप नै, हम अहाँ सभसँ आग्रह करै छी जे हमरापर हँसू नै, निङहारि कऽ हमरा दिस ताकू नै। “

१०

बैतरणी कम्पनीबला लेटराकेँ बनारस लऽ गेल।

लेटरबम मात्र एगारह बर्खक अवस्थामे काशी गेला आ तइ द्वारे हुनकर स्वरक आ सुरक बहुत गोटे ग्राहक बनि गेलन्हि, ग्राहक नै शोषक कहू।

सभटा परिश्रम हिनकासँ करबा लइ छलन्हि आ नाम अपन दऽ दइ जाइ छल। मुदा लेटरबम समै आयु आ गुरुक आसमे काटि रहल छला। जखन दिन मुशकिलसँ कटै छै तँ पैघ लागऽ लगै छै, मुदा जँ एक्के ढर्रा पर चलैत जाइ छै तँ सालक साल बीति जाइ छै।
मुदा किछुए दिन। किछु दिन बाद बैतरणी कम्पनीक मालिक लेटरबमकेँ एकटा सर्कस बला लग लऽ गेल, आ ओकरा ओतहिये छोड़ि घुरि गेल।

ओतऽ ई लगैत रहै जे जेना सभ बाणवीरक नोकरीक ओतय जोगार हुअय। दुनियाँक सभ बाणवीरक नोकरी ओकरा लग पक्का रहै। लेटरा जेना बाणवीरक देशमे पहुँचि गेल छल। मोँछबला, निमोछी, पातर-मोट, नव-बूढ़, मुदा सभ धरि बाणवीर।
लेटरा ओकरा सभक बीच रहय लागल। किछु दिन धरि तँ ओकरा लगैत रहै जे ओ कोनो विशिष्ट व्यक्ति अछि आ तेँ बेशी दुखी अछि आ दोसर बाणवीर सभ तँ अही योग्य अछि। मुदा आस्ते-आस्ते जखन संगी-साथी सभसँ ओकरा गप होमय लगलै, तखन ओकरा बुझबामे एलै जे सभक एक्के खेरहा छै। ओकर ट्रेनिङ शुरू भेलै आ ओ मारते रास कला सिखलक, सर्कसक करतब सभ।
“रे भाइ, चल। तैयारी करबा लेल घण्टी बाजैबला छै। ओइसँ पहिने किछु खा-पीबि ली।”
फेर ओइ जेलरूपी घरमे हँसी-खुशीसँ, छोट-छीन झगड़ा-झाँटी आ मान-मनौअलक संग ओ आगाँ बढ़ऽ लागल। अपन जिनगीक ई रूप ओकरा एहन सन लगै छलै जेना ओ नोकरिहारा हुअय। ओहो घुरि जायत गाम आ फेर आपस आबि जायत नोकरीपर।
गामक दोसर नोकरिहारा सभकेँ ओ देखैत छल। गाम अबैत काल जतबे उल्लसित रहै छला, नोकरीपर घुरै काल सभक घुघना लटकि जाइ छलन्हि।
मुदा आब गाममे के छै जतऽ घुरि कऽ ओ जायत?

हमरा सन बाणवीरकेँ ऐसँ नीक आर कोन नोकरी भेटतै? सर्कसमे जखन हम कला देखबै छी तँ बच्चा सभ कोना पेट पकड़ि हँसैए, कतेक थोपड़ी

पड़ैत अछि। थोपड़ीक अबाज तँ निसाँ आनि दइए। काल्हि ओ दु जुट्टी बला बचिया, केहन लगैत रहय जेना अपने लोक रहय। गाममे बड़का कक्काक बेटीक बियाह नौगछिया भेलन्हि तँ हुनको दिआ तँ लोक सभ उड़न्ती उड़ेने छल जे बेटी बेचि लेलन्हि। कतेक दुरगर बियाह करा देलन्हि!

ई लोको सभ, बुझु इनारक बेङ सभ छी। दिल्ली-मुम्बइ घुमत गऽ तखन ने बुझबामे एतै जे भागलपुर-नौगछिया कोनो ततेक दुरगर नै छै। बाप हमरा बेचि लेत?....बापक मृत्यु माथपर नाचऽ लगलै आ ई सोचिते लेटराक कंठ सुखा गेलै आ आँखि पनिया गेलै।

११

"जँ अहाँ हमर सम्मान करब तँ अहाँकेँ तखन बुझैमे आओत जे अहाँक आनो लोकक प्रति सम्बन्धमे प्रगाढ़ता आबि गेल अछि। शरीरक रूप कारी-गोर भेनाइ, मोट-पातर बा छोट-पैघ भेनाइ, एकर कोनो सम्बन्ध लोकक व्यक्तित्वसँ नै छै। जँ अहाँ दोसरपर ऐ सभ लऽ कऽ हँसै छी तँ अहाँ अपन व्यक्तित्वकेँ छोट करै छी, माने अहाँमे नम्रता, भावना, आदर आ प्रेमक अकाल अछि। "

१२

लेटरबमक सर्कस कम्पनी जखन दिल्ली-मुम्बइ आ कइएक नग्रसँ घुरि फेर बनारस आयल दू-तीन बर्ख बाद तँ लेटरबमक भेँट अनायासे हर्खितसँ भऽ गेलै, काशीक तट पर। आ फेर ओकरा हर्खित आनि लेलकै अपन नाटक कम्पनीमे, बड्ड तरद्दुतसँ।
काशीक तट पर विद्यापतिक बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे सँ लऽ कऽ भिन्न-भिन्न धार्मिक आ लौकिक गीतक सुर बनाबथि आ गाबथि लेटरबम। बाल हनुमानक अभिनयमे सर्कसमे सीखल हुनकर करतब काज एलन्हि।

आ तइ लेल लेटरबमकेँ प्रशंसा सेहो भेटन्हि। आयुक न्यूनता सेहो कहियो काल उपलब्धिक मार्गकेँ रोकि दइ छै।
लेटरबम चौदह वर्षसँ छब्बीस बर्खक अवस्था धरि नाटक कम्पनीमे काज करैत रहला।
"शास्त्री जी। ई सुर तँ हमहीं बनेने छी, मुदा मोन कनेक विचलित अछि तइ द्वारे दोसर सुर नै बनि पाबि रहल अछि। लेटरबमकेँ बजा लइ छी। ओहो हमरासँ किछु सिखने अछि, किछु समाधान निकालि लेत। "- महान संगीत उपासक भट्ट जीक सोझाँ हर्खित बाजि रहल छला।
"हँ हँ। अवश्य बजा लिऔ। "- भट्ट जी बजला।
लेटरबम जखन आबि कऽ संगीतकेँ जइ सरलतासँ सिद्ध कऽ सुर गाबि देलन्हि, तइसँ भट्टजीकेँ बुझबामे भांगठ नै रहलन्हि, जे वास्तविक कलाकार हर्खित नै लेटरबम छथि। भट्ट जी एकटा एहन शिष्यक ताकिमे छला जे प्रतिभावान आ साधक होथि, जिनका भट्टजी अपन सभटा कला निश्चिन्त भऽ सौंपि सकथि। आइ से शिष्य भेटि गेलन्हि हुनका। लेटरबमकेँ अपना आश्रममे चलबाक जखन ओ नोत देलन्हि तँ लेटरबम दौगि कऽ अपन प्रकोष्ठ चलि गेला, आ पिताक फोटोकेँ निकालि कऽ जे कननाइ शुरू केलन्हि, तँ पन्द्रह सालसँ रोकल धार छहर तोड़ि बहराय लागल।

१३

"सर्कसक जोकरकेँ तँ अहाँ कलाकार मानऽ लागल छिऐ मुदा सर्कसक बाणवीरकेँ? ऐ दुनियाक डिजाइन अहाँक बनायल छी, ब्रौबडिंगनैग, लिलिपुटक देशक लोक लेल एतऽ कोनो बस्तु सुविधाजनक नै छै। मुदा हम सभ एडजस्ट करऽ चाहै छी। लिलिपुटक देशसँ अहाँक देशमे आयल होइ जेना, बहुत रास समस्या भोगि रहल छी, आ तइपर अहाँ हमरापर हँसै छी। "

१४

अस्तु तावत। नाटक कम्पनीमे जेहन एकरूपता छल, तकर विपरीत गुरुआश्रममे वैविध्यता छल। सभ दिन लेटरबम सूर्योदयसँ पूर्व उठै छला आ संगीत साधनामे लीन भऽ जाइ छला। शिष्य गुरुकेँ पाबि धन्य छल आ गुरु शिष्यकेँ पाबि कऽ। दिन बीतऽ लागल मुदा भातखण्डे आ पलुस्कर महाराज द्वारा संस्कृत साहित्यक आधार पर संगीतक कएल गेल पुनुरोद्धार तँ गङ्गाक धार जकाँ निर्मल आ चिर छल। जतेक गँहीर लेटरबम ओइ धारमे उतरथि, मोन करन्हि जे आर गँहीर जाइ। पच्चीस साल धरि गुरुक आश्रममे लेटरबम रहला। एकावन वर्षक जखन भेला तँ गुरु ई कहि बिदा केलन्हि जे लेटरबम आब अहाँ शिष्य नै गुरुक भूमिका करू। संगीतशास्त्रक पुनरोद्धार भऽ गेल छै, आङ्ल लोकनिक पाश्चात्य संगीत पद्धति अनबाक प्रयास विफल भइये गेल छलै, आ आब तँ भारत स्वतंत्र सेहो भऽ गेल अछि। जाउ आ शास्त्र द्वारा प्रदत्त संगीतक दोसर पुनर्जागरणक योद्धा बनू।

एकावन वर्षक आयुमे स्वतंत्र भारतमे लेटरबम नोकरी तकनाइ शुरू केलन्हि। काशीक एकटा संगीत विद्यालय सहर्ष हुनका स्वीकार कऽ लेलकन्हि। मुदा छियालीस वर्षक संगीत साधनाक साधल स्वर काशी विश्वविद्यालय तक पहुँचि गेलै। शिष्यक पंक्ति लागऽ लगलन्हि। श्रद्धाक प्रतीक, मुदा भारतक नव स्वरूपमे कतेको गोटे शास्त्रीय संगीतक व्यापार सेहो शुरु केलन्हि, मुदा प्रचारसँ दूर मात्र गुरु शिष्य परम्पराकेँ आधार बना कऽ आगू बढ़ैत रहला लेटरबम। हुनकर शिष्य सभ देश विदेशमे नाम करऽ लागल। तखन काशी विश्वविद्यालय शिक्षक रूपमे हिनका नियुक्त कऽ लेलकन्हि। मुदा ओतऽ निअम छल जे बिना पी.एच.डी. केने ककरो विभागक अध्यक्ष नै बनाओल जा सकैए। मुदा विभागमे लेटरबमसँ बेशी श्रेष्ठ तँ क्यो छल नै। जेना आङ्ल जन परम्परा शुरू कऽ गेल छला, गुरुकुलसँ पढ़निहारकेँ कोनो डिग्री नै भेटै छलै आ ओ सरकारी नोकरीक योग्य नै होइ छल। लेटरबमक लगमे सेहो तइ प्रकारक कोनो औपचारिक डिग्री नै छलन्हि। विश्वविद्यालयक सीनेटक बैसकी भेल आ तइमे

विश्वविद्यालय अपन निअमकेँ शिथिल केलक, आ लेटरबमकेँ संगीतक विभागाध्यक्ष बनाओल गेल। ओतऽ सेवानिवृत्ति धरि लेटरबम अपन प्रशासनिक क्षमताक परिचय देलन्हि। भातखण्डेक अनुरूप कतेक खण्डमे संगीतक शास्त्रक परिचय देलन्हि लेटरबम। लेटरबमक शिष्य सभक दृश्य-श्रव्य रेकार्ड बहरा गेल छलन्हि, मुदा लेटरबम स्टुडियो आ जनताक समक्ष अपन कार्यक्रमसँ अपन साधना भंग नै करै छला। साधना भोरो आ साँझो। भोरक साधनासँ साँझक सुर भेटन्हि आ साँझक साधनासँ भोरक। अस्तु तावत।

१५

"तेँ बसक सीटपर हम कूदि कऽ बैसै छी, बा हमरा कूदि कऽ बैसऽ पड़ैए, दोकानमे काउण्टरक नीचासँ ऊपर दिस ताकि चिकड़ऽ पड़ैए। बस आ सार्वजनिक स्थल हमरा सभ लेल डिजाइन कएले नै गेल अछि। जँ हम बसक सीट पर बैसै छी तँ लोककेँ होइ छै जे हम कूदि कऽ बैसि रहल छी, आ हुनका लागै छन्हि जे बसक सीटपर बैसबाक लेल जे हमरा संघर्ष करऽ पड़ि रहल अछि से ओइ सीटकेँ डिजाइन करबाक हुनकर असफलता नै छन्हि वरन् हमरा द्वारा कएल जा रहल कोनो सर्कस बा नाटक अछि। आ हुनका हँसी लागि जाइ छन्हि, जेना हुनका हँसबैले हम ई केलौ? आ हमरा ऐ तरहक उपहास सभ दिन सहऽ पड़ैत अछि। हमरो एक क्षण लेल भेल छल जे हमर बाप हमरा बैतरणी नाटकबलाकेँ बेचि देलक। "

१६

हुनकर शिष्य सभ लेटरबम लेल एकटा अभिनन्दन कार्यक्रम रखलन्हि। हुनकासँ बिना पुछनहिये शिष्य लोकनि ओतऽ रेकार्डिङ्ग केर व्यवस्था केने छला, जइसँ गुरुजीयोक सी.डी. बनय आ ओ रेकॉर्डिंग दुनियाँ सुनय। लेटरबम अभिनन्दन कार्यक्रममे एला। आयु पचहत्तरि बर्खक छलन्हि हुनकर। श्रोता रहथि देशक सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय संगीतकार लोकनि आ

लेटरबमक शिष्य-मण्डली। जखन लेटरबम शुरू भेला तखन हुनकर शिष्य लोकनि चारू दिशि ताकि रहल छला। हुनकर लोकनिक गुरुक स्वर हुनका सभकेँ छोड़ि सद्यः आर क्यो नै सुनने छल। मुदा शिष्य लोकनिकेँ सुनला उत्तर सभकेँ अभिलाषा छलै जे जखन शिष्य लोकनि एहन छथि तखन गुरु केहन हेता, से आइ ओ सभ देखलन्हि आ सुनलन्हि। पचहत्तरि वर्षक ऐ योद्धाकेँ सुनैत सुनैत संगीतक महारथी नव रसक संग हँसथि आ कानथि, मुदा शिष्य लोकनि विभोर भऽ मात्र कानथि।

१७

आ बजैत-बजैत हुनकर कण्ठ शिक्त भऽ जाइए। मुदा कनीकालमे ओ फेर बाजब शुरू कऽ दइ छथि।

“हम छी गंधर्व लेटरबम। हम आब पचहत्तरि बर्खक छी। किछु दिनमे फेर सभ बिसरि ने जाइ तेँ हम ई कहि रहल छी जे हमर बाणवीर समाजक सम्मानसँ अहाँक अप्पन फाएदा अछि। दूटा लोक एक रङ नै होइए, हँ हमरा-अहाँमे जे अन्तर अछि से बड्ड बेशी अछि। किछु चीज जे हम कऽ सकै छी, अहाँ नै कऽ सकै छी, शरीर नै बढ़लासँ मस्तिष्कक बेशी उपयोग हम सभ करै छी, ओहिना जेना आन्हर ओ सभ सुनि सकैए जे अहाँ नै सुनि सकै छी। ई सम्मान हमर माय लेल, ई सम्मान हमर पिता लेल, ई सम्मान हमर बाणवीर समाज लेल।“

दीर्घ कथा खण्ड

मधुबनी मोड्यूल

o

अहमद, पिताक नाम ओकील, जिला मधुबनी। प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक आ मध्य विद्यालय जामिया। तकर बाद ओपन स्कूलसँ दसमा। ओ.एल.एक्स. पर खरीद बिक्रीक धन्धा, आइ.एस.आइ. सम्बन्धी साइट सभक अन्तर्जाल सर्फिङ। कएकटा आइ.एस.आइ. केर टेलीग्राम ग्रुपक सदस्य, आ तही माध्यमसँ ब्रेन-वाश। एकटा आतंकी संगठनक स्लीपर-सेलक सदस्य। जंगलमे देशी कट्टाक प्रशिक्षण आतंकी संगठनसँ प्राप्त....

-ऑफिसमे तीन दिनसँ पूछताछ भऽ रहल छै, किछु बतेबे नै करैए।
-हमरा लग आनू।
ओकरा चाह-कॉफी पुछलिऐ, खेनाइ खुएलिऐ, मुदा किछु बजबे नै करय।
-सभ मारि-पीट कऽ थाकि गेल, अहूँ थाकि जायब, मुदा हम किछु नै बाजब।
-अहाँसँ खेनाइ-पीनाइ छोड़ि किछु पुछने छी?
-मीठ बजलासँ काज नै चलत, मधुबनीक छी ने, अहाँक अबाजेसँ बुझि गेलौं। हमरे एरिया-इलाकाक छी। ओइ पनजबिया सभकेँ होइ छलै जे वएह सभ मीठ बाजैए, ओकरा बुझा देलिऐ जे मधुबनी जिलाक लोकसँ बेसी मीठ ओ सभ नै बाजि सकैए। ओ पनजबियो सभ शुरूमे खूब मीठे-मीठ बजै छल, फेर गारि-मारि शुरू केलक। अहूँ सएह करब।
-हमरा गारि पढ़बाक हिस्सक नै अछि। खाउ-पीबू, किछु आर चाही तँ बाजू।
-हम छी फिदायीन, मरबाले सदिखन तैयार, आत्महत्या नै सोहादा, जेना जैन धर्मक सल्लेखन छिऐ धार्मिक आत्महत्या। मुदा ओ होइ छै अन्न पानि त्यागि कऽ आ ई होइ छै मारि कऽ मरि कऽ।
-हमहूँ राखै छी सायनाइड, खाइले नै खुआबैले, देखू ई हमर जेबीमे अछि। कनेक जीहमे चटेलौं आ सोझाँबला, क्षणमे क्षणाक।
-ई जिहाद छिऐ, आ हम छी मुजाहिद। मुदा कोरान यादि करैमे दिक्कत

भेलापर जे संघर्ष करैए सेहो अछि मुजाहिद, मुदा हम से मुजाहिद नै। जे शैतान छिऐ तकर विरुद्ध, सभ काल आ सभ ठाम।
-जे अहाँकेँ बुझायल गेल अछि, सएह सही? जे अहाँक माथमे पैसायल गेल अछि तकरासँ लड़बाक अछि हमरा। अहाँक काजक आ तकर परिणामक हमरा चिन्ता नै अछि।
-भीतुरका संघर्ष छी तौहीद। से हम कऽ लेने छी। कलमसँ आ लिखि आ बाजि कऽ कएल जाइए इजतिहाद, खुतबा आ दाबा, से मौलाना सभ कऽ रहल छथि। राजनैतिक स्तरपर संगठन सभ अछि, आ हएत कितल-फि-सबिलिल्लाह तरुआरिसँ।
-अहाँक आकाकेँ छोट-मोट सजा देब नीक नै रहत। अहाँ सभक एक-एकटा डेगक सूचना हमरा लग अछि। आ ई नै बुझू जे कानूनक पेंच हमरासँ खेला सकब। कलमक जे तागति हमरा लग अछि ओइमे कोनो छिद्र हम छोड़ै नै छिऐ। सभ तरहक आधुनिक उपकरण आ हथियार हमरा लग अछि, आ प्रशिक्षित लोक सभ सेहो। ई इण्टरनेट, टेलीग्राम आ ह्वाट्सैप सभ हमर नियंत्रणमे अछि। अहाँ सभ सरकारकेँ काज नै करऽ दइ छिऐ, लोकमे ई भ्रम पसारऽ चाहै छिऐ जे सरकार सर्वशक्तिमान नै अछि। सरकार लोकक सुरक्षामे अक्षम अछि। कारण अहाँ सभकेँ बुझल अछि जे सोझाँ-सोँझी अहाँ सभ नै लड़ि सकै छी।
-सरकार मानसिक बीमारकेँ कहैए जे ले गहना पहीर। यएह छिऐ सरकारक काज? किरातार्जुनीयमक पहिल सर्ग मे युधिष्ठिरकेँ वनेचर यएह तँ कहैत अछि। दुर्योधन विकास कऽ रहल छल, आब ओतुक्का कृषक बर्खापर आश्रित नै छथि, कूप-नहरि-जलाशय बना देलक दुर्योधन। तखन किए युधिष्ठिर चुप नै बैसि गेल। जनता तँ खुश रहथि दुर्योधनसँ। भारवि लिखै छथि।

घण्टी बजेलिऐ आ दू टा सिपाही ओकरा हमरा चैम्बरसँ लऽ गेलै। स्टेनो ओकर फाइल सभ हमर सोझाँ राखि देलक। ओकरा हमर काज करबाक तरीका बूझल छै।

हमरे एरिया-इलाका..?

नबी बकस मोन पड़ि गेल।
आतंकक समाजशास्त्र, प्रशिक्षणमे यएह तँ विषय रहै जइमे सभसँ बेशी नम्बर हमरा आयल छल।
मारि-गारिक एकरा डरे नै छै। हमर सहकर्मी सभ तीन दिन समै अनेरे खराप केलक।
नबी बकस...?

१

-एकटा प्लम्बर, एकटा पेन्टर आ तीन टा जोन लागत। सात दिनमे घर चमका देब। अहाँक काजमे कमाइ नै करबाक अछि हमरा। अहाँक ऐठाम एतेक रास लोक अबैत छथि, लोक देखत तँ पूछत जे ई काज के कएने अछि। तहीसँ हमरा चारि ठाम काज भेटि जाएत तेँ। अपन एरिया-इलाकाक लोक दिल्लीमे कतऽ पाबी- नबी बकस नाम रहै ओकर।
-अपन एरियाक लोक छी, कतए घर अछि?
-मधुबनी। हम तँ कहब जे बाथरूम आ किचनक काज सेहो करबाइए लिअ।
-अहाँ तँ पोचारा आ पेन्ट करै छी, संगमे राजमिस्त्रीक काज सेहो करै छी की?
-हम नै करै छी मुदा हमर गौआँ ई काज करैत अछि। ओ कहैत रहय जे साहबसँ पुछू काजक लेल। ओना ओकर काज बड्ड ठोस होइ छै। हम बजबै छी, मात्र भेँट कऽ लियौ। नै तँ हमरा कहत जे तूँ साहबसँ पुछनहिये नै हेबहुन्ह।
ओ मोबाइलपर फोन मिलेलक आ कोनो सर्फुद्दीनकेँ बजेलक।
सर्फुद्दीन किचेन बाथरूम सभक मुआएना केलक आ करणीसँ देबालपर मारलक तँ प्लास्टर झहरि कऽ खसि पड़लै। नलक टोटीकेँ घुमेलक तँ ओ टूटि कऽ खसि पड़लै। फेर ओ बाजल-
-सरकारी काज छिऐ। नीव तँ मजगूत होइ छै मुदा फिनिसिंग नै होइ छै। आ भइयो गेल-ए बीस साल पुरान ई सभ। देखू ऐ देबाल सभक हाल। सभटा अन्डरग्राउन्ड पाइप सभ सरि-गलि गेल अछि। तकरे लीकेजसँ

देबाल सभक ई हाल अछि। सभटा पाइप बदलऽ पड़त से सीमेन्ट तँ झाड़इये पड़त। ओना सीमेन्टमे कोनो जान बाँचलो नै छै। तखन देबालमे पाथर सेहो लगबाइये लिअ। ई बम्बइया-मिस्त्री गणेशीसँ जे अहाँ बरन्डा रिपेयर करेने छलौं तकर बालु देखियौ कोना झड़ि रहल अछि। टेस्ट करऽ लेल ऐ सीमेन्टकेँ हम झाड़ि कऽ नव सीमेन्ट लगबै छी, पाथर नै बनि जाय तँ कहब। तखन मोन हुअय तँ काज देब आ नै तँ नै देब।- से कहि ओ बरण्डाक किछु हिस्साक सीमेन्ट झाड़ि कऽ करिया सीमेन्ट लगा देलक आ चलि गेल।

खलील। खलील हरियाणाक रहय आ बुझू जे नबी बकसकेँ हमरासँ भेँट करेनिहार ईएह रहय। एकटा छोट भङ्गठी करेबाक रहय तइ द्वारे एकरा बजेने रही। बरंडाक एकटा कोनक मरम्मतिक काज रहय। खलीलकेँ कहलिऐ तँ ओ एकटा गणेशी मिस्त्री, जकरा सभ बम्बइया कहैत रहय, केँ बजा कऽ काज करा देलक। गणेशी बम्बै-रिटर्न छल, ओकर बम्बैक खिस्सा खतमे नै होइ, आ ओइमे खलीलकेँ खूब मोन लागै। खलीलक सपना छलै बम्बै। फेर पोचारा बला आकि पेंटबला नबी बकसकेँ ई बजेलक। आब ई पोचारा-पेन्टबला नबी बकस ओहि सर्फुद्दीन राज-मिस्त्रीकेँ बजा लेने अछि। सर्फुद्दीन पाइप सभक काज खलील प्लम्बरकेँ दिआ देलक से खलीलकेँ बिन मँगने काज भेटि गेलै। आ एक दोसराकेँ परिचय करबैत आब तँ लकड़ी बला आ बिजली मिस्त्री सेहो घरमे पैसि गेल छल।

-ई नबी बकसक छोट भाय छिऐ। बड्ड काजुल। दिन भरि लागले रहै अछि, नाम छिऐ ओकील। नबी बकस तँ आब ठिकेदार भऽ गेल अछि, करणीकेँ हाथो कहाँ लगबैए। ओकील बुझु मजदूरी करैए अपन भाय लग। आ ठीकेदारक भायक ओहदासँ आन मजदूर सभपर नजरि सेहो रखैए।- फेर कनेक काल धरि, ई जे प्लम्बर मिस्त्री रहय, खलील जकर नाम रहै, से चुप रहल।

-मुदा नबी बकस तँ पेण्ट आ पोचारा करबैए, करणी किए छूअत?

-दुनू गोटे -नबी बकस आ सर्फुद्दीन- संगे राज-मिस्त्री रहय। मुदा नबी-बकस लाइन बदलि लेलक। आ आब एक-दोसराकेँ काज दिअबैत रहैत अछि।

फेर खलील हमरा दिस ताकि बाजल-
-अहाँ दिसका लोक सभमे बड्ड एकता होइ छै।
ओकील आ खलीलमे काजक बिचमे गप-शप होइत रहै छलै।
-हमरा सभक पुरखा मुसलमान बनबासँ पूर्व राजपूत रहथि मुदा ई सभ राजमिस्त्री रहै, हरियाणामे राजमिस्त्रीकेँ धीमान कहै छै।- खलील इशारासँ ओकील दिस देखैत हमरा सुना कऽ कहलक।
-हम सभ तँ धीमान छलौं कि की, मुदा तोरा सभ के छलँह से तोरा एतेक फरिछा कऽ कोना बुझल छौ? - बहुत कालसँ ओकील बिन बजने काज कऽ रहल छल। मुदा पहिल बेर ओकरा उत्तर दैत सुनलिऐ। ओकर सभक बीच गप आ हँसी ठट्ठा चलैत रहैत छलै।

२
एक दिन सर्फुद्दीन मुँह लटकेने ऐल । कहलक जे गणेशीसँ झगड़ा भऽ गेल।
-से केना?
-कहैए जे तोँ साहेबक घरक काज हमरासँ छीनि लेलँह, इलाकाक लोकक नाम पर। बुझू, अहाँ हमर काज देखि कऽ ने हमरा काज देने छलौं। आ ई तँ छोड़ू, ईहो कहैत रहय जे... ।
-की? कहू ने।
-कहैत रहय जे मुसलमानपर कहियो विश्वास नै करबाक चाही।
हमर तँ तामसे देह लहरि गेल। कहलिऐ जे तुरत ओकरा बजा कऽ आनू गऽ। मुदा ओ थोम्ह-थाम्ह लगा देलक। फेर बादमे एक दिन गणेशीकेँ बजा कऽ हम बुझा देलिऐ- ऐ महानगरमे हम आ सर्फुद्दीन एके भाषा बजै छी, ई मात्र एकटा संजोग अछि। एकर काज देखियौ आ अपन काज देखू, फेर अहाँकेँ बुझा पड़त जे सर्फुद्दीनसँ अहाँ किए पाछाँ रहि जाइ छी।
ओम्हर एक गोटे वूडेन फ्लोरिंग केर विचार देलक तइपर सर्फुद्दीन ओकरासँ लड़ि गेल जे नीचाँ मे पाथरे नीक रहत । बाथरूम आ किचनमे पाथर अछि तँ सभ ठाम ईएह रहबाक चाही। रूममे किएक वूडेन फ्लोरिंग हएत? मुदा वूडेन फ्लोरिंग बला कहलक जे एक दिनमे लगा देब

आ पाइयो सस्त कहलक से हम ओकरे हँ कहि देलिऐ।
भरि दिन अनघोल होइत रहैत छल। नीचाँक फ्लोर बलाक बेटाक बारहम कक्षाक परीक्षा रहै से ओ जे राजमिस्त्री सभक आबाजाही देखलक तँ कहऽ लागल, जे रूम सभमे तँ पाथर नै लागत? हम कहलियन्हि जे नै वूडेन फ्लोरिंग काल्हि कऽ जाएत, तँ ओकर साँसमे साँस एलै।
-पाथर लगाबयमे तँ माससँ ऊपर ई सभ लगबितय, हमर बेटाक परीक्षा अछि, से हम तँ पाथर सभ पसरल देखि कऽ चिन्तित भऽ गेल रही।
-नै मात्र बाथरूम आ किचेन लेल ई पाथर सभ अछि।

सर्फुद्दीन, खलील आ नबी बकससँ अबैत जाइत काजक अतिरिक्त घर-द्वारक गप सेहो होमय लागल। नबी बकस मधुबनीसँ दिल्ली ऐल , छह भैयारीमे सभसँ पैघ, एकटा बहिन सेहो रहै। अपन हमशीरा (बहिन) क वर आ ओकर सासुरक विषयमे नबी बकस प्रेमपूर्वक सुनबैत रहैत छल। सर्फुद्दीनक शागिर्दीमे ओ राज मिस्त्रीक काज सिखलक। आस्ते-आस्ते चारि भाँएकेँ दिल्ली बजा लेलक। ओकील तँ ओकरे संग रहै छै, तीन भाय सभ बियाह करैत गेल आ अलग होइत गेल। मुदा ओहो सभ आसे-पासमे रहै जाइए। बियाह तँ ओकीलोक भेल छै, मुदा अछि ओ सुधंग। से आन भाय सभ कहैत-कहैत रहि गेलै जे नबी बकस मंगनीमे खटबैत रहै छौ, अलग भऽ जो गऽ, मुदा ओ तँ भायक भक्त अछि। भायक सोझाँमे एको शब्द की बाजल होइ छै?

३

एक दिन ओकीलकेँ बोखार भेल रहै आ दोसर भाय सभ ओकरा काजपर एबासँ मना केने रहै। मुदा ओ नै मानल। ओकर सुधंगपना देखि हमर माँ, पत्नी, बच्चा सभ ओकरा खूब मानऽ लागल रहथि। ओइ दिन काजक बीचमे ओ खेबा लेल मांगलक आ बालकोनीमे सूति रहल। फेर बेरिया पहरसँ काज शुरू केलक। साँझमे घर जेबाक बेरमे जखन हम कहलिऐ जे डेरा जेबाक बेर भऽ गेल तँ कहलक जे नै, आइ काज लेटसँ शुरू केने रही से खतम कइये कऽ जायब। आ आस्तेसँ बड़बड़ाइत बाजल जे देखैत छिऐ जे आइ क्यो बजबै लेल आबैए आकि नै।

आठ बजे करीब मोटरसाइकिलपर दू गोटे ऐल । ओकील कहलक जे ई दुनू ओकर छोटका भाय सभ छै। दुनू गोटे तेसर तल्ला स्थित हमर फ्लैटपर ऐल आ ओकीलकें गप करबा लेल बजेलक। ओकर सभक गपमे आपकता मिश्रित क्रोध रहै। ओकील ओकरा सभकेँ कहैत रहय जे ओहेन कोनो गप नै छै, आइ आधा दिन सुतल रहय तँ सोचलक जे काज पूरा कइए कऽ जायत। तावत नबी बकस सेहो ओतऽ पहुँचि गेल आ ओकीलकेँ लऽ गेल।

दोसर दिन नबी बकस भोरे-भोर ऐल ।
-देखियौक ई भाय सभ।... बेटा जकाँ बुझलिऐ एकरा सभकेँ आ हमरापर कलंक लगबैत अछि जे तूँ दू रंग करैत छह। तीनू भाँए काल्हि हमरासँ खूब झगड़ा करै गेल जे तूँ ओकीलकेँ नोकर जकाँ रखैत छहक। बुझू! ई ओकील अछि सुधंग। कतबो कहै छिऐ जे नीकसँ कपड़ा लत्ता पहीर, तँ ओहो झोलंगे जकाँ रहैत अछि। काल्हि हमरा तँ ओकीलसँ भेँटो नै अछि। सर्फुक काज दोसर साइटपर चलि रहल छै, ओतइ गेल छलौं जे कोनो स्कीमसँ काज भेटि जइतय तँ अहाँक ऐठाम काज खतम भेलापर ओतइ लागि जइतौं। बिल्डर अंसल बलाक ऑफर ऐल रहय जे हमरा ऐठाम आबि जाउ मुदा भाय सभक द्वारे हम मना कऽ देलिऐ। आ ई सभ.. ओना ई सभटा हमर पटना बला भाय मंडलबाक करतूत छी।
-मंडल!!? हमरा किछु पुरान गप मोन पड़ल। -अहाँक गाममे एकटा जयशंकर सेहो छथि की?
-हँ! हँ! अहाँ कोना चिन्है छियन्हि? ओना असली नाम तँ हमर भायक सलीम छिऐ। ऑफिसक नाम मंडल, घरक सलीम। सरकारी ड्राइवर अछि। घरमे सलीम कहने ओकर अहलिया (कनियाँ) बड़ घबड़ाइ छै।
-सभटा बुझल अछि हमरा।

४
अपन विद्यार्थी जीवनक एकटा घटना मोन पड़ि गेल।
पटनामे पढ़ैत रही। पड़ोसमे एक गोटे जयशंकर रहै छला। भाइ-भाइ कहै छलियन्हि। दू बियाह। पहिल बियाहक हुनकर बेटा भागि गेल छलन्हि।

ओना दोसर बियाह पहिल पत्नीक मुइला अनंतर भेल छलन्हि। किछु दिन दिल्ली-बम्बइ घुमि पहिल बियाहक ओ बेटा आपस एलन्हि। सभ ओकरा पुछलकै जे की करमे? ओ कहलक जे सभ काज हमरासँ हएत मुदा पढ़ाइ छोड़ि कऽ। फेर सभ मिलि कऽ ओकरा ड्राइवरीक लाइनमे जेबा लेल कहलक। ओकरो मोन रहै ड्राइवरी सिखबाक। भोरे-भोर एक दिन जयशंकर कहलन्हि जे आइ एक ठाम चलबाक अछि।

-बेटा कहैए जे ड्राइवरी सीखब। ड्राइविंग स्कूल बड्ड महग। एक गोटे गौआँ सलीम अछि ड्राइवर, सरकारी ऑफिसमे। गाममे ऐ बेर छुट्टीमे भेटल रहय। ओकरो सभक ईद पाबनि छलै, से ऐल रहय गाम। कहलक जे रवि दिन कऽ ओकरा छुट्टी होइ छै ऑफिसमे आ आन दिन पाँच बजे भोरेसँ सिखा सकैत अछि। दू सए टाकामे एकटा सेकेंड हैंड साइकिल बेटाकेँ कीनि देने छिऐ, ओकर घर दूर छै। ओकर डेरा ऑफिसे लग छै। ऑफिस बजेने अछि, ओतइसँ घर देखाओत।

-ऑफिस देखल अछि?

-हँ, कताक बेर गेल छी।

ऑफिसक बेरमे हम सभ गाँधी मैदानक बगलक कचहरी सन ऑफिस पहुँचै गेलौं।

-मंडलजी ड्राइवर साहेब छथि? - जयशंकर एक गोट हाकिमक ऑफिसक बाहर ठाढ़ चपरासीसँ पुछलन्हि।

-हँ, ओम्हर छथि।

हम जयशंकरकेँ पुछलियन्हि जे हमरा सभ तँ सलीमसँ भेँट करबा लेल ऐल छी, ई मंडल के छथि?

ओ इशारामे हमरा चुप रहय लेल कहलन्हि आ ईहो मुखर रूपमे कहलन्हि जे ऐमे कोनो बात छै, बादमे कहता।

आब जे मंडलजीसँ हुनका गप होमय लगलन्हि तँ बीच-बीचमे ओ सलीम भाइ, सलीम भाइ कहि हुनका सम्बोधन करैत रहलाह। फेर हुनका संगे हम सभ हुनकर डेरा पहुँचलौं। फेर बिदा होइत काल सलीम भाइ जयशंकरकेँ हमरा दिश इशारा करैत कहलन्हि जे हिनका कहि देलियन्हि ने। जयशंकर कहलखिन्ह जे कहि देबन्हि।

ओतऽ सँ निकललाक बाद जयशंकर कहलन्हि जे मधुबनी लग

जयशंकरक गाम छन्हि। मारते रास भाइ बहिन छै सलीमक। सलीम हुनकर लंगोटिया यार, संगे पढ़लन्हि। फेर रोजगारक क्रममे दुनू गोटे दूर चलि गेला। सलीम कोनो हाकिमक घरपर काज करऽ लागल। ड्राइवरी कहिया कतऽ ओ सीखि लेलक, से हुनरबलाकेँ नोकरीक तँ ओहुना दिक्कत नै होइ छै। बादमे एकर स्वभाव देखि कऽ ओ हाकिम एकरा कोनो दोसर आदमी जकर नाम मंडल रहय, आ कत्तौ मरि-खपि गेल रहय, केर नामपर टेम्परोरी राखि लेलकै। फेर किछु दिनमे ओ पर्मानिण्ट भऽ गेल।

जयशंकर हमरासँ कहलन्हि - एकर ऑफिसमे वा एकर संगी साथी लग-ओना अहाँसँ फेर कहिया एकर भेँट हेतै- ऐ गपक धोखोसँ चरचा नै करब। ओना पर्मानेन्ट भऽ गेल छै मुदा लोक सभ केहन होइ छै से नै बुझै छिऐ। क्यो किछु लिखि पढ़ि देतै तँ मंगनीमे बेचाराकेँ फेरा लागि जेतै।

मोनमे घुमरल ऐ गपकेँ नबी बकसकेँ हम कहलिऐ। तइपर ओ बाजल-
-ओहो स्कीम धरेनिहार हमहीं छी। एकटा कम्प्लेन कऽ देबै तँ जइ नोकरीपर एतेक फुरफुरी छै से घोसरि जेतै। मुदा सोचै छी जे ओकर नोकरी जेतै तँ हमरे माथपर आबि बथायत। तेँ अल्ला पर सभटा छोड़ि देने छिऐ।

५

नबी बकस ओना तँ बड्ड व्यस्त रहै छल मुदा ओइ दिन लागैए हमरे सँ गप करबा लेल समय निकालि कऽ ऐल रहय। जखन लोक मानसिक परेशानीमे रहैए तँ अपन दुखनामा दोसराकेँ सुनबऽ चाहैए। मुदा तकर श्रोता भेटब मोश्किल। मुदा हम अपन मनोविज्ञानक कॉलेजिया पढ़ाइक प्रभावक कारण सभ काज छोड़ि अनायास श्रोता बनि जाइ छी से नबीकेँ बुझल रहै। भदबरिया लधने छल से हमहूँ कत्तौ बाहर जेबाक हरबड़ीमे नै छलौं। से ओ अपन खिस्सा शुरु केलक।
-कतेक कष्ट कटने छी से की बयान करू। आ मदति के सभ केलक?

एकटा खालू-खाला (मौसा-मौसी) आ खलेरा भाय आ खलेरी बहिन मोन पड़ैए आर क्यो नै। अब्बूक मरलाक बाद बड़ा अब्बू (बड़का काका), छोटा अब्बू (छोटका काका) सभ पराया भऽ गेल। शौहरक मरलाक बाद अम्मीक हालत की रहै से ई भाय सभ की बुझत-गमत? खाला दिल्लीमे रहैत रहथि। अम्मीक मृत्युक बाद हमर पढ़ाइ छुटि गेल। मधुबनीमे पढ़ैत रहितौं, फूफीजाद भाय (पिसियौत) कहनहियो रहय जे तोरा जतेक पढ़बाक छौ पढ़, मुदा ई सभ तखन गाममे ईँटा उठबितय से हमरा देखल होइतय? आ ई गप एकरा सभकेँ हम बुझैयो नै देने छिऐ। आ ई सभ की कहैये जे हम अपन अहलिया (स्त्री) आ सारि-हमजुल्फ (सारि-साढ़ू)क पाछाँ एकरा सभपर ध्यान नै दऽ रहल छिऐ? दू रंग करैत छिऐ? दिल्लीमे आयल रही गाम छोड़ि कऽ तँ पहिने नोयडामे पितरिया बर्त्तनक दोकानमे ब्रासोसँ बर्तन साफ करैत रही। अल्लाहक करमसँ सर्फू भेटि गेल। खालाजाद भाय (मौसेरा भाय) केर संगी रहय सर्फू। ओकरेसँ सभ ईलम सिखलौं। मुदा ई कहि दिअय जे हम कहियो ओकरा दगा देने होइऐ। सर्फूक स्वभाव तँ अहाँकेँ बुझले अछि। कनियो अन्याय आ बेइमानी ओकरा पसन्द नै छै, सभसँ बतकही भेल छै, मुदा हमरासँ आइ धरि कोनो मोन मुटव्वल नै भेल छै। हमर से नीयत रहितय तँ ओकरो संग ने हमर संबंध टुटितय। आ ऐ शहरमे ओ आन भऽ हमरा अप्पन बुझलक आ ई सभ? ओ तँ गौआँ छी, मुदा खलील? ओकरोसँ पुछियौ। मायक मोन पड़ि जाइए जहिया ई भदवरिया लाधैए। मोन नै पाड़ऽ चाहै छी, आ तइ लेल व्यस्त रहै छी। मुदा आइ मायक ओ मृत्यु रहि-रहि कोढ़ तोड़ि रहल अछि।

नबी बकसक कंठ कहैत-कहैत भरिया गेलै। मुदा कनेक पानि पीबि फेर ओ मायक स्मरण करए लागल।

-नबी साहेबजादे, कनेक ओहि कठौतकेँ खुट्टाक लग कऽ दिऔ। बड्ड पानि चूबि रहल छै ओतऽ। ई बादरकाल सभ साल दुःख दइए। सोचिते रहि गेलौं जे घर छड़ायब। मुदा नै भऽ सकल। घरोक कनी मरोमति करायब आवश्यक छल, मुदा सेहो नै भऽ सकल। ठाम-ठाम सोंगर लागल अछि। फूसोक घर कोनो घर होइ छै? ठाम-ठाम चुबि रहल अछि, ओतेक कठौतो नै अछि घरमे। खेनाइ कोना बनत से नै जानि। ओसारापरक

चूल्हिपर तँ पानिक मोट टघार खसि रहल अछि। एकटा आर अखड़ा चूल्हि अछि, मुदा जे ओ टूटि जायत, तखन तँ चूड़ा-गुड़ फाँकि कऽ काज चलबऽ पड़त। समय-साल एहेन छै जे चूल्हि बनायब तँ सुखेबे नै करत। जाड़नि सेहो सभटा भीजि गेल अछि। भुस्सीपर खेनाइ बनाबऽ पड़त।

-पइढ़िया उजरा नुआक आँचर ओढ़ने, थरथराइत करीमा बेगम माने हमर माय, चौदह बरखक अपन बेटाक माने हमर संग, कखनो सोंगरकेँ सोझ करथि तँ कखनो कठौतकेँ एतऽ सँ ओतऽ घुसकाबथि। जतऽ टघार कम लागन्हि ओतऽ सँ घुसकाकऽ, जतऽ बेशी लागन्हि ओतऽ दऽ दइ छली। सौँसे घर पिच्छर भऽ गेल छल। कोनटा लग एक ठाम पानि नै चूबि रहल छल, ततऽ जा कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह।

-कतेक रास खढ़ चरमे अनेर पड़ल छल। पढुआ काकाकेँ कहलियन्हि नै। घर छड़बा लेने रहितौं।

-यौ बाबू। घर छड़एबाक लेल पुआर तँ भेटनिहार नै। आ गरीब-मसोमातक घर खढ़सँ के छड़ाबऽ देत?

-हमरा खढ़सँ आ पुआरसँ घर छड़बयबामे होमयबला खरचाक अन्तर तहिया नै बुझल छल।

-से तँ अम्मी, खढ़सँ छड़ायल घरक शान तँ देखबा जोग होइ छै। पढुआ काकाक घर देखैत छियन्हि। देखऽ मे कतेक सुन्दर लगैए आ केहनो बरखा हुअए, एको ठोप पानि नै चुबै छै।

-से तँ सभसँ नीक घर होइत अछि कोठाबला।

-एह, की कहै छी? गिलेबासँ आ सुरखीसँ ईँटा जोड़ेने कोठाक घर भऽ जाइ छै? आ नेङराक घर तँ सीमेन्टसँ जोड़ल छै, मुदा परुकाँ ततेक चुबैत छल से पूछू नै।

-से?

-हँ यै अम्मी। सभ बरख ज्योँ छड़बा दी, तँ ओइसँ नीक कोनो घर होइ छै?

-चारिम बरख जे छड़बेने छलौं तकर बादो पहिल बरखामे खूब चुअल छल।

-पहिलुके बरखामे चुअल छल ने आ फेर सभ तह अपन जगह धऽ लेने हएत। तखन नै चुअल ने बादमे।

-हँ, से तँ तकरा बाद तीन बरख नै चुअल।
-तखने काकी बजैत एली-
-जनमि कऽ ठाढ़ भेल अछि आ की सभ अहाँकेँ सिखा रहल अछि। कनेक उबेड़ जकाँ भेलै तँ सोचलौं जे बहिन-दाइक खोज-पुछारि कऽ आबी।
-बुन्नी रुकि गेल छल। हम काकाक घर दिस गेलौं आ दुनू दियादनीमे गप-शप शुरू भऽ गेलन्हि। साँझक झलफली शुरू भेल, भदबरियाक अन्हार, तँ काकी बहराइत कहैत गेली-
-बहिन दाइ, आगिक जरूरी पड़य तँ हमर घरसँ लऽ जाएब।
-नै बहिनदाइ। सलाइमे दू-तीन टा काठी छै। मुदा मसुआ गेल छै। हे, ई डिब्बी दै छियन्हि, कनेककाल अपन चुल्हा लग राखि देथिन्ह तँ काजक जोगर भऽ जायत। नबी दिआ पठा दिहथि।
-देखिहथि। उपास नै कऽ लिहथि से कहि दै छियन्हि, बच्चा सभ तँ हमरा ऐठाम खा लेत।- दियादिनी कहैत बिदा भेली।
-करीमा बेगम माने हमर माय ओसारापर खुट्टा भरे पीठ सटा बैसि गेली।
-की सोचि रहल छी अम्मी। कहू ने?
-यएह फुसियाही गप सभ, अहाँक अब्बूक पहलमानीक। काका हुनका जे कहैत रहथिन्ह सएह।
-खुट्टा पहलमान छथि ई।
-से नै कहू काका। जबरदस्तीक मारि-पीटि हम नै करै छी, तइ द्वारे ने अहाँ ई गप कहि रहल छी।
-रहमान काका आ हुमायूँ भातिज। पित्ती-भातिजमे ओहिना गप होइ छलन्हि, जेना दोस्तियारीमे गप होइ छै। अखराहामे जखन हुमायूँ सभकेँ बजाड़ि देथि तखन अन्तिममे रहमान हुनकासँ लड़य आबथि। काका कहियो हुनका नै जीतऽ देलखिन्ह। हुमायूँक कनियाँ माने हम नवे-नव घरमे ऐल छलौं। कोहबर लहठी सभ होइत छलै ओइ समयमे। आब ने जानि मुल्ला सभ किए एकर विरोधी भऽ गेल अछि, तैयो लोक करिते अछि की! मुल्ला सभक गप जे मानऽ लागी सभ ठाम तखन तँ भेल! आ ऐ तरहक वातावरण घरमे देखलौं तँ मोन प्रसन्न भऽ गेल। घरक दुलारि छलौं आ सासुरो तेहने भेटि गेल। समय बीतऽ लागल। मुदा हुमायूँक

विधवा एतेक जल्दी कहाय लागब से नै बुझल छल तहिया। आब तँ सभ प्रकारक विशेषणक अभ्यास भऽ गेल अछि। झगड़ा-झाँटिक बीच क्यो ईहो कहि दइ अछि- वरखौकी, वरकेँ मारि डाइन सिखने अछि! हुमायूँक जिबैत जे सभक दुलारि छलौं तकर बाद सभक आँखिक काँट भऽ गेलौं। इद्दतक बाद नैहरसँ दोसर बियाह करेबा लेल सेहो भाय सभ ऐल मुदा अहाँ सभक मुँह देखैत रहबाक इच्छा मात्र रहल।
नबी बकस बाजल- उजरा नूआ, बिन चूड़ी-सिन्दूरक मायक वैधव्य बला चेहरा एखनो हमरा मोने अछि। फेर ओइ भदबरिया रातिमे माय आगाँ कहऽ लगली।
-रहमान काका हमर पक्ष लऽ किछु बाजि देलखिन्ह एक बेर, तँ हमर सासु-ससुर कहऽ लगलखिन्ह जे हमर पुतोहुकेँ दूरि कऽ रहल छी। आ ईहो जे मुद्दीबा सभक अपना घरमे घटना हेतै, तखन ने बुझै जायत। आब तँ ने रहमाने चाचू छथि आ ने सासु-ससुर से मरल आदमीक की खिधांश करू। मुदा एकोटा झूठ गप ऐ सभमे नै अछि। लोक कहैत छै जे सुखक दिन जल्दी बीति जाइत अछि, मुदा हमर दुखक दिन जल्दी बीतैत गेल, सुखक दिन तँ एखनो एक-संझू उपासमे खुजल आँखिसँ हम देखैत रहै छी, खतमे नै होइए। विधवा भेलाक अतिरिक्त आन घटनाक्रम अपन नियत समयसँ होइत रहल। हमर अब्बू-अम्मीक मृत्यु भेल, सास-ससुर आ पितिया ससुर रहमान कका तँ पहिनहिये गुजरि गेल छला। घरमे जखन बँटबारा होमय लागल तखन सम्पत्तिक आ खेत-पथारक बखरा, चारि भैयारीमे मात्र तीन ठाम होमय लागल। हुमायूँक हिस्सा तीनू गोटे (जिबैत भैयारी सभ) बाँटि लेलन्हि। हम किछु कहलियन्हि जे हमर गुजर कोना हएत, छह टा बेटा आ एक टा बेटी अछि तँ हुमायूँक मृत्युक दोष हमरा माथपर दऽ हमर मुँह बन्न कऽ देल गेल। तीनू भाँएक मुँह हुमायूँक समक्ष खुजैत नै छलन्हि मुदा हुनकर मृत्युक बाद हुनकर विधवाकेँ हिस्सा नै देबऽ लेल तीनू भाँय सभ तरहक उपाय केलन्हि। हम नैहर जा कऽ अपन भायकेँ बजा कऽ अनलौं। पंचैती भेल आ फेर अँगनाक कातमे एकटा खोपड़ी अलगसँ तीनू भाँय बान्हि देलन्हि, हमरा आ हमर बच्चा सभक लेल। धान, फसिल सभ सेहो जीवन निर्वाहक लेल देबाक निर्णय भेल। हम चरखा काटऽ लगलौं। से कपड़ा-लत्ता ओतऽ सँ तेना निकलि

जाय।
-लिअ सलाइ।- दियादिनी आबि कहलन्हि।
-हँ।- भक टुटलन्हि करीमा बेगमक माने हमर मायक। दियादिनी सलाइ पकड़ा चलि गेली।
-ऐ बेर बाढिक समाचार रहि रहि कऽ आबि रहल अछि। बाट घाट सभ जतऽ ततऽ डूमि रहल छल, खेत सभ तँ पहिनहि डूमि गेल छल। अहाँक पढ़ुआ काकी पहिनहिये सुना देने छथि जे ऐ बेर वार्षिक खर्चामे कटौती हएत। काल्हि कहैत रहथि जे कनियाँ सभटा फसिल डूमि गेल, ऐ बेर वार्षिक खरचामे कटौती हेतन्हि। हम कहलियन्हि जे एँ यै। जहिया फसिल नीक होइए तँ हमर खरचामे कहाँ कहियो बेशी धान दै छी? ई गप अहाँक पढ़ुआ काका सुनि रहल छला। बजला- राँड़ तँ साँढ़ भऽ गेल। अहाँक पढ़ुआ काकीक इशारा केलापर ओ ससरि कऽ दलान दिशि बहरा गेला आ हम नोर सोंखि गेलौं। आइ गप निकलल तँ.......।
मायक खिस्सा कहैत-कहैत नबी फेर रुकि गेल। आँखि आ कंठ दुनू संग छोड़ि रहल छलै ओकर। किछु काल चुप रहि बाजल।
-ई खिस्सा भाय सभकेँ हम कहबो नै केने छिऐ। सोचलौं जे कहबै तँ मंगनीमे प्रतिशोध जगतै। जे काज करबाक से नै कएल हेतै। आ सुनलिऐहैं जे हमर ओ मंडलबा भाय ओइ पढ़ुआ काकाक कहलमे आबि गेल अछि।
नबी बकस फेर किछु काल चुप रहल। भाय सभक प्रति ओकर प्रेम ओकरा सभक विषयमे बेशी बजबासँ ओकरा रोकै छलै। फेर ओ मायक खिस्सा शुरू केलक।
-माय आगाँ बजैत रहली।
-धुत्त दिनमे तँ खेनहिये छलौं, ऐ अकल-बेरमे केना खेनाइ बनायब। कनियाँ-मनियाँ छलौं तखने विधवा भऽ गेलौं आ अहू वयसमे तैँ सभ कनियाँ-काकी कहैए। हुमायूँ कतेक मानै छल अपन भाय सभकेँ। अपन पेट काटि भागलपुरमे राखि पढ़ओलन्हि छोटका भाइकेँ आ आब ओ पढ़ुआ बौआ एहेन गप कहै छथि।
-सोचिते-सोचिते नोर भरि गेलन्हि मायक आँखिमे।
-हमरा संग एकबेर हज करऽ लेल गेल रहथि माय। धन्य भारत सरकार

जे हमरा सनक गरीब-गुरबाक माय सेहो हज कऽ ऐल। आ अपन बड़की दियादिनीकेँ सुनबैत रहथि खिस्सा जे बहिनदाइ, ततेक भीड़ छल गाड़ीमे, गुमार ततबे। गाड़ीमे बेशी मसोमाते सभ छली। एक गोटे कहैत छली जे जतेक कष्ट आइ भेल ततेक तँ जहिया राँड़ भेल छलौं तहियो नै भेल छल। ट्रेन आ हवाइ जहाज दुनूकेँ अम्मी गाड़ी कहै छली।

-फेर ओइ भदबरियाक रातिमे हमर अम्मी करीमा बेगमक मुँहपर बाड़ीक हहाइत पानि आ चारसँ टपटप चुबैत पानिक ठोप आ घटाटोप अन्हारक बीच कनेक मुस्की आबि गेलन्हि। हमरा काकाक दलानपर जाय लेल कहलन्हि जतऽ आर भाय बहिन सभ छल।

-फेर सोचिते-सोचिते खाटपर टघरि गेली करीमा बेगम, माने हमर माय। भोर होइत-होइत बाड़ीक पानि बान्हपरसँ अंगना दिस आबि गेल। तीनू भैयारी अपन-अपन हिस्साक आंगन भरा लेने छला से सभटा पानि सहटि कऽ हमर सभक धसल आंगनसँ खोपड़ी दिस बढ़ि गेल। घरमे चारि आंगुर पानि भरि गेल। भोरमे किछु अबाज भेल आ जे उठै छी तँ खाटक नीचाँ पानि भरल छल, एक-कोठी दोसर कोठीपर अपन अन्न-पानिक संग टूटि कऽ खसल छल। आब की हो, बड़की दियादनीक बेटा सभसँ पहिने आबि कऽ खोज पुछाड़ि केलकन्हि, अबाज दूर धरि गेल छल। सभटा अन्न-पानि नाश भऽ गेलन्हि। अन्न पानि छलैन्हे कोन? दू-टा छोट-छोट कोठी, ओकरे खखरी-माटि मिला कऽ दढ़ करैत रहै छली हमर अम्मी। मुदा भोर धरि ओ हहा कऽ खसल आ मसोमातक जे बरख भरिक बाँचल मासक खोरिस छल तकरा राइ-छित्ती कऽ देलक। करीमा बेगम माने हमर अम्मी सूप लऽ कऽ अन्नकेँ समटय लेल बढ़ली, हमर आँखिक देखल अछि। मुदा बाढ़िक पानिक संग पाँकक एक तह आबि गेल छल घरमे। सौँसे टोल हल्ला भऽ गेल जे देखिऔ केहन भैंसुर दिअर सभ छै, अपना-अपनीकेँ अपन-अपन अंगना भरि लइ गेल अछि। मसोमातक अंगना तँ अदहासँ बेशी धकिआ लऽ गेल छलैहे, जे बेचारीक बचल अंगना अछि से खधाइ बनि गेल अछि। बड़की दियादिनी सहटि कऽ एली कारण दिआद टोलक लोक सभ आबऽ लागल रहथि। करीमा बेगमक सोंगरपर ठाढ़ घरक दुर्दशा देखि सभ काना-फूसी करऽ लागल रहय। अंगनाक एक कोनसँ दोसर कोन, अपन घरसँ दोसराक घर! पानि पैसबाक देरी रहै आ

आस्ते-आस्ते हमर घरक एक कातक भीतक देबाल ढहि गेल। टोलबैया सभ हल्ला करऽ लागल जे करीमा बेगम भितरे तँ नै रहि गेलथि। बड़की दिआदिनी खसल घर देखि हदसि गेली। बजली जे अल्ला रक्ष रखलन्हि जे सुरता भेल आ नबीक भाइ-बहिनकेँ घर लऽ अनलिऐ नै तँ दियादी डाह नै बुझल अछि। सभ कलंक लगबितय अखने।

-मुदा दियादनी!?

-दियाद सभ, सभ गप बूझि अपन-अपन घर जाइ गेला। हम अम्मी लग एलौं। मार्क्सवादी विचारक रही, मधुबनीमे पढ़ैत छलौं। विधवा-विवाह, जाति-प्रथा सभ बिन्दुपर पढुआ काकासँ भिन्न विचार रखैत छलौं। घरक नाम नबी छल मुदा स्कूल कॉलेजक नाम नबी बकस। गाममे भोजमे खढ़िहानक पाँति आ बान्हपरक पाँति देखि विचलित होइत छलौं। जोन-बोनिहारकेँ बान्हपर बैसा कऽ खुआबैत देखैत छलौं आ बाबू-भैयाकेँ खढ़िहानमे। खढ़िहानमे बारिक लोकनि द्वारा खाजा-लड्डू कैक बेर आनल जाइ छल। बान्हपरक पाँतीमे एक बेर आ नहियो। मुदा घरमे कोनो मोजर नै छल, कहल जाइत रहय जे पहिने पढ़ि-लिखि कऽ किछु करू। अम्मीसँ कतेक गमछा-झोड़ा भेटैत छल, चरखाक सूतक कमाइक। जय गाँधी बाबा, विधवा लोकनि लेल ई काज धरि कऽ गेला।

-मुदा हमर अम्मी? की भेलन्हि हुनका? भाय बहिन सभ तँ ओम्हर अछि!

-अम्मी!!!!!!!!!!!!!!

-हमर चित्कारसँ सौंसे टोलमे थरथड़ी पैसि गेल रहय। नबी कहियो कनैत नै अछि, कानल अछि तँ कोनो गप छै।

-नै अम्मी। ई कोनो गप नै भेल। किए हमरापर अहाँ भरोस छोड़ि देलौं। नबी बकस नाम छी हमर। पाँचो भाय आ छोटकी बहिनक भाय नै बाप छिऐ हम। मुदा अहाँ हमरापर भरोस छोड़ि चलि गेलौं। या अल्ला!!!!!!!!!!!

-टोल जुटि गेल मैयतक चारू दिश। के की सभ केलक से नै बुझलौं। अम्मीकेँ गुसुल (नहाओल) कराओल गेल। कफन पहिराओल गेल। जनाजाक खाट ऐल । तइपरसँ मायक गाँधी चरखासँ बनाओल चादरि ओढ़ाओल गेल। तीनू काका आ हम जनाजाक खाटकेँ कान्ह देलौं। कब्रिस्तान लग ठाढ़ भऽ जनाजाक नमाज पढ़लौं आ अम्मीकेँ दफन

केलौं।
नबी बकस फेर चुप भऽ गेल। हम ओकरा टोकऽ नै चाहै छलौं। दस मिनट धरि ओ चुप्पे रहल आ हम बैसल रहलौं। फेर ओ बाजल।
-अम्मीक मृत्युक चालीस दिन धरि शोक मनेलौं। आ वएह चालीस दिनक आराम हमरा ऐ जोग बनेलक जे फेर पएरमे घिरनी लागि गेल। अम्मीक मृत्युक बाद पढ़ाइकेँ नमस्कार कऽ खाला लग आबि गेलौं, दिल्ली नगरियामे ।

नबी बकस अपन आँखि पोछि रहल छल। फेर दस मिनट ओ चुप रहल।
-नबी बकसकेँ अम्मीक इन्तकाल दिन लोक पहिल आ अन्तिम बेर कनैत देखने रहय। मुदा ई सभ आइ फेर हमरा आँखिसँ नोर चुआ देलक। ओकीलक तँ बियाहो नै होइत रहय। सभ कहैत छल जे बुरबक छै। मुदा जेना भीष्म पितामह धृतराष्ट्रक बियाह करेलन्हि तहिना हम एकर बियाह करबेलौं आ ई सभ कहैत अछि जे हम ओकरा नोकर जकाँ रखै छिऐ।

तावत कॉलबेलक घंटी बाजल रहय। ओकील नबी बकसक सोझाँमे आबि ठाढ़ भऽ गेल।
-भैया, सभ कहैत अछि जे हम बुरबक छी। काल्हि अहलिया (कनियौँ) केँ ई सभ यएह गप कहि देलकै। ओ कहलक जे तोहर चिन्ता ककरो नै रहै छै, मुदा हम नै मानलौं। से काल्हि हम कनेक लेट भऽ गेलौं। सरकेँ कहबो केलियन्हि जे देखै छी जे ओ सभ आबैए आकि नै। बुधियारो सभ आयल आ अहाँक तँ कथे कोन। कनियो तँ सुधंगे ने अछि। आइ ओहो दियादिनीक गरा पकड़ि कऽ खूब कानल अछि। बुधियार सभ ने अहाँकेँ छोड़ि चलि गेल, मुदा ई बुरबकहा अहाँकेँ छोड़ि कहियो नै जायत, भाय।

ओकीलक एकटा बेटा छलै। कहियो काल ओ ओकरा संग लऽ कऽ आबि जाइ छल। छौड़ा लुत्ती छलै, माय-बाप सन सुधंग नै।
जामियाक स्कूलमे प्रवेश परीक्षामे सफल भऽ गेल छलै। सस्ते रहै जामिया स्कूल। मुदा ओ बच्चा, बच्चा नै भगवानक रूप लागै छल, जेना सभ बच्चा लगैए।

-ओकर स्कूलक पढ़ाइक हिसाबसँ ओकरा नामी फिक्स डिपोसिट करबा दिऐ, पता नै ओकीलक भाइ कहिया धरि ओकरा पढ़ेतै, पढ़ेबो करतै आकि नै। पाइ दैतो छै ओकीलकेँ आकि पेटे टा पोसा रहल छै ओकर परिवारक।- कनियाँ पूछै छथि।
-पूछि लियौ, अधला नै लागै।- हम अपन काजमे लागि जाइ छी, कनियाँ बिनु पुछने कोनो काज नै करै छथि, हँ उत्तर 'हँ' मे चाहबे करी हुनका। से बुझू जे निर्णय लऽ कऽ सूचित करैत छथि।
दिवालीक कम्बल-मिठाइ लेल सब्जीवाली, बिजली मिस्त्री, राजमिस्त्री, प्लम्बर आ गार्ड सभक लाइन लागल रहै छलै हमर कनियाँ लग। गरमीमे ठंढ़ा पानि कियो नै दइ छै, हमरे घर टासँ भेटै छै। सब्जीबाली छोड़ि कऽ आन सभटा बादोमे अबै छल जाइ छल। मुदा सब्जीवाली छल पर्मानेण्ट, बियाहि कऽ आयल छल तहियेसँ ब्लॉकमे सब्जीक ठेला लगबैए। आब तँ बेटो संग आबै छै। रवि दिन खाली छुट्टी करैए। भगिनी आ ओकर पति दुबइसँ आयल रहथि हमर डेराक पता पुछलन्हि तँ सब्जीवाली संग नेने आयल हमरा घर, आ ईहो कहलकन्हि जे बहू भोरेसँ बाट ताकि रहल छथि, फ्लाइट लेट भऽ गेल की?
जमाय साँझमे कहलन्हि- मामीजी तँ बड्ड पोपुलर छथि।

६

बहुत रास आन्हर बिहाड़ि आयल आ दस साल केना बीति गेल बुझबो नै केलिऐ। जखन नोकरी शुरू केने रही तँ एकटा वरिष्ठ सहकर्मीकेँ पुछने रहियन्हि जे समै बितते नै अछि, केना बीतत, तँ ओ कहने रहथि जे बच्चा सभ जखन पैघ हेमऽ लागत ओकर कैयर शुरू हेबाक बेर एतै तँ अहाँकेँ पते नै चलत जे समय केना बीति गेल। ओना एक बेर चिन्ता-फिकिर केँ दूर करबा लेल ओ गएर वैवाहिक सम्बन्ध बनेबाक विचार सेहो सभकेँ देने रहथिन्ह आ तखनो मोटामोटी वएह तर्क रहन्हि- कोनो दोसर बौस्तु दिस ध्यान जेबे नै करत, समै तँ बितबे करत कथूक चिन्तो नै हएत।

कनियाँकेँ अहमद पिताक नाम ओकीलक विषयमे कहलियन्हि, ओ

पुरनका लोक सभकेँ जमा केलन्हि, ओइमे सँ कियो कहलकन्हि जे ओकील मरि गेल। ओकर भाय बड़का ठिकेदार भऽ गेल छै, नोएडामे अंसलक काज भेट गेल छै आ ओ ओत्ते चलि गेल अछि, ऐ सँ बेशी ओकरा कोनो जानकारी नै छै। ओकीलक कनियाँ आ बच्चाक विषयमे ओकरा किछु नै बुझल छै।
गणेशी मिस्त्री खलीलक विषयमे कहलक- ओ बम्बइ-बम्बइ करैत रहै छल-ए, कत्तऽ गेल पता नै, भऽ सकैए बम्बइये चलि गेल हएत। किछु लोक नै होइए सर जे रहत तँ खूब मिलि-जुलि कऽ दिन-राति संगे मुदा चलि जाइत अछि अनचोक्के आ फेर कहियो नै भेँट होइए, खलील ओहने छल। असगर तँ छले, पैंतीस-चालीस बर्खक, ने बियाह ने दान, पता नै की भेलै, कतऽ गेल।

खलील...?

७
स्टेनोकेँ रस्तेसँ फोन कऽ देलिऐ जे हम कनी कालमे आबि जायब तावत अहमदकेँ हमर चैम्बरमे आनि लिअय।
ओकर फेर वएह नाटक।
-फेर नीक लोक बनबाक अहाँ नाटक करब, चाह-कॉफी-डोसा।
चटाक.. स्टोनक थापड़ ओकर कानपर पड़लै आ ओकर कान झनझना गेलै।
-आब अहाँ स्टेनोकेँ कहबै, नै मारियौ एकरा, समैक मारल छै, व्यवस्थाक दोषसँ आतंकी बनि गेलै। फेर एकरा बाहर पठा देबै। अहाँ नीक लोक आ काबिल आ हम सभ गदहा। फेर आस्तेसँ सभ गप पुछब। आ अहाँक भद्रता देखि हम सभटा गप बता देब।- आ फेर ओ हँसनाइ शुरू केलक।
हम स्टेनोकेँ कहलिऐ- थापड़ खा कऽ बाजैबला कठजीव नै अछि ई। एकर फाइलक संग सभटा कुण्डली हमरा लग अछि। थापड़ मारलासँ अहाँक हाथ दुखायत आ तीन-चारि दिन आर टाइम खराप हएत। जाउ पिलास लऽ आनू।
पिलास आनि स्टेनो ओकर हाथ टेबुलपर राखि देलकै आ एकटा आंगुरक

नहमे हम पिलासकेँ पैसाबऽ लगलौं।
ओ बाजऽ लागल- अहाँ एत्ते नीक लोक, नै अहाँ हमरा खाली डरबै ले ई कऽ रहल छी। अहाँ हमरा एरिया-इलाकाक...
आ सट्ट दऽ ओकर एकटा नह बाहर।
ओकर सौंसे शरीरसँ घाम चुबऽ लगलै।
हम ओकर दोसर आंगुरक नहमे जावत पिलास फँसबितौं ओ 'सभ किछु बता देब, सभ किछु बता देब' चिकड़ऽ लागल। स्टेनोकेँ पिलास दऽ देलिऐ, एकटा फर्स्ट-ऐड बलाकेँ स्टेनो फोन केलक आ ओ आबि कऽ ओकर आंगुरमे तूर-तेल लगा कऽ बान्हि देलकै। फेर दुनू गोटे बहरा गेल। आ कोठलीमे हम आ अहमद।
तखन ओ आस्ते-आस्ते बजनाइ शुरू केलक।
-अहाँसँ हमरा ई आशा नै छल। मारितौं-पिटतौं, तकर प्रशिक्षण हमरा सभकेँ देल गेल अछि।
-ओइमे बड्ड टाइम खराप होइ छै, हम टाइम सँ आबै आ टाइमसँ जाइबला लोक। अहाँ सभकेँ टाइमे टाइम, ने कोनो कथा लिखबाक अछि नै कोनो घर परिवार। हमर मुख्य धंधा अछि कथा लिखब। तेँ टाइमक बड्ड महत्त्व अछि हमरा लेल।
-तँ की अहाँ दोसरो नह उखारि लैतौं?
-दोसरो नै दसो, दुनू हाथक, आ फेर दसो दुनू पएरक, बेरा बेरी, आ १५ सेकेण्डक एवरेज राखू तँ ५ मिनटमे काज सम्पूर्ण।
-अहाँ एतेक क्रूर छी तखन कथा केना लिखै छी।
-फेर अहाँ गलत बुझलौं। ई अहाँ लेल कऽ रहल छलौं। बीसो नह निकलि गेलाक बाद अहाँकेँ अहाँक आतंकी स्कूलक परीक्षामे हम पास कऽ दितौं। फेर कऽ सकितौं अहाँ आतंकी घटना खुलि कऽ। अहाँकेँ अपन प्लास्टिक सर्जरी करेबाक छल आ फेर अहाँक फिंगर प्रिण्टिङ भारत छोड़ू अमेरिकाक सी.आइ.ए. सेहो मिला नै सकै छल। नह निकाललासँ फाएदा होइ छै। शुरू करब आकि स्टेनोसँ पिलास मंगबाबी?
आ ओ शुरू भऽ गेल..
-कतेक नीक हमर ऑनलाइन खरीद बिक्रीक बिजनेस शुरू भऽ गेल छल, ओ.एल.एक्स. पर। अबुल फजल एनक्लेवमे एकटा बेसमेण्टमे

काज बढ़लापर ऑफिस लेलौं। मुदा ओतऽ वायरलेस इंटरनेट पकरबे नै करै। से एकटा केबलबलाकेँ पकड़लौं। आ ओ तेज गतिक इंटरनेट देलक, आ ओत्तैसँ ई सभ शुरू भऽ गेल।

फेर ओ सुनबऽ लागल जे केना इंटरनेटसँ ओकर ब्रेन-वाश भेलै.. आइ.एस.आइ. केर ग्रुप सभक माध्यमसँ।

-बूझल अछि। आगाँ बताउ।

-तँ घर परिवारक विषयमे बताउ?

हम ओकील, नबी बकस, मंडलक विषयमे कनी-कनी ओकरा बतेलिऐ।

-अहाँसँ बेसी अहाँक परिवारक विषयमे हमरा बूझल अछि... आगू बढ़ू।

आब ओ अपन प्रेम-प्रसंगक चर्चा केलक आ ई खिस्सा जखने शुरु केल तँ हमरा पित्त चढ़ि गेल-

-के छी खलील आ की अछि मधुबनी मोड्यूल, छह बजे हम ऑफिस छोड़ि दै छी तोरा बूझल नै छौ?

हमर अबाजमे तेजी आबि गेल आ ओ अपन तेल-तूर लागल आंगुर दिश देखलक।

-हम ओकीलक बेटा छी। अहाँकेँ देखने छी। हम पैघ भऽ गेलौं, तेँ अहाँ हमरा नै चिन्हलौं। मुदा हम देखिते चीन्हि गेल छलौं। अहाँक अहशान अछि। अहाँक रक्षा करब हमर कर्तव्य छी, से नै बुझू जे हम डरि गेलौं। आ ओ खिस्सा शुरू केलक।

सभटा खिस्सा सुनलाक बाद हम स्टेनोकेँ बजा कऽ अहमदक आंगुरकेँ डिटॉल बा सेवलोनसँ धुअबा कऽ पट्टी बन्हेबाक निर्देश देलिऐ आ कहलिऐ जे ओकरा टिटनेसक सुइया जरूर लगबा दिअय।

८

किछु ऑपेरेशन, किछु हिंसा, किछु गिरफ्तारी। आ फेर सभटा शान्त। सूचना सम्पूर्ण छल।

-तँ की पता चलल।- पत्रकार पुछैए।

-मधुबनी चित्रकला लेल जानल जायत मधुबनी, मधुबनी मोड्यूल लेल नै। आ अहाँ सभ पत्रकारकेँ आधिकारिक रूपसँ ई सूचित कएल जा रहल अछि जे मधुबनी-मोड्यूल खतम भऽ गेल अछि।

द सुपर इण्डियन एक्स्प्रेस आ द सुपर हिन्दू अखबारमे अगिला किछु दिनमे हमर दू सहकर्मीक बहादुरीक खिस्सा भरि-भरि पन्नामे निकललन्हि, हमरा आबि कऽ पुछलन्हि- अहूँक खिस्सा निकलबा दिअ, बेशी खर्चो नै छै, एक ब्लैक लेबलमे जे कहियौ छापि देत। केलौं-धेलौं अहाँ आ यश हमरा सभकेँ।
हम मुस्कियाइत छी। चुप्पे रहै छी।
-मुदा अहाँकेँ तकर की जरूरी अछि? अहाँ तँ असली हीरो छी।

९

-मण्डल, कतऽ धरि गप पहुँचल। संगठनमे अहाँकेँ आगू बढ़बाक अछि। ऐ नक्सलीमे ई तँ खूबी छै जे ओ आतंकवादी सन भारतकेँ तोड़ऽ नै चाहैए, मात्र शासनक पद्धति बदलऽ चाहैए।
-ओ पुरान गप भऽ गेलै सर, ई सभ तँ आब आदिवासी क्षेत्रमे विकासक भुस्साथरि बैसेबामे लागल अछि, बिजनेसमैनसँ पाइ असूलैए। आ तकर सरदार छी मुतालिफ।
-मुदा ओ पाइ जाइ कतऽ छै, ओकरा सभकेँ बिजनेसक लूरि तँ छै नै? हम तँ ऐ इलाकाक सभ फैक्ट्रीक खाता-बही देखने छी।
-कोनो एहेन बिजनेसमैन जकर खाता-बहीमे सभक संग लेन देन होइ। मुतालिफ अपने पाइ लैतो नै अछि, सभ अप्पन-अप्पन हीस एक्केटा बिजनेसमैनकेँ दै छै, आ तकर बदलामे मुतालिफ करै छै ओकर सुरक्षा।
-मनोरंजन अग्रवाल!!! ठीक छै मण्डल, एत्तै उतारि दिअ।
-मण्डल नै अहमद। सर, असगरोमे तँ हमर असली नाम बाजू!

शब्दशास्त्रम्

सिंह राशिमे सूर्य, मोटा-मोटी सोलह अगस्त सँ सोलह सितम्बर धरि। किछु सुखेबाक हुअय तँ सभसँ कड़ा रौद। सिंह राशिमे मितूक पिताक तालपत्र सभ पसरल रहैत छल, वार्षिक परिरक्षण योजना, जे ऐ तालपत्र सभमे जान फुकैत छल। आनन्दा मितूक पिताजीक ऐ तालपत्र सभक परिरक्षण मनोयोगसँ करैत रहथि। कड़गर रौदमे तालपत्र पसारैत आनन्दा, मितूकँ ओहिना मोन छन्हि। मितू संग जिनगी बीति गेलन्हि आनन्दाक। मुदा ऐ बरखक सिंहराशि एलासँ पहिनहिये आनन्दा चलि गेली... आ आब जखन ओ नै छथि तखन जीवनक परिरक्षण केना हएत। मितूक आ ओइ तालपत्र सभक जीवनक..
भ्रम। शब्दक भ्रम। शब्दक अर्थ हम सभ गढ़ि लइ छी। आ फेर भ्रम शुरू भऽ जाइए।

लुकेसरी अंगना चानन घन गछिया
तइ तर कोइली घऽमचान हे
कटबै चनन गाछ, बेढ़बै अंगनमा
छुटि जेतऽ कोइली घऽमचान हे
कानऽ लगली, खीजऽ लागल, बोन के कोइलिया
टूटि गेलऽ कोइली घऽमचान हे
जानू कानू जानू की, जोबोन के कोइलिया
अहि जेतऽ कोइली घऽमचान हे
जहि बोन जेबऽ कोइली
रहि जेत तऽ निशनमा
जनू झरू नयना से लोर हे
सोने से मेढ़ायेब कोइली तोरो दुनू पँखिया
रूपे से मेरायेब दुनू ठोर हे
जाहे बोन जेबऽ कोइली रुनझुनु बालम
रहि जेतऽ रकतमाला के निशान हे

कोनो युवतीक अबाज चर्मकार टोलसँ अबैत बुझना गेल..आनन्दाक अबाज।
मुदा आनन्दा तँ चलि गेली, कनिये काल पहिने ओकर लहाश देखि ऐल छथि बचलू। मितूकेँ समाचार कहि डोमासी घुरि गेल छथि। आ आनन्दा, ओ तँ बूढ़ भऽ मरलीहेँ। तखन ई अबाज, युवती आनन्दाक। भ्रम। शब्दक भ्रम। कहैत रहथि मितूक पिता श्रीकर मीमांसक मारते रास गप शब्दशास्त्रम् पर। शब्दक अर्थ हम सभ गढ़ि लइ छी। आ फेर भ्रम शुरू भऽ जाइत अछि।

I

<u>शब्दशास्त्रम्</u>

गर्दम गोल भेल छल।
अनघोल मचि गेल छलै। बलान धारमे कोनो लहाश बहल चलि जा रहल छल। धोबियाघाट लग कात लागल छल।
कतेक दूरसँ ऐल छल से नै जानि। कोनो बएसगर महिलाक लहाश छल। धोबिन लहाशकेँ चीन्हि गेल रहथि। गौआँकेँ कहि दइ छथि ओकर नाम आ पता। गौआँ के, ओइ गामक डोमासीक बचलूकेँ। मृतकक घरमे खबरि भऽ गेल छलै। असगरे एकटा बुढ़ा रहैए ओइ घरमे...मितू।
मितूक टोलबैया गौँआ सभ लहाशकेँ डीहपर आनि लेने छल आ फेर मितू ओकर दाह-संस्कार कऽ देने रहथि।
गाममे अही गपक चर्चा रहै। बचलू बुढ़ाकेँ बुझल छन्हि किछु आर गप। चिन्है छथि ओ ओइ लहाशक मनुक्खकेँ। नवका लोककेँ बहुत रास गप नै बुझल छै।
आनन्दाक लहाश..
-आनन्दा बड्ड नीक रहै। बुझनुक। ओकर बचिया सभ सभटा सुखितगर घरमे छै..बेटा सेहो विद्वान। मितू, आनन्दाक वर सेहो उद्भट..श्रीकर मीमांसकक पुत्र..। मुदा कहियो मितू आकि आनन्दा कोनो खगतामे ककरो आगाँ हाथ नै पसारने छथि।
बचलू सेहो आब बूढ़ भऽ गेल छथि, झुनकुट बूढ़। हिनकासँ पैघ मात्र

मितू छथिन्ह। लोक सभ दुनू गोटेकेँ बुढ़ा कहि बजबै छन्हि। आ ऐ बचलू बुढ़ाकेँ बुझल छन्हि ढेर रास गप।

.....

मितू आ श्रीकरक वार्तालाप। किछु बुझिऐ आ किछु नै।

-मितू। भामतीमे वाचस्पति कहै छथि जे अविद्या जीवपर आश्रित अछि आ विषय बनि गेल अछि। आत्मसाक्षात्कार लेल कोन विधि स्वीकार करब? असत्य कथूक कारण केना भऽ सकत? कोनो बौस्तुक सत्ता ओकरा सत्य केना बना देत, त्रिकालमे ओकर उपस्थिति केना सिद्ध कऽ सकत? जे बौस्तु नै तँ सत्य अछि आ नहिये असत्य आ नै अछि ऐ दुनूक युग्मरूप, सएह अछि अनिर्वाच्य। बिना कोनो वस्तु आ ओकर ज्ञान रखनिहारकेँ शून्यक अवधारणा केना बूझऽमे आओत?

-मितू। कुमारिल कहै छथि आत्मा चैतन्य जड़ अछि, जागलमे बोध आ सूतलमे बोधरहित।

-मितू। भामतीमे वाचस्पति कहै छथि जे आत्मसाक्षात्कारसँ रहित शास्त्रमे कुशल व्यक्ति सर-समाजसँ पशुवत व्यवहार करैत छथि, लाठी लैत अबैत व्यक्तिकेँ देखि भागि जाइ छथि, घास लैत अबैत व्यक्तिकेँ देखि लग जाइत छथि। माने डरसँ घबड़ाइ छथि।

"आत्मसाक्षात्कारसँ रहित शास्त्रमे कुशल व्यक्ति सर-समाजसँ पशुवत व्यवहार करैत छथि, लाठी लैत अबैत व्यक्तिकेँ देखि भागि जाइ छथि, घास लैत अबैत व्यक्तिकेँ देखि लग जाइत छथि। माने डरसँ घबड़ाइ छथि।"- ई गप मुदा सरिया कऽ बूझबामे ऐल रहय हमरा।

....

आमक मास रहै।

बानर आ बनगदहा खेत सभकेँ धांगने अछि आ पारा बारीकेँ।

-सभटा नाश कऽ देलकै बचलू। रातिमे तँ नै सुझैए। भोरे-भोर कलम जा कऽ देखै छी। बनगदहा सभटा फसिल खा लेलक आब ई बानर आमक पाछाँ लागल अछि।

हमरा बुझल अछि जे आमक मासमे बानर आ बनगदहा ओइ बरख एक्के संग ऐल छलै।

आमेक मास रहै। से मितू ओगरबाहीमे लागत आब। आमक टिकुला पैघ भऽ रहल छै। मचान बान्हबाक रहै मितूकेँ। हमहूँ संगमे रहिऐ। बाँस काटि कऽ अबैत रही।
डबरा कात दऽ कऽ आबि रहल छलौं। भोरहरबा छल। अकास मध्य लाल रेख कनेक पिरौँछ भेल बुझना गेल छल।
-लीख दऽ कऽ चलू बचलू।
खेतक बीचमे लीख देने आगाँ बढ़ऽ लागलौं।
तखने हम शोणित देखलौं। हमर देह शोनित देखि सर्द भऽ गेल।
मुदा निशाँस छोड़लौं। बाँसक तीक्ष्ण पात एकटा बालिकाक हाथ आ मुँहकेँ नोछड़ैत गेल रहै। मितूक बाँसक नोछाड़ ओकरा लागल रहै।
मितू हाथसँ बाँस फेकि कऽ ओइ बालिका लग चलि गेल छल।
नोरायल आँखिक ओइ बालिकाक शोणित पोछि मितू ओकर नोछारपर माटि रगड़ि देने रहै।
-की कऽ रहल छी।
-शोनित बन्न भऽ जायत।
बालिका लीखपर आगाँ दौगि गेल छली।
-की नाम छी अहाँक।
-आनन्दा।
-कोन गामक छी।
-अही गामक।
-अही गामक?
हम दुनू गोटे संगे बाजल रही।
हँ, आनन्दा नाम रहै ओकर। आ मितूक ओकरासँ पहिल भेँट वएह रहै।
...
मचानो बन्हा गेल रहय। मुदा आनन्दा फेर नै भेटल रहय।
मितू पुछैत रहय।
-कोन टोलक छी ओ। नहिये मिसरटोलीक अछि, नहिये पछिमाटोलीक आ नहिये ठकुरटोलीक।
-डोमासीक रहितय तँ हम चिन्हिते रहितिऐ।
-तखन केना अछि ओ अपन गामक। आ अपन गामक अछि तँ आइ धरि

भेँट किए नै भेल रहय ओकरासँ?
मुदा बिच्चेमे संयोग भेल छल। मितूक टोलमे फुदे भाइक बेटाक उपनयन रहै। बँसकट्टी दिन पिपहीबलाकेँ बजबैले हम गामक बाहर चर्मकार टोल गेल रही।
-हिरू भाइ, हिरुआ भाइ।
-आबै छथि।
कोनो बालिकाक अबाज ऐल रहय। अबाज चिन्हल सन।
-अहाँ के छी।
-हम हिरूक बेटी। की काज अछि?
-पिपही लऽ कऽ अखन धरि अहाँक बाबू नै पहुँचल छथि। बजबैले ऐल छियन्हि।
-तही ओरियानमे लागल छथि।
-अहाँक नाम की छी?
तखने टाट परक लत्तीकेँ हँटबैत वएह बालिका सोझाँ आबि गेलि।
-हम आनन्दा। हम अहाँकेँ चीन्हि गेल रही। अहाँक की नाम छी?
हम तँ सर्द भेल जाइत रही। मुदा उत्तर देबाके छल।
-बचलू।
-आ अहाँक संगीक।
-मितू, पंडित श्रीकरक बेटा।
मितूक पिताक नाम सेहो हम आनन्दाकेँ बता देलिऐ। पुछने तँ नै छलि ओ, मुदा नै जानि किए..कहि देलिऐ।
तखने हिरुआ पिपही लेने आबि गेल रहथि। हुनका संगे हम टोलपर आबि गेलौं।
रस्तामे हिरुआकेँ पुछलियन्हि- आनन्दा अहाँक बेटी छथि? मुदा कहियो देखलियन्हि नै।
-मामागाममे बेशी दिन रहै छलै। मुदा आब चेतनगर भऽ गेल छै। से गाम लऽ अनने छिऐ।
-फेर मामागाम कहिया जेती?
-नै, आब ओ चेतनगर भऽ गेल अछि। आब संगे रहत।
पंडितजीक बेटा मितू, हमर संगी मितू, ई गप सुनि की बिततै ओकरा

मोनपर। कइएक दिनसँ ओकर पुछारी कऽ रहल छल। हम सोचने रही जे भने मामागाम चलि जाय आनन्दा, आ तखन कनेक दिनमे मितूक पुछारीसँ हम बाँचि जायब।
मुदा आब तँ आनन्दा गामेमे रहत आ पंडित श्रीकरक बेटा मितू..
धुर..हमहीं उनटा-पुनटा सोचि लेने छी। ओहिना दू-चारि बेर मितू आनन्दाक विषयमे पुछारी केने अछि। तकर माने ई थोड़बेक भेलै जे..
मुदा जे सएह भेलै तखन ?..
पंडितक बेटा आ चर्मकारक बेटी..
पंडित श्रीकर मानता?.. गौआँ घरुआ मानत?
धुर। फेर हम उनटा-पुनटा सोचि रहल छी। पिपही बाजऽ लागल रहय आ लीखपर देने हम आ मितू, भरि टोलक स्त्रीगण-पुरुषक संगे बँसबिट्टी पहुँचि गेल रही। रस्तामे ओइ स्थलकेँ अखियासने रही। मितू आ आनन्दाक पहिल मिलनक स्थल लग अकानने रही- कोनो अबाज लागल अबैत..मात्र संगीत..स्वर नै।
बरुआ बाँस सभपर थप्पा दऽ देने रहै आ सभ बाँस कटनाइ शुरू कऽ देने रहथि। मड़बठट्ठी आइये छै। घामे-पसीने भेने कनेक मोन तोषित भेल। कन्हापर बाँस लेने हम आ मितू ओही रस्ते बिदा भेल रही..ओही लीख देने।
...
मुदा मितू हमरा सदिखन टोकारा देमय लागल। कारण कोनो काज हम एतेक देरीसँ नै केने रहिऐ। ओ हमर राम रहय आ हम ओकर हनुमान। मचानपर अहिना एक दिन हम मितूकेँ कहि देलिऐ-
-मितू, बिसरि जो ओकरा। कथी लेल बदनामी करबिहीं ओकर। हिरुआक बेटी छिऐ आनन्दा। ओना तोहर नाम हमरासँ ओ पुछलक तँ हम तोहर नाम आ तोहर पिताजीक नाम सेहो कहि देलिऐ।
-हमर पिताजीक नाम ओ पुछने रहौ?
-नै पुछने रहय। मुदा..
-तखन किए कहलहीं?
-आइ ने काल्हि तँ पता लागबे करतै..
-जहिया लगितै तहिया लगितै..आब ओ हमरासँ कटत..हमर मेहनति तूँ

बढ़ा देलेँ..
-कोन मेहनति। तूँ पंडित श्रीकरक बेटा आ ओ हिरुआ चर्मकारक बेटी। कथीले बदनामी करबिहीं ओकरा।
-बियाह करबै रौ। बदनामी किए करबै।
-ककरा ठकै छिहीं ?
-ककरो नै रौ।
अहिना अनचोक्केमे निर्णय लैत छल मितू। श्रीकर मीमांसकक बेटा मितू नैय्यायिक। ओकरा घरमे तालपत्र सभ पसरल रहैत देखने छलिऐ। से भरोस नै भऽ रहल छल।
-गाममे कहियो देखलिऐ नै ओकरा?
-तूँ गाममे रहलेँ कहिया? गुरुजीक पाठशालासँ पौरुकेँ तँ ऐल छेँ।
-मुदा तूँहीं कोन देखने रहीं।
-मामा गाम रहै छल ओ।
-फेर मामा गाम घुरि कऽ तँ नै चलि जायत।
-नै, से पुछि लेलिऐ। आब गामेमे रहत।
पौरुकाँ गामेमे मितूक मायक देहान्त भऽ गेल छलन्हि।
श्रीकर मीमांसक सेहो खटबताह सन भऽ गेल छथि- ई गप हुनकर टोलबैय्या सभ करैत छल। तालपत्र सभक परिरक्षण केना हएत ऐ सिंह राशिमे? यएह चिन्ता रहन्हि श्रीकरक, आ तेँ ओ खटबताह सन करऽ लागल रहथि.. ईहो गप हुनकर टोलबैय्या सभ करैत छल।
...
हिर्र..हिर्र...हिर्र....
डोमासीसँ सूगरक पाछू हम आ मितू हिर्र-हिर्र करैत चर्मकार टोल पहुँचि जाइ छी। आनन्दा मुदा सोझाँमे भेटि गेली। सुग्गर संगे हम आगाँ बढ़ि जाइ छी। घुमै छी तँ आनन्दा आ मितूक गप सुनैले कान पाथै छी।
हिर्र..हिर्र
ऐ बेर आनन्दा हिर्र कहैत अछि आ हम मुस्की दैत सूगरक आगाँ बढ़ि जाइ छी।
ई घटना कएक बेर भेल आ ई गप सगरे पसरि गेल। हिरू कताक बेर हमरा लग ऐल रहथि।

हीरू उद्वेलित रहय लागल रहथि। हीरूक पत्नी बेटीक भाग्यक लेल गोहारि करय लगलीह।

कए कोस माँ मन्दिलबा
कए कोस लुकेसरी मन्दिलबा
कए कोस पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
कए कोस पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
दुइ कोस मन्दिलबा
चारि कोस लुकेसरी मन्दिलबा
पाँचे कोस पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
पाँचे कोस पड़ल दोहाइ

कोन फूल माँ मन्दिलबा
कोन फूल बन्दी मन्दिलबा
कोन फूल पर पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
कोन फूल पर पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
ऐली फूल माँ मन्दिलबा
बेली फूल लुकेसरी मन्दिलबा
गेन्दे फूल पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ
गेन्दे फूल पड़ल दोहाइ
कनी तकबै हे माइ

....

हिरू डोमासी आबय लागल रहथि।

-की हेतै, केना हेतै।

-झुट्ठे..

हम गछलियन्हि जे हम हिरु संगे श्रीकर पंडित लग जायब।
आ हम हिरूकेँ श्रीकर मीमांसक लग लऽ गेल रहियन्हि। श्रीकरक पत्नीक मृत्यु गत बरखक सिंह राशिक बाद भऽ गेल छलन्हि। आ तकर बाद हिरू मीमांसक खटबताह भऽ गेल छथि- लोक कहैत छलन्हि। लोक के? वएह टोलबैय्या सभ। गामक लोक, परोपट्टाक विद्वान लोक सभ तँ बड्ड इज्जत दइ छलन्हि हुनका। आँखिक देखल गप कहै छी..
-आउ बचलू। हिरू, आउ बैसू..।- गुम्म भऽ जाइ छथि श्रीकर। पत्नीक मृत्युक बाद अहिना, रहैत रहथि, रहैत रहथि आकि गुम्म भऽ जाइत रहथि।
-कक्का, आंगन सुन्न रहैत अछि। कतेक दिन एना रहत। मितूक बियाह किए नै करा दै छियन्हि”?
-मितू तँ बियाह ठीक कऽ लेने छथि।
-कत्तऽ? -हम घबड़ाइत पुछै छियन्हि। हिरू हमरा दिस निश्चिन्त भावसँ देखै छथि।
-आनन्दासँ, समधि हीरू तँ अहाँक संग ऐल छथिये।
हाय रे श्रीकर पंडित।
आ बाह रे मितू। पहिनहिये बापकेँ पटिया लेने छल। मुदा बान्हपर जाइत कोनो टोलबैय्याक कान ऐ गपकेँ अकानि लेने छल।
हम सभ बैसले रही आकि ओ किछु आर गोटेकेँ लऽ कऽ दलानपर जुमि गेल छल। श्रीकर मीमांसकसँ हुनकर सभक शास्त्रार्थ शुरू भेल। शब्दक काट शब्दसँ।
-श्रीकर, अहाँ कोन कोटिक अधम काज कऽ रहल छी।
-कोन अधम काज?
-छोट-पैघक कोनो विचार नै रहल अहाँकेँ मीमांसक?
-विद्वान् जन। ई छोट-पैघ की छिऐ? मात्र शब्द। ऐ शब्दकेँ सुनलाक पश्चात् ओकर शब्दार्थ अहाँक माथमे एक वा दोसर तरहेँ ढुकि गेल अछि। पद बना कऽ ओइमे अपन स्वार्थ मिज्झर कऽ...।
-माने छोट-पैघ अछि शब्दार्थ मात्र। आ तकर विश्लेषण जे पद बना कऽ केलौं से भऽ गेल स्वार्थपरक।
-विश्वास नै हुअय तँ ओइ पदमे सँ स्वार्थक समर्पण कऽ कऽ देखू। सभ

भ्रम भागि जायत।
-माने अहाँ मितू आ आनन्दाक बियाह करेबाले अडिग छी?
-विद्वान् जन। रस्सीकेँ साँप हम अही द्वारे बुझै छी जे दुनूक पृथक अस्तित्व छै। आँखि घोकचा कऽ दूटा चन्द्रमा देखै छी तँ तखनो अकाशक दूटा वास्तविक भागमे चन्द्रमाकेँ प्रत्यारोपित करै छी। भ्रमक कारण विषय नै संसर्ग छै, ओना उद्देश्य आ विधेय दुनू सत्य छै। आ एतऽ सभ विषयक ज्ञान सेहो आत्माक ज्ञान नै दऽ सकैए। आत्माक विचारसँ अहंवृत्ति- अपन विषयक तथ्यक बोध ऐसँ होइत अछि। आत्मा ज्ञानक कर्ता आ कर्म दुनू अछि। पदार्थक अर्थ संसर्गसँ भेटैत अछि। शब्द सुनलाक बाद ओकर अर्थ अनुमानसँ लग होइत अछि।
-अहाँ शब्दक भ्रम उत्पन्न कऽ रहल छी। हम सभ ऐमे मितू आ आनन्दाक बियाहक अहाँक इच्छा देखै छी।
-संकल्प भेल इच्छा आ तकर पूर्ति नै हो से भेल द्वेष।
-तँ ई हम सभ द्वेषवश कहि रहल छी। अहाँक नजरिमे जातिक कोनो महत्व नै?
-देखू, आनन्दा सर्वगुणसम्पन्न छथि आ हुनकर आ हमर एक जाति अछि आ से अछि अनुवृत्त आ सर्वलोक प्रत्यक्ष। ओ हमर धरोहरक रक्षण कऽ सकती, से हमर विश्वास अछि। आ ई हमर निर्णय अछि।
"आ ई हमर निर्णय अछि।"- ई शब्द हमर आ हिरूक कानमे एक्के बेर नै पैसल रहय। हम तँ श्रीकर आ मितूकेँ चिन्हैत रहियन्हि, अहिना अनचोक्के निर्णय सुनबाक अभ्यासी भऽ गेल रही। मुदा हिरु कनेक कालक बाद ऐ शब्द सभक प्रतिध्वनि सुनलन्हि जेना। हुनकर अचम्भित नजरि हमरा दिस घुमि गेल छलन्हि।
फेर श्रीकर मीमांसक ओइ शास्त्रार्थी सभमेसँ एकटा ज्योतिषी दिस आंगुर देखबै छथि-
-ज्योतिषीजी, अहाँ एकटा नीक दिन ताकू। अही शुद्धमे ई पावन विवाह सम्पन्न भऽ जाय। सिंह राशि आबैबला छै, ओइसँ पूर्व। किनको कोनो आपत्ति?
सभ माथ झुका ठाढ़ भऽ जाइ छथि। श्रीकर मीमांसकक विरोधमे के ठाढ़ हएत?

-हम सभ तँ अहाँकेँ बुझबऽ लेल ऐल छलौं। मुदा जखन अहाँ निर्णय लैये लेने छी तखन...।

मीमांसकजीक हाथ उठै छन्हि आ सभ फेर शान्त भऽ जाइ छथि।

हम आ हीरू सेहो ओतऽसँ बिदा भऽ जाइ छी।

हीरू निसाँस लेने रहथि, से हम अनुभव केने रही।

...

ई नै जे कोनो आर बाधा नै ऐल ।

मुदा ओ खटबताह विद्वान तँ छले। से आनन्दा हुनकर पुतोहु बनि गेली। आ हुनक छुअल पानि हमर टोल आकि मितूक टोल मात्र नै सौँसे परोपट्टाक विद्वानक बीचमे चलऽ लागल।

.....

आनन्दाक नैहरमे विवाह सम्पन्न भेल छल। ओतुक्का गीतनाद हम सुनने रही, उल्लासपूर्ण, एखनो मोन अछि-

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल,
मालिन बेटी सूतल फुलवारि हे
उठू मालिन राखू गिरिमल हार हे
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल,
मालिन बेटी सूतल फुलवारि हे
उठू मालिन राखू गिरिमल हार हे

कोन फूल ओढ़ब लुकेसरि के
कोन फूल पहिरन
कोन फूल बान्धिके सिंगार हे

उठू मालिन राखू गिरिमल हार हे
बेली फूल ओढ़ब बन्दी
चमेली फूल पहिरन
अरहुल फूल लुकेसरि के सिंगार हे
उठू मालिन गाँथू गिरिमल हार हे
उठू मालिन गाँथू गिरिमल हार हे

....
श्रीकर मीमांसक आनन्दाकेँ तालपत्र सभक परिरक्षणक भार दऽ निश्चिन्त भऽ गेल रहथि। पत्नीक मृत्युक बाद बेचारे आशंकित रहथि।
दैवीय हस्तक्षेप, आनन्दा जेना ओइ तालपत्र सभक परिरक्षण लेल ऐल रहथि हुनकर घर। अनचोक्के..
मितू कहि देलक हमरा जे केना ओ श्रीकर पंडितकेँ पटिया लेने रहय। ब्राह्मणक बेटी सराइ कटोरा आ माटिक महादेव बनबैत रहत आ तालपत्र सभमे घून लागि जायत..
नै घून लागए देथिन तालपत्र सभमे, आनन्दा आयत ऐ घर। श्रीकर मीमांसक निर्णय कऽ लेने रहथि।
मितू तँ जेना जीवन भरि अपन लेल ऐ निर्णयक प्रति कृतज्ञ छला।
श्रीकरक आयु जेना बढ़ि गेल छलन्हि। श्रीकर आ आनन्दाक मध्य गप होइते रहै छल ओइ घरमे।
आनन्दा बजिते रहै छली आ गबिते रहै छली।

बारहे बरिस जब बीतल तेरहम चढ़ि गेल हे
बारहे बरिस जब बीतल तेरह चहरि गेल हे
ललना सासु मोरा कहथिन बघिनियाँ
बघिनियाँ घरसे निकालब हे
ललना सासु मोरा कहथिन बघिनियाँ
बघिनियाँ घरसे निकालब हे

अंगना जे बाहर तोहि छलखिन रिनियाँ गे
ललना गे आनि दियौ आक धथूर फर पीसि हम पीयब रे
ललना रे आनी दियौ आक धथूर फर पीसि हम पीयब रे
बहर से आओल बालुम पलंग चढ़ि बैसल रे
बहर से आओल बालुम पलंग चढ़ि बैसल रे
ललना रे कहि दियौ दिल केर बात की तब माहुर पीयब रे
ललना रे कहि दियौ दिल केर बात की तब माहुर पीयब रे

बारह हे बरिस जब बीतल तेरह चहरि गेल रे
ललना रे सासु मोरा कहथिन बघिनियाँ
बघिनिया घरसे निकालब रे
सासु मोरा मारथिन अनूप धय ननदो ठुनुक धय रे
सासु मोरा मारथि अनूप धय ननदो ठुनुक धय रे
ललना रे गोटनो खुशी घर जाओल सभ धन हमरे हेतै हे
ललना रे गोटनऽ खुशी घर जाओल सभ धन हमरे हेतै हे

चुप रहू, चुप रहू धनी की तोहीँ महधनी छिअ हे
चुप रहू, चुप रहू धनी की तोहीँ महधनी छिअ हे
धनी हे करबै हे तुलसी के जाग, की धन सभ लुटा देबऽ हे
ललना हे करबै मे पोखरि के जाग, की सभ धन लुटाएब हे

श्रीकर मीमांसक हँसी करथिन- आनन्दा, अहाँकेँ तँ सासु अछि नै, तखन ओ बेचारी अहाँकेँ बघिनियाँ केना कहती?
-तेँ ने गबै छी, सभ चीज तँ भरल-पूरल मुदा..।
आँखि नोरा गेल छलन्हि आनन्दाक। हमरा अखनो मोन अछि।
-हम अहाँकेँ दुःख देलौं ई गप कहि कऽ।
-कोन दुःख? सासु नै छथि तँ ससुर तँ छथि।
श्रीकरकेँ प्रसन्न देखि मितूकेँ आत्मतोष होइन्ह।
....
आ श्रीकर मीमांसकक मृत्युक बादो आनन्दा तालपत्र सभमे जान फुकैत रहैत छलीह।
फेर मितूकेँ दूटा बेटी भेलन्हि वल्लभा आ मेधा।
आनन्दाक खुशी हम देखने छी। नैहर गेल रहथि ओ। ओतइ दुनू जौँआ बेटी भेल छलन्हि-

लाल परी हे गुलाब परी
लाल परी हे गुलाब परी
हे गगनपर नाचत इन्द्र परी

हे गुलाबपर नाचत इन्द्र परी

आ फेर भेलन्हि बेटा। पैघ भेलापर बेटा मेघकेँ पढ़बा लेल बनारस पठेने रहथि मितू।
आ दिन बितैत गेल, बेटी सभ पैघ भेलन्हि आ दुनू बेटी, मेधा आ वल्लभाक बियाह दान कऽ निश्चिन्त भऽ गेल छलाह मितू।
बेटाक परवरिश आ बियाह दान सेहो केलन्हि। मेघ बनारसमे पाठन करय लगला। मेघ, मेधा आ वल्लभा तीनू गोटे सालमे एक मास आबथि धरि अवश्य।
लोक बिसरि गेल मारते रास गप सभ।

II
<u>भामती प्रस्थानम्</u>

आनन्दा मितूक पिताजीक ऐ तालपत्र सभक परिरक्षण मनोयोगसँ कऽ रहल छथि। कड़गर रौद, मितूकेँ ओहिना मोन छन्हि।
मितू संग जिनगी बीति गेलन्हि आनन्दाक। आ आब जखन ओ नै छथि तखन मितूक जीवनक परिरक्षण केना हएत।.. मितू प्रवचनक बीचमे कत्तौ भँसिया जाइ छथि।
प्रवचन चलि रहल अछि। मितू गरुड़ पुराण नै सुनता। मितू मंडनक ब्रह्मसिद्धि सुनता, वाचस्पतिक भामती सुनता, जे सुनबो करता तँ। जँ बेटी सभक जिद्द छन्हिये तँ आत्मा विषयपर कुमारिलक दर्शन सुनता। आ सएह प्रवचन चलि रहल अछि।
भ्रम। शब्दक भ्रम। कहैत रहथि श्रीकर मारते रास गप शब्दशास्त्रम् पर। भामती प्रस्थानम् पर। शब्दक अर्थ हम गढ़ि लइ छी। आ फेर भ्रम शुरू भऽ जाइत अछि।
-गुरुजी। हम पत्नीक मृत्युक बाद घोर निराशामे छी। की छिऐ ई जीवन? कतऽ हएत आनन्दा।
-मितू। धीरज राखू। ब्रह्मसिद्धिक हमर ई पाठ अहाँक सभ भ्रमक निवारण करत। ब्रह्मसिद्धिमे चारि काण्ड छै। ब्रह्म, तर्क, नियोग आ सिद्धि

काण्ड। ब्रह्मकाण्डमे ब्रह्मक रूपपर, तर्ककाण्डमे प्रमाणपर, नियोगकाण्डमे जीवक मुक्तिपर आ सिद्धिकाण्डमे उपनिषदक वाक्यक प्रमाणपर विवेचन अछि।

-मितू। मुक्ति ज्ञानसँ पृथक् कोनो बौस्तु नै अछि। मुक्ति स्वयं ज्ञान भेल। मानवक क्षुद्र बुद्धिक कत्तौ उपेक्षा मंडन नै केने छथि। कर्मक महत्व ओ बुझै छथि। मुदा तइटा सँ मुक्ति नै भेटत। स्फोटकेँ ध्वनि-शब्दक रूपमे अर्थ दैत मंडन देखलन्हि। से शंकरसँ ओ ऐ अर्थेँ भिन्न छथि जे ऐ स्फोटक तादात्म्य ओ बनबै छथि मुदा शंकर ब्रह्मसँ कम कोनो तादात्म्य नै मानै छथि। से मंडन शंकरसँ बेशी शुद्ध अद्वैतवादी भेला। मितू। मंडन क्षमता आ अक्षमताक एक संग भेनाइकेँ विरोधी तत्व नै मानै छथि। ई कखनो अर्थक्रियाकृत भेद होइत अछि, मुदा ओ भेद मूल तत्व केना भऽ गेल। से ई ब्रह्म सभ भेदमे रहलोपर सभ काज कऽ सकैए। देखू। वाचस्पतिक भामती प्रस्थानक विचार मंडन मिश्रक विचारसँ मेल खाइत अछि। मंडन मिश्रक ब्रह्मसिद्धिपर वाचस्पति तत्वसमीक्षा लिखने छथि। ओना तत्वसमीक्षा आब उपलब्ध नै छै।

-तखन तत्व समीक्षाक चर्चा केना ऐल ।

-वाचस्पतिक भामतीमे एकर चर्चा छै।

-मुदा मंडनक विचार जानबासँ पूर्व हमरा मोनमे आबि रहल अछि जे जखन ओ शंकराचार्यसँ हारि गेला तखन हुनकर हारल सिद्धान्तक पारायणसँ हमरा मोनकेँ केना शान्ति भेटत।

-देखियौ, मंडन हारि गेल छला तकर प्रमाण मंडनक लेखनीमे नै अछि। मंडन स्फोटवादक समर्थक छथि, मुदा शंकराचार्य स्फोटवादक खण्डन करैत छथि। मंडन कुमारिल भट्टक विपरीत ख्यातिक समर्थक छथि, मुदा शंकराचार्यक जइ शिष्य सुरेश्वराचार्यकेँ लोक मंडन मिश्र बुझै छथि ओ एकर खण्डन करै छथि।

-से तँ ठीके। मंडन हारि गेल रहितथि तँ हुनकर दर्शन शंकराचार्यक अनुकरण करितन्हि।

-आब कहू जे जइ सुरेश्वराचार्यकेँ शंकराचार्य श्रृंगेरी मठक मठाधीश बनेलन्हि से अविद्याक दू तरहक हेबाक विरोधी छथि मुदा मंडन अपन ग्रन्थ ब्रह्मसिद्धिमे अग्रहण आ अन्यथाग्रहण नामसँ अविद्याक दूटा रूप

कहने छथि। मंडन जीवकेँ अविद्याक आश्रय आ ब्रह्मकेँ अविद्याक विषय कहै छथि मुदा सुरेश्वराचार्य से नै मानै छथि। शंकराचार्यक विचारक मंडन विरोधी छथि मुदा सुरेश्वराचार्य हुनकर मतक समर्थनमे छथि।

....

बानर आ बनगदहा खेत सभकेँ धांगने अछि आ पारा बारीकेँ। आब हमरा दुआरे गामक लोक महीस पोसनाइ तँ नै छोड़ि देत। बानर आ बनगदहा बड्ड नोकसान कऽ रहल अछि।

-चारिटा बानर कलममे अछि। धऽ कऽ आम सभकेँ दकड़ि देलक। हम गेल रही। साँझ भऽ गेलै तँ आब सभटा बानर गाछक छिप्पी धऽ लेने अछि। साँझ धरि दुनू बापुत कलम ओगरने रही, झठहा मारि भगेलौं, मुदा तखन अहाँक कलम दिस चलि गेल।– हम मितूकेँ कहै छियन्हि।

-सभटा नाश कऽ देलकै बचलू। रातिमे तँ नै सुझैए। भोरे-भोर कलम जा कऽ देखै छी। बनगदहा सभटा फसिल खा लेलक आब ई बानर आमक पाछाँ लागल अछि। करऽ दियौ जखन...।

-बनगदहा सभ तँ साफ कऽ उपटि गेल छलै। नै जानि फेर कत्तऽ सँ आबि गेल छै। गजपटहा गाममे जाग भेल छलै, ओम्हरेसँ राता-राती धार टपा दइ गेल छै।

-से नै छै। ई बनगदहा सभ धारमे भसिया कऽ नेपाल दिसनसँ ऐल छै। आबऽ दियौ जखन...।

-हम बानर सभ दिया कहने रही।

-से हेतै।

-हेतै भाइजी, तखन जाइ छी।- हमरा बुझल अछि जे आमक मासमे बानर आ बनगदहा ओइ बरख एक्के संग निपत्ता भऽ गेल रहै जइ बरख आनन्दा आ मितूक भेँट भेल रहै। आ आनन्दाक गेलाक बाद बानर आ बनगदहा नै जानि कत्तऽ सँ फेर आबि गेल छै, आनन्दाक मृत्युक पन्द्रहो दिन नै बीतल छै...

....

बचलू गेला आ मितूक कपारपर चिन्ताक मोट कइएकटा रेख ऊपर नीचाँ होमय लगलन्हि, हिलकोरक तरंग सन, एक दोसरापर आच्छादित होइत, पुरान तरंग नव बनैत आ बढ़ैत जाइत। अंगनामे सोर करै छथि।

-बुच्ची, बुचिया। जयकर आ विश्वनाथ आइ गाछी गेल रहय। आबि गेल अछि ने दुनू गोड़े। सुनलिऐ नै जे बानर सभक उपद्रव भऽ गेल छै। काल्हिसँ नै जाइ जायत गाछी, से कहि दियौ। आइ बानर सभ कलम ऐल छल, से कहबो नै केलौं। कहिये कऽ की हएत जखन...।

-कहि तँ रहल छलौं बाबूजी मुदा अहाँ तँ अपने धुनमे रहै छी, बाजैत मुँह दुखा गेल तँ चुप रहि गेलौं।

हँ, धुनिमे तँ छथिये मितू। ई आम सेहो आनन्दाक मृत्युक बाद पकनाइ शुरू भऽ गेल अछि। आ एतेक दिनुका बाद फेर ई बानर आ बनगदहा कोन गप मोन पारबा लेल फेरसँ जुमि ऐल अछि।

...

जयकरक माय वल्लभा आ विश्वनाथक माय मेधा। दुनू बहीन कतेक दिनपर ऐल छथि नैहर। कतेक दिनपर भेँट भेल छन्हि एक दोसरासँ। आनन्दाक दुनू बेटी आ दुनू जमाय ऐल छथि। वल्लभाक पति विशो आ मेधाक पति कान्ह। मेघ अपन पत्नी आ बच्चा सभक संगे ऐल छथि। मितू पत्नीकेँ आनन्दा कहि बजा रहल छथि। फेर मोन पड़ै छन्हि जे ओ आब कत्तऽ भेटती। फेर कत्तऽ छी वल्लभा, कत्तऽ छी मेधा, जयकर आ विश्वनाथ कतऽ छथि..सोर करय लागै छथि।

वल्लभा आ मेधा अबै छथि आ मितू गीत गाबय लगै छथि। आनन्दाक गीत। आनन्दा जे गबै छली वल्लभा आ मेधा लेल-

लाल परी हे गुलाब परी
लाल परी हे गुलाब परी
हे गगनपर नाचत इन्द्र परी
हे गुलाबपर नाचत इन्द्र परी

रकतमाला दुआरपर निरधन खड़ी
हे रकतमाला दुआरपर निरधन खड़ी
माँ हे निरधनकेँ धन यै देने परी
माँ हे निरधनकेँ धन जे देने परी

लाल परी हे गुलाब परी

माँ हे रकतमाला दुआरपर अन्धरा खड़ी
माँ हे अन्धराकेँ नयन दियौ जलदी
माँ हे अन्धराकेँ नयन दियौ जलदी

बाप आ दुनू बेटी भोकार पाड़ऽ लगै छथि।

...

-मितू। आनन्दाक मृत्यु अहाँ लेल विपदा बनि ऐल अछि। अहाँ ब्राह्मण जातिक आ आनन्दा चर्मकारिणी। मुदा दुनू गोटेक प्रेम अतुलनीय। हुनकर मृत्यु लेल दुःखी नै होउ। ब्रह्म बिना दुखक छथि। ब्रह्मक भावरूप आनन्द छियन्हि। से आनन्दा लेल अहाँक दुःखी हएब अनुचित। ब्रह्म द्रष्टा छथि। दृश्य तँ परिवर्तित होइत रहैए, ओइसँ द्रष्टाकेँ कोन सरोकार। ई जगत-प्रपंच मात्र भ्रम नै अछि, एकर व्यावहारिक सत्ता तँ छै। मुदा ई व्यावहारिक सत्ता सत्य नै अछि। मितू। चेतन आ अचेतनक बीच अन्तर छै मुदा से सत्य नै छै। जीवक कइएकटा प्रकार छै, आ अविद्याक सेहो कइएकटा प्रकार छै। अविद्या एकटा दोष भेल मुदा तकर आश्रय ब्रह्म केना हएत, पूर्ण जीव केना हएत। ओकर आश्रय हएत एकटा अपूर्ण जीव। अविद्या तखन सत्य नै अछि मुदा खूब असत्य सेहो नै अछि। मितू। ऐ अविद्याकेँ दूर करू आ तकरे मोक्ष कहल जाइत अछि। वएह मोक्ष जे आनन्दा प्राप्त केने छथि।
आ मितूक मुखपर जेना शान्ति पसरि जाइ छन्हि।

....

मितू जेना भेँट करबा लेल जा रहल छथि।
मोन पड़ि जाइ छन्हि आनन्दा संग प्रेमालाप।
-आनन्दा। अहाँसँ गप करैत-करैत हमरा कनीटा डर मोनमे आबि गेल अछि। पिताक सभसँ प्रधान कमजोरी छन्हि हुनकर तालपत्र सभक परिरक्षण। से ई सभ मोन राखू। पिता जे पुछता जे ताल पत्रक परिरक्षण केना हएत तँ कहबन्हि- पुस्तककेँ जलसँ, तेलसँ आ स्थूल बन्धनसँ बचा कऽ। छाहरिमे सुखा कऽ। ५००-६०० पातक पोथी सभ। हम कोनो दिन देखा देब। एक पात एक हाथ नाम आ चारि आंगुर चाकर होइ छै। ऊपर आ नीचाँ काठक गत्ता लागल रहै छै। वाम भागमे छिद्र कऽ सुतरीसँ

बान्हल रहै छै।
-पिता मानता?
-नै मानता किए? ब्राह्मणक बेटीसँ बियाह कराबैक औकाति छन्हि? हम एक गोटेकेँ दू टाका बएना देने रहिऐ खेतिहर जमीन किनबा लेल। मुदा पिता जा कऽ बएना घुरा आनलन्हि। एक-एक दू-दू टाका जमा कऽ रहल छथि। ७०० टाका लड़कीबलाकेँ देता तखन बेटाक विवाह हेतन्हि आ पाँजि बनतन्हि। आ से ब्राह्मणी अओतन्हि तँ तालपत्रक रक्षा करतन्हि?

मितूक मायक मृत्युक बाद श्रीकर खटबताह भऽ गेल छला। टोलबैय्या सभ कहै छथि।
आ फेर बेमारी अएलै, प्लेग। गामक दूटा टोल उपटिये गेल, मिसरटोली आ पछिमाटोली। परोपट्टाक बहुत रास गाममे कतेक लोक मुइल से नै जानि।

मितू पिताकेँ आनन्दासँ भेँट करा देलखिन्ह। श्रीकर तालपत्र परिरक्षणक ज्ञानसँ परिपूर्ण आनन्दामे नै जानि की देखि लेलन्हि।

मितू जीति गेल। नैय्यायिक मितू मीमांसक श्रीकरसँ जीति गेल आ मीमांसक श्रीकर अपन टोलबैय्या सभकेँ पराजित कऽ देलन्हि।

आ आनन्दा आ मितूक विवाह सम्पन्न भेल।
मोन पड़ि जाइ छन्हि आनन्दा संग प्रेमालाप। मितू जेना भेँट करबा लेल जा रहल छथि। आनन्दाक मृत्यु भऽ गेल अछि। बलानमे पएर पिछड़ि गेलन्हि आनन्दाक। ओहिना पिछड़ैक चिन्हासी देखबामे आबि रहल अछि।
मितू ओइ चिन्हासीकेँ देखै छथि आ हुनकर मोन हुलसि जाइ छन्हि, पिछड़ि जाइ छथि भावनाक हिलकोरमे..
आनन्दा आ मितूक एक दोसरासँ भेँट-घाँट बढ़ऽ लागल छल, खेत, कल्लम-गाछी, चौरी आ धारक कातक ऐ स्थलपर। आ दुनू गोटे पिछड़ैत छला, खेतमे, कल्लम-गाछीमे, चौरीमे आ धारक कातमे सेहो।

धारमे फांगैत नै छला मितू। यएह ढलुआ पिच्छड़ स्थल जे आइ-काल्हिक छौड़ा सभ प्रयोग करैत अछि, से मितूक बनाओल अछि। ऐपर पोन रोपैत छला आ सुर्रसँ मितू धारमे पानि कटैत आगाँ बढ़ि जाइ छला।
-हे, कने नै पिछड़ि कऽ तँ देखा।
-से कोन बड़का गप भेलै।
-देखा तखन ने बुझबै।
आनन्दा अस्थिरसँ आगाँ बढ़बाक प्रयास करथि मुदा..हे.हे..हे..

नै रोकि सकलथि ओ अपनाकेँ, नहिये खेतमे, नहिये कल्लम-गाछीमे, नहिये चौरीमे आ नहिये ऐ धारक कातमे..
आ की करऽ ऐल हेती आनन्दा एतऽ.. जे पिछड़ि गेली आ डूमि गेली..
कोनो स्मृतिकेँ मोन पाड़बा लेल ऐल हेती..
-
हँ आनन्दा ऐल अछि बचलू। देखियौ ई गीत सुनू-

घर पछुवरबामे अरहुल फूल गछिया हे
फरे-फूले लुबुधल गाछ हे
उतरे राजसए सुगा एक आओल
बैसल सूगा अरहुल फूल गाछ हे
फरबो ने खाइ छऽ सुगबा, फुलहो ने खाइ छऽ हे
डाढ़ि-पाति केलक कचून हे
फुलबो ने खाइ छऽ सुगबा, फरहु ने खाइ छऽ हे
डाढ़ि-पाति केलक कचून हे
घर पछुवरबामे बसै सर नढ़िआ हे
बैसल सूगा दिअ ने बझाइ हे

एकसर जोड़ल सोनरिया
दुइसर जोड़ल हे
तेसर सर सूगा उड़ि जाइ हे
सुगबो ने छिऐ भगतिया

तितिरो ने छिऐ
येहो छिऐ गोरैय्या के बाहान हे

-भाइ अहाँ ई गीत नै सुनि पाबि रहल छी की?
-भाइ सुनि रहल छी। देखियो रहल छी। आनन्दा भौजी छथि।
जहिया ओ मुइल छली तहियो सुनने रही- वएह रहथि- गाबै रहथि-
लुकेसरी अंगना चानन घन गछिया
तइ तर कोइली घऽमचान हे

-शब्द भ्रम नै छल ओ।
माँछ-मौस आ सत्यनारायण पूजाक बाद अगिले दिनक गप अछि। ने चानन गाछ कटेने रहथि आ ने अंगना बेढ़ने रहथि आनन्दा।
दोसर दिन ओइ चानन गाछक नीचाँ चर्मकारटोलमे गौआँ सभ दुनू गोटेक लहाश देखलन्हि। आ ईहो शब्द गगनमे पसरि गेल, सौँसे गौँआ सुनलक- आनन्दाक अबाजमे-
जाहे बोन जेबऽ कोइली रुनझुनु बालम
रहि जेतऽ रकतमाला के निशान हे

शब्द भ्रम नै छल ओ।

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram', by the author himself. Gajendra Thakur: published as 'The Science of Words' (https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=the+science+of+words+gajendra+thakur&btnG= https://www.jstor.org/stable/44754529 Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

महिसबार ब्राह्मणक गाम

चारू कात गाछ-बृच्छ, पोखरि। गाममे एक.. दू.. तीन आ एकटा आर, चारि टा पोखरि।

ओना तँ तीन टा आर पोखरि अछि। एकटा उत्तरबरिया पोखरिक उत्तरभर बड़का डकही पोखरि। लोक सभ बजैए जे कोनो डकैत एक्के रातिमे खुनने रहै ई पोखरि। मुदा तकर प्रमाण पुछने यएह पता लागत जे आन तँ कोनो प्रमाण नै मुदा खुनैत-खुनैत भोर भऽ गेल रहै आ तइ कारणसँ ओ डकैत पोखरिमे जाइठ नै गारि सकल रहय। हड़बड़ीमे ओइ डकैतक, डकैत की राक्षस कहू, एकटा पएरक आठ हाथक चट्टी कि पनही सेहो रहि गेलै पोखरिक कातमे। बड्ड दिन धरि पोखरिक कातेमे रहै मुदा फेर बाढ़िमे ओहो बहि गेल। से जे एकटा प्रमाण रहय सेहो नै बचल। गामसँ ई पोखरि दूर अछि से छठि पाबनिसँ एकर कोनो सम्बन्ध आइ धरि स्थापित नै भऽ सकल। हँ उपनयनक बिध-बाधमे धरि एकर उपयोग होइतहि अछि। किसिम-किसिमक माँछ रहै छै ऐ पोखरिमे। माँछक कोनो कमी नै। कहियो डकही पोखरिमे जीरा देबाक खगता नै भेलै। सलाना मछैर होइए आ सभ टोलक लोककेँ- दछिनबाइ टोल माने गढ़ अरड़नेबाकेँ छोड़ि कऽ– मछैरक सभ दिन अपन-अपन टोलक माँछक हिस्सा देल जाइ छै।

दछिनबाइ टोलक दक्षिणमे अछि बुचिया पोखरि।
गामसँ दुरगर अछि मुदा जाइठ छै बीचोबीच। काठक ऐ जाइठकेँ गारबा काल पीअर बच्चा, आइक जमीन्दारक अतिवृद्ध प्रपितामह एकटा बड्ड पैघ आयोजन केने छला। बस्तीसँ दुरगर आ खेतक बीचमे रहबाक कारणसँ एतौ लोक सभ स्नानक लेल कम्मे-सम अबैए। मछैर सेहो होइए मुदा से मात्र ऐ दछिनबरिया टोलक लेल। ऐ पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। जखन दुर्गापूजाक समैमे दुर्गाजी फेरसँ नैहरसँ सासुर दसम दिन- जकरा जतरा सेहो कहल जाइ छै- बिदा होइ छथि तँ हुनकर मूर्तिक भसान अही पोखरिमे होइए। पुरुखपात्र तँ नै, हँ महिला लोकनि

दुर्गाजीक भसानपर हबोढ़कार भऽ कनै छथि। दुर्गाजी ऐ टोलकेँ के पूछय, ऐ गामेमे नै बनै छथि। ओ बनै छथि पड़ोसक गढ़ टोलमे। ऐ गामक लोक तँ अगत्ती सभ। खष्ठी दिन धरि दुर्गाजीकेँ झाँपि कऽ राखल जाइए, मात्र मूर्तिकार हुनका उघारि कऽ देखि सकैए, कारण ओ नै देखत तँ फेर दुर्गाजी बनती केना? आन कियो देखत तँ आन्हर भऽ जायत। हँ, खष्ठी दिन बेलनोतीक बाद मूर्तिक अनावरणक बाद हुनकर दर्शन लोक कऽ सकैए। आ ओही दिनसँ मेला सेहो लगैए। ऐ गाममे दुर्गा बनती तँ कतेक लोक खष्ठीक पहिनहिये आन्हर भऽ जायत। आ पड़ोसक गाम की कम अगत्ती अछि? मुदा पूजाक नामपर देखू, सभ सञ्च-मञ्च भऽ जाइए। नाममे टोल लागल छै- गढ़ टोल, मुदा अछि ई गाम। अही गाम जकाँ महिसबार ब्राह्मणक गाम। अगतपनामे हम आगू आकि हम- एकर तँ बुझु प्रतियोगिता होइत रहै छै दुनू गामक मध्य। गढ़ टोलक गाम दऽ कऽ जाउ तँ ओइ गामक बान्हक कातक दलानपर बैसल छौड़ा सभ किछु ने किछु सुनेबे टा करत। मुदा ऐ गामक फसादी प्रकृतिक छौड़ा सभ अरबधि कऽ ओइ गाम बाटे जेबे टा करत। हँ, सध-बध सभ अही बुचिया पोखरिक बाटे गेनाइ श्रेयस्कर बुझैए, भलहि कनी हटि कऽ रस्ता छै, तेँ की।

गाममे एकटा आर पोखरि अछि। मुदा गामक दुनू कात कमला-बलान आ कोसी, ऐ दुनू धारकेँ नियन्त्रित करबा लेल दू-दू टा बान्ह बान्हल जाय, ई चर्चा देर सबेर होइत रहैए। गामसँ सटल पच्छिम दिस उत्तर-दक्षिण दिशामे रहत एकटा छहर, फेर रहत कमला महारानीक भाइ बलान धार आ तखन कमला महरानी आ फेर जा कऽ ओइसँ पच्छिम उत्तर-दक्षिण दिशामे दोसर छहर, ऐ तरहक चर्चा होइत रहैए। मुदा ओ कमला धार नै छी छारन छी, फेर आगू जा कऽ कमला-बलान धारमे ओ मिलि जाइए, आ ओ बलान धार नै छी कमला-बलान छी। बड्ड पिंगल गौँआ सभ, भूगोलक तँ एतेक ज्ञान बाबू किताबोमे नै भेटत। बान्हक बीचमे पड़ि जायत बल्ली पोखरि। कोना ऐ पोखरिकेँ सरकार भरि सकत से नै जानि। ऐ पोखरिसँ बलान एकटा नालासँ जुड़ल अछि, जखन धारमे पानि अबैए तँ लोक नालाक मुँह खोलि दइ छथि आ धारक उपरका पाँकबला पानिसँ पोखरि भरि जाइए, बालु धारमे नीचाँमे रहै छै तेँ ओ नै आबि पबैए।

ओनाहितो बलानमे बालु कम आ पाँके बेशी अबै छै। आ ओइ पोखरिसँ पटौनी होइए। बैसाखमे सकराइतिक लगाति गौँआ सभ हेँज बना सभ पोखरिक सफाइ करै छथि, उराहै छथि। आ पूसक पूर्णिमाक मेला। माछ मखान खूब होइ छै।

गामक शुरूहेमे साबिकी दूटा इनार। इनारक पानिसँ किछु गोटेकेँ घेघ बहरा गेलै तँ लोक गढ़ नारिकेलकेँ घेघहा गाम, मोटका बुइधबला गाम कहि बनोतरी बनाबैए।

धार आ विशाल बल्ली पोखरिक सटले रहए एकटा फुटबॉल क्रीड़ाक्षेत्र-विशाल रमना। जमीन्दारक करतबसँ ई रमना पीअर बच्चाक खेतमे चलि गेल, माने मिला लेल गेल। बड़का जमीन्दार बरबरिया रॉय सेहो ओइ बीचमे नै जानि कोन कारणसँ एक गृहस्थक एकठाम एकट्ठे जमीन होइ तइपर जोर देने रहय। सुरजू भाइक गोबरसँ सीटल खेत सेहो ऐ क्रममे पीअर बच्चाक खेतमे मिलि गेल छल, माने मिला लेल गेल छल।

कमला आ बलानक बीच महिसबार सभक मालक भोजन लेल बौआचौड़ी अछि। महिसबार सभ एतऽ अबै छथि, खेलाइ छथि आ कमलामे हेलै छथि। कखनो ओ सभ अपना-अपनीकेँ कमलाक धारमे बिन प्रतिरोधक बहऽ दै छथि तँ कखनो धारक प्रवाहक उनटा हेलै छथि। बौआ चौरीक ई स्नातक सभ छथि।

दुनू धारक बीच गुअरटोली।

बान्हेपर बौधा मलिक आ आर डोमक चारिटा घर सेहो अछि। ईहो दुनू टोल अही गामक सिमानमे अबैए। डोम अपनाकेँ मलिक वा सोपच कहै छथि। बौधा मलिक खिस्सा सुनबै छथि...
चारि टा ब्राह्मण स्नान लेल पोखरि जाइ छला तँ एकटा मरल गाय देखलन्हि। मरल गाय के उठाओत? से छोटका भाइकेँ ओ भार दऽ देल गेल आ जखन ओ घुरल तँ जातिसँ बहिष्कृत कऽ देल गेलै।

सभ जातिक काज पाबनि-तिहार-संस्कारमे होइते छै।

बक्खो जे दान मांगै अंगना नचौनी/
पमरिया जे दान मांगै चिलका खेलौनी/
दगरिन जे दान मांगै नार कऽ छिलौनी/
नौअनि जे दान मांगै आरत लगौनी/
धोबिया जे दान मांगै खिरक घुलौनी

सभ जातिक काज पाबनि-तिहार-संस्कारमे होइते छै।
डोमक काज सेहो पाबनि-तिहारमे होइ छै।
पेटार बनेबासँ सूप, बीअनि सभ किछु बनेबामे डोमक काज। आ पाहुन परख लेल आ बरियाती लेल जे खस्सी काटल जायत तइ लेल मिआँटोलीक काज।
खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलिमे कमिटी लऽ लइए। मुदा जैनुल मिआँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल कऽ कऽ। गरदनि अदहा लटकले रहै छै, मुदा बना सोना कऽ गरदनि लऽ जाइए आ खलरा सेहो।
तखन महिसबार ब्राह्मणमे सँ जे भजन आ अष्टजाम करै छथि से ओही खलरासँ बनल ढोलक किनै छथि।
कुञ्जड़ा टोलीमे मोहम्मद शमशूल। बान्हपर। खिस्सा सुनबैत रहै छथि... डिलरीनगर। एकटा सैयद छला ओतऽ। एकटा कनियाँ छलखिन्ह आ कैकटा बेटा छलन्हि। लड़ाका सभ।
नूनजागढ़क युद्ध। मुदा ऐबेर सैयद आ हुनकर सभटा बेटा मारल गेल। मुदा हुनकर विधवा गर्भसँ छली। किछु दिनमे बच्चा भेलन्हि। नाम राखल गेल मीरां।
ओहो लड़ाका, मुदा मायकेँ ई पसिन्न नै। हुनकर बियाह करबाओल गेल कमे बयसमे, ई सोचि जे मोन युद्धसँ हँटतै। मुदा..
माय आ कनियाँ बड्ड बुझेलखिन्ह मुदा मीरां असगरे नूनजागढ़ गेला आ बाप-भाइक बदला लेलन्हि आ घुरि कऽ डिलरीनगर एला।
हुनकर आत्माक प्रभावसँ डिलरीनगरमे हुनकर मृत्युक बादो बहुत दिन

धरि शान्ति रहल।

दाहा लऽ कऽ जखन ओ सभ गढ़ नारिकेल घुरै छथि तकर दृश्य अद्भुते होइए। दाहामे ओ सभ झरनी खेलाइ जाइ छै, बाँसक झरनीसँ। मर्सिया सुनैत ओहिना पुरुखपात हबोढ़कार भऽ कानऽ लगै जाइए जेना दुर्गाजीक भसान दिन स्त्रीगण हबोढ़कार भऽ कानऽ लगै छथि।

ऐ दसो दिन सैयद बँसवा कटौलक रे हाइ हाइ
सेहो बँसवा भेलै बिसरनमा रे हाइ हाइ

गढ़ नारिकेलक सभ लोक गबैय्या, खिसक्कर सभ। सुनैत रहू...
भाव खेलाइ कालमे मीरांसाहेब अबै छथि आ वर दै छथि।
एक्के खिस्सा कताक बेर कहबह?
सुनने जाह ने.. गढ़ नारिकेल छिऐ। जतेक बेर सुनबह नव लगतह।
डिलरी नगरमे हरफूल सैय्यद रहथि।
दिल्लीकेँ तँ डिलरी नगर ने कहै छै हौ?
की जानऽ गेलिऐ?
हरफूलक कनियाँ रहथि आतम।
नूनजागढ़क युद्धमे हरफूल मरि गेला, आतम गढ़ुआरि रहथि।
जन्म भेल एकटा बच्चाक, जकर नाम राखल गेल मीरां।
आतम मीरांक बच्चेमे बियाह करा देलन्हि, मुदा मीरांकेँ नूनजागढ़क युद्ध आ ओइमे ओकर पिता हरफूलक मृत्युक समाचार देर-सबेर लागिये गेलन्हि। आ ओ नूनजागढ़पर आक्रमण कऽ ओकरा हरेलन्हि आ डिलरीनगर घुरि कऽ आबि गेला।

गिर-गिर नगेड़ा दलमे धौंसा बोलै, हे रौ भैया धौंसा
भैया हौ, धौंसा कऽ बोल कहलो नै जाइ
मार-काटि कऽ लकड़ी दलमे बजना बोल बोलैए,
रे भैया बजना बोल बोलैए
भैया छिटकल जाइए सिंघिन तलवार

करिया रे कुमैता दलमे घोड़ा जे ठनकै,
हे रौ भैया घोड़ा
भैया घोड़ा पीठ अगिन हो असवार

फेर एकटा आर टोल अछि।
चर्मकार, मुखदेव राम आ दयाराम राम । पहिने गामसँ बाहर रहय ई टोल, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बाँस काटि कऽ खतम कऽ देने अछि, आ लोकक बसोबास बढ़ैत-बढ़ैत ऐ चर्मकार टोल धरि आबि गेल छै। घरहट आ ईँटा पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैए। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ ढोल-पिपही बजेबा धरिमे हिनकर सभक सहयोग अपेक्षित। माल मरलाक बाद जाधरि ई सभ उठा कऽ नै लऽ जाइ छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैए। मुखदेव अछि जागेश्वर झाक संगी।

लाला महराज, चर्मकारक लोकदेवता। चौरीसँ माँछ मारि कऽ अनै छलथि। चौरीक माँछपर सभक अधिकार रहै छै। सभ ओतऽ माँछ मारि सकैए। मुदा सोनायमनी कहै छलै जे वएह टा चौरीसँ माँछ मारि सकैए। लाला महराज बलगर रहथि, ओ से नै मानथि। एक दिन ओ माँछ मारि कऽ आबि रहल छला आकि सोनायमनीकेँ पता लागि गेलै। पहिने ऐ इलाका सभमे बाघ रहै छलै। सोनायमनी लग सेहो कइएकटा बाघ रहै। ओ एकटा बाघ लाला महराजकेँ मारबा लेल पठेलक। मुदा लाला महराज अपन लाठीसँ ओकरा मारि देलन्हि। सोनायमनीकेँ बड्ड तामस उठलन्हि, ओ गहिल देवीक आराधना केलन्हि। गहिल देवी लाला महराजकेँ एकटा बाघिन पठा कऽ मारि देलन्हि।

खसियाक तीर मैया घूरै छै हौ/
हाइ लालाक करै छै नै खोज
लालाकेँ खोजै छै जौँ आबे/
कानि कानि कहैए ने बुझाय
कतौ नै देखियै रे दैबा जो आब/
कतौ नै लाला बाबीकेँ रे आब

केकरासँ से पुछबै केकरा समुझेबै/
केकराकेँ कहबै हम्मे हो उदेश।

लाला महराजक मित्र नाथ मिश्र लाला महराजक माए-बाबूकेँ दूध देनाइ बन्न कऽ देलन्हि।

डाँटि-डपटि कहै लागलै गे/
रूपामाय मिसरकेँ ने बुझाय
जेकरे परसादे नाथ मिसर छह हौ/
धोबिये पाट सनक जे शरीर
केराक थम सनक छौ मिसर रे/
तोरो जे अबै नै हौ जाँघ
कुनल कुनल बाँही नाथ मिसर हो/
ललिये परसादे छौ ने आब

लाला महराजक आत्मा तमसा गेल आ नाथ मिश्रकेँ ओ मारि देलक आ सोनायमनी आ ओकर परिवारकेँ सेहो मारि देलक। फेर लाला महराजकेँ पूजा पाठसँ मनाओल गेल आ तखन जा कऽ ओ शान्त भेला।

गढ़ नारिकेलक सभ लोक गबैय्या, खिस्सा कहक्कर सभ। सुनैत रहू... मनसाराम चमार आ छेछनमल डोम। दुनू बहादुर, मनसाराम मोरंगक राजाक सेनापति आ छेछनमल सिरीराजखण्ड राजक सेनापति।
मोरंगक राजाकेँ पता रहन्हि जे सिरीराजखण्डक सेनापति छेछनमलकेँ ओना कियो नै जीति सकैए, मनसाराम सेहो नै।
छेछनमलकेँ मोरंगराज अपन दरबारमे बजेलन्हि आ ओकरा लालच देलन्हि। मुदा ओ नै मानलन्हि, सिरीजखण्डसँ विश्वासघात? कखनो नै। मोरंगराज हुनका गछारि कऽ बन्हबा देलन्हि। मुदा छेछनमल एक्के बेरमे सभ बन्हन तोड़ि देलन्हि। मोरंगराज फेर डेरा गेला, जतुक्का छेछनमल सन सेनापति ओतऽ सेना सेहो तेहने बलगर हएत। आ सिरीराजखण्डपर आक्रमणक विचार ओ त्यागि देलन्हि।

कुछ नै बीति जेतै हौ मनसाराम,
चाहे सिरो कियै नै उतरि जाएत।
तैयो हम्मे नै टपै लेल देबै हौ,
अप्पन राजक रौ भीतर।
जौँ तोरा आबो जी-जानक डर छौ हौ,
तँ घर घूरि जा हौ नै अप्पन।
हम्मे तँ एको करम नै बाकी रखबऽ हौ,
हम्मे करबै सिमानक रछिपाल।
जौँ तोँए एको डेग आगू बढ़बै हौ,
हम्मे तोहर सिर लेबै नै कतारि।

गढ़ नारिकेलक खिस्सा सुनैत रहू... एक्के खिस्साक कएकटा रूप। जतऽ जतऽ सँ कनियाँ-मनियाँ एली, ततुक्का खिस्सा नेने एली।
लुकेसरी एकटा चर्मकारक पुत्री रहथि। छेछनमलकेँ पति रूपमे प्राप्त करबा लेल एकादशी करथि। मुदा हुनका सपना एलन्हि जे छेछन साधु बनि गेल अछि। आ जखन छेछनक भेँट लुकेसरीसँ भेल तँ छेछन हुनका देवी मानि लेलन्हि, हुनकासँ उपदेश लेलन्हि आ लुकेसरीकेँ देवी बना देलन्हि। लुकेसरी देवी बनि गेली।

फेर धनुख टोली। भगवानदत्त मंडल आ अधिकलाल मंडल-धानुक। पहिने यएह लोकनि भार उघैत रहथि मुदा पछाति दुसधटोलीक लोक सेहो भार उघए लागल छथि। खेती करब धनुकटोली आ दुसधटोलीक पुरान पेशा अछि। हँ पहिने ई सभ मात्र बोनिपर काज करैत रहथि, आब बटाइपर करै छथि। बकरी पोसब आ दुर्गापूजामे छागर बलि लेल बेचब, तकरा अहाँ ऐ दुनू टोलक पशुपालनमे गानि सकै छी। एक-एकटा बड़द सेहो कियो कियो राखऽ लागल छथि आ पार लगा कऽ तकर उपयोग जोड़ा बड़दसँ खेती करबामे करै छथि।

कोनो झगड़ा-झाँटी भेलापर महिसबार ब्राह्मणक चाइन कारी खापड़िसँ

तोड़ैत कोनो टोलक महिलाकेँ अहाँ सालक कोनो एहन मास नै अछि, जइमे नै देखि सकै छी। कारण पुछबन्हि तँ ओ सभ कारण कहती जे ई सभ निर्लज्ज होइए आ से ऐ कारणसँ जे जन्मेपर एकरा सभक पाछू गैंरमे थूक दऽ देल जाइ छै, जइसँ कथूक लाज कोनो गत्रमे नै हेतै।

गढ़ नारिकेलमे कोनो एहेन व्यक्ति जकरासँ समाजकेँ नोकसान होइ छै, ओकर मुइलापर शोक नै मनाओल जाइए, उनटे ओकरा मुइलापर जनानी सभ खापड़ि फोड़ि कऽ बान्हपर फेकि दै छथि।

तीने टा घर रहलोपर धोबियाटोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरिक मारवाड़ीक कपड़ा एतऽ साफ कएल जाइए। महिसबार ब्राह्मण सभ जे बरियातीमे बेलबटम झाड़ि कऽ सीट-साटि कऽ निकलै छथि से कोनो अपन कपड़ा पहीरि कऽ? वएह मंगनिया कपड़ा महगौआ, मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा साफी भाइ दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दै छथिन्ह। कोरैल, बुधन आ डोमी साफी, धोबि। डोमी साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। गुरु गोसाँइ जखन अबै छथि तखन डोमी दासक सरस्वती मन्द पड़ि जाइ छन्हि। मैथिली कबीरवाणीक भण्डार छन्हि हुनका लग।

प्रथमहि छलौं हम आदि पुरुख संग तब हम रहलौं कुमारि हे
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल बिआह हे
का संग रसलौं का संग बसलौं का संग केलौं धरुआर हे
का संग देश देशाउर घुमलौं कोन पुरुख के नारि हे
पाँच संग रसलौं पचीस संग बसलौं तीन संग केलौं धरुआर हे
संगहिमे देश देशाउर घुमलौं एक पुरुख एक नारि हे
साँपिन रूप हम शहर बसलौं डँसलौं मये चारू वेद हे
ससुर भैंसुर मिलि एक मत केलौं अचरज कहलो ने जाइ हे
एक आद्या तीनि रूप धराए छल मति बुद्धि विस्तार हे
कहए कबीर सभकेँ मन मोहे सन्त कोइ उतरए पार हे

डोमी दास सालमे एकबेर गढ़ नारिकेलमे सन्त समागम करबै छथि। भरि साल घुमिते रहै छथि। से कत्तौ, मधुबनीमे सहजयोग सत्संग केन्द्र, अरेड़ बरही टोल, अरेड़हाट, कबीर जागू आश्रम, अन्धराठाढ़ी, कबीर आश्रम, ब्रह्मोत्तरा, सदगुरु कबीर आश्रम, सुरतगंज। समस्तीपुरमे कबीरमठ, सतमलपुर, कबीर आश्रम, लदौरा। मुजफ्फरपुरमे कबीर आश्रम, तुर्की, कबीर मठ, कृष्णाटोली, ब्रह्मपुरा। गोनू झाक गाममे कबीर आश्रम, भरवाड़ा। आ कबीर धर्मस्थान, दुहबी, नेपाल धरि। ई कोनो स्थान हुनकासँ छुटल नै छन्हि। कतेको गुरुगादी द्वारा चादरि दऽ मठक महन्थी देबाक कार्यक्रममे हुनकर उपस्थिति अनिवार्य रहैत अछि।

गढ़ नारिकेलक सभ लोकक स्मृति बड्ड तेज, पुछबै एकटा गप्प आ तखन सुनैत रहू...

नौआटोली सेहो तीन घरक। जयराम ठाकुर, लक्ष्मी ठाकुर आ माले ठाकुर, हजाम। बड़ बजन्ता सभ।

जोगिन्दर ठाकुर, गढ़ नारिकेल गामक कमरसारिक बड़ही कमारमे सभसँ समंगर परिवारक। छड़ीदार छथि जोगिन्दर ठाकुर। मुदा माइनजन वा हुनकर देवान जखन भोजमे अबै छथि तखन लगैए जे छड़ीदार जोगिन्दर बाबूक सरस्वती मन्द पड़ि जाइ छन्हि आ नीक आ अनर्गल दुनू गपपर खाली 'हँ' निकलै छन्हि। जोगिन्दरकेँ तीनटा सन्तान- बिहारी, अर्जुन आ शिवनरेन। सभ गोटे काठक व्यवसायमे लागल छथि मुदा बिहारी संगे-संग लोहाक काज सेहो करै छथि आ अर्जुन साइकिल मिस्त्री सेहो बनि गेल छथि आ रिक्शा-साइकिलक छोट-मोट भङठीसँ लऽ कऽ पेंचर साटब धरि सभ काज करै छथि। बच्चा सभक लेल ओधिक गेन्दसँ लऽ कऽ लोहाक तारकेँ नीचाँमे मोड़ि लकड़ीक पहियाकेँ गुड़काबय बला खेल आ कतेक आर खेलाक इजाद केने छथि शिवनरेन। से लोक कहितो अछि- देखियौ, पढ़ला लिखलासँ नोकरीये टा भेटै छै, से धारणा बदलू। देखियौ शिवनरेनकेँ। की-की फुराइत रहै छै, कुकाठसँ की-की बना लइए। मुदा बिहारीक हाथक ईलम ककरोमे नै, आराकाट, सोझकटाइ,

खड़ाकाट, फैँटकटाइ सभमे शिवनरेनसँ आगाँ। शिवनरेन आविष्कार करैए आ तकर बाद ओकर देखा-देखी वएह बौस्तु बिहारी ओकरासँ नीक बना लइए। आब गाममे कोनो बौस्तुक कॉपीराइट आविष्कारककेँ थोड़बे भेटतै। पथरौटी लकड़ीपर शिवनरेनक आरी, बसुला मुरुछि जाइ छै मुदा बिहारी नै जानि कोना सम्हारि लइए। टोनाह लकड़ीसँ सेहो किछु ने किछु बना कऽ मेला ठेलामे बेचि अबैए। तकथा चिरबाक लेल नम्हर आरी सोझाँमे नै रहने छोटको आरिसँ चीरि दइए। लकड़ीक कामिल भागकेँ असरासँ अलग करबामे बिहारीक जोड़ नै।

मोट सूतक बनल अँचरी भगवतीकेँ खोइँछ देबा लेल पटवा जगदीश माइलकेँ ताकल जाइ छन्हि, पटमीनी बड्ड काजुल।

भोला पंडित कुम्हार, माटिक कोहा सभसँ लऽ कऽ बच्चा सभक लेल चिड़ै चुनमुनी धरि बनेबाक इन्तजाम छन्हि। मटिकममे कोनो जोड़ नै।

बासू चौपाल, खतबे। भार उघैत रहथि, माँछ सेहो उघै छथि, कहार सेहो बनि जाइ छथि। आ माँछ बेचैयो लागल छथि।

चलित्तर साहु आ लड्डूलाल साहु हलुआइ, दुर्गापूजामे दोकान लगबै छथि। काज उद्यममे सब्जी-तरकारी बनेबाक ठीका-पट्टा सेहो लेमऽ लागल छथि।

शिवनारायण महतो, सूरी। लछमी दास, ततमा। लाल कुमार राय, कुर्मी।

भोला पासवान आ मुकेश पासवान- दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाढ़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वरस्थानमे एकटा कुशपर एकटा गाए द्वारा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओइ स्थानकेँ कोड़य लगला, महादेव नीचाँ होइत गेला, फेर ताकि लेलन्हि। सीताक बेटा कुश -लवक भाय- द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

आब सुनू खिस्सा.. गढ़ नारिकेलमे सभ चीज लेल एकटा खिस्सा अछि.. खिस्सा नै इतिहास...

पुहपीनगरमे कीरति पासवानकेँ जोतला खेतमे एकटा बच्चा भेटलै। नाम पड़लै जोति।
-जोतला खेतमे भेटलै तैँ ने तँ हौ।
ओ ओकरा पोसि-पालि कऽ पैघ केलन्हि।
जोतिक दोस रहै हरिया। दुन्नु संगे रहथि। एक दिन जखन हरिया सुग्गर चरबै लेल जोति संग गेल तँ जोति नाचऽ लागल। इन्द्रलोक डोलि गेल। कालिदासकेँ जोतिसँ भेँट भेलन्हि आ कालिदास हुनका ढेर रास शक्ति देलन्हि आ हुनका धर्म आ सत्यक प्रचार लेल कहलन्हि। पुहपीनगरमे जोति धर्मक प्रचार प्रारम्भ केलन्हि। ओ बच्चा सभक हाथमे माटिक ढेपा देथि आ ओ ढेपा शंकरचूड़ लड्डू बनि जाइ छल।

जिअए निरबुद्धि बालक जोति हौ/
जगमे तूँ अमर भऽ जा
नित दिन करिहैं बलकवा रौ/
आहे धरमक हौ बेबहार
जहीं ठीन जे चीज चाहबै बालकबा रौ/
पुरेतौ दाता हौ धर्मराज

अमरीताक बेटा कालिदास ब्राह्मणक वेश धरि जोतिसँ भेँट करै लेल गेला, मुदा जोति कोनो कारणसँ हुनकासँ भेँट नै केलन्हि। कालिदास हुनका स्राप दऽ देलन्हि आ जोतिकेँ कोढ़ भऽ गेलै।
कालिदास एकटा जोतखीक भेष बना कऽ एला आ जोतिकेँ बोनमे बारह बर्ख भूखे पियासे रहै लेल कहलन्हि। जोति अन्तमे सफल भेला।

सत्यनारायण कामत, किओट, दरभंगाक जमीन्दारक कामतपर रहै छला।

रामदेव भंडारी। किओटक प्रकार भंडारी, जे दरभंगा जमीन्दारक भनसाघर सम्हारै छला।

सत्यनारायण कामत महौत सेहो रहथि, बरबड़िया रॉयक। हाथीक हौदा बनबैमे हुनकर जोड़ इलाकामे नै छल। हाथीक शब्दावली अगत्त, पिछ्छू, थाइत, माइल बिरि ऐ सभक प्रयोगक हुनका अभ्यास भऽ गेल छन्हि, अनेरो आनो ठाम ऐ सभक प्रयोग करैत रहै छथि।

कपिलेश्वर राउत आ रामावतार राउत, बरइ। पानक खानदानी पेशा।

मलाह जीबछ मुखिया। डकही पोखरिमे सालमे एक बेर मछैर, पन्द्रह दिनसँ मास दिन धरि मलाह ऐमे महाजाल खसबै छथि। मलाहक टोल जुमि अबैए।

पोखरिक कातमे मास दिन लेल बाहरी मलाहक गाम बसि जाइए। पहिने तँ मास भरिसँ ऊपर ई सलाना मछैर चलैत रहय मुदा आब घीच तीर कऽ बीस दिन। फेर मलाहक सरदार घोषणा करै छथि- जे आब माँछ शेष भऽ गेल। आब जे मारब, तँ महाजालमे एको टा बड़का माँछ नै आओत। भौरी जालसँ मारब तँ सभटा छोटका माँछ मरि जायत आ अगिला साल तखन जीरा देमय पड़त। ओइ पन्द्रह-बीस दिनमे गाममे उत्सवक वातावरण रहैए। अही बहन्ने पोखरिक साफ-सफाइ सेहो भऽ जाइ छै। भोरे चारि बजेसँ दुपहरिया धरि माँछ मारल जाइए। आ फेर बेरू पहर धरि सभ टोलक लोककेँ -दछिनबाइ टोलकेँ छोड़ि कऽ- अपन-अपन टोलक हिस्सा दऽ देल जाइ छै। सभ अपन-अपन हिस्सा लऽ गामपर अबै छथि। ओतऽ टोलक सभ परिवार अपन-अपन हिस्सा बाँटि लै छथि। टोलक माँछक कतेक कूड़ी लागत, ऐ विषयपर कहियो काल विवाद सेहो भऽ जाइए। जिबैत भलहि मसोमात काकीसँ टोका-बज्जी नै होइन्ह, भलहि मरबा काल बेटीकेँ हिस्सामे सँ किछु देबाक मसोमातक इच्छाकेँ कंठ मचोड़ि देने होथि; आ बेचारी मसोमातक मुइल शरीरक औँठा स्टाम्प पेपरपर लगबा लेने होथि। हुनकर स्मरण आन काल भले नै अबैत होइन्ह मुदा

डकही पोखरिक हिस्सा लेबा काल सभकेँ अपन-अपन मसोमात काकी मोन पड़िये जाइ छन्हि। ऐपर विरोध व्यक्त सेहो होइए आ पहलमान, जिनका सभ प्रेमसँ खलिफ्फा सेहो कहै छन्हि, केँ छोड़ि किनको ऐ प्रकारक हिस्सा नै भेटै छन्हि- भले खलिफ्फाक अंगनाक ओ मसोमात बीस बर्ख पहिनहिये किए ने मरि गेल होथि। डकही पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। ऐमे माँछ, काछु सभ स्वयं बढ़ैए। पोखरिक कातमे मलकोका सभ अनेरुआ, आ मारते रास लीढ़ केचलीक प्रकार। कातमे भेंट-कन्द महिसबार बच्चा सभक भोजन।

कमलाक नाहक खेबाह मलाह, गामक लोकसँ तकर बदलामे अन्न लै छथि। अनगौँआसँ हँ, धार पार करेबाक बदला पाइ लै छथि।

सुनू खिस्सा...

भरौड़ाक दुलरा दयाल मलाह। गोनू झाक गामक।

आब गोनू झाक गप आएल तँ ओइ महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनूक खिस्सा पहिने...

मिथिला राज्यमे भयंकर सुखाड़ पड़ल। राजा ढोलहो पिटबा देलन्हि, जे जे क्यो एकर तोड़ बताओत ओकरा पुरस्कार भेटत।

एकटा विशालकाय बाबा दस टा आकि बेसिये ठोप केने राजाक दरबारमे ई कहैत एला जे ओ सए वर्ष हिमालयमे तपस्या केने छथि आ यज्ञसँ वर्षा करा सकै छथि। साँझमे हुनका स्थान आ सामिग्री भेटि गेलन्हि। गोनू झा कतौ पहुनाइ करबा लेल गेल रहथि। जखन साँझमे घुरला तखन कनियाँक मुँहसँ सभटा गप सुनि आश्चर्यचकित भऽ हुनकर दर्शनार्थ विदा भेला।

इम्हर भोर भेलासँ पहिनहिये सौँसे सोर भऽ गेल जे एकटा आर बीस आकि बेसिये ठोपबला बाबा सेहो पधारि चुकल छथि।

आब बीस आकि बेसिये ठोप बला बाबाक भेँट हुनकासँ भेलन्हि तँ दस टा आकि बेसिये ठोप बला बाबा कहलन्हि- अहाँ बीस ठोप बाबा छी तँ हम श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा छी। कहू अहाँ कोन विधिये वर्षा कराएब।

-हम एकटा बाँस रखने छी जकरासँ मेघकेँ खोँचारब आ वर्षा हएत।

-ओतेक टाक बाँस रखै छी कतऽ?

-अहाँ सन ढोंगी साधुक मुँहमे।
आब ओ दस ठोप बला बाबा शौचक बहन्ना कऽ विदा भेला।
-औ। अपन खराम आ कमण्डल तँ लऽ जाउ।
मुदा ओ तँ भागल आ लोक सभ पछोड़ कऽ ओकर दाढ़ी पकड़ि घीचऽ चाहलक। मुदा ओ दाढ़ी छल नकली आ तइसँ ओ नोचा गेल। आ ओ ढोंगी मौका पाबि भागि गेल। तखन गोनू झा सेहो अपन मोछ-दाढ़ी हटा कऽ अपन रूपमे आबि गेला। राजा हुनकर चतुरताक सम्मान केलन्हि।
आब ओ खिस्सा... भरौड़ाक दुलरा दयाल मलाहक। ओही गोनू झाक गामक।
आब सुनू असली खिस्सा....
दुखहरन सहनीक बेटा। बच्चेमे ओकर बियाह बखरीक बहुरा गोढ़िनक बेटी धनियाँ मरौतीसँ भेलै। मुदा किछु तेहेन भेलै जे सभ बरियातीकेँ कन्यागत जहलमे बन्न कऽ देलक आ दुखहरन अपन बेटाकेँ लऽ कऽ पड़ा कऽ गाम आबि गेला। दुलरा दयाल नाच-गानामे पारंगत छल से लोक ओकरा नटुआ दयाल सेहो कहै छलै। पैघ भेलापर ओ बाबूसँ पुछलक जे ओकर गौना अखन धरि किए नै भेल छै। जखन ओकरा सभ किछु पता लगलै तँ ओ बिदा भऽ गेल बखरी। आ बखरीक सिमानपर इनारपर भेँट भऽ जाइ छै ओकरा अपन कनियाँसँ। विघ्न बाधाक बाद ओ आनि लैए अपन कनियाँकेँ।

मुसहर बिचकुन सदाय। डकही पोखरिक सटल गड़खै सभ, थलथल करैत दलदल भूमि सेहो। ओइमे बिसाँढ़ कोरि-कोरि कऽ मुसहर सभ खाइ छथि। अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा जाइए तखनो डकही पोखरि मुदा नै सुखाइए।

भुमिहार, राधामोहन राय। कोइर, दुखन महतो। सोनार, अशोक ठाकुर। तेली रामचन्द्र साव, बौकू साव आ कारी साव।

गामक आमक गाछी सभ, कएक टा। बड़का कलम। खढ़ोरिक नवगछली। भोरहा कातक कलम। पोखरिक महार सभपर गाछी। फेकल

आमक आँठीसँ निकलल पिपहीसँ गाछ आ आमक प्रकार बनबैमे ई गौँआ बड्ड माहिर। बम्बै, डोमा बम्बै, सोभजा (सोबजा बम्बै), नाजरा बम्बै, नेङरा बम्बै। बम्बै आम एते तरहक। बरमसिया (बारहो मास), कलमी भदैया, बथुआ (भदैया)। राइर होइए खूब मीठ। करिअम्मा देखैयो आ खाइयोमे दब। धुमनाहा पैघ होइए मुदा अछि ई सड़ही। रोहनियाँ आम सेहो अछि सड़ही, बरसाइतमे भारमे जाइ छै, मिथिलामे सभ आमसँ पहिने पाकै छै। बम्बै आँठी फेक दियौ टिपिया बनि जायत। कलमी फेकलाहा आँठीसँ नै बनैए, ओकरा बनाओल जाइए। कलमीमे गुद्दा होइए, ई गरिष्ठ होइए; सरहीमे रस होइए आ ई सुपाच्य होइए, कने अम्मत सेहो होइए। तही कारणसँ सरहीक अम्मट बनैए। बरियातीकेँ अगता समएमे बम्बै आ पछता समएमे सपेता देल जाइ छै, ई दुनू आम सभसँ नीक मानल जाइए। कलकतियाक अचार आ आमिल बनैए ओना आनो आमक बनैए। बिन कोसा बला आमक कुच्चा अचार–कसौनी- आ कोसाबला आमक फारा अचार बनैए। कोबी आ परोड़सँ अन्तिम कालमे लोक अघा जाइए मुदा आमसँ नै। सभ आमक सभ तरहक स्वाद।

खढ़ोरिमे सेहो खेत रहै। मुदा एक गोटे जे नवगछुली लगेलन्हि, तइसँ छाह भेने दोसर खेतक धानक खेती दबि गेल। से ओहो कने चौक-चौराहापर अनट-बनट बजैत आमक गाछी लगा देलन्हि।

एक टा जमबोनी सेहो अछि। नमहर-नमगर गाछ सभ, जोम सभ आ पतरगर जोमनी। आ छोटका-छोटका गुलजामुन।

पीपरक गाछ सभ डिहबारक स्थानसँ लऽ कऽ स्कूलक प्रांगण धरि एत्तऽ-ओत्तऽ पसरल अछि। पीपर गाछक जड़ि एत्तऽ आ शिरा सभ दहोदिस। नागफनी, पाकड़िक गाछ, बेलक गाछ, तेतैरक गाछ सेहो ठाम-ठीम अछि।

बान्ह सभक कातमे बोनसुपारीक गाछ, साहर दातमनिक झोँझ, बँसबिट्टी आ मारिते रास फूल आ काँट सभ। लजबिज्जी तँ सभ कलममे। चाकर

आमक गाछपर रखबार सभ ओछैन कऽ सुति रहै छथि। वरक गाछ मुदा एक्केटा, पीचक कातमे मीआँटोली लग। दुद्धि केरा देखैमे खूब सुन्नर होइए, गौरिया केरा खूब मीठ, बागनर केरा पैघ आ मोट मुदा ओते स्वादिष्ट नै। महींस जँ समैपर पाल नै खाइए तइ स्थितिमे गरमाइ लेल मेनागोभी पात खिऔल जाइए। खरही टाट-फरक आदिमे उपयोग होइए, पानक लत्ती खरहीयेपर लतरैए आ एकर उपयोग बरैबमे देखल जाइए।

गढ़ नारिकेलमे मनुखक जाइतसँ बेशी गाछ-बृच्छ, फल, अन्न आ तरकारीक प्रकार।

खूब तरकारी होइ छै- झींगली, सीम, भट्टा, मुनिगा, अरड़नेबा, ओल, कच्चू, चटैल, कैता, कमलककरी, खजबा कटहर, खम्हारु, बड़हर, परोड़। घेरा, एकर फूलक तरुआ होइ छै। साग आरो प्रकारक- गेन्हारी उज्जर आ लाल, अकटा, मिसिआ, राजा रानी। मुनिगा(सहजन)क, साग। बनपलाकी।

चैतमे नीमक कलसल पत्ता भट्टाक संग प्रयोग होइए।

दालिमे कुरथी, मसुरी, खेरही, राहरि, रहरिया, अकटा, मिसिया, भटपुरनि, रामझुमनी, सीम।

राहरिक दालि धनिक खाइए आ रहरिआ दालि गरीब खाइए।

डबरा, दसरिया, मलिदा, बेलोर, ई सभ धानक किसिम पाइनमे डुबलो रहलापर खखरी नै होइ छै।

बोरी धानक लत्ती होइ छै, ई लत्ती पानिक ऊपरमे लतरै छै आ सभ गिरहसँ गाछ बहराइ छै, एक कट्ठामे दसटा गाछ मुश्किलसँ रहै छै आ ओहीसँ खेत भरि जाइ छै।

मारिते प्रकारक धान चौरीमे होइए, रोपै कालमे तँ पानि नै रहै छै मुदा बादमे भरि ठेहुन, भरि जांघ पानि तँ चौरीमे रहिते छै। कनेक मोटका चाउर होइ छै, सएह ने। हप्सा सुगन्धित होइए, गढ़ नारिकेलक चापी जमीन माने चौरीमे उपजैबला धानमे सत्तोखरि, पड़बापाँखि, तत्तो, कसहम, उमट्ठ। मध्यम खेतमे उपजैबला धानमे सतरिआ, पनिझाली। उपरारि खेतक धान अछि जसबा, कमलकाठी, ऐमे कम्मो पानिमे नीक

धानक खेती भऽ जाइए।
धान अगहनमे तैयार होइए।
धान बिहिया-बिहिया कऽ कमाइए सभ।
विहनि लेल बीआ जोगा कऽ लोक राखैए।
बिराड़मे बीआ छीटि कऽ विहनि तैयार होइए।
अरदड़ा पाबनि दिनसँ रोपनी शुरू होइए।

दही, बसिया भात, गुर-चिन्नी, काजर सभटा सानि कऽ कंचू पातपर तीन वा पाँच कूड़ी बना खेतमे सभ दइ छै। जँ ब्राह्मण किसान तीन प्रवर अछि तँ किसान आ बोनिहार बजैए, तीन गव, तीन पान; आ तीन टा कूड़ी बना खेतमे दैए। आ जँ ब्राह्मण किसान पाँच प्रवर अछि तँ किसान आ बोनिहार बजैए पाँच गव पाँच पान; आ पाँच टा कूड़ी बना खेतमे दैए। ई सभ खेतमे बजैत, बिराड़सँ उपारि आनल विहनिसँ धानक खेतमे बोनिहार गब लगबैए।

जेठहि बिअवा गिरेलौं अषाढ़हि जनमि गेल हे
साओन रोपनी करेलौं भादव बिट भेल हे
आसिन फूल भेल धान कातिक फर भेल हे
अगहन काटल धान दौनिया कराएल हे
दौनि कराए कोठी ढारल कूटि-कूटि खाएब हे

अदहा बिहब बाकी रहि गेलापर लोक साँस लैत अछि।
भद्दैकेँ बुनि दै छै; छिटुआ धानक ऐ खेतीमे गौँआ सभ निपुण अछि।

भदै सेहो कएक तरहक, लक्खी, जल्ली, झरहा, बच्चिया, रंगबा, गम्हरी उजरा, गम्हरी करिआ। ई भादवमे तैयार होइए।
मिरचाइक विहनि, बिराड़।
केराक करजान।
फलमे लिच्ची, केरा, कटहर, लताम, महु, जिलेबी, बुनियाँ, बैर, आँता, शरिफ्फा, सपाटू, बड़हर, जोम, शहतूत, अनार, नारियल, टाभनेबो, बेल,

कदम सभक गाछ चारू दिस। केरा सेहो कए तरहक मरिचमान, गौड़िया मालभोग, झुरकुटिया, दुधी, बंशीबट, अनुपान, दुधमुंगर, बतिसा, मालभोग, सिंगापुरी, बाघनर, बरहरी, चिनिया, मालभोग, कपुरिया।

कास, पटेर, झौआक जंगल। खगरा घास।

केराओ दालि, सरिसो, तोरी, रैंची आ अण्डीक तेल। तीलै गाछ अफरातमे देखब, ऐ गाछक बरेड़ी देबामे प्रयोग होइए आ बजरकेराइक जारनिमे प्रयोग होइए। आमक बाँझीक घूर होइए। जमाइनक गाछ धोइन ढेकारमे काज अबैए। मंगरैल गाएक दूध बढ़बैए, जनीजाइतक सेहो। सुआ, जमइन- अजमइन, मंगरैल मसल्लामे प्रयोग होइए। मोथी, मोहलीसौंफ, धनी, पुदीना, लहसुन-रसुन, पियौज आ मेथीक गाछ। कागजी आ जमीरी नेबो। तेतैर।

चिड़ै जेना कचबचिया, बंचर (वनबादुर), टिटही (टिटहरी), गछखोदही (कठखोदही), चमगादर (चमगुदरी), मुँहदुस्सी (उल्लू), चिल्होरिया, लालसर, दिघौंच, देशी कौआ, कार कौआ (काग, बाझिल कौआ), खंजनिचिड़ैआ (शरद ऋतु), चकेबा, चाहा–चेहा, चिल्होरि, चुहचुहिया, डकहर, तित्तिर, कंठमे लाल-धारीबला सुग्गा, धनेस, धोबिनियाँ चिड़ै, पड़बा, पनिडुब्बी, बनमुर्गा, पहाड़ी मैना (मुँहपर लाल), पौड़की, फुद्दी, बगड़ा, बदर (लाल नाम पुच्छी), बाझ, मैनी (कारीपर उज्जर थप्पा, लोल लाल), मुँहदुस्सा, ललमुनियाँ, नीलकंठ, हरियल (मारि कऽ खाएल जाइ छै)। फतिंगा जे आँखिमे मारैए (अँखिफोड़ा), तितली (दू पाँखिबला रंग बिरंगक, नांगरि रहित), टुकिली (चारि पाँखिबला, नांगरि युक्त)। हरियर रंगक हनुमान जीक घोड़ा, एकटा आर होइए अंग्रेजिया मशीन जकाँ, लगैए एकरे देखि कऽ अंग्रेज सभ जे.सी.बी. मशीन बनेलक।

खढ़िया, हरिन, नीलगाय, हरकाछु, हराशंख, बिज्जी, खिखीर, शाही सेहो खूब।

घोंघहाक मांसक तीमन खाएल जाइए, सुरका बना सुरकलो जाइए आ कोनो बर्तनमे राखि पाँच-सात घंटा बाद छुटलाहा पानिकेँ ममरखामे धिया-पुताकेँ पिऔल जाइए आ सुलबाइमे सेहो फएदा करैए, पेट ठंढा करैए।

माछो किसिम-किसिमक रेखा, टेंगरा, कौआ, गरइ, गरचुन्नी, गैंचा, चेंगा, सिंघी, भुन्ना, रौह। सड़लो भुन्ना रौहक दुन्ना।

चिचोर, गढ़ नारिकेलमे होइबला निरर्थक घासक प्रजाति, नाम-नाम धरगर। पाइनिक केशौर। जटाधारी फूलक गाछ। हरदिक गाछ। अगिया ग्रहक गाछ, नजरि-गुजरि नै लगबा लेल एकर डाढ़िकेँ बाँहिपर बान्हि देल जाइ छै।

रोटी कएक तरहक- मरूआ, चाउर, खुद्दी, जओ, बदाम, खेसारी, काउन, चीन, मक्कै, बाजरा, जनेर, अल्हुआ, अकटा, मिसिया, मसुरी, फकुआ, खेरही, गुरा, सिंघार, मखान, भैँट।

एकाध कट्ठामे गहूमक खेती सेहो पैघ लोक करै छथि आ तकर सोहारी सेहो बनैए।
एक्के बौस्तु कए-कए बेर आबि जाइ छै..
टोकियौ नै.. ऐ गामक लोक सुरमे बाजैए.. एक्के चीज कए बेर अबै छै मुदा कतेक नवो चीज आबि जाइ छै ओइ सुरमे।

खेल सभ सेहो कए तरहक- संस्कृतक अटकन-मटकन आ कबड्डी। चंपा-चंपा कनैलक फरसँ खेलाएल जाइए, करिया-झुम्मरि खेलै छी ढील पटापट मारै छी, समाचकेबा खेलै छी चुगला धोती फाड़ै छी, चुगला कोठी छाउर भैया कोठी चाउर, चुगला रौ तोहर ई कोन बानि .... सँ खसलौ निच्छीकै पानि। चल झरनी खेलाइले। बंसी खेलाइले चलू। अम्मन छू अम्मन छू, चैत कबड्डी आबऽ दे। भागवतलीलाक हथियासुर आ उज्जीउज्जी, लालछड़ी.. जकरे नाम लाल छड़ी सएह चलि आबय ठोकर

मारि पड़ाय। झिझिया, जट-जटीन, झरनी, हुरियाहा-हुरियाही, हुरा-हुरी, छुतिया, कोइली दौड़, चोर पुलिस, हुक्का-लोली, कनसुप्ती, सिंगी-पताही, झिझिरकोना.. झिज्झिर कोना झिज्झिर कोना.. कोन कोना, गदहा-गुड़कन, चौसा, सतघरिया, डोलपत्ता, हाथी-चुक्का, गुड़ी कबड्डी, घोड़ा कबड्डी, जूआ, कौड़ी-कौड़ी, कित-कित, डोरी कूद, घरबा-दुअरबा, खो-खो (ई एतुक्का खो-खो छी बम्बैक नै), चोरानुक्की, गुल्ली-डंटा, पिंगला, लठमार, लुक्का-छिप्पी, सोना-डुब्बी, कुश्ती, पचीसी, घास-घास, पचगोटबा, पिट्टो, घोघोरानी, आँखि मिचौनी, कनियाँ-पुतरा, मरूआ-मरूऐनी, मरूआ ढेरी, बनरफान, मालदरी, फुटबॉल, सतरंज, तास, अन्ताक्षरी, पिठियाठोक, गोबरकन्ना, झीलम झाड़, सोल्हगोटिया, झिलहरि, छुली-छुली, ढेंगापानी, चिक्का कब्बडी, अकरो-मकरो, गोली-गोली। आ रौ छौड़ा रबढ़कना, राजा बेटीक बिया हेतै एकटा कटहर मांगै छी, अखन तँ रोपबे केलिऐ हैँ... अखन तँ खिज्जे छै..
बाप रे...

गढ़-नारिकेलक चटनी-सन्ना सेहो तरह तरहक। काँच लताम, अरिकोँच, ओल, लहसुन, पिऔज, तेतरि, कदम, मेथी, धनियाँ, पुदिना, तील, तिसी, अमादी, टमाटर, कुतरुम, धात्रीम (धात्री), आमक टुकला, सेरसों, पोस्ता दाना, चठैल, पीरार, भाँटा, घेरा, झुमनी, रामझुमनी, करैला, अल्लु (सन्ना/ चोखा), परोड़, कुरली (मधकुरमी), मुड़ै, सागक पतौरा, केरा (सन्ना), बरहर, करौना, अमरोरा, अमरा, आदी (आद), तुइत, आमक मोजर (बौर), मुनगा फूल, घोरजौड़ (घोरक छाँछ), सरिफा, खम्हरूआ, पेंची, औरबी, नारियल, नून-मरचाइ-कसौनी मिला कऽ, माछ (सन्ना), काँकोर (सन्ना), डोका (सन्ना), मोछी (कटहरक), पोरो, कटहरक फरक झक्का।

तेलमे सेरसो (करू तेल), तोरी, सूर्यमुखी, रैंची, तोर, अण्डी, कुशुम, मुड़ै, तील, सुआबीन, नारियल, चिनिया बदाम, महु, कटैया, तीसी।

खेत पथार सेहो कइएक तरहक। दुनू धारक बीचक खेतकेँ सभ ओइ

पारबला खेत कहै जाइ छथि। बलुआही खेत आ पाँकबला सेहो। कमला आनै छथि बालु आ बलान आनै छथि पाँक। परोर, तारबूज, फुइट आ अल्हुआक खेती, सभसँ सस्त खेत जे किनबाक हुअए तँ एतऽ आउ। मुदा बाढ़िक बाद खेतक आरिक मुँह-कान बदलल भेटत। कोनो साल बाढ़िक बाद खेतक रकबा घटि जाय तँ अराड़ि नै ठाढ़ कऽ लेब। अगिला बाढ़िमे भऽ सकैए कमला महरानी ओकर रकबा बढ़ा दैथि। खेती ओना तँ धानोक होइ छै, मुदा से सुतारपर छै। कोनो बर्खं तीन बेर रोपलोपर बेर-बेर बाढ़िमे दहा जायत तँ कोनो साल कमला महरानी खेतमे ततेक पाँक भरि देती जे जँ दू मोनक कट्ठा मोनमे सोचब तँ तहूसँ बेशी उपजत।

कनेक महग खेत किनबाक हुअय तँ मोड़बला आ गम्हारिक गाछ लगबला वा डुम्मरितर बला खेत कीनू। एतऽ लोक खेतीसँ बेशी बसोबास लेल जमीन कीनि रहल छथि।

डकही पोखरिबला खेतकेँ बढ़मोतर कहल जाइत अछि। पहिने ब्रह्मोत्तर रूपमे किनको मंगनीमे राजा द्वारा भेटल हेतन्हि। पहिने सुनै छिऐ जे नीक खेती होइत रहै मुदा आइ काल्हि पानि भरल रहै छै। इलाकामे जे छिटुआ धानक खेती होइए से अही बाधमे।

महीसक मरलापर कन्नारोहटक स्वर सेहो मास दू मासपर सुनबामे आओत। आ जादूटोना, ककरो दरबज्जापर पूजल फूल रातिमे फेकल, सेहो सालमे एकाध मासमे देखऽमे अबैए। आब लोको मुदा बूझि गेल अछि जे ई कोनो छौड़ाक किरदानी अछि।

कृषि-मत्स्य-पशुपालन आधारित महिसबार ब्राह्मण बहुल ऐ गामक चारूकात पढ़ल लिखल, ततेक नै पढ़ल लिखल आ मुँहदुब्बर गाम सभ अछि, मुदा एकटा चोरक गाम सेहो अछि ओतऽ। खाँटी चोर, द्रव्य, बौस्तु-जातक। मुदा गढ़ नारिकेलमे चोरि कऽ लेत से साधांश नै छै। मुदा ऐ गाममे एकटा गाछी अछि, चन्ना गाछी। दिनोमे अन्हार रहै छै, भूत, राकश, लोथ सभटा रातिमे कबड्डी खेलाइ छै, स्पष्ट जांघपर टाइल मारैक अबाज

रातिमे सड़क धरि जाइ छै, कतेक लोक अकानने छै ओइ अबाजकेँ, मुदा एनहार-गेनहारकेँ ओ सभ उकट्ठी नै करै छै, अपने खेलाइमे मग्न रहै छै। धुर लोथकेँ केना कबड्डी खेलायल हेतै यौ, ओ तँ भट-भट खसतै। बरु देखिते हेतै, गपमे एतेक भीतर किए पइसै छी? चोर सभ सेहो अही चन्ना गाछीमे, जतऽ दिनोमे जाइमे लोक डेराइत अछि, रातिमे चोरिक समान बँटवारा करैए। से केना बुझलिऐ? बाबू ऐ गामक महिसबार ब्राह्मण सभ अपने अछि राकश। ओ सभ दिनमे चन्ना गाछी जाइए, किछु चोरिक समान अन्हारमे चोर सभ बुते छूटि जाइ छै, से ताकि कऽ आनैए। एक बेर तँ कोनो कुटुमक समान चोरि भेलै आ एत्तऽ भेटलै, ककर कुटुम आ कोन समान से नै पूछू। सुनै छिऐ जे एकटा महिसबार ब्राह्मणक बाबा जखन बच्चा छला तखन तँ चोरिक समान ताकै लेल गेल छला आ ओत्तऽ छअ टा चोरक शव भेटलन्हि, बँटवारामे झगड़ा भेल हेतै आ सभ अपना-अपनीमे मारि-काटि कऽ खतम भऽ गेल। सभटा चोरिक समान चारू दिस छिड़िआयल, सभटा समान हुनका पइड़ लागि गेलन्हि। तही ताकिमे तीन खाढ़ीसँ ई सभ चन्ना गाछी जा रहल छथि, मुदा ओहेन पइड़ फेर नै लागल छन्हि।

आन गाममे सभ तरहक चोर- साहित्यक, आचारक, विचारक, प्रचारक।

पड़ोसक चोर सभक हिम्मत नै छन्हि जे गढ़ नारिकेलमे कोनो जातिक घरमे चोरि कऽ लेथि। ऐ गाममे जकर बियाह भऽ जाइए ओकर सभटा फसादी जमीनक निपटार भऽ जाइ छै। ऐ गाममे कुटमैती भेने लोक समंगर भऽ जाइए। एतऽ सँ हसेरी दूर-दूर धरि जाइए। कुटुमक जमीनक झगड़ाक निपटारासँ लऽ कऽ आन-आन काल हसेरी बहराइए। जे जमीन ऐ गाममे हजार रुपैये कट्ठा अछि, वएह जमीन पड़ोसक बनराहा गाममे एक सए रुपैये कट्ठा। उँचगर जमीन गाममे सस्त अछि कारण बर्खाक पानिसँ उत्थर जमीनक पटौनी नै भऽ सकैए। बनराहा गाममे ऊँचगर जमीन, उपरारि खेतक धान जसबा, कमलकाठी, दूधराज, भालसरी, मंसूरी, भोला मंसूरी, कांक्षीमंसूरी; आ मकै, कुरथी, राहरि, मड़ुआ, कोदो, खेड़ी आ सरिसो उपजाबैए ई बनराहा सभ।

बनराहा.. बुझलहुँ नै, ओइ गामक गाछीमे बानर सभ भरल छै आ लोको सभ बानरे सन पीअर कपीश!

बाड़ी मुदा गढ़ नारिकेलक सभ घरक पाछाँ भेटबे करत, भट्टा, नेबो, साग, मुरइ, ई सभ बाड़ीमे भेटि जाइए, आ आन आन तरहक जड़ी बूटी सभ सेहो।

धरि दुर्गापूजा ऐ गाममे नै शुरू भेल। मुँहदुबरा गाममे आ बनराहा गाममे सेहो शुरू भऽ गेल, मुदा एत्तऽ! चाहबै तँ किए नै हएत? रामलीला एक मास केलौं हम सभ आकि नै। धू, बान्ह लगहीसँ घिना गेल। भने नै होइए दुर्गा पूजा। एक तँ धी बेटीकेँ लियाउन करेबाक झमेला रहत आ जे मेलपेँचसँ रहै जाइ छी सेहो पार्टी-पोलिटिक्स खतम कऽ देत।

खुरपीसँ आध माइल एक निशाँसमे छीलि कतेको बोरा घास भरि लैए ऐ गामक ब्राह्मण। ऐ गामक ब्राह्मण महीसक सभटा नीक प्रजाति रखने अछि। ऐ गामक पारा सभकेँ जँ आनो गाममे छूअल जाय तँ हँसेरी बहरा जाइए, अनजाने-सुनजानमे अनगौँआ ऐ गामक पारापर लाठी उसाहैक हिम्मत करैए।

गढ़ नारिकेलमे कलाकार सभक कमी नै। खुरदक वादक जंगल राम, कॉरनेट वादक जीतन राम, भगैत गबैया- रूपलाल यादव, खिसक्कर- छुतहरु यादव आ टहल मुखिया। नाच कम्पनी खुशीलाल साहु खोलने छथि, मैनेजर छथिन फुसन यादव। सिमराहा सप्तरी, सिमराहा सुपौल दुनू ठामक नाच कम्पनीसँ नीक। अल्हा रूदल, लछिया रानी- सती लछिया, शीत वसंत, गुगली घटमा, राजा कुँवर वृजभान, धूलक फूल, सुल्ताना डाकू, राजा हरिश्चन्द्र, राजा नल, राजा सलहेस, काँच ताग, आन्हर कानून, लोहा सिंह, माइक कलेजा, चूड़ी आ सिनूर, जंगल बादशाह, वंश उजाड़न, पिआ देशांतर (ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक बिदेसिया), लोरिक मनियार, बापक हत्या, दमाद वध, निशाद वध,

गोपीचन, शंकर शोसिला/ उतिमचन/ सुन्दर वनक सुन्दर फूल, विजय सिंह, पिता हत्या, जंगली बादशाह, रास लीला, रुणा-झुणा, कबीर लीला, कलयुग प्रेम आ आर ढेर रास गाथा। नागार्ची (नङेरा/ डिग्री बजबैबला) गुणेश्वर राम, खौजरी वादक सुकदेव साफी। घुनामुना (सारंगी) बजबैबला खट्टर मल्लिक, मामागाम कमरैलक डोम-मल्लिक सभसँ कताक गुणा नीक घुनामुना बजबै छथि । झलिबाह (झालि बजौनिहार) अशर्फी मण्डल। कठझालि/ रमझालि/ करताल बजौनिहार छेदी मण्डल। बौसली वादक गुलाब पासवान/ झोटन मण्डल। घोड़ा नृत्य, मजूर नृत्य केनिहार लाइनसँ महादेव बनियाँ, दसाँइ ठाकुर, दुर्गीलाल ठाकुर, घूरन पंडित। झुनझुन्ना (मजिरा) वादक अर्जुन मण्डल। झालड़ वादक रमजानी पासवान, जलतरंग वादक मलभोगी दास, कठतरंग वादक भयलाल दास, मृदंग वादक छोटकनि दास, बीन वादक दुखरन यादव, तानपुरा गंगाय साहु, तरसा (तासा) हूराहूरी आ दाहामे बजाओल जाइए, कल्लर मल्लिक आ मो. आजम द्वारा। झालड़- बच्चा मण्डल। बिपटा बनै छथि सीताराम राम। डिगरी सेदैबला प्रायः भड़िया सेहो होइए, असला-खसला उघैए, डिगरी सतन मुखिया बजबै छथि आ झोटन मण्डल डिगरी सेदै छथि आ भड़ियाक काज सेहो करै छथि। डिगरीमे छोट पातर स्वर निकलै छै। नङेरामे मोट अबाज निकलै छै, चोट पड़ै छै तँ बुझु नाच शुरू भेल। गुमगुमियाँ (ग्रुमबाजा), बबाजीक धुथू (तुरही) डोमी दास बजबै छथि। सिंगहरिया, धुधुबाजा बड़ी टा होइ छै- थूक फेकऽ पड़ै छै बजेलापर, तते दम लगै छै। बेंजो। नृतक (रघुनाथ सदाय), नारी पात्र (अशोक सिंह)। पुरुष पात्र, अभिनय, गायक, नायक, ठेकैता (ढोलकिया)। ऑर्गन डुब्बी मुखिया, नाल सुनर चौपाल, कॉरनेट फूसन राम, नङेरा अशर्फी गोसाँइ, ढोलक हियालाल, मृदंग वादक- झड़ीलाल सदाय। अल्हा/ महराइ। जोगिरा, पराती (प्रभाती) गौनिहार लेल्हु दास। झरनी- मो. आकुफ। नाल वादक खट्टर मण्डल। ड्रमसेट, हरमुनिया तँ बुझू गढ़ नारिकेलक सभ लोक बजबैए। डंका/ ढोल/ तबला- चुनाइ राम। बीकू राम सन डम्फा होलीमे कियो नै बजबैए ।

भगैत गबैया बिचकुन सदाय, रसुआरक भगैत पार्टी हुनका लग किछु नै,

ओ भगैत गबै छथि आ संगमे खजुरी सेहो बजबै छथि।

दीप गामक पटियाबला, मोथाक पटियाक कारीगरी किछु एतुक्को लोककेँ सिखेने छथि।

साहेबगंजवाली, बलाटवालीक अरिपन आ मिथिला चित्रकला, बेलमोहनवाली आ बेलाहीवालीक लोकगीत। सिलाइ कढ़ाइमे मछधीवाली। सराइ-कटोरा, माटिक हजार-हजार महादेव एतुक्का बचिया आ स्त्रीगण लेल एक हाथक खेल। बाड़ीमे भँसाओल हजारक-हजार माटिक महादेव जत्तऽ तत्तऽ भेट जायत। अंगना घर नीपल पोतल, कुटिया-पिसियासँ लऽ कऽ रोपनी पटौनी कथूमे गढ़ नारिकेलक स्त्रीगण पाछाँ नै। सप्ताडोराक कथा हुअय बा मधुश्रावणीक, एतुक्का स्त्रीगण एक्के निसाँसमे सभ कथा कहि जाइ छथि आ जखन एतुक्का बेटी-धी बियाहि कऽ दोसर गाम जाइ छथि तँ ओतुक्को गाममे गुण पसारै छथि।

भूमिहारकेँ गढ़ नारिकेलक महिसबाड़ ब्राह्मण सभ पछिमा कहै छै। ओ सभ अपनाकेँ भूमिहार ब्राह्मण कहैए मुदा महिसबाड़ ब्राह्मण सभ ओकरा ब्राह्मण नै मानैए। छलै ई सभ ब्राह्मणे मुदा बौद्ध बनि गेल, भूमिक लालचमे। जतऽ जतऽ बौद्ध मठ लग भूमि छै तत्तै भूमिहार भेटत, बिहार, तराइ नेपाल आ पूर्व उत्तर प्रदेशमे। मध्य प्रदेशमे साँची स्तूप छै मुदा ओत्तऽ बौद्ध मठ लग भूमि नै रहै तेँ ओतऽ भूमिहार नै भेटत। बौद्ध सिद्ध मेहथपा गढ़ नारिकेले केर रहथि। जन्मस्थान आ कर्मस्थान दुनू ईएह रहनि, सिद्ध रहथि, चारू दिस, तिब्बत धरि घूमि कऽ आयल रहथि। आ बौद्ध धर्म जखन खतम भेलै तँ बौद्ध बनल ब्राह्मण फेरसँ सनातन धर्ममे घुरल मुदा महिसबाड़ ब्राह्मण सभ ओकरा ब्राह्मण नै मानै छै। महिसबाड़ ब्राह्मण सभ पढ़ल लिखल भने नै हुअय, इतिहास-संस्कृतिक जानकारी तेना कऽ देत जे अहाँकेँ हिला देत। मुदा भूमिहारकेँ पछिमा किए कहै छै तइ बेरमे एतबे कहत जे पच्छिमसँ आयल हेतै।

मुदा पछिमा सभ अपनाकेँ पछिमा कहलासँ आहत होइए, अपनाकेँ ओ ऐ गामक डीही कहैए। मुदा महिसबाड़ ब्राह्मणक एकहरे समुदाय

अपनाकेँ ऐ गामक डीही कहैए, आ ओकरा लग कारण सेहो छै, सभसँ बेसी जनसंख्या डीहीक रहै छै, से ओकर सभक छै। मुदा मिसरटोलीक भगिनमान सूर्यनारायण ठाकुर कहै छथि जे नै, पछिमाक संख्या बेसी केना रहतै, प्लेगमे पूरा टोले ओकर साफ भऽ गेलै, एकाध टा बचलै, मिसरटोलीयो अदहा साफ भऽ गेलै आ तखन प्लेग खतम भऽ गेलै, से एकहरे सभ बचि गेलै। डीही तँ पछिमो भऽ सकैए बा महिसबार ब्राह्मणक एकहरे समुदाय सेहो। मुदा ई गाम कहाइत अछि महिसबारे ब्राह्मणक गाम। एकटा टिकुलहारा टोल छै, सेहो महिसबाड़े ब्राह्मणक, साँझमे टिकुलहारा सन ई सभ झाँउ-झाँउ करै छै तेँ।

ई सभ छथि गामक कहबैका सभ।

आ गाम अछि गढ़ नारिकेल, महिसबार ब्राह्मणक गाम।

बीहनि कथा खण्ड

(३९ टा बीहनि कथा)

रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर

बस पंक्चर भऽ गेल रहै से बारह बजे रातिमे दुनू संगी पटनाक हार्डिङ्ग पार्क बस स्टैण्डपर उतरलौं।
“पुनाइचक चलब? समानो किछु नै अछि खाली दू गोटे छी आ दूटा हैण्डबैग अछि।“– हमर संगी रिक्शाबलासँ नेहोरा केलन्हि।
“से तँ ठीक मुदा ओइ मोहल्लामे जे किराया देब से घुरती कालमे उचक्का सभ छीन लेत। “– रिक्शाबला मोटामोटी मना कऽ देलक जेबासँ।
“धुर, तकर चिन्ता छोड़ू, हमहीं सभ तँ छीनै छिऐ, आ जखन हमहीं सभ जा रहल छी तँ के छीनत?”- संगीक नेहोरा आत्मविश्वासमे बदलि गेलन्हि।
आ रिक्शाबला जयबाले तैयार भऽ गेल।

नकली नोट

बड्ड पुरान गप्प। जखन एक हजारक रूपा होइ छलै मुदा असली कम नकली बेशी।
पटना एयरपोर्टपर उतरिते टैक्सीबला पछोड़ धऽ लेलक समान उठा गाड़ीमे धऽ देलक आ कहलक जे छअ सय टका किराया भेल मुदा पार्किङ्गक अस्सी रूपा अलगसँ देमऽ पड़त। हमरा लग वएह एक हजरिया नोट रहय, असली आकि नकली से नै जानि। से पुछलिऐ- खुदरा पार्किङ्गबला कऽ देत ने? ओ आत्मविश्वाससँ कहलक जे भऽ जायत।
गाड़ी रुकल, नोट पार्किङ्गबलाकेँ देलिऐ, ओ नोटकेँ उनटि-पुनटि कऽ देखऽ लागल आ एम्हर हम सर्द भेल जाइ जे दोसर नोट अछिये नै, जँ नकली बहार भेल तँ सुनै छिऐ ई क्राइम सेहो छिऐ। टैक्सीबला कमेण्ट्री शुरू केलक।
“अमदीकेँ नै चिन्है छेँ, देखै नै छहीं कथीसँ एलखिनहेँ, तोरा नकली नोट देथुन। “
आ पार्किङ्गबला आजिज भऽ कऽ खुदरा गानऽ लागल आ हमर जानमे जान आयल।

पानिबला रोड

हमर पटनाबला सङ्गीक पोस्टिङ्ग मनसाघाट ब्लॉक कुशेश्वरस्थानमे भेलै, बाढ़िक इलाका ओ कहियो देखने नै। ओकरा बुझल छलै जे बर्खा-बुन्नीमे आवाजाहीमे दिक्कत होइ छै, सोझ लोक।

हमर एकटा दोसर सङ्गीक मामागाम मनसेघाटमे रहै, से एकटा चिट्ठी लिखबा कऽ हम ओकरा दऽ देलिऐ।

हमर सङ्गी काली-भगवती भक्त। ब्लॉकेमे लोक सभ मामाजीक पैघ लोक हेबाक गप कहि देलकै, जे हुनका दू-दू टा नाह छन्हि, एकटा घर-परिवारक उपयोग लेल आ एकटा सर-कुटुम दोस-महीम लेल। आ उग्रतारा भगवती, जिला तँ दोसर सुपौल कि सहरसा छै मुदा लगे छै।

सङ्गी पहुँचल मामाजी लग, आ उग्रतारा जेबाक ब्योंत धरबऽ लागल।

“अखन तँ बाढ़ियो नै आयल छै, से जँ कोनो सवारी-घोड़ाक रूट होइ जइसँ माँ उग्रताराक दर्शन भऽ जइतय?”

“अहाँ पटना हिसाबे सोचि रहल छी, इम्हर उनटा छै, अखन रोडपर पानि नै छै, मुदा रोड टूटल भाङ्गल छै, पाँच-छअ घण्टा बससँ लागि जायत। अखन नाह नै चलि सकैए। बाढ़ि आबऽ दियौ, नाहसँ बीस मिनटक रस्ता छै, बेशीसँ बेशी तीस मिनटक।”

जी सर

“यौ यादव जी सभ गपपर अहाँ जी सर किए कहै छी?”
“जी सर। जीह ’जी सर’ ’जी सर’ ऑफिसमे बजैत बजैत मोचड़ा गेल अछि। आब तँ बेटा कहैए जे डैडी ई समान आनि दिअ तँ मुँहसँ निकलैए, ’जी सर’। “

दू टा कैदी

“ई सार जेलरबा बड्ड मारैए, बहन्ना चाही ऐ सारकेँ खाली मारबा लेल। “
“आब चोरि आ छीना झपट्टीक केस लगलापर मारतौ नै तँ की आरती उतारतौ। देखहीं उम्हर उदनाक शान, जेलर साहेब समाचार पूछि रहल छथिन्ह, कि कोनो तरी-घट्टी तँ स्टाफ सँ नै होइ छै। बाबू, चोरि आ छीना झपट्टीक केस नै, मडरक केस लागल छै उदना पर। “

अपन-अपन भाग्य

हमर एकटा संगीक बेटा आ दोसर संगीक कनियाँमे गप भऽ रहल छलै आ हम आर.के. लक्ष्मणक "कॉमन मेन" जकाँ बौक भेल सुनि रहल छलौं। अहाँकेँ ई कहि दी जे दुनू संगी बी.डी.यो. छला, पहिल जिनकर बेटा पात्र छथि से उत्तर प्रदेशमे पदस्थापित रहथि आ दोसर जिनकर कनियाँ पात्र छथि से बिहारमे पदस्थापित। गप पुरान छै, तखुनका गप छिऐ जखन बिहारमे झारखण्ड छल आ उत्तर प्रदेशमे उत्तराखण्ड। उत्तर प्रदेशमे ऑफिसरकेँ पनिशमेण्ट पोस्टिंगमे पहाड़पर पठाओल जाइ छलै जे भाग आब उत्तराखण्डमे छै; बिहारमे बाढ़ि बा सुखारक पोस्टिंग सदिखन प्लम पोस्टिंग मानल जाइत रहल छै।
मित्रक पुत्र- ओइ समय जनकल्याण सिंहक सांप्रदायिक सरकार रहै, हमर पिताकेँ पनिशमेण्ट पोस्टिंग कऽ देलकन्हि टिहरी पहाड़पर, सुक्खा-सुक्खीमे। मुदा बाबू, भाग्यमे पाइ लिखल छलै, आबि गेलै भूकम्प, पाइये-पाइ भऽ गेलै।
मित्रक पत्नी- सएह देखू, हिनकर पोस्टिंग कऽ देलकन्हि कुशेश्वर स्थान, सुनै छलिऐ डुमले रहै छै। मुदा ई जहियासँ गेलखिनहेँ ने सुखारे एलै ने दहारे। अपन-अपन भाग्य।

प्रवचन

दिल्लीमे एकटा प्रवचनमे गोनर भाइ प्रसिद्ध स्वामीजी बाजि रहल रहथि- “हम बहुत दिनक बाद प्रवचन कऽ रहल छी, कारण एम्हर हम पटना गेल रही। ओतऽ एकटा मोहल्ला छै राजेन्द्र नगर। ओतऽ भारतक पहिल राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादक प्रशंसक लोकनि निवास करै छथि। ओतऽ एकटा प्रवचन मे ई प्रश्न उठल छल जे......।”

गोनर भाइकेँ पछाति हम पुछलियन्हि- “गोनर भाइ, हम पटना नग्रमे बीस बर्ख रहलौं मुदा ई तँ हमरो नै बुझल छल जे ओतुक्का राजेन्द्र नगरमे राजेन्द्र प्रसादक प्रशंसक लोकनि निवास करै छथि। आ अहाँ तँ धान कटाबैले गाम गेल रही तखन ई पटनाबला प्रवचन प्रसंग कहिया भेलै...?!”

“हौ बुझहक, ई सभ नै कहबै तँ ई सार पंजाबी सभ कि एकोटा पाइ देत।”

गछल गप

“गोनर भाइ, वरागत कहै छला जे अहाँ गछलाहा कोनो बौस्तु नै देलियन्हि, हम घटक रही आब ओ जखन देखू हमरा हुथैत रहै छथि।” घटक महराज गोनर भाइकेँ उपराग दैत बजला।
“यौ, ओइ धुइनमे हम की-की गछलियन्हि आ की-की नै गछलियन्हि से कि हमरा मोन अछि। ओ कहैत गेला आ हम हँ-हँ करैत गेलौं।”

भूरा बाल

गूगल सर्च करू आ अगड़ा जातिक ऐ शॉर्ट फॉर्मक पूर्ण विवरण भेट जायत। बिकछा कऽ बुझबाक हुअय तँ “भूरा बाल जाति” सर्च करू। चारि संगी छला। मुदा ओइमे एकटा ऐ भूरा बालसँ बाहरक छलथि। ओ बाजि रहल रहथि-

-पहिलमे शरीफ, दोसरमे अकलमन्द आ चारिममे इमानदार मोश्किलेसँ भेटै छै।

-तेसरक विषयमे नै बतेलैँ, आ अपन जातिक विषयक फकरा सेहो तँ बता।

-तेसरक विषयमे तँ पुराण-महाकाव्ये सभ लिखल जा रहल छै। आ हमर जाति पाछू छल तैँ फकड़ा नै बनल छल। आब कनी-मनी आगू बढ़ल अछि, आब बनतै। आ जखने बनतै पहिल-पहिल तोरे सुनेबौ।

आत्म-गौरव

संगी येल्लो लाइट क्रॉस केलक आ बिच्चेमे रेड लाइट आबि गेलै। संगी सतर्कता विभागक बड़का अधिकारी, मुदा सिपाही गाड़ी आगाँ बगलमे ठाढ़ करबा लेलकै। हवलदार आयल तँ संगी ओकरा पाँच सयक नोट देखेलकै आ छोड़ि दइले कहलकै। हवलदार बाजल-

“गामक असगर सरकारी कर्मचारी छी हम, बहुत इज्जत अछि हमर गाममे। ई पाइ राखू, छोड़ि रहल छी अहाँकेँ। आ जखन अहाँ आगाँ बढ़लौं तँ “येलो लाइट” छल तेँ छोड़ि रहल छी, रेड लाइटमे आगू बढ़ल रहितौं तँ छोड़बो नै करितौं।”

हवलदारक ओइ आत्म-गौरवक खिस्सा हमर संगी सुनबैत नै थाकैत अछि खास कऽ ओतऽ जतऽ पैघ पदाधिकारी “प्रेसर”मे कर्तव्य-पालन नै कऽ सकबाक कन्ना-खिज्जी करैत रहैत छथि।

छाह

-अपन एतेक टाक फोटो किए बनबेलौं?
हम संगीक गपक कोनो उत्तर नै दै छी आ आगाँ फ्रेमक दोकानपर बढि जाइ छी।
-अपन फोटोमे फ्रेम किए लगबा रहल छी?
हम संगीक गपक फेर कोनो उत्तर नै दै छी आ आगाँ दोसर दोकानपर बढि जाइ छी।
-ऐ फ्रेमक साइजक माला दिअ।
-ओ आब बुझलौं, स्वर्गीय पिताक फोटो छी!

वाटर कूलर

सरदार गुरमीत गेला चोर बजार, एकटा नव वाटर फिल्टर देखलन्हि, सात हजार दाम कहलकन्हि। ओ कहलन्हि जे गंगानगरमे एकरा लगेबाक अछि घरक बाहर रोडपर, लोकर्कें पानि लेल एम्हर-ओम्हर जाय पड़ै छै। धर्मक काज छिऐ।

चलू पाँच सय कम दऽ दिअ। होइत-हबाइत तीन हजार टाकामे किनलन्हि। घरक बाहर लगा देलखिन्ह।

मुदा जखन एक मासक बाद घुरि कऽ गेला तँ माय कहलखिन्ह जे सभ दारू पिबैबला सभ पानि निकालैए आ प्लास्टिकक ग्लास ओतै फेकि कऽ चलि जाइए। पहिने घरक भीतरे झाड़ू लगबै छलौं आब गेटक बाहरो लगबऽ पड़ैए।

तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छेँ बाउ

आइ.पी.एल. क्रिकेट लीगक प्रारम्भ भेल रहय, पहिल मैच दिल्ली डेयरडेविल आ चेन्नै सुपरकिंग्सक बीचमे। दिल्लीमे मैच रहै। हमरो दूटा पास भेटल रहय, से एकटा ऑफिसक सहकर्मी संगे मैच देखैले गेल रही। सुरक्षाक करगर इन्तजाम रहै, सिपाही-हवलदार सभ सादा ड्रेसमे तैनात। एकटा राजस्थानक आदिवासी ग्रुप छल, छीटबला रङ-बिरङक चूड़ीदार धोती कुर्ता, माथपर मुरेठा, कानमे बाली, राजशाही अन्दाजमे।

मैचसँ बेशी बगलमे बैसल एकटा पैण्ट-शर्ट बला दर्शकक रनिङ-कमेण्ट्री, जे स्टेडियमक बाहरमे पेण्टरसँ अपन गाल तिरङासँ रङा कऽ आयल रहय, मोन लगा रहल छल। तेहने ओकर बगय-बानी छलै, तेहने शरीरक काट। मस्त-मोट। ओकर गपपर सभ हँसैत छल मुदा ओकर मुँहपर वएह कमेण्ट्री-केनिहार सन विरक्तिक भाव।

चेन्नै सुपरकिंग्सक सुरेश रैना, पैघ खिलाड़ी, बाउण्ड्रीपर क्षेत्ररक्षण लेल एला। ओ ’रैना भाइ’ ’रैना भाइ’ कहि कऽ चिकड़य लागल, मुदा सुरेश रैना कथीले घुरि कऽ देखबो करतै। सादा ड्रेसमे तैनात हवलदार ओकरा खिलाड़ी सभकेँ हूट नै करबा लेल कहलकै। ओइपर ओ भावनात्मक भऽ गेल।

“हवलदार साहेब, ई हमर बच्चाक संगी अछि, सङे मुरादाबादमे चाहक दोकानपर चाह पीबी, सङे-सङ गुल्ली डण्टा खेलाइ आ आइ ई एतेक पैघ लोक भऽ गेल जे घुरि कऽ देखियो नै रहल अछि।“- हवलदारोकेँ हँसी लागि गेलै।

अगिला ऑवरमे एकटा नव खिलाड़ी विद्युत रामचन्द्रन बाउण्ड्रीपर क्षेत्ररक्षण लेल एला। आब ओ दर्शक अपन मूडमे फेर आबि गेल आ ’विद्युत’ ’विद्युत’ शोर करऽ लागल, मुदा विद्युतो ओकरा दिस घुरि कऽ नै देखलक।

“तोँ अखन एतेक पैघ खिलाड़ी नै भेलेहेँ बाउ।“- ओ बाजल आ ओकरा छोड़ि सभ पेट पकड़ि कऽ हँसैत रहल।

एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा

“सर, ई हमर गौँआ अछि, बड्ड नीक बिजली मिस्त्री। आइ.टी.आइ. केने अछि मुदा कतौ टिकिये नै पबैए। ककरो कहि कऽ एकरा एत्तै नोकरी लगबा दियौ।“

“पहिने कत्तऽ नोकरी करै छलौं, किए हटा देलक?”

“एत्तै गुरुग्रामक एमबियेन्स मॉलक मिस्त्री छलौं। लीला होटल आ आन बहुत रास प्रोपर्टी ओतऽ एमबियेन्सक छै, एक्के कैम्पसमे। बेसमेण्टमे पानि भरि गेल रहै, ओत्तै कोनो बिजली-कनेक्शनक मरम्मतिमे तारकेँ मुँहसँ छीलि-छीलि कऽ, जोड़ि कऽ, पानिमे ठाढ़े-ठाढ़ ठीक कऽ देलिऐ, मुदा कियो मैनेजरकेँ शिकाइत कऽ देलकै जे ई तँ पानिमे ठाढ़ भऽ कऽ तार ठीक करैए, करेण्ट लागि कऽ मरि जेतै तँ तूँ फँसि जेमे। से ओ निकालि देलक। ओकरा हम कहबो केलिऐ जे जाबे करेण्टक परिपथ पूरा नै हेतै करेण्ट केना लगतै, अर्थिङ बला गप बुझेलिऐ। मुदा ओ कहलक जे वैज्ञानिक आधारपर तँ अहाँ ठीक छी मुदा किछु भऽ जायत तँ हमर गप के सुनत? लोक तँ कहत जे सभटा बुझितो-गमितो हम अहाँकेँ मरऽ देलौं।“

“बड्ड नीक बिजली-मिस्त्री अछि ई सर, मुदा जी.के. कमजोर छै। इण्टरव्यूमे एक ठाम पुछि देलकै जे मेरठसँ दिल्ली कत्ते कालमे बिजली एत्तै। ई सोचमे पड़ि गेल, कहलकै जे बसकेँ २-३ घण्टा लागै छै तँ बिजलीकेँ किछु कम राखि लिअ, माने एक-डेढ़ घण्टामे आबि जेत्तै। कहियो कोनो दुर्घटना नै भेल छै एकरासँ सर मिस्त्रीक काजमे, मुदा एकरा एना वैज्ञानिक आधारपर काज करैत देखि आ जी.के. कमजोर रहलासँ लोक घबड़ा जाइए। “

स्निफर डॉग आख्यान

"सर भऽ सकैए ऐमे ड्रग्स होइ, स्निफर डॉगकेँ बजबै छी।"

हवलदार स्निफर डॉगकेँ लऽ कऽ आयल। ओकरा सूंघि कऽ ड्रग्स पकड़बा लेल प्रशिक्षित कएल गेल छै।

अबिते देरी बैगेजकेँ ओ सूंघऽ लागल आ लागल जेना बैगकेँ ओ फाड़ि देत। लागल पैघ ड्रग्सक खेपक तस्करी पकड़ायल अछि। जाबे कुकुड़केँ रोकी ताबे ओ बैग फाड़ि देलक।

आ ई की, ड्रग्स केर बदला ओ बैग फाड़ि कऽ मौस निकालि लेलक आ खाय लागल।

"सभ बेइमान भऽ गेल छै। कुकुड़ लेल जे मौसक पाइ अबै छै सेहो खा जाइ छै, देखियौ बेचारा कत्ते भूखल छल।"-हवलदार बजैत अछि।

यातायात निअम

भाग-०

पटनामे रही, शिक्षक कहि रहल छला जे दिल्लीमे एकटा कनाट प्लेस छै, ओतऽ तेहन आउटर सर्किल पर रेडलाइटक सिस्टम छै जे जँ अहाँ चालीस किलोमीटर प्रतिघण्टाक गतिसँ गाड़ी चलाबी तँ कखनो रेडलाइट भेटबे नै करत, ग्रीने-ग्रीन भेटत। आ ईहो जे लुटयन्स जोनमे तेहन गोलचक्करक सिस्टम छै जे कहियो रेडलाइट लगेबाक खगते नै भेलै। दिल्ली ट्रांसफर भेलाक बाद हम प्रसन्न रही जे हम तँ चालीसे किलोमीटर प्रति घण्टाक गतिसँ चलबै छी से हमरा लेल तँ दिल्ली स्वर्गे भेल। ओ काल रहै जखन झारखण्ड नै बनल रहै आ जमशेदपुरमे सभ गोलम्बरपर रेडलाइट रहै आ पटनामे रेडलाइट रहै खाली डाकबङला चौराहापर।
दिल्ली एलौं तँ कनी दिनमे कनाट प्लेसक मिडिल सर्किल आ आस्ते-आस्ते बेरा-बेरी लुटयन्स जोनक सभ गोलम्बरपर रेडलाइट लागि गेलै, कनाट प्लेसक इनर सर्किल यातायात लेल यातायात पुलिस बन्न कऽ देलकै, आब ओतऽ पार्किङ होइ छै। मुदा आउटर सर्किलमे साइंसक हिसाबे पहिने शिक्षक, कखनो रेडलाइट भेटबे नै करत, केर स्पीड घटा कऽ तीस, फेर बीस फेर दस किलोमीटर प्रति घण्टा केलन्हि, मुदा आब ओ प्रश्ने हटा देल गेल छै। हम अखनो चालीस किलोमीटर प्रतिघण्टाक गतिसँ गाड़ी चलबै छी।

भाग-१

२००३ मे दिल्ली आयले रही। पता चलल जे 'रूट' लागल छै, माने कोनो वी.आइ.पी. मूवमेण्ट छै निर्धारित मार्गपर। से रणजीतक मोटरसाइकिलसँ नोएडा जेबाक नियार भेल। ओ एकटा हेलमेट हमरो देलन्हि।
“ई पटना नै छिऐ, एतऽ पाछूमे बैसिनिहारकेँ सेहो हेलमेट लगबऽ पड़ै छै।“
आधा घण्टाक बाद ओ मोटरसाइकिल रोकि देलन्हि। अपन हेलमेट

उतारि हैण्डिलपर लटका लेलन्हि, हमरोसँ हेलमेट लऽ कऽ ओकरा कैरियरमे लॉक कऽ देलन्हि।
"आब पुलिसक जाँच नै हेतै की?"
"कक्का, आब दिल्ली खतम भऽ गेलै, यू. पी. आबि गेलै। आब एकर जरूरति नै छै। "

भाग-२

२०२२, कोनो सर्चमे दिल्लीसँ नोएडा गेलौं, अपन चरचकियासँ। ओतुक्का एकटा लोकल इंसपेक्टरकेँ नियमानुसार सर्च लेल संग केलौं। चौराहापर मुड़बाक छल, साइड इण्डीकेटरक लाइट जरेलिऐ आ गाड़ी घुमबऽ लगलौं। एकटा साइकिलबला टकराइत-टकराइत बचल आ गुम्हरैत आगाँ बढ़ि गेल।
"हाँ हाँ सर। ई दिल्ली नै छिऐ, एतऽ इण्डीकेटर जरेला सँ कियो साइड नै देत। पहिने गाड़ीक शीसा खोलू, फेर हाथ दियौ आ हॉर्न बजबैत गाड़ी घुमाउ!"

भाग-३

साउथ एक्समे पार्किंग फुल रहै, एक मिनटक काज रहय से हम कार सड़केपर लगा कऽ, फुर्तीसँ काज सम्पन्न कऽ घुरलौं तावते गाड़ी पार। सोझाँमे एकटा हवलदारकेँ देखलिऐ तँ पुछलिऐ जे हमर गाड़ी की भेल? ओकर उत्तर सुनू-
"जँ चोर लऽ गेल हएत तखन तँ अहाँक गाड़ी कत्तऽ गेल तकर तँ पता नै, मुदा जँ यातायात पुलिस लऽ गेल हएत 'टो' कऽ कय, गलत पार्किंगक दुआरे, तँ डिफेन्स कॉलोनी थाना चलि जाउ। "
रिक्शा पकड़ि कऽ डिफेन्स कॉलोनी थाना गेलौं, ओतऽ हमर कार लागल छल, माने चोर नै लऽ गेल छल, से जानमे जान ऐल।

जातिवादी मराठी

“ऐँ यौ ई की देखैत छी, ऑफिसमे अफसर सेहो मिथिलाक आ बिहारक आ रिक्शाबला, खेनाइ बनबैबला सेहो सभ मिथिलाक आ बिहारक । से कोन गप भेल।”- पुणे मे सिंहजी कैँ एक गोट मराठी सज्जन पुछलखिन्ह। बात सेहो ठीक रहै, मुदा बाहरी लोककैँ बुझबामे नै आबै।

सिंह साहेब भारतीय पुलिस सेवा मे रहथि आ हुनकर सहोदर भिखना-पहाड़ीमे प्रिंटिंग प्रेसमे ’क’ ’ट’ सभ जोड़ै छलन्हि, से हुनका कनेको अनसोहाँत नै लागलन्हि।

रिक्शाबला तँ दरभंगाक हुअय आकि कटिहारक, खेनाइ बनबैबला झौआ रहबे टा ने करैत अछि।

ई मराठी सभकैँ पता नै किए अनसोहाँत लगै छै।

बड्ड जातिवादी सभ अछि ई मराठी सभ।

थेथर मनुक्ख

दू दिनसँ पड़बा असगरे बैसल रहय । ओकर कनियाँ उढ़रि कऽ कत्तौ अनतऽ चलि गैलै। बच्चा सभ कतेको बेर ओकर खोपड़ीमे पानि आ दाना दऽ ऐल रहै। मुदा आइ भोरे ओ खोपड़ी उजारि चलि गेल।

“किए यै नानी । ओहो किए नै दोसर बियाह कऽ लेलक। बेशी प्रेम करैत रहय कनियाँसँ? “

“अहाँ नेना छी । ई कोनो थेथर मनुक्ख थोड़े छी जे कनियाँ मरय, माय-बाप मरय, बेटा-पुतोहु मरय, सर-समाज मरय, चारि दिन मुँह लटकाओत आ पाँचम दिनसँ फेर थेथर भऽ जायत। “

बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

“मरि गेलि बेचारी। “गौआँ सभ फलना बाबूक तेसर कनिआँक मुइलापर कहलन्हि।
“फलना बाबू तेसर कनियाँक गरदनि काटि लेलन्हि।”
“से ठीके कहै छी। पहिल कनियाँमे बच्चा नै भेलै तँ दोसर बियाह केलक। मुदा जखन दोसरोमे बच्चा नै भेलै तँ बुझबाक चाही छलै ने। “
“हँ आ उनटे तेसर कनियाँकेँ कहैत अछि जे भातिज सभकेँ नै मानै छिऐ तेँ भगवान बच्चा नै देलन्हि। बुझू?”
“मुदा चिलनो बाबू तँ दोसर बियाह केने छथि। आ फुचुक बाबू सेहो।”
“चिलना बाबूकेँ तँ दोसर बियाहमे बच्चा भेलन्हि ने, आ फुचुक बाबू केँ दोसरोमे बच्चा नै भेलन्हि तँ ओ बुझि गेलखिन्ह ने आ तेसर बियाह नै ने केलन्हि। मुदा ई फलना बाबू, हिजड़ा सार। “

स्त्री-बेटी

“बाबूक संगे खायब।”- बुचिया बाजलि ।
“हे आब तूँ छोट नै छेँ, एम्हर बैस।”- माय कहलन्हि ।
फेर भाय सभ खेनाइ खेलक आ आब बुचिया आ बुचिया मायक बेर एलै। तरकारी सठि जकाँ गेल रहै, दूध तँ बाबू आ भायकेँ मात्र भेटलै ।
माय बुचियाकेँ सठल जकाँ तरकारी लोहियामे सँ छोलनीसँ जेना-तेना निकालि कऽ देलन्हि आ अपने भात आ नून–तेल लऽ कऽ बैसली। दूधक बर्तनसँ दाढ़ी खखोड़ि कऽ बादमे बुचिया खेलक।
ई खिस्सा सुनबैत मनोहर बजला जे हमरा सभ आब ई कऽ सकै छी की? पहिने खेनाइ-पिनाइसँ लऽ कऽ पढ़नाइ-लिखनाइ धरि बेटीक संग अन्याय होइत रहय। अपाला-गार्गी-मैत्रेयीक समय तँ आब जा कऽ फेरसँ आयल अछि ।

बिआह आ गोरलगाइ

जमाय पएर छूबि कऽ प्रणाम केलन्हि तँ ससुर सय टाकाक नोट निकालि एक टाकाक सिक्का लेल कनियाँकेँ सोर केलन्हि।
खूब खर्च-बर्च कयने छला बेटीक बियाहमे, पाइ अलग गनने छला आ नग्रक चारि कठ्टा जमीन सेहो बेटीक नामे लिखि देने छला।
“नै बाबूजी, ई गोर-लगाइक कोन जरूरी छै?”
तावत कनियाँ आबि गेल रहथिन्ह, एक टकाक सिक्का लऽ कऽ।
एक सय एक टाका जमायक हाथमे रखैत ससुर महराज बजला-
“राखू-राखू। ई तँ पहिनहियो ने सोचितिऐ। “

प्रतिभा

मसूरीमे आइ.ए.एस. आ आइ. पी. एस. प्रोबेशनर सभक दारु पार्टी चलि रहल छल ।

“हम सभ एतेक तेज छी एक सय प्रश्नक सेट बना कऽ तैयारी केलौं तखन जा कऽ सफल भेलौं । के अछि हमरासँ बेशी तेज?”

“रौ दिनेसबा। सतमामे तूँ पास नै भेलँह, अठमामे सेहो एक बेरे पास नै भेलँह । दसमामे द्वितीय श्रेणी भेलापर तोरा स्कूलसँ निकालि देलकौ। प्रश्नक पैटर्नक हम आ तूँ प्रैक्टिस केलौं आ सफल भेलौं तँ ऐमे तेजी केर कोन बात ऐल । “

जाति-पाति

हैदराबाद पुलिस एकेडमीमे दारूक पार्टी चलि रहल छल ।
“क्यो किछु नै बाजत, बस हमही टा बाजब।”
छाती पिटैत- “राजपूतक छाती छी ई, क्यो किछु नै बाज।“
“भाइ यएह तँ अंतर छै, दुनू गोटे आइ.पी.एस. छी, दुनू गोटे पीने छी। मुदा की हम ई कहि सकैत छी छाती पीटि कऽ- जे हम डोम छी, क्यो किछु नै बाज! ”

अनुकम्पाक नोकरी

“बड्ड दर्द भऽ रहल अछि बाबू, आब बर्दास्त नै भऽ रहल अछि।”

पता नै कोन घाव रहै । पुकार कुहरि रहल छथि । पिता स्वतंत्रता सेनानी रहथिन्ह, जखन डाक्टर आ कम्पाउन्डर मना कऽ देलक घाव छुबएसँ तँ अपने हाथे सेवा कऽ रहल छथि । उजरा पाउडरकेँ नारिकेरक तेलमे मिला कऽ घावक खपलौइया हटा कऽ ओइमे लगाबथि। पीजकेँ पोछथि। बाप आ छोट भाय दुनू सेवामे लागल रहथि ।

परूकाँ प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेल छलखिन्ह पैघ बेटा, सत्यनारायण भगवानक पूजा भेल रहय।

बूढ़ बापक पैघ आश रहथि बड़का बेटा। छोटका बेटा कोनो जोकरक नै, अनेरे बापकेँ हुथैत छल जे एकटा चिट्ठी दऽ दितथिन्ह तँ खादी भण्डारमे नोकरी भऽ जइतै। घरमे कलह..

मुदा बड़का बेटाक रोग एहन रहै जे एक दिन ओ ओकर प्राण लऽ लेलकै। अंग्रेजसँ लड़ैत खुशी-खुशी जेल गेल रहथि मुदा तखन युवा रहथि। बुढ़ारीमे ई शोक हुनका तोड़ि देलकन्हि । गुमशुम आ अपनेमे मगन रहय लगला। स्वतत्रता सेनानी पेंशनसँ कहुना घर चलाबथि।

छोटका बेटाक कलह से अलगे।

एक दिन छोटका बेटाकेँ बड़का बेटाक सर्टिफिकेट दऽ देलखिन्ह।

छोटका बेटा पैघ भायक सटिर्फिकेट लऽ कलकत्ता चल गेल आ ओइ सटिर्फिकेटक आधारपर ओकरा एकटा प्राइवेट कम्पनीमे नीक नोकरी भेटि गेलै। माने मात्र नाम बदलि गेलै।

लोककेँ बाप मरलापर नोकरी भेटै छै, ओकरा भाय मरलापर भेटलै।

पैरवी-पैगाम आ हाकिम

नबे-नब एस.पी. साहेब आयल रहथि नग्रमे, असली इमानदार। तेहेन नै जे अपन रेट बढ़बैले कनी दिन इमानदार रहैए।
हुनकर कुटुम भेँट करैले गेलखिन्ह। एस.पी. साहेबक बड्ड धाही।
कुटुमक दू टा पुतोहु रहथिन्ह, जँ एस.पी. साहेब प्रिन्सिपलकेँ एक बेर कहि दितथिन्ह तँ बी.एड. मे दुनूक नामांकन कोनो ने कोनो ब्योँते भैये टा जइतै।
मुदा एस. पी. साहेबकेँ बुझैमे एबे नै केलन्हि जे पुलिसक कहलासँ शिक्षा विभागबला काज किए कऽ देतै, आ ओ दोसर विभागबलाकेँ अनेरे किए फोन लगा देथिन्ह। सोझ लोक, दीन-दुनियाँसँ कोनो सरोकारे नै।
मुदा कुटुम जिद्द पकड़ि लेलखिन्ह, कुटुमो लगक, की करथि। मुदा शिक्षा विभाग बला हुनकर ओइठाम एतनि किए, कोन काजे? आ नै एतन्हि तँ ओ तँ ओकरा फोन नै करथिन्ह।
“तखन ई करू जे बी.एड. ट्रेनिंग कॉलेजक गेटपर दूटा बम फोड़ि दियौ, तखन ओकर प्रिन्सिपल हमरा लग एबे करत आ हम ओकरा दू टा एडमिशनले कहि देबै। “
कुटुम हतोत्साहित भऽ बिदा भऽ गेला, फेर जिद नै केलन्हि।

नूतन मीडिआ

नगरमे डकैतीक घटना भेल ।

नूतन मीडिया अपन-अपन चैनलमे- सर्वप्रथम ओकरे चैनलपर एकर सूचना देल जा रहल अछि- ई ब्यौरा दइए, दू-दिनमे एकोटा गिरफतारी नै हेबाक आ तइ दुआरे पुलिसक उघार होइत अक्षमताक चर्चाक सगरे फुटेज।

पुलिस हेडक्वार्टरमे बैठकी भेल। सभ टी.वी. चैनल कहि रहल छल जे चारि गोटे मिलि कऽ डकैती केलक मुदा अखन धरि एको गोटेक गिरफ्तारी नै भेल अछि।

एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट बजाओल गेल। जेना सभ बेर होइत रहय ऐ बेर सेहो ओ एक गोटेँ पकड़ि कऽ अनलक। एनकाउन्टर स्पेशलिस्टक डरे चारिये डांग पड़लाक बाद ओ अपन डकैत हेबाक गप स्वीकार कऽ लेलक। फेर एनकाउन्टर स्पेशलिस्टक संग ऑफिसर लोकनि कैमराक सोझाँ फोटो खिचबेलन्हि।

चारि घण्टा आर बीतल। ओइ कथित डकैतकेँ पीटल जाइत रहल।

हम साँझमे पहुँचलौ, पुछलिऐ- “बता अपन तीन संगीक नाम जकरा संगे डकैती केने छलेँ।“

“सरकार चारिये डांगमे अपन डकैत हेबाक गप स्वीकार कऽ लेलौं, हम डकैत रहितौं तँ की ई करितौं? मुदा आर तीनटा संगीक नाम कतऽ सँ आनू आ ककरा फुसियाहींकेँ फँसाबियौ।“

मिथिलाक उद्योग

गाममे चौधरीजीक बड्ड रूतबा, डरे सभ सर्द रहैत छल । ककर दीन अछि जे हुनकर गम्हरायल धान काटि लेत आकि ... ।
ओ एकटा बस खोललन्हि-
“दरभंगासँ गाम धरि चलत । सेकेंड हैंडमे भेटल अछि । पुरनका मालिकक लाइसेंस काज देत। संगमे बसक पुरनका मालिक तीन मासक लेल अपन ड्राइवर आ खलासी सेहो देलक अछि, तकर बाद अपन ताकि लेब।”
चौधरीजी मन्दिरपर बसक पूजा करैत काल गौआँ सभसँ बजला।
“सुनैत छिऐ बस-स्टैण्डमे बड़ बदमस्ती करै जाइ छै”- एकटा गौआँ बाजल।
“धुर, चौधरीजीक बस आ आदमीकेँ के छुबाक साहस करत?”- दोसर गोटे प्रसाद लैत बाजल।

बसक रूट आकि रस्ता यात्रीगण लेल सुभितगर रहै से ओइ गाड़ीमे पैसेन्जर भरि जाइ छलै। दोसर बसबला सभ दबंग सभ। शाहीजी आ मिश्राजीक स्टाफ सभ बड़ सञ्जत! से चौधरीजीक स्टाफकेँ गरगोटिया दऽ बस स्टैण्ड सँ बाहर निकालि देलकन्हि।

हड़ाही पोखरिक महारपर सँ चौधरीजीक बस खुजऽ लागल तँ ओत्तौ यात्री पहुँचऽ लगला।

आब तँ बस-स्टैण्डक दादा सभकेँ बड्ड तामस उठलै।
दुनु ड्राइवर आ खलासीकेँ पुष्ट पीटल गेल आ ईहो कहल गेल जे फेर ऐ रूटपर चलत तँ बसक एक्सीडेन्ट करबा देल जेतै। शाही आ मिश्रा जीक तँ पचासो टा गाड़ी छन्हि एकटा थानामे एक्सीडेन्टक बाद पड़ले रहत तँ की, मुदा चौधरीजी क तँ एक्केटा छन्हि?

गामक रोआब-दाब बला चौधरीजी बस-स्टेण्डक दादा सभक सोझाँ जेना

बकड़ी बनि गेला।

गाममे मन्दिरपर गाड़ी ठाढ़ छन्हि, ओइ पर कदीमाक लत्ती चढ़ि गेल अछि, पैघ-पैघ कदीमासँ बस झपा गेल अछि। खूब फड़ल छै।

जे गोटे बाजल छल- "धुर, चौधरीजीक बस आ आदमीकेँ के छुबाक साहस करत?" वएह गोटे आब बाजि रहल अछि- "चौधरीजीक बसक पाइ तँ ऐ बेर कदीमा बेचिये कऽ उप्पर भऽ जेतन्हि। "

जे गोटे बाजल छल- "सुनैत छिऐ बस-स्टैण्डमे बड़ बदमस्ती करै जाइ छै" ओ गोटे चिन्तित भऽ बजै छथि- "दरभंगाक इन्डस्ट्रीयल स्टेटमे सेहो फैक्ट्री सभ अहिना बन्द अछि आ ओकर देबाल सभपर अहिना तर-तीमनक लत्ती सभ भरल छै। "

बाढ़ि, भूख आ प्रवास

१

भूख (१)

’हे हुनका दियन्हु। ठीक छै, कनी हमरो दऽ दिअ।’- पप्पू भाइ बरियातीमे हमरा संगे बैसल छथि। हाथ धो कऽ गम्भीर स्वरमे हमरा कहै छथि- ’आइ दिनसँ हम कोनो बरियाती नै जायब।’
’किए पप्पू भाइ?’ – हम अचम्भित जे कोनो त्रुटि तँ कन्यागतसँ नै भऽ गेलै जे हम नै देखि सकलिऐ।
’की करब जा कऽ, खएले नै होइए एक्को रत्ती!’- पप्पू भाइक गम्भीरतामे कोनो कमी नै एलन्हि आ हम पप्पू भाइक मौसक खा कऽ ढेरिआयल हड्डीक सभसँ ऊँच ढेरी देखि कऽ अपन हँसी केना रोकलौं से की कहू?
२

भूख (२)

पप्पू भाइक छोटकी बहीनक सासुरमे महीस बिआयल रहै, खूब दूध लागि रहल रहै। पप्पू भाइ, टोनल कुसियार आ खोंटल खेसारीक साग सनेस लऽ कऽ बहीनक सासुर बिदा भेला, जे खूब दूधक भोग लगायब। बहीन हुनका देखिये कऽ आह्लादित भऽ गेली। खेनाइ बनबैत गप खतम नै भेलन्हि। ठाँव-पीढ़ी भेल, पप्पू भाइ खेनाइ शुरू केलन्हि। माय केहन, भौजी केहन, टोलक लोक केहन, करिया कुकुड़क बच्चा कतेक टा भेलै, भालसरिक गाछ बाढ़िमे सुखा केना गेलै, केहेन धोधरि छलै ओइमे। खेनाइ खतम होइपर रहै, सोझाँ चूल्हिपर दूध औंटाइ छलै, बहीन सोहमे दूध देनाइ बिसरि गेली। पप्पू भाइ दूधे पीबैले तँ आयल छला।
“बुझलहीं दाइ, एतऽ जे आबैत रही तँ रस्तामे एकटा बड़का साँप भेटल, कत्ते पैघ से कहियौ? “
“कत्ते पैघ भैय्या?”
“हइय्या एत्तऽ सँ लऽ कऽ, होइय्या ओइ चूल्हि तक जइपर दूध औंटा रहल छौ, तत्तेकटा। “
“भैय्या, सोहमे दूध देनाइये बिसरिये गेलौं। “
आ बहीन डब्बुकसँ बाटीमे दूध ढारय लगली।

३

बाढ़ि

ऐ बेरक बाढ़ि पछिला बेर सन नै। सभटा सुड्डाह कऽ देलक आगियोसँ जल्दी। खेत पथारमे रेत आ बालुमे खाली अल्हुआक खेती। दुनू साँझ पप्पू भाइ अल्हुआ खाइत अकच्छ भऽ गेल छथि। वैदिक थिकाह, मुदा ऐ कोसिकन्हामे ...

मुदा देखू भाग्य!

हरिद्वार सँ भातिजक चिठ्टी अबैए- "आबि जाउ कक्का, एतऽ वैदिक लोकनिक बड्ड पूछि अछि। भरि दिन हस्त-संचालन आ उदात्त-अनुदात्त आ स्वरित स्वरक मेलसँ वेदक पाठ करू आ साँझमे नीक–निकुइत मिष्टान्न, खीर-पूरी खाउ।"

४

प्रवासमे वज्रपात

पप्पू भाइ वैदिक ट्रेन धेलन्हि आ पहुँचि गेला हरिद्वार। ओतऽ पहुँचि स्नान-ध्यान कऽ भरि दिन कंठ फाड़ि आ हाथ घुमाय वैदिक मंत्रक पाठ केलन्हि । साँझमे मनसूबा बान्हि खेनाइपर बैसला जे आब बड्ड दिनुका बाद खीर-पूड़ी खेबाक अवसर भेटतन्हि।

मुदा एम्हर हिनका हरिद्वार पहुँचबासँ पहिनहिये दोसर पंडित लोकनिमे विचार-विमर्श भेल। ओ लोकनि खीर-पूड़ी खाइत-खाइत अकच्छ भऽ गेल छला। से सर्वसम्मतिसँ विचार कएल गेल जे आइसँ किछु दिनक लेल खेनाइक मेन्यू बदलल जाय। विचार भेल जे आइसँ वेदपाठक बाद अल्हुआ आ दूध किछु दिन धरि देल जाय।

वैदिक जी खाइ लेल मनसूबा बन्हने बैसल छला जे आइ जे खेनाइ एतै तँ ओइ खेनाइकेँ ओ हिस्सक छोड़ा देता।

मुदा तखने वज्रपात भेल, सोझाँ अल्हुआ महाराज विद्यमान।

वैदिक जी हाथ जोड़ैत अल्हुआ महराजसँ पुछलथिन्ह- "सरकार हम तँ ट्रेनसँ ऐल छी मुदा अहाँ कोन सवारीसँ एलौं जे हमरासँ पहिनहियेसँ विराजमान छी?"

नव-सामन्त

संगीक छोट भाय गाममे रहथि। गाममे मारि-पीट करै छला से हुनका दिल्ली बजाओल गेल। एत्तौ गप-गप पर सभसँ झगड़ा कएल करथि। हमरा सोझेँमे एक गोटेकेँ धमकी दऽ रहल छला- "दस मिनटमे पहुँचि जाह नै तँ गोली मारि देबह। बीस किलोमीटर दूरमे छह आकि चालीस किलोमीटर दूर हमरा ओइसँ कोनो मतलब नै अछि।"

हम हुनका विषयमे सुनिते रही मुदा आइ देखलौं।

हमर संगी बुझबऽ लगलखिन्ह- "ठीक छै, हम नै कहैत छी जे नै मारियौ। मुदा एकटा गप कहू जे दिल्लीमे बीस किलोमीटर दूरसँ आबैमे तीन मिनट प्रति किलोमीटरक हिसाबसँ साठि मिनट लगतै से ओ दस मिनटमे कोना आओत?"

छोट भाय भीतर चलि गेला।

हम संगीकेँ पुछलियन्हि- "विद्यार्थी तँ कतौ गुरुग्राममे ने नोकरी करैत रहथि?"

"हँ, एक ठाम दस हजारक नोकरी धरेने रहियन्हि मुदा छोड़ि देलन्हि। कहलन्हि जे हमर लेबलक ई नोकरी नै अछि। आब हिनकर लेबल कहै छी, कतेक प्रयास केलौं जे मैट्रिक पास कऽ जाथि मुदा मध्यमोसँ पास नै कऽ सकला। "

चारिम स्थान

पहलमान जीक बड्ड धाही। कियो अहाँक मकान खाली नै कऽ रहल हुअय तँ हुनका कहियन्हु, अपन अखराहाक दूटा पहलमानकेँ संग कऽ देता। ओ दुनू अखराहाक पहलमान बदमाशी आकि कठोर वचन, से सभ किछु नै करै छला मुदा हुनकर सभक देहे दशा देखि कऽ मकान कब्जा केनिहारक होश उड़ि जाइ छलै आ काज भऽ जाइ छलै।

पहलमान सभ मजगूत तँ होइत अछि मुदा दौगै-धूपैमे ओहेन फुर्तिगर नै होइत अछि। मुदा पहलमानजी से मानैले तैयार नै आ तेँ हाफ मैराथनमे ओ अपन नाम दऽ देलन्हि, बुझू बीस किलोमीटरक रेस रहै जे नग्रक स्टेडियममे खतम होइतै। खूब तैयारी केलन्हि आ दौड़मे भाग लेलथि। पहिल तीन स्थानकेँ स्वर्ण, रजत आ कांस्य पदक भेटितै।
छोटका रेसमे खिलाड़ीकेँ अपन प्रतिद्वन्दी देखाइत रहै छै मुदा हाफ मैराथनमे के कतऽ गेलै पते नै। पहलमान जी घामे पसीने असगरे स्टेडियम दिस दौगल जाइत रहथि, ने आगूमे कियो देखाइत छलन्हि ने पाछूमे। तखने मोपेडपर जाइत दू गोटेमे एक गोटे पहलमान जी केँ ई कहैत मोपेड आगाँ बढ़ा लेलक-
“पहलमान जी, घीच दियौ जोर लगा कऽ, अहाँ अखन चारिम स्थानपर छी। “
पहलमान जी केँ भऽ रहल छलन्हि जे ओ बहुत पाछाँ छथि, तेँ आगू-पाछू कियो नै देखा पड़ि रहल छन्हि, से अरामे-अरामसँ दौगि रहल रहथि। मुदा आब जखन ओ चारिम स्थानपर छथि तखन तँ पदक भेटि सकै छन्हि। पहलमान जी जान लगा देलन्हि, कनी आगाँ जा कऽ एक गोटे धावककेँ देखलखिन्ह तँ आर जोर लगा कऽ ओकरा पार केलन्हि। चलू कांस्य पदक तँ पक्का भेल। कने आर जोर लगेलन्हि तँ स्टेडियमक गेट लग एकटा आर धावकेँ पार कऽ लेलन्हि। फेर स्टेडियममे प्रवेश केलन्हि आ फिनिश लाइन पार करिते अरड़ा कऽ खसि पड़ला। चलू रजत पदक तँ भेटल।

मुदा ई की, स्टेडियममे विजेताक घोषणा हेमऽ लागल, पहिल, दोसर,

तेसर... आहि रे ब्बा... पहलमान जी आठम स्थानपर।
देह टूटि गेल छलन्हि, बकार सेहो नै निकलन्हि। कहुना दर्शक दीर्घा दिश गेला, ओइ दुनू छौड़ाकेँ तकैत, फेर एक गोटाकेँ पुछलन्हि-
“ओ दुनू मोपेडबला कतऽ गेल?”

भोट

गढ़ नारिकेल पंचायतमे मुखियाक चुनाव छिऐ। ऐ बेर मुखियापति नै ठाढ़ छै, महिलाबला आरक्षण पछिला बेर रहै। भने नै ठाढ़ छै, सभ तमसायले छलै, हारबे करितै। मुखिया गढ़ नारिकेल पंचायतमे गढ़ अरड़नेबा सेहो अबैत अछि। दुनू महिसबाड़ ब्राह्मणक गाम। गढ़ नारिकेल विशाल गाम आ गढ़ अरड़नेबा छोट गाम, बुझू गढ़ नारिकेलक एकटा टोलक बराबर। तइ हिसाबे मुखिया तँ गढ़ नारिकेलेक हेबाक चाही। दस-दस लाख खर्च करैए लोक मुखिया चुनावमे तँ बाहरियो आमदनी तही हिसाबे हेतै ने यौ। कतऽ छी, दस लाखक जमाना गेलै, पचास-पचास लाख लोक खर्च करै गेलै हेन पछिला बेर आ तखनो हारि गेलै, कमाइ पाँच सालमे नै किछु तँ दू करोड़।

आ से गढ़ नारिकेलसँ सात टा उमेदवार ठाढ़ भऽ गेलै। आ गढ़ अरड़नेबा एक्केटा उमेदवार ठाढ़ केलकै। हे एना आपसमे झगड़ा करै जेमे तँ ओइ मुँहदुबरा गामक मुखिया बनि जेतौ। बनऽ दहीं, मुहदुबरा गामक बनतै सएह नीक, गपो सुनत, अपन गामक तँ! हे बादमे झगड़ा फसाद निपटाबैत रहिंहें, गामक इज्जतिक सवाल छौ। हे तइ हिसाबे तँ सभसँ बेशी जनसंख्या तँ पण्डीजी घरेनक छै, आपसमे ओकरा सभमे मिलानो छै, तेँ की जे पण्डीजी घरेन कहियो बाजै नै छल तकरा बनऽ देबै मुखिया? हे तँ की एकहरेकेँ बनऽ देबै? बाबू ककरोपर बिसवास कऽ लिअ मुदा एकहरेपर नै। आ सरिसबे खांगुर? आ ओ फूल किए अनेरे ठाढ़ भऽ गेल छै हौ, टोलबैयो भोट नै देतै, आ जखन हारि जेतै तँ फेर टोलबैय्याकेँ पाँच बर्ख धरि गरियबैत रहतै।

हे से सभ नै हएत। आपसमे एकटा भोट गढ़ नारिकेलक भऽ जाय, ऐ सातो उमेदवारमे जकरा सभसँ बेशी भोट भेटतै तकरे पूरा गाम भोट देतै। बक्शा बैलेट सभ आबि गेल, सत्यनारायण मास्टरसाहैब, कोनो छअ-पाँच नै बुझै छथिन्ह, नीक लोक, हुनके निर्देशनमे ई आपसी चुनाव आकि सर्वे हएत। आ एम्हर सरिसवे खांगुरक इन्द्रकान्त मास्टर साहैब चिन्तित, ऐ गढ़ नारिकेलक आन्तरिक एलेक्शनमे हुनकर हारि निश्चिते छन्हि। से ओ पहुँचि गेला सत्यनारायण मास्टर साहैब लग।

-मास्टर साहैब, अहाँ सरकारी स्कूलसँ रिटायर भेल छी प्राइवेटसँ नै। अहाँक पेंशनो रुकि सकैए।
-से किए यौ?
-ई जे गढ़ नारिकेलक आन्तरिक एलेक्शन अहाँ करबा रहल छिऐ से अहाकेँ बुझल अछि जे ई चुनाव आचार संहिताक उल्लंघन छिऐ?
सत्यनारायण मास्टर साहेब डेरा गेला, बाबू हम ऐ सभसँ दूर छी।
से गढ़ नारिकेलक आन्तरिक एलेक्शन नै भेल।
काल्हि चुनाव छिऐ, गढ़ नारिकेल पंचायतक मुखिया एलेक्शन। गढ़ नारिकेलसँ सात टा उमेदवार छथि आ गढ़ अरड़नेबासँ एकटा। बुझाइए ऐबेर गढ़ अरड़नेबेक मुखिया बनत। देखिऐ की होइ छै।

मसुआइ

डोकाक तीमन, कांकौड़क सन्ना, पड़बाक आ खरहाक माउस खेना बड्ड दिन भऽ गेल। गामसँ दिल्ली एलाक बाद तँ नहिये। रणजीत कहलन्हि जे दिल्लीक लोक सभ बड्ड नीक होइ छै, नै यौ कक्का, पड़बा सभकेँ दाना खुआबै छै, अपना सभ दिस तँ सभटा केँ मारि कऽ खा जइतै।

हमर संगीक बेटा प्ले इस्कूलमे पढ़ै छलै, ओतऽ दू टा खरहा छलै। ओ मैमकेँ कहलकै जे ई दुनू खरहा हमरा दऽ दिअ। मैमकेँ खुशी भेलै जे बच्चा खरहाकेँ पोसऽ चाहैए, तैयो पुछलकै- की करब खरहा लऽ कऽ? संगीक बेटा कहलकै- मसुआइ बना कऽ खायब।

मैम चिन्तित भऽ गेली, समय लऽ कऽ संगीसँ भेँट केलन्हि। बच्चाक गलत लालन-पालनक विषयमे ओ चिन्तित छली, स्कूलक दोसर बच्चाक सुरक्षाले चिन्तित सेहो छली।
संगी बड्ड मुश्किलसँ हुनका बुझेलखिन्ह जे हमरा सभमे खरहाक माउस खायल जाइ छै, दोसर बच्चाकेँ हुनकर बच्चासँ कोनो खतरा नै छै। संस्कृतिक अन्तर बुझेलखिन्ह, मुदा मैम आर चिन्तित भऽ गेली।

साइबेरिया कैम्प

सरदारजी अफगानिस्तानसँ विस्थापित भऽ आइ काल्हि जर्मनीक नागरिक छथि, साइबेरियाक नोवेसींबिर्स्कमे दोकान छन्हि आ दिल्ली व्यापारक क्रममे आयल छथि।

“ओत्ते दूर दोकान खोलने छी?”

“हम नै खोलब तँ कियो आन खोलि लेत!”

“ई औंठा किए कटल अछि, गुरुजीकेँ दऽ देलियन्हि की?”

“नैं, नैं। साइबेरियामे स्टालिनक कैम्पे टा नै छै, व्यापारो होइ छै। ओतऽ दोकानदार सभकेँ बेशी तंगो नै करै छै, वरन् स्वागते करै छै। आ ओतऽ आंगुर कटल बहुत रास लोक भेट जेता। माइनस पन्द्रह-बीस डिग्री तापमान रहै छै। बिनु दस्तानाक तँ अहाँ चलियो नै सकै छी। मुदा राति कऽ बीयर बारमे पीलाक बाद शरीरमे गर्मी आबि जाइ छै आ बाहर निकललापर मोन होइ छै जे दस्ताना निकालि दी, आ फेर अहाँकेँ पतो नै चलत, हाथ ठरि जायत, हिल-डोल बन्द। नशा टुटलाक बाद डाक्टर लग जाउ, जँ गैंगरीन भऽ गेल तँ एकाधटा आंगुर काटैए पड़त।“

मीत भाइ शृंखला

१

चन्सगर

मीत भाइ चन्सगर छथि। मीत भाइक बाबू घटककेँ कहि रहल छला। घटक नेबोक मांग केलखिन्ह तँ ओ बजला- कागजी नेबो तँ घटक सभकेँ शरबत पियाबैत-पियाबैत खतम भऽ गेल देखै छी गाछमे जमीरी नेबो सेहो बाँचल अछि आकि नै। फेर जमीरी नेबो देलन्हि, आ कने काल तरुआ तरकारीक बाद मधुर उठेलन्हि। आ बजला- ’हे एकटा मधुर लियौ ने’। घटक मधुरक आग्रह रोकि नै सकला आ कहलन्हि- दियौ। यौ लाइन लागि जायत लड़की बलाक। धरफराउ धरि जुनि। ई नै तँ आने।
कने कालमे घटकराज द्वारा आनल एकटा घरदेखिया एला। बाध दिस लऽ गेला घटककेँ, घटककेँ कहलखिन्ह- सौंसे बाध मीतक हिस्सामे छै।
-मुदा बाधमे आरि छै ठामे ठाम। तखन मीते भाइक कोना।- घरदेखियो इलाकेक लोक।
-से नै बुझलिऐ, बाढ़िक इलाका छै आ ढालू जमीन छै। पानि आबै छै आ ससरि जाइ छै तँ अपनो खेतमे ऐ गाममे लोक आरि दै छै।

२

गढ़नि

मीतक चेहरापर जे पानि छन्हि से लोक नै देखैए। मीत भाइ लिकलिक करैत भूत सन कारी रंग, कतेक कारी से ओइ खापड़िकेँ देखि लिअ ततेक। कारी टुहटुह छथि मीत भाइ कारी-खटखट नै। मोहन भाइ सेहो कहै छला- राम-राम, कारी लोक खराप होइ छै, के कहलक, गोर लोकमे ओ गढ़नि कतऽ पाबी।
हुनकर बियाह भेलन्हि।
-मीत यौ, कनिया केहन छथि, पसिन्न पड़लथि ने।
-बड़ सुन्दर छथि। हेमामालिनीकेँ देखने छियन्हि? एन-मेन ओहने। मुदा रंग कने हमरासँ डीप छन्हि।

३
चयन

“देखियौ तँ मीत भाइ। एतेक टाक अपन भारत आ छोट सन देश सभसँ हारि जाइए। कखनो काल ओना जिततो अछि। क्रिकेटे टा नै यौ। ओहो। आनो खेल सभमे देखू ने।”

“औ बाबू। क्रिकेट, फुटबॉलमे देश पैघ रहने थोड़बे होइ छै। पूरा देश मिलि कऽ थोड़बे खेलाइ छै। यौ, एगारहे टा ने खेलाड़ी खेलेतै यौ। आ से पैघ देश रहौ आकि छोट देश।”

४
मीत भाइ आ चोर बजार

मीत भाइकेँ हुनकर चमचम करैत जुत्ताकेँ देखि ओकर निर्माता कंपनी, ब्राण्ड आ मूल्यक संबंधमे जिज्ञासा केलौं। मुदा हमर जिज्ञासा शांत करबाक बदला ओ भाव-विह्वल भऽ गेला आ एकर क्रयक विस्तृत विवरण कहि सुनेलन्हि।

भेल ई जे दिल्लीक लाल किलाक पाछूमे रवि दिन भोरमे जे चोर बजार लगैत अछि, तइमे मीत भाइ अपन भाग्यक परीक्षण हेतु पहुँचला। सभक मुँहसँ ऐ बजारक इम्पोर्टेड वस्तु सभक कम दामपर भेटबाक गप्प सुनैत रहै छला आ हीन भावनासँ ग्रस्त होइ छला, जे हुनका ऐ बजारसँ सस्त आ नीक चीज किनबाक लूरि नै छन्हि। हुनकर ओतऽ पहुँचबाक देरी छलन्हि आकि एक गोटे हुनकर आँखिसँ नुका कऽ किछु वस्तु नुका कऽ राखय लागल आ देखिते-देखिते निपत्ता भऽ गेल। मीत भाइक मोन ओम्हर गेलन्हि आ ओ ओकर पछोर धऽ लेलन्हि आ बड्ड मुश्किलसँ ओकरा ताकि लेलन्हि। जिज्ञासा केलन्हि जे ओ की नुका रहल अछि।

“ई अहाँक बुत्ताक बाहर अछि ।”- चोर बजारक चोर महाराज बजला।

“अहाँ कहू तँ ठीक जे की एहन अलभ्य अहाँक कोरमे अछि?”

झाड़ि-पोछि कऽ विक्रेता महाराज एक जोड़ जुत्ता निकाललन्हि, मुदा ईहो संगे कहि गेला, जे ओ कोनो पैघ गाड़ी बलाक बाटमे अछि, जे गाड़ीसँ उतरि ऐ जुत्ताक सही परीक्षण करबामे समर्थ हएत आ सही दाम देत।

मीत भाइ बड्ड घिंघियेलथि तँ ओ चारि सय टाका दाम कहलकन्हि, सेहो

ऐ दुआरे जे मीत भाइ बोली-वाणीसँ पूर्वांचल इलाकाक लोक लागै छथि, मुदा सङमे ईहो बाजल जे दिल्लीमे सभ अपने लोक अछि, एत्तऽ तँ थूको फेकै छी तँ अपने लोकपर पड़ैए।

हमर मित्रक लगमे मात्र तीन सय साठि टाका छलन्हि, आ दोकानदारक बेर-बेर बुत्ताक बाहर हेबाक बात सत्त भऽ रहल छल। विक्रेता महाराज ई धरि पता लगा लेलन्हि, जे क्रेता महाराजक लगमे मात्र तीन सय साठि टाका छन्हि आ दस टाका तँ ई सरकारी डी.टी.सी. बसक किरायाक हेतु रखबे टा करता। से मुँह लटकेने ग्रामीण लोकक मजबूरीकेँ ध्यानमे रखैत ओ तीन सय पचास टाकामे, जे हुनकर मुताबिक मूरे-मूर छल, अपन कलेजासँ हटा कऽ ओ जुत्ता मीत भाइक करेज धरि पहुँचा देलन्हि।
आब आगाँ मीत भाइक बखान सुनू।
“से जइ दिनसँ ई जुत्ता ऐल, एकरामे पानि नै लागय देलिऐ। कत्तौ पानि देखीतँ पएरकेँ सड़ा देल, जे चमरी उघरत तँ फेर आबि जायत, मुदा जुत्ता...। आ ऐ जुत्ताकेँ हाथमे उठा लइ छलौं। चारिये दिनतँ भेल रहय, एक दिन सीढ़ीसँ उतरैत रही, पूरा सोल करेज जकाँ आँखिक सोझाँ, बाहर आबि गेल। की कहू? क्यो जे ऐ जुत्ताक बड़ाइ करैए, तँ कोढ़ फाटऽ लगैए। कोनहुना सिया-फड़ा कऽ पाइ उप्पर कऽ रहल छी। बड्ड दाबी छल, जे मैथिल छी आ बुधियारीमे कोनो सानी नै अछि। मुदा ई ठकान जे दिल्लीमे ठकेलौं, तँ आब तँ एतुक्का लोककेँ दण्डवते करैत रहबाक मोन करैत अछि। ऐ लालकिलाक चोर-बजारक लोक सभ तँ कतेको महोमहापाध्यायक बुद्धिकेँ गरदामे मिला देतन्हि। अउ जी भारत-रत्न बँटै छी, आ तखन ऐ पर कंट्रोवर्सी करै छी। असल भारत-रत्न सभ तँ लालकिलाक पाँछाँमे अछि, से एक दू टा नै वरन् मात्रा मे।
आब हमरा तँ हुअय जे हँसी आकि नै हँसी। फेर दिन बीतल आ प्रोग्रामे बनबैत रहि गेलौं जे अगिला रविकेँ चोर बजार आकि मीना बजारक दर्शन करब। मुदा पता लागल जे दिल्ली पुलिस ऐ बजारकेँ बन्द करबा देलक।

५

मास्टरी

“हौ, हमरा कोन बौस्तुक कमी अछि। मास्टरी करै छी। छह हजार नौ सय निनानबे टका दरमाहा अछि। ओइमे एक टका जोड़ि कऽ सात हजार टका सभ मास बैंकमे जमा कऽ दै छिऐ। आ से बीस बर्खसँ कऽ रहल छी, खेती-बाड़ीसँ गुजर करै छी। अपन बापक बेटा नै होइ जे ओइ जमा पाइसँ एकटा नवका पाइ निकालने होइ। लड़काबला लग जाइ छी, कन्यादान जे कपारपर अछि, तँ बैसैये नै दैए। की, तँ मास्टर छिऐ, कतऽसँ पाइ एतै। रौ, बाजै जो ने कत्ते पाइ चाही।” मीत भाइ गेला पएर झटकारैत आंगन दिस आ हम गुम्म भेल ठाढ़ रहि जाइ छी।

६

पसीझक काँट

मीत भाइ गाममे रहथि तँ पसीझक काँटक रस पोखड़िमे दऽ कऽ पोखरिक सभटा माँछ मारि देथि।

एक बेर पुबाड़ि टोलक कोनो बच्चाक मोन खराप भेलै तँ हिनका सँ पूछऽ एलन्हि जे कोन दबाइ दिऐ। मीत भाइ पसीझक काँटक रस पिआबय कहलखिन्ह। फेर मँहीस चरेबाक हेतु डीह दिस चलि गेला। एक गोट दोसर मँहिसबार गामपरसँ अबैत देखा पड़लन्हि तँ पुछलखिन्ह जे हौ बाउ, पुबाड़ि टोल दिससँ कोनो कन्नारोहटो सुनि पड़ल छल अबैत काल? बुझू।

ओ तँ धन रहल जे मरीजक बापकेँ रस्तामे क्यो भेटि गेलै आ पूछि देलकै, नै तँ अपन बच्चासँ हाथ धोबय जा रहल छल। ई मीत भाइ बड़ बुरि अछि। परुकाँ पसीझक काँटक रस पोखरिमे दऽ कऽ सभटा माँछ मारि देने रहय ई। ई जहर बच्चाकेँ पिअबितिऐ तँ मोन ठीक नै होइतै, सोझे प्राण निकलि जइतै। बुझारैत भेल आ मीत भाइकेँ कंठी लेमऽ पड़लन्हि।

मुदा घरमे सभ क्यो माँछ खूब खाइ छलन्हि। एक बेर भोरे- भोर खेत दिस कोदारि आ छिट्टा लऽ बिदा भेला मीत भाइ। बुन्ना-बान्नी होइ छल, मुदा आड़िकेँ तड़पैत एकटा पैघ रोहुकेँ देखि कऽ कोदारि चला देलन्हि

आ रोहु दू कुट्टी भऽ गेल। दुनू टुकड़ीकेँ माथ पर उठा कऽ विदा भेला मीत भाइ गाम दिस। तकरा देखि गोनर भाय गाम पर जाइत काल बाबा दोगही लग ठमकि कऽ ठाढ़ भऽ गेला, मोनमे ई सोचैत जे वैष्णव जीसँ रोहु कोना कऽ लऽ ली।

आ 'बाबा दोगही' मीत भाइक टोलकेँ गौँआ सभ तइ हेतु कहै छल, जे क्यो बच्चो जे ओइ टोलमे जनमैए से संबंधमे गौँआ सबहक बाबा होइए।

"यौ मीत भाइ। ई की केलौं। वैष्णव भऽ कऽ माछ उघै छी। "

" यौ माछ खायब ने छोड़ने छिऐ, मारनाइ तँ नै ने। "

अपन सन मुँह लऽ गोनर भाइ विदा भऽ गेला।

७

टेलीफोन डायरी

एक दिन गोनर झा टेलीफोन डायरी देखि रहल छला, तँ हुनका देखि मीत भाइ पुछलखिन्ह, "की देखि रहल छी?"

गोनर भाइ कहलखिन्ह जे "टेलीफोन नंबर सभ लिखि कऽ रखने छी, तइमे सँ एकटा नंबर ताकि रहल छी। "

"आ जौँ बाहरमे रस्तामे कतौ पुलिस पूछि देत जे ई की रखने छी तखन?"

"ऐँ यौ से की कहै छी। टेलीफोन नंबर सेहो लोक नै राखय?"

" से तँ ठीक मुदा एतेक नंबर किए रखने छी पुछला पर जौँ जबाब नै देब तँ आतंकी बुझि जेलमे नै धऽ देत?"

" से कोना धऽ देत। एखने हम ऐ डायरीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ कऽ फेंकि दइ छिऐ। "

आ से कहि गोनर भाइ ओइ डायरीकेँ फाड़ि-फूड़ि कऽ फेकि देलखिन्ह।

८

गोबर काढ़ब

एक दिन मीत भाइ भोरे-भोर पोखरि दिस जाइत रहथि तँ जगन्नाथ भेटलखिन्ह, गोबर काढ़ि रहल छला। पुछलखिन्ह-" यौ मीत भाइ, अहूँ सभकेँ भोरे-भोर गोबर काढ़ऽ पड़ैए?"

मीत भाइ देखलन्हि जे हुनकर कनियो ठाढ़ छलखिन्ह से अखन किछु कहबन्हि तँ लाज हेतन्हि, से बिनु किछु कहने आगू बढ़ि गेला। जखन

घुरला तँ एकान्त पाबि जगन्नाथकेँ पुछलखिन्ह- “भाइ, पहिने बियाहमे पाइ देमऽ पड़ै छलै, से अहाँकेँ सेहो लागल हएत। तइ द्वारे ने उमेरगरमे बियाह भेल। “

” हँ से तँ पाइ लागले छल। “

” मुदा हमरा सभकेँ पाइ नै देमऽ पड़ल छल आ तइ द्वारे गोबरो नै काढ़ऽ पड़ैए, कारण कनियाँ ओतेक दुलारू नै अछि। “

९

अधिक फलम् डूबाडूबी

एक बेर बच्चा बाबूक ओइठाम गेला मीत भाइ। ओ पैघ लोक आ तेँ बड्ड कंजूस। पहिने तँ सर्दमे गुड़सँ हुअयबला लाभक चर्च केलन्हि, जे ई ठेही हँटबैत अछि आ फेर गूड़क चाह पीबाक आग्रह। मुदा मीत भाइ कहि देलखिन्ह जे गुड़क चाह तँ हुनको बड्ड नीक लगै छन्हि, मुदा परुकाँ जे पुरी जगन्नाथजी गेल छला से कोनो एकटा फल छोड़बाक छलन्हि से कुसियार छोड़ि देलन्हि, आ तहीसँ तँ गुड़ बनै छै। मुदा फेर बच्चा बाबू पुछलखिन्ह जे नेबोबला चाह पीब बा दूधबला। मीत भाइ पुछलखिन्ह जे किए दूध नै अछि की? बच्चा बाबू कहलखिन्ह जे अछि मुदा गरमी मासमे नेबोक चाह गुणकारी होइ छै। मुदा मीत भाइ कहलखिन्ह जे जँ दूध अछि तँ तकरे चाह हुअय दियौ, नै हुअय तँ बरनी...

ओइ समयमे चुकन्दरक पातर रसियन चीनी अबै छलै, से बच्चा बाबूकेँ मन मसोसि कऽ तकर चाह, सेहो दूधबला पिआबय पड़लन्हि।

किछु दिन पहिने बच्चा बाबू ऐ गपक चर्च केने छला जे ओ जोमनी छोड़्ने छला तीर्थस्थानमे आ तैँ जोम खाइ छला। हरजे की ऐमे। मीत भाइ खूब जबाब देलन्हि ऐ बेर ऐ बातक। अधिक फलम् डूबाडूबी।

१०

मीत भाइक बेटा

मीत भाइक बेटा भागि गेलन्हि। पुछला पर कोढ़ फाटि जाइ छलन्हि।

“लाल काका बियाह तँ करा देलन्हि, मुदा तखन ई कहाँ कहलन्हि जे बियाहक बाद बेटो होइ छै। “

आब मीत भाइ बेटाकेँ ताकऽ लेल आ अपना लेल नोकरी सेहो ताकऽ लेल दिल्लीक रस्ता धेलन्हि।
मुदा ऐ बेर तँ मीत भाइ फेरमे पड़ि गेला। जखने दरभंगासँ ट्रेन आगू बढ़ल तँ सरस्वती मंद पड़ऽ लगलन्हि। कनेक ट्रेन आगू बढ़ल तँ एकटा बूढ़ी आबि गेली, मीत भाइकेँ बचहोन्ह सन देखलन्हि तँ कहऽ लगली-
“बौआ कनेक सीट नै छोड़ि देब?”
तँ मीत भाइ जबाब देलखिन्ह- “माँ। ई बौआ नै। बौआक तीन टा बौआ। “
आ बूढ़ी फेर सीट छोड़बा लेल नै कहलखिन्ह।
मीत भाइ मुगलसराय पहुँचैत पहुँचैत शिथिल भऽ गेला। तखने पुलिस आयल बोगीमे आ मीत भाइक झोड़ा-झपटा सभ देखऽ लगलन्हि। तइमे किछु नै भेटलै ओकरा सभकेँ। हँ खेसारी सागक बिड़िया बना कऽ कनियाँ सनेसक हेतु देने रहथिन्ह लाल काकी हेतु। मुदा पुलिसबा सभ लोकि लेलकन्हि।
” ई की छी?”
” ई तँ सरकार, छी खेसारीक बिड़िया। “
” अच्छा, बेकूफ बुझै छी हमरा। मोहन सिंह बताउ तँ ई की छी?”
” गाजा छिऐ सरकार। गजेरी बुझाइए ई।”
” आब कहू यौ सवारी? हम तँ मोहन सिंहकेँ नै कहलिऐ, जे ई गाजा छी। मुदा जेँ ई छी गाजा, तेँ मोहन सिंह से कहलक। “
” सरकार छिऐ तँ ई बिड़िया, हमर कनियाँ सनेस बन्हलक अछि लाल काकीले...”
” लऽ चलू एकरा जेलमे सभटा कहि देत। “- मोहन सिंह कड़कल।
मीत भाइक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहय लगलन्हि। मुदा सिपाही छल बुझनुक। पुछलक- “कतेक पाइ अछि संगमे?”
दिल्लीमे स्टेशनसँ लालकाकाक घर धरि दू बस बदलि कऽ जाय पड़ै छै। से सभ हिसाब लगा कऽ बीस टाका छोड़ि कऽ पुलिसबा सभटा लऽ लेलकन्हि। हँ खेसारीक बिड़िया धरि छोड़ि देलकन्हि।
तखन कोहुनाकेँ लाल काकाक घर पहुँचला मीत भाइ।
मुदा रहैत रहथि, रहैत रहथि की सभटा गप सोचा जाइत छलन्हि आ

कोढ़ फाटि जाइ छलन्हि। तावत गामसँ खबरि एलन्हि जे बेटा गाम पर पहुँचि गेलन्हि। लाल काकी लग सप्पत खेलन्हि मीत भाइ जे आब पसीझक काँट बला हँसी नै करता।

“नोकरी-तोकरी नै हएत काकी हमरासँ”- ई कहि मीत भाइ गाम घुरि कऽ जाय लेल तैयार भऽ गेला।

११

भा. प्र.से.

“कोनो काज भेलापर हमरासँ कहब। कलक्टर ओइठाम भोर-साँझ बैसारी होइए हमर। घंटाक-घंटा बैसल रहैत छी, आबऽ लगै छी तँ रोकि कऽ फेर बैसा लैत अछि, दोसरे-दोसर गप शुरू कऽ दैत अछि। “

“ठीक छै भाइ जी। कोनो जरूरी पड़त तँ कहब। नाम की छन्हि हुनकर?”

“बड्ड नमगर नाम छन्हि, भा. प्र.से. प्रशांत। आब भा. प्र.से. केर पूर्ण रूप हुनकासँ के पुछतन्हि से प्रशांते कहै छन्हि।”

“भारतीय प्रशासनिक सेवाक संक्षिप्त रूप छैक भा. प्र.से., ई हुनकर नामक अंग नै छन्हि। “

“अच्छा तँ फेर सएह हेतै। तइ द्वारे नेम-प्लेट पर नामक नीचाँ लिखल रहै छै। “

“ठीक छै भाइ जी। कोनो जरूरी पड़त तँ अहाँकेँ कहब। “

१२

महादेवक दूध पीबाक सोर

पहिने मीत भाइ हरियाणा दिल्लीक एकटा खिस्सा सुनेलन्हि। तीन टा कारी कुकुर छल। एके रङ-रूपक। ओकरा सभकेँ मोन भेलै जे गरमा-गरम जिलेबी मधुरक दोकान जा कऽ खाइ। से बेरा-बेरी ओतऽ जेबाक प्रक्रम शुरू भऽ गेल। पहिने एकटा कुकुर पहुँचल ओइ दोकान पर। मालिक देखलकै जे कुकुड़ दोकानमे पैसि रहल अछि, से बटखरा फेंकि कऽ ओकरा मारलक। बेचाराकेँ बड़ चोट लगलै। मुदा जखन गाम पर पहुँचल तँ पुछला पर कहलक जे बड़ सत्कार भेल। जोखि कऽ जिलेबी

खाइ लेल भेटल। दोसर कुकुड़ अपनाकेँ रोकि नै सकल आ अपन सतकार करबै लेल पहुँचि गेल मधुरक दोकान पर। रूप-रङ तँ एके रङ रहै ओकरा सभक, से मधुरक दोकानक मालिककेँ भेलै जे वएह कुकुर फेरसँ आबि गेल अछि। ओ पानि गरम कऽ रहल छल। भरि टोकना धीपल पानि ओइ कुकुरक देह पर फेकलक। बेचारा कुकुर जान बचा कऽ भागल। आब गाम पर पहुँचलापर फेरसँ ओकरा पूछल गेलै, जे केहन सत्कार भेल। “की कहू। गरमा-गरम जिलेबी छानि कऽ खुएलक। बड़ नीक लोक अछि मधुरक दोकानक मालिक।“- बेचारा अपन लाज बचबैत बाजल। दुनू कुकुड़ जिलेबी खा कऽ आबि गेल। एक गोटेकेँ जोखि कऽ देलकै आ दोसरकेँ तँ छानैत गेलै आ दैत गेलै, जोखबो नै केलकै। तेसर कुकुड़ ई सोचैत दोकान दिस बिदा भेल। साँझ भऽ रहल छल। मधुर दोकानक मालिक दोकान बन्न करबाक सूरसार कऽ रहल छल। आब जे ओ कारी कुकुड़केँ देखलन्हि तँ पित्त लहड़ि गेलन्हि। हुनका भेलन्हि जे एक्के कुकुड़ बेर-बेर अतेक नीक सत्कार भेटलो पर घुरि-फिरि कऽ आबि रहल अछि। से ओ ऐ बेर ओकरा लेल विशेष सत्कार करबाक प्रण केलन्हि। जखने ओ कुकुड़ दोकानमे पैसल आकि दोकानक मालिक दरबज्जा भीतरसँ बन्न कऽ डंटासँ कुकुड़केँ पुष्ट ततारलक। फेर रस्सामे बान्हि दोकानक भीतरमे छोड़ि दोकान बाहरसँ बन्न कऽ गाम पर चलि गेल। बेचारा कुकुड़ बड्ड मेहनतिसँ बनहन तोड़ि बाहर भेल आ नेङराइत गाम पर पहुँचल। जखन सङी-साथी सभ सत्कारक मादी पुछलकै तखन ओ कहलक जे की कहू, खोआबैत-खोआबैत जान लऽ लेलक। जखन कहिऐ जे गाम पर जाय दिअ तँ कहय जे आर खाउ, आर खाउ। आबइये नै दैत छल। ततेक खुएलक जे चल नै भऽ रहल अछि।

फेर आगाँ मीत भाइ बजला- ई तँ ओहने सन छल जे एक बेर महादेवक दूध पीबाक सोर भेल छल। जे क्यो निकलैत छल शिवलिगकेँ दूध पिअओलाक बाद, पुछलापर कहै छल जे महादेव हुनका हाथसँ दूध पीलन्हि। हमहूँ गेल रही। मन्दिरक बाहरक गलीमे दूधक टघार देखने रही। जौँ भगवान दूध पीबि रहल छथि तँ ई टघार कतऽ सँ आयल? मुदा जखन शिवलिंगपर दूध चढ़ा कऽ बाहर निकललौं तँ लोक सभ पुछऽ लगला जे भगवान दूध पीबि रहल छथि? आब कहितौं जे नै पीबि रहल

छथि तँ सभ कहितय जे ई पापी अछि, से सभक हाथसँ भगवान दूध पीबि रहल छथिन्ह आ एकरा हाथसँ पीबा लेल मना कऽ देलखिन्ह। सएह पइड़ ओइ कुकुड़ सभक भेल छल।

बिहारी

ऑफिसक कैम्पस लागै जे कबाड़ीक दोकान हुअय। एकटा चरफड़ स्टाफकेँ कहलिऐ जे शनि-रविकेँ कैम्पसकेँ साफ करबा दिअय।
“जी सर, शीसा सन चमकि जायत। चारिटा बिहारीकेँ बजबा कऽ करबै छी। “
“तीने टाकेँ बजायब, एक तँ हम छीहे। “
“सर, हमर कहैक माने छल जे...। “

फिल्डिंग

“क्रिकेट खेलेनाइ किए छोड़ि देलिऐ?”
“सदिखन फिल्डिंग करैत रहू, बैटिग आयल तँ अगिला गेन्दपर आउट।
“
“फिल्डिंग केनाइ खेलेनाइ नै भेलै?”
“बाउलिंग केनाइ तँ भेबे नै केलै, फिल्डिंग केनाइ केना हेतै?”
तेँ ने भारतक फिल्डिंग आ बॉलिंग कमजोर छै, आ बैटिंग मजगूत।

स्किल

“एकटा होइ छै स्मार्ट काज आ दोसर गदहा सन लागल रहू। “
सभटा सेनसर कार्ड पसारि शॉर्ट कऽ डिजिटल साइन करबा कऽ स्टाफ लऽ गेल, पाँचो मिनट नै लगलै, पहिने दोसर स्टाफ अतबीमे बीस मिनट लगबै छल। से हम ओकर बड़ाइ कऽ देलिऐ।
“वएह सभ ठीक छै सर, सभ ओकरा सभ दिया कहै छै देखू काजमे लागले रहैए आ हमरा सभकेँ कहैए जे सदिखन फोनेमे लागल रहै छी। “

डिसीप्लीन

“बॉस एत्तेक तमसाइए, गारियो दऽ दइए, तामस नै उठैए अहाँकेँ?”
“हमहूँ तँ गरियाबै छिऐ। “
“हम तँ कहियो नै सुनलौं। “
“खूबे गरियाबै छिऐ, जे सार भोरमे कनियाँसँ बात सुनि कऽ आयल हएत, तेँ एना कऽ रहल अछि, आर की-की। खूब गरियाबै छिऐ मोने मोने! “

साइंस

(१)

साइंस शिक्षा

बारहम कक्षा अन्तिम दिन। आब बच्चा सभकेँ स्कूल ड्रेस नै पहिरऽ पड़तै, से सभ एक दोसराक शर्टक पाछाँ स्केचसँ की कहाँ लिखि रहल छल, गदहा आ की, की?

मुदा बेटाक शर्ट साफ रहै, पुछलिऐ तँ कहलक जे हुमेनिटीज बला सभ एना करैए, साइंसक क्लासमे कोनो बदमाशी नै होइ छै, भरि साल ओ सभ लिलसाकेँ मारि चुपचाप बैसल रहैए, बिनु उमंगक। स्ट्रेस...

(२)

रसायनशास्त्र

चोर महराज गेला महिसबाड़ ब्राह्मणक गाम चोरि करय, पकड़ा गेला। सुनल छलन्हि जे एक बेर कोनो चोर हिम्मति केने रहय ऐ गाममे चोरि करबाक, देहमे तेल लगा कऽ गेल जे छछिला जेतै, पड़ा जायत, मुदा पकड़ा गेल आ ई गौंआ सभ जानेसँ मारि देने रहै ओकरा। से ओ निश्चिन्त रहय जे अपटी खेतमे मारल गेलौं। मुदा गौंआ सभक विचार भेलै जे ऐबेर एकरा छोड़ि देल जाय, मात्र आकक दूध दुनू आँखिमे दऽ देल जाय जइसँ ई आन्हर भऽ जाय आ फेर चोरिक योग्य नै रहय। महिसबाड़ ब्राह्मणक गाममे पढ़ाइ लिखाइ नहियो रहने शिष्टाचार आयल अछि, सेहो देखौंसमे। एक गोटेक कुटुम बगलेक गाममे छन्हि, हुनका ऐठाम जिगेसा करैले गेल रहथि, कारण सिबललबा आ बौका दुसाध गैंगक चोर गोट-गोट समान लऽ गेल छलन्हि, पुष्ट पिटान देने रहन्हि से अलग, कुर्सीमे गतानि कऽ बान्हि देने रहन्हि जे हिलडोल सेहो नै कएल होइन्ह। तइयो चोरक प्रति कोनो अवाच कथा नै कहने रहथिन्ह-'चोर महराज आयल रहथि, कहलियन्हि जे, जे लऽ जयबाक हुअय लऽ जाउ, खाली देहटामे नै भिरू, मुदा सेहो नै मानलथि।'

महिसबाड़ ब्राह्मण सभ चोरक दुनू आँखिमे आकक दूध धऽ देलक। चोर साइंसक विद्यार्थी, रसायनशास्त्रसँ स्नातक। रोमन कंक्रीट दू हजार सालक बादो क्रैक भेला पछाति क्विकलाइमक उपस्थितिक कारण पानि

पड़लापर अपनाकेँ दढ़ कऽ लइए, मुदा आइ काल्हिक कंक्रीट बीसे-पचीस सालमे क्रैक भऽ जाइए आ क्रैक भेलापर स्थायी रूपसँ खराप भऽ जाइए, से सभटा ओकर बूझल-गमल छलै। अस्थिरेसँ बड़बड़ाइत बाजल- 'आकक दूध दइये देलकहेँ, जँ करू तेल सेहो धऽ देत तँ जेहो कनी मनी आँखि बचबाक आश अछि सेहो आश नै रहत।'

महिसबाड़ ब्राह्मण सभ सोचलक जे करूओ तेल धैये दे, खेले खतम। से ओ सभ करू तेल सेहो चोरक दुनू आँखिमे धऽ दइ जाइ गेल, आ चोरकेँ छोड़ि देलक।

चोरक एकटा आँखि तँ तैयो नै बचलै मुदा करू तेल आ आकक दूधक रसायनशास्त्र ओकर दोसर आँखि बचा लेलकै।

(३)

भौतिकी

ट्रेनमे मजिस्ट्रेट चेकिङ भेल, महिसबाड़ ब्राह्मण गामक एकमात्र भौतिकी स्नातक महराज टिकट नै कटेने रहथि, चेन खीचि खेते-खेते पड़ेला, पुलिस पाछाँ सँ झठहा फेकलक। खसला, फेर उठला आ फेर दौगला, मुदा एक पएरक चट्टी जोतला खेतमे छूटि गेलन्हि। दोसर चट्टी पएरसँ हाथमे लेलन्हि आ निपत्ता भऽ गेला। गाम महिसबाड़ ब्राह्मण गाम, पढ़ल-लिखल लोकक ओतऽ कोनो मोजर नै। सभ हँसी उड़ेलकन्हि जे एकटा चट्टी लऽ कऽ की करब, ओ कहलन्हि जे दोसर चट्टी जोतला खेतसँ काल्हि लऽ आनब। सभ हँसी उड़ेलकन्हि जे दोसर चट्टी ओतऽ धएले हएत?!

दोसर दिन भौतिकी स्नातक महराज जोतला खेतमे गेला आ दोसर चट्टी लऽ अनलन्हि।

महिसबाड़ ब्राह्मण सभ मीटिंग केलक- जेना हम सभ एकर हँसी उड़ेलिऐ जे एकटा चट्टीक की करब, तहिना जोतला खेतमे एकटा चट्टी देखियो कऽ कियो नै उठेने हेतै, जे एकटा चट्टीक की करब? जँ ई दोसरो पएरक चप्पल जोतला खेतमे छोड़ि देने रहितय तँ दुनू पार भऽ गेल रहितय।

आ आब महिसबाड़ ब्राह्मणक गाममे साइंसक शिक्षाक प्रति अभूतपूर्व उत्साह जागल अछि।

Annexure

(Maithili Short-Stories by Gajendra Thakur translated into English by the author himself)

Annexure One: The Proven Mahavir (Siddha Mahavir)
Annexure Two: The Robber (Tashkar)
Annexure Three: The Science of Words (ShabdaShastram)
Annexure Four: The Cattle Grazer Brahmin Village (Mahisbar Brahmanak Gaam)

Annexure One

The Proven Mahavir (Siddha Mahavir)

1

Beside the road was Anmana Didi's house.

It was a hut, not a house. In every courtyard of the village, there happens to be a house of a widow. But when the family expands, some members increase the front of their house while others encircle their homes with new constructions. And thus, the latitude and longitude of that widow's home get changed, and that was what happened to Anmana Didi's house.

Anmana Didi's house is now beside the road. She is originally from the other side's majkothia (middle) quarter of the village, but her house has now shifted to near my house. There are always a lot of people to be found in her house. The girls who stay nearby visit Anmana Didi's house during the day, especially at midday, to check her head for lice.

Nobody knows who her closest relation is; that will become clear only after she dies. During the funeral rites, whoever is her nearest as per her clan, would perform the last rites and he would also get Anmana Didi's house and land.

But that is no longer possible. When Anmana Didi had gone to her in-laws' village, where she was married i.e., in Jhanjharpur, she had adopted her sister's son. But the love for her father's village remains in her heart.

She comes to her hut nowadays once a month at least. She cooks for herself. But at Jhanjharpur, she has a big house and a huge courtyard. But she has not invited her son and daughter-in-law even once to her father's village.

The entire village calls her 'didi' when she resides in her father's village and 'aunty' when she stays in her husband's village i.e., Jhanjharpur.

So, she is now known as Anmana Didi by the whole village.

Beside the hut, she constructed a temple of Mahavir Bajrangwali. Though initially, it was just a mud building, she has gradually made it a pucca by selling grains. Earlier it was a 'hut-temple'. Whenever Anmana Didi went to Jhanjharpur, she just closed the gate of her hut. Later, she started locking it with a chain and lock. But the temple of Bajrangwali remained open for people, all the time. The girls of the village did all the cleaning work.

It was converted into a pucca one in stages. The ceiling of the temple was fixed just recently but still, it was a kutcha one. She wanted the floor to be plastered but the estimate was awfully expensive. Anmana Didi kept on thinking that the home of the Lord would become wet in the rainy season. But she also wondered where the money for the plastering would come from. Unlike most people who keep on saying "Oh, I do not have time", Anmana Didi was

faithful to her work. She was devoted to her daily work and God's work. But for her adopted son too, she often finds time.
In between, she goes to her village situated near Jhanjharpur bazaar. She maintains her house at Jhanjharpur responsibly. Then again, she comes to the village ... her father's village. People attempt to become *Sthitaprajna* by reading Gita. Look at Anmana Didi. She answers salutations by saying 'be happy.' No happiness or sorrow can be heard in her voice! No desire for any respect or help either.

She goes to the Dhanuktola and Dusadhtola quarters of the village. The people of these tolas respect her a lot. They do not have any desire to grab her house. Anmana Didi looks happy when she visits these *tolas*. She never asks for any help from the people of her tola. The people of her tola would help once and then tell their wives, who for years after that would remind Anmana Didi of the favour they had done.
The village people say, "Didi, it is a work meant for Lord Hanumanji, his temple is beside the road. We all go by the road and worship him by bowing our heads. We would work without accepting any wages."
"No dear, the pilgrimage and God's work should not be undertaken in this manner. I am not a queen and would never construct a temple or would never dig

a pond without paying wages to the labourers."
"But the casting and plaster work?"
2
Adjacent to this roadside temple, there is one acre of land in the name of Anmana Didi. After the cement plastering work is over, she will register this land in the name of God. Whatever harvest would be cropped, would be used for the maintenance of the temple.
However, a nephew from the neighbourhood has been after Anmana Didi for some time now.
"Didi, I am your nearest nephew. This land is adjacent to my house. Earlier the people gave land adjacent to the road to people of lower caste and widows. But now times have changed. Now the value of the house and the land beside the road has increased. You will die someday. Then this land would be the bone of contention amongst all the people in our quarter of the village."
People thought nothing of telling her to her face 'You will die someday!" But dare tell this to a woman whose husband is alive! But you can tell it to a widow; although she had adopted a boy and has a full-fledged family with a daughter-in-law and grandchildren! Anmana Didi replied, "This land has been earmarked for God. This is the only source of my livelihood. Whatever I save after my expenses is preserved for the casting and plastering of God's

house. The land and earnings of Jhanjharpur property are for my son and daughter-in-law. So how can I ..."

"Again, Didi! You did not understand! Till your death, keep all these properties; earn your livelihood. But after your death the people of our quarter of the village will quarrel, would you like it? And I am your closest nephew ..."

Anmana Didi's nephew works in some distant town. The people of the village normally desist from talking with her, afraid she might ask them for some help. But whenever this nephew comes to the village, he comes to meet her.

The ceiling of the temple leaks so much, and this year it leaked even more. The raw ceiling did not work even for two years. That would be replaced by casting, which is what Karim Miyan and Lakshmi Mistri have said; then only it will work. Let us see what happens...

The nephew comes to Anmana Didi's house even more often.

"All right Didi, give me half the land. Half an acre is enough for your nephew's dwelling, and the land for God would also be saved."

"But there will not be any entrance to the road from your house, then what would be the benefit?

"Leave it, Didi. Even now I have come through our quarter of the village. Nowadays it has become a fashion to construct houses near crossings and

beside the road. But on crossings or beside the road, only the house of God would be appropriate. Ten thousand rupees for half an acre, whenever you ask, I would pay; the cost of registry of land would be in addition to that."

"All right. Then I will think about it and then I will inform you. I would have to ask my son and daughter-in-law."

Anmana did begin to think in earnest. What was the way out? The walls of God's house have become black with the soot from the lamps. Even the statue of Lord Bajrangwali is Black with soot. She thought and thought till the morning birds began to sing.

"I will sell the land, what other option, no?”

The son and daughter-in-law said: “Dear Mother. That land is for God and that we know since the beginning. But look, he should not be doing any mischief."

"What mischief? He is paying price on the higher side. For God's temple, ten thousand rupees is not a small amount. I had only this much after a lifetime of saving. Will this half-constructed temple remain ever in this condition? I will talk to Lakshmi Mistri and Karim Miyan. Ten thousand rupees is sufficient not only for casting and plastering but also for constructing a boundary wall!"

An estimate was made. The work would start the following day after registering the property; and it

would be completed before *Bhadra*, the rainy season.

3

"This is the first time that I have got the opportunity of preparing papers for God!" Dasji's comment made Anamana Didi ecstatic.

"Look, the process of registering the property has been completed. Dasji is an expert in paperwork; it is a proven fact now, my God, it must have been perfect paperwork."

"People tell such lies like people's faith in God has diminished. Look at this Dasji. I had never met him before and do not have even a distant introduction. He has done two registrations, the first for the half-acre land in the name of my nephew and the second for the half-acre in the name of God! But he has prepared the papers by charging only one fee. He told me in clear terms 'Didi, I would not accept the fee for registering the papers in the name of God.’"

Anmana Didi is in a state of excitement. She removes everything from the temple building; the work will begin the next day. Laxmi Mistri has already brought all his tools for the work. Anmana Didi has already readied empty vessels too, which may be required. The pond is nearby, although full of lichen and moss; the village people have cleared some space at various places in the pond so that their buffaloes could drink the water.

But there is chaos in the morning. Karim Mian has

been stopped from doing the work. "Who has stopped him? Inform my nephew.", Anmana Didi said. But after registering the property, the nephew proceeded directly from Jhanjharpur to his place of work. The documents are also with Anmana Didi. The nephew's brother-in-law has objected to the work. He will not allow the boundary wall to be constructed. He is saying that the land beside the road is his brother-in-law's.

"But yesterday at the time of registration he was also present, then? Look, then this temple would also be in his name. He must be in some confusion."

The nephew would return only at the beginning of the next month after he withdraws his salary. For a month, Anmana Didi travelled back and forth from her village to Jhanjharpur. Her son and daughter-in-law told her that it might have been a ploy by the nephew. "No, do not tell that. Dasji seemed so good-natured. Let us see what happens.", she replied.

4

"Didi, you are under some confusion, I think.", the nephew said.

"Then this temple is also yours, no?"

"No, Didi. This temple is for God and would remain his. And the land on the other side is also for Him"...

"Then this hut is also yours, no?"

"No, Didi. Till you live, please stay there. Who will

stop you?"
"Boy, I am obliged. And the outlet for the land is neither from our quarter of the village nor from the roadside."
"Didi, go through my land, who will stop you? And in the cultivated areas, everybody passes through the raised dividing line. Those farmers who do not have land beside the road go to their land or not? You are talking in a divisive tone of the new generation of people."
"But all these you did not tell me earlier!"
"Didi, I told you all this. But you are confused. If you do not remember, let me call Dasji he is a neutral person, an outsider." "
"All right. He is also part of the plot."
"He charged a fee for only one registration, and you are saying that he is part of the plot?"
The nephew's voice became harsher, he became restless and uttered loud words, and he departed quickly.
5
Today's morning at her father's village began the same way as the morning when her husband had died. Today the girls of the village did not come to her hut to pick lice from her head.
The night-long discussion of Anmana Didi with Lord Bajrangwali just concluded in the morning. The people were disturbed hearing this at night and tried to lull their children by patting them to sleep.

Somebody came in the morning and suggested arbitration with the help of the village panchayat. But Anmana Didi was angry with Lord Bajrangwali.

"I was planning to sell only the other half of the land, but he registered the land beside the temple. The land that is in the name of God now has no approach road from the temple. There is no path to go to that land from the temple. Look at this Bajrangwali. Mahavir! What power is inside him? After half-starving for forty years, I brought him from a hut to a pucca building. I just wanted the casting to be done, the boundary wall to be constructed, only that was my desire and that too for him. Ha!

6

The next morning people saw Anmana Didi standing at her nephew's door. The people thought that now more strife would ensue. But look, what is happening? Lakshmi's brother has brought a rickshaw. Anmana Didi is going to Jhanjharpur accompanied by her nephew! Who said this? She does not speak a word with anybody. All right, Lakshmi's brother has said all this. Yes, the one who had been sent to call the rickshaw must have passed on the information that the rickshaw is to go to Jhanjharpur.

Dasji had to prepare one more registration document. But looking at Anmana Didi, he started

to tremble. However, Anmana Didi's anger was so much, that she did not utter one word. She swallowed her anger. She registered the piece of land on the rear side also, in her nephew's name. After the registration, she returned from Jhanjharpur station to Jhanjharpur bazaar to her son and daughter-in-law.

Lakshmi's brother returned to the village. He took two passengers to Jhanjharpur station but came back with only one passenger. He brought a message also, a message from Lakshmi Mistri and Karim Miyan. Tomorrow morning, work would be started, again.

7

The boundary wall was constructed barring the temple of God and Anmana Didi's hut. Anmana Didi's nephew had said that nobody would touch her house till she was alive.

House or hut, the first year it got partly damaged. In the second rainy season, the bamboo support collapsed. But Anmana Didi did not come. The message was given to her by a person from the village. The casting work of the temple could not be completed. Anmana Didi went to Haridwar and returned after some days to Jhanjharpur.

People asked her: "What did you ask from the Ganges?"

"This blind faith should go out of my mind.", she said.

"And what did you sacrifice to the Ganges?"
"My anger, I gave it to the Ganges."
To all questions, Anmana Didi said only this: "What would you do? There is no power in Lord Bajrangwali. Let the hut fall. The hut with bamboo support, how long would it last anyway?"

8

Five years went by. The nephew had returned to the village. In the morning after he had relieved himself near the pond, he came near the handpump to clean his hand. He sat there with his water pot. Then suddenly he felt a massive pain in his chest, and nobody could save him. People began to talk, 'look at the curse of Anmana Didi; Didi had wept and wept that day. Before that day there was no power inside the statue of Bajrangwali. But a curse from a person who has been deeply hurt does work. That day the Bajrangwali awoke. Today he has shown his power.'
But Anmana Didi, when she heard the news, merely told the messenger that there was no life inside the stone statue of the Lord. Her nephew must have had a heart attack! Near her house too, a few days ago, a Marwari had a heart attack. But there were doctors there and this Marwari fellow's life was saved. In the village, people lose their lives since there is no treatment. That is why, in her old age, she decided to live with her son and daughter-in-

law in Jhanjharpur.

9

Cattle-grazer Brahmins mostly inhabit the village. The onslaught by the bhang-intoxicated buffaloes over the purchased pig from the Dom caste (considered untouchables in olden times) of village Samiya is worth watching.

The buffalo grazers sat over the buffalo in such control that was almost unimaginable. The participation of the Dom caste in festivals is apparent. From making big baskets to fans for the summer season; there is the participation of the Dom caste in all aspects of public life.

The Durga Pooja committee retains the head of the sacrificial animal.

The meat for all marriage feasts is obtained through the slaughterhouse of the Muslim tola. The Muslims retain the head and skin of the slaughtered he-goat. The buffalo-grazer Brahmins perform devotional songs on weekdays or on more auspicious occasions playing the drum that is made by using those skins. And a devotional song is going to be performed today before Lord Bajrangwali.

The big flag is flying, it has been there since the Ramnavmi festival. The bell along with some other gadgets is ringing. It is evening, and the buffalo grazers have arrived. For all festivals, be it the Sukharati festival or Ramnavmi, devotional songs are sung before Lord Hanuman. This is a matter of

faith for the people of the village and that is being performed today.
The villagers have plastered the Hanumanji temple. The casting of the ceiling has also been completed. People have started talking of Anmana Didi as an Anmana mystic (Baba). She died some years back. She did not return to the village. To reduce the effects of an evil eye over the dwelling land of her nephew, an astrologer suggested that a cow should always be there at the door. The passerby sees the cow grazing on the green grass and that takes out the effect of the evil eye.
Hanumanji's flag is flying high. It is evening. Brother Gonar is playing the drums ceaselessly.
Now Anmana mystic's words have spread near and far. True, before the statue of Hanumanji, there are two sets of devotees. One set of people believe in rationality: Anmana registered the remaining half an acre of the land to her nephew to instil fear and anxiety in his heart. He could not resist this attack from Anmana Didi. True, there cannot be any power in a stone statue.
But the second group has faith in Hanumanji. This Hanumanji has proved himself, he is great. Look, challenge an ant and she will bite you even though it may mean death for her. Anmana Didi challenged Lord Mahavir and how could he leave this challenge?

Brother Gonar is playing ceaselessly on the drum. He would please Hanumanji, no doubt about that. The bhang is working, his eyes are intoxicated, and his hands are flying over the drum. Seen from his eyes, the stone statue of Mahavir would look alive, as though a soul had indeed entered it.

Annexure Two

The Robber (Tashkar)

1

Inside the *Shaligram*-stone a hole exists, the black *shaligram* stone is found near the river Narmada. In Jamsam village much has changed, right from the *Dihbar*-worship place of the village deity to other things, but some of the other symbolic things are present. But any symbolic existence of my love story is not present anymore.

The plantation and the jungle have become sparse now. When I was a child, the mango orchard was full of underground passages and holes made by animals. It was full of distinct kinds of birds and big and small animals. From the month of *Jyestha* to *Agahan*, Malati and I used to gossip around the *khurchania*-creeper. During the *Phalgun-Chaitra* month, we used to have endless conversations near the *lavanglata* bush. *Malkoka, Kumud, Bhent, Kamalgatta*-root, the reddish-*Bisadh*: we were in search of these, wandering through the mud and muddy water. Barefooted, we hopped around thorny bushes and played a game of 'seven houses' in the mango orchard. We used to make our imaginary home with the *karbir*-bush. Malati is used to preserve the seeds of flowers.

Malati was the same age as me. My mother used to say that Malati was six months older than me, but

my father used to tell me that she was six months younger than me. Why he used to tell this, I came to understand much later.

During the entire mango season, Malati and I guarded the mango orchard. But at dusk, before night fell, my maternal uncle Bachhru and Malati's father Khagnathji would come to the orchard to guard it during the night. But here also there is no symbolic presence of our love tales. I mean, the love story of Keshav and Malati.

But there at the Pucca village deity spot, I try to look for the black *Shaligram*-stone, which has a hole inside. I had stealthily placed the stone here somewhere.

The villagers had spent a lot to make the dome for the village-deity place. Earlier there was nothing here. The stairways for the pond had been constructed by the King and this pucca temple; only these two things still existed. But the poor King could not worship here; out of dishonour, he did not come to this village.

2

I am Keshav, from village Mangarauni, of *Naraune Sulhane* root, gotra *Parashar*, son of Poet Madhurapati.

Malati was the daughter of Khagnath Jha of *Mandar Sihaul* root, and Kashyap gotra of village Jamsam.

Khagnathji and my maternal uncle Bachhru were close friends. My Bachhru mama hailed from

Jamsam village. He was well-to-do and we were poor. So, for the one-month summer vacation and the fifteen-day Durga pooja holidays till Chhath pooja, I used to stay in my maternal uncle's village. During the summer vacations, I would guard the mango orchard, watching the ripening of the early 'White' mango variety to late the 'Kalkatia' mango variety. During Durga pooja, we enjoyed the celebrations right from the first day till the immersion ceremony. Again, during the Deepawali festival, I lit the bamboo leaves and returned to my village at the time of the Chhath festival. In between throughout the year, I occasionally visited Jamsam village.

With Malati, I often quarrelled. Once, when I was in the fourth class, during the summer, I was visiting Uncle Bhachhru's mango orchard. I quarrelled and stopped talking to Malati since I was angry. However, I forgave her soon and resumed chatting with her; Malati always unusually softened me. She never remembered the topic of our quarrels; once I went up to her and said, "I am sorry for that ..."

"For what?" she said.

"For that over which we quarrelled."

I realised neither she nor I remembered what we quarrelled about, so after that, I never fought with her. She, however, often used to get angry with me, and then I would ask her why she was not talking to

me. And since she never remembered the matter for which she was angry and neither did I, then what is this quarrel all about?

Life went on in this way. After the summer vacation, I waited for the Durga pooja, and after the Durga pooja vacation, I looked forward to the summer vacation. From when this wait began, I do not remember.

3

Father lived by sharecropping in the village; that is, he worked in the fields of others for a share. After middle school, there was no school for higher education in the vicinity. All the Sanskrit schools had closed.

So, there was no school for me. Year-long, either it was work or vacation. My mother's parents were alive. My mother visited her father's place now and then. I also used to visit my maternal uncle's village often.

There were many problems in that village. I often heard the talk about the 'preservation of *Panji*' from my father. He also said that this was only possible if I could be married to Malati.

Malati was my friend. But we became distant after the 'preservation of *Panji*' topic began. The ease with which we met suddenly started to vanish. While seeing her I started imagining her as my wife, and I am sure she must have felt it too.

4

Soon after that, Bachhru's mama came to my village:

Madhurapati: "Bachhru, in your hands now lies all my respect. Khagnath's daughter is simply appropriate for Keshav. She is beautiful and good-natured, but our Keshav is also magnificent. Both are of the same age, but Malati is younger by some days. Oh! You do know that my father gave seven hundred rupees to the bride's father and then my marriage was solemnised, and my father had *Panji*. But we do not have land now. Yesterday the genealogist came on a mare; the mare was intoxicated after drinking bubble-bubble. He told me at once that only Khagnath's daughter is available, while he prepared the list of the probable. And if that does not happen, I would be debarred from the east-coast Shrotriya's group."

Bachhru: "I am going to ask Khagnath. He is my friend, but what is inside his mind, that only he can tell."

I did not know why my heart was filled with love. I had accompanied Bachhru's mama to his village.

5

Malati: "Keshav, if you are married to somebody else then how can we meet?"

Keshav: "If you were married to somebody else, then how you would ask these meaningless

questions?"
Malati: "But you understand one thing? Yesterday your maternal uncle was talking to my father regarding our marriage!"
Keshav: "Then?"
Malati: "No, all was well but then a messenger from the King of Darbhanga came to say that he had a message to convey from the King".
Keshav: "What was the message from the King?"
Malati: "I do not know. But the messenger told my father not to finalise my marriage for some time."
Keshav: "You are so beautiful. The King must have seen some boy for you."
Malati: "I do not know..."
6
The caravan of the king's minister stood in front of Khagnathji's house! What changes happened in these two days? The messenger had passed on some messages. So Khagnathji is in such a hurry now, for the marriage of his daughter! See the swiftness. People reached there in large numbers, and all were busy with the welcome ceremony. I too was observing everything. By evening my father had also come. There went the minister's caravan and my father's hand touched his forehead. And he then relapsed into silence. Khagnathji was also silent.
The King had sent a proposal for his marriage to Malati! King Bireshwar Singh. What a shame! He

must have been over forty years of age and this proposal of marriage with a thirteen or fourteen-year-old girl? What was the status of Khagnathji, how could he oppose the proposal?

My father was anxious; the *Panji* would not be preserved.

On that day, in the evening, I met Malati near the corner of her house. Her big eyes, like the *Karjani*, were swollen; it looked like she had wept without consolation, for hours. What I said to her, I do not remember. Yes, but in the end, I told her that everything would be all right.

7

In Jamsam village, the marriage proposal was solemnised between King Bireshwar Singh and Malati.

Also, in Jamsam village, a pond was dug. Beside the pond, a new temple was constructed; how could the King worship in a temple constructed by others?

But I, Keshav, was the son of Poet Madhurapati!

The marriage date came closer. There were no other auspicious dates during that season. That evening I told my plans to Malati.

In a wooden cart, the front part as well as the back remains unstable. The pressure on the front must be more because otherwise, the back would be unstable, and the cart would tumble. But I balanced the back of the cart, and I waited for Malati near the

bamboo trees.

She came and sat on the cart. Whoever saw me on the road did not talk to me for fear that the cart would tumble. She saw a colourful *Patrangi* bird and nearly exclaimed aloud; I put my fingers on her lips.

I brought Malati to my village. The wedding preparations had started; my *dhoti* was being coloured for the occasion. Somebody came from Malati's village to enquire about her; I captured that person and hold him back. When the question arose in my village, "Who would perform the ceremony of kanyadaan from the bride's side", I brought out that person. I said, "He is from the bride's village, so he will perform kanyadaan."

I put down the leather *Salamshahi* shoe, wore a *dhoti* and performed the marriage rites. The vermillion ceremony, where the sacred vermillion is placed on Malati's head was fated to be performed only by my hand.

8

Now, what would King Bireshwar Singh do?

He called the genealogist and ordered him to place the derogatory title of "Tashkar" - robber - before my name in the *Panji*. But Madhurapati was full of pride for his son. A tiger's son is again a tiger! *Panji* and water both go downwards, as courage flows down from father to son. But after *Tashkar* Keshav marries Khagnath Jha of Srikant Jha *Panji*'s daughter, Madhurapati's shrotriya category would

remain in existence.

And after one hundred years, a play is going to be performed in this village: "Sultana- the Robber!”

And I, Tashkar Keshav, from root *Mangrauni Naraune Sulhani* of *Parashar* gotra, son of Poet Madhurapati, am looking for symbols of my love story in this village Jamsam. But only that pond built by King Bireshwar Singh and the dilapidated temple could be seen. Poor King, he did not come again to this village out of shame.

This pond and the dilapidated temple are the remains of our love.

Annexure Three

The Science of Words (ShabdaShastram)

The Sun happens to be in the fifth sign of the zodiac, normally between *the sixteenth of August* to *the sixteenth of September*. If you want to dry something then it is the best time to do so, since during this period the most intense light and heat of the Sun falls on earth.
During this fifth sign of the zodiac, the palm leaves remain under the Sun, a part of Milu's father's annual preservation plan, to instil life in these palm leaves. Ananda used to help in preserving these palm leaves. She would carefully place the palm leaves where they would get the maximum heat, Milu remembered vividly. Ananda's life was mostly spent with Milu. But before the onset of this year's fifth sign of Leo of the sun-zodiac, Ananda had departed ... and now when she is not present, how will the preservation of life be possible, the life of Milu's and these palm-leaf inscriptions...
Fallacy, the fallacy of words, we ascribe our emotions to words, and after that confusion begins.

In the courtyard of Lukesari, there is a tree of sandalwood.
Beneath that the cuckoos clamour
I will cut the sandalwood tree and encircle the

courtyard.
Cuckoo, your clamouring will end.
The cuckoo of the jungle began crying.
The cuckoo's clamour stopped.
Oh! cuckoos, cuckoos of youthfulness, do not cry.
Clamour cuckoo, clamour
Whichever jungle you would go to.
Your marks would remain there.
Tears do not come out of the eyes.
I will wrap both your wings with gold, o cuckoo.
I will wrap both of your lips with silver.
O my cuckoo dear, whichever jungle you would go
The maks of 'garland of blood' would remain.

Some voice was coming from the village quarters where the tanners lived ... it was Ananda's voice.
But Ananda was dead, only a few hours earlier! Bachlu had seen her dead body. After informing Milu, he returned to the village quarters. Ananda had died when she was quite old. But the voice that was heard was of a young Ananda...
It may be a fallacy, a fallacy of words. Srikar Mimamsak, Milu's father, often said many things about the 'science of words.' We ascribe meaning to the words and then the confusion begins...

I

The Science of Words

There was a tumult.
The turmoil began. In the river Balaan, a corpse was found floating. Besides the washerman's quay, the corpse had got stuck on the edge.
From where it had come nobody knew. It was a dead body of an old woman. But the washerwoman recognised it. She informed Bachlu, who in turn gave the news to the dead woman's family. Only an old man lived in that house ... the house of Milu. Milu's village people brought the dead body to the village. Milu performed the last rites.
In the village, this incident became a hot topic of discussion. The old Bachlu knew something more. He knew who the dead woman was. The new generation did not know all these things...
The dead body of Ananda was consigned to the flames...
Ananda was kind, she understood things quickly. Her daughters were married into well-to-do families. Her son was educated. Milu, Ananda's husband, and son of Srikar Mimamsak were also highly educated. Never had they asked anything from anybody, even in times of need.
Bachlu was also old... In this village, only Milu was older than him. The people regarded these two as "old men".
Old man Bachlu knew many things...
....

Discussions between Milu and Srikar were common. Sometimes I understood and sometimes I did not…

"Milu, in the book Bhamati, Vachaspati says that the basis of ignorance of living becomes the subject. You will accept which method for self-introspection? How can the untruth be the cause of something? How can the fact of the existence of something prove something as true; and how it can prove its existence in three ages? That which is neither true nor false; and which is also not both, only that is unspeakable. Without any subject and the knower of that subject, how the concept of zero can be explained? Milu, Kumaril says that the Atman (soul) is living inertia. During the awakened stage, it is knowledgeable and during sleep, it is without knowledge. Milu, Vachaspati says in Bhamati that a person expert in a science that is without self-introspection behaves with society in the same way as an animal behaves with it. He flees on seeing a person coming holding a stick; and if he sees someone coming with a basket of food, then he goes near to him. It means that he fears fear."

***

It was the season of mango fruits.

Monkeys and *Nilgais* leapt from tree to tree, and the Bison trampled vegetables growing in the fields behind the houses in the village.

"Everything has been destroyed, Bachlu. I will go to the orchard in the morning. The *Nilgai* has already bitten a lot of fruits and crops, now these monkeys are after the mango fruits."

I did remember that during the mango season Monkeys and Nilagais had a great feast every year. It was the mango season. So, Milu would have to begin guarding the mango orchard. The flowers had just begun turning into fruits. Milu had to construct a loft; I also helped him. We were just returning after cutting the bamboo. It was early in the morning, and the red in the sky had a yellowish hue. Near the small pond, I saw Bachlu...

-

I began to come forward through the pathway in the field. Then I saw some blood... I became nervous after seeing the blood.

But I relaxed soon. I then saw the sharp leaves of bamboo had bruised the girl's hand.

The girl had tears in her eyes. Milu cleaned the blood and put some damp soil on her bruises.

"What are you doing?"

"The flow of blood will stop. It will stop bleeding now."

The girl had run through the field. -"What is your name?"

"Ananda".

"From which village have you come?"

"From this village."
"From this village?", both of us exclaimed together. Yes, Ananda was her name. And it was their first meeting, Milu, and Ananda.
....
The loft in the mango orchard was constructed. But Ananda was not seen after that.
Milu often asked about her.

-To which quarter of the village does she belong? She is neither from the quarter of the Mishras nor from the quarters of the Westerners or the Thakurs, he kept thinking.
-If she had been from the quarter of scavengers, then I would have known her.
-Then how she is from our village, and if she is from our village then why have we not met her till now?

But in between these events, a coincidence occurred. In Milu's quarter, an investiture ceremony of Phude's son was held. On that auspicious day, I had gone outside the village to the tanner's quarters to cut bamboo. I also had to call the men who would play the pipes.
"Hirua brother, O Hirua brother".
"He is coming".
A woman's voice was heard. The voice seemed familiar to me.

"Who are you?"
"I am Hirua's daughter. What do you want?"
"Your father did not come for the bamboo cutting ceremony; the voice of his pipe is missing there. I have come here to call him."
"He is preparing for that occasion".
"What is your name?"
At that very moment, a girl came outside, pushing aside the creepers which were hanging from their house enclosure made of bamboo.
"I am Ananda. I recognised you. What is your name?"
I was feeling cold. But I had to answer.
"Bachlu."
"And your friends' name?"
"Milu, son of Pandit Srikara."
I told Milu's father's name to Ananda, although she did not ask for it. Not knowing why...I told her.
At that moment Hirua came out with his pipe. I accompanied him to Milu's quarter of the village. On the way, I asked Hirua- "Ananda is your daughter but I have never seen her."
"She has lived, most of the time, at her maternal uncle's place. But now she has come of age. So, I brought her to the village."
"When will she go to her maternal uncle's place?"
"No! Now she is of marriageable age. She will remain with us."
Milu, my friend, had been asking a lot about her. I

kept thinking about how he would react after hearing about the news of marriage. I wished that Ananda would go back to her maternal uncle's village and then I would be free from Milu's repeated questioning.

But now since Ananda would remain in the same village as Pandit Srikar's son Milu, what would he do?

Oh ... I, myself, am thinking out of context. Milu had naturally asked about Ananda. That does not mean that ...but does it mean..., then?

The son of a Brahmin and the daughter of a Tanner...

Will Pandit Srikar approve of this relationship? Will the village people approve of this relationship?

Oh...I am again thinking out of context. I could hear the pipe blowing. People moved forward towards the bamboo plantation, and through the field, Milu and I accompanied them. On the way, I tried to locate that place. The place where Milu and Ananda first met ...we could hear a faint voice ...a beautiful musical sound... The boy, whose investiture ceremony was going on, had marked the bamboo. The bamboo now had to be cut. Construction of the sacred loft in the courtyard had to be completed today as it was an auspicious day. After much labour and sweat, we finally completed the work and only then my mind was at peace. After that Milu

and I started walking through the field.
But Milu started asking me questions about Ananda again. He was my Lord Rama, and I was his follower, Hanuman.
Sitting on the loft in the orchard one day, I said to Milu:
"Milu. Please forget her. Why are you bent upon giving her a bad name? Ananda is Hirua's daughter. Although she asked only your name, I told her both your and your father's name".
"She asked for my father's name?"
"No, but..."
"Then why did you tell her my father's name?"
"One day she would come to know ..."
"That day I would have faced ... now she will ignore me ... now I have to put in some extra effort."
"What effort? You are Brahmin Srikar's son, and she is the daughter of Hirua, the tanner. Why are you bent upon giving her a bad name?"
"I will marry her, why I would give her a bad name?"
"Who are you deceiving?"
"I am deceiving nobody, dear friend."
Milu took decisions impulsively. He was Pandit Srikar's son. Srikar was an exponent of the Mimamsa school of Indian Philosophy. I had seen the palm-leaf inscriptions lying everywhere in his house; so, I did not believe my friend.
"I have never seen her in the village."
"You never stay in the village for long. You returned

only last year from the school of your teacher."
"But you had also not seen her."
"She has been living in her maternal uncle's village."
"Will she go to her maternal uncle's village again?"
"No, I had enquired again about that. She will now remain in the village."
***
Last year, Milu's mother died.
Srikar Mimamsak became almost crazy. The village people were worried: How would there be the preservation of palm leaves in this year's Leo zodiac of the sun? Srikar had been grappling with this anxiety and so he became almost crazy...it was being discussed by the people of his quarter of the village.
....
Hirr...hirr...hirr...
From my quarter of the village, Domasi, Milu and I were shouting hirr...hirr and following the pigs. We reached the tanner's quarters in the village. Ananda, however, met us midway. Along with the pigs, I moved forward. After a while, I turned my head around to overhear the talk between Ananda and Milu.
Hirr...hirr...
This time Ananda shouted "hirr" and I smiled and moved further along with the pigs.
This went on for quite some time. Hirua was

agitated and came to me several times. Hiru's wife began praying for her daughter.

How distant is the temple of the Goddess?
How distant is the temple of Lukesari?
Many miles I went for an appeal.
Goddess, look unto me.
Many miles I went for an appeal.
Goddess, look unto me.
Four miles away from the temple of the Goddess.
Eight miles is the temple of Lukesari.
Ten miles I went for an appeal.
Goddess, look unto me.
Ten miles I went for an appeal.
Goddess, look unto me.
Which flower is for the temple of the Goddess?
Which flower is for the temple of Goddess Bandi?
Which flower for my chosen appeal?
Goddess, look unto me.
Which flower for my chosen appeal?
Goddess, look unto me.
This flower is for the temple of the Goddess.
That jasmine flower for the temple of Lukesari
The Marigold flower I chose for appeal.
Goddess, look unto me.
The Marigold flower I chose for appeal.
Goddess, look unto me.

....

Hirua came to Domasi, the village quarter of the scavengers.

"What will happen? How will it happen?"
"All false..."
"I promised him that I would accompany him to Srikar Pandit."
And I accompanied him one day to Srikar Mimamsak. "Srikar's wife died soon after the Leo zodiac of the Sun. After that Mimamsak became crazy ... people say, people who were from his quarter of the village. The people of the village and the learned people of the area respected him. I am telling you what I have seen with my eyes.", I said to him on the way.
Talking thus, we reached pander Srikar's house.
"Come Bachlu. Hirua, come and sit down.", saying that Srikar relapsed into silence. After the death of his wife, he had become like this. He seemed normal but suddenly would become lost in silence.
"Uncle, the courtyard of your house is empty. How long will you let it remain so? Why don't you get your son Milu married?"
“Milu has already made his decision about his marriage."
"When and where?", I became agitated and asked. Hirua seemed to look towards me with relieved eyes.
"He has decided to marry Ananda. Her father has come with you."
Oh... and Srikar Pandit was that type!

And Milu was of that type too! He has already hypnotised his father. But a person from Srikar's quarter of the village overheard this talk.

We all were seated when that person came to Srikar's house, accompanied by some other people. An argument ensued between Srikar Pandit and these people. The opposite argument, word for word, ensued.

"Srikar, what type of demeanour is this?"

"Which type of demeanour?"

"You do not have any sense in distinguishing high and low Mimamsak?"

"Dear learned folks! What is this high and low differentiation?"

“That means that high and low are only meanings of words. And the analysis that we have done after making it a sentence is selfish?"

"If you do not believe then surrender the selfish content from the sentence. All fallacy would be falsified."

"Does this mean you are hell-bent on carrying out the marriage between Milu and Ananda?"

"Dear Learned Folks! You confuse snake for rope because both have a separate existence. If you squeeze your eyes shut, then you would see two moons; then you place moons in two real places in the sky. The reason for fallacy is not the subject but the attachment, although both purpose and result are true. And here also the knowledge of all

subjects cannot give knowledge of the self. One's nature is described by knowledge of self through the concept of self. Self is the subject and the object both, of knowledge. The knowledge of self is both subject and object. The meaning of substance is obtained through attachment. The meaning of a word is near its inference after we hear the word."

"You are creating a fallacy of words. We all see that you are determined to get them married."

"When desire does not get fulfilled then it is envy.", Pandit Srikar commented.

"Do you think that all this that we are saying is out of envy? Don't you give any value to caste?"

"See, Ananda is full of good qualities. My caste and hers are the same, and that is the truth and known to all. She will be able to preserve the legacy that I believe. And that is my decision."

"And that is my decision," these words did not enter my and Hirua's ears simultaneously. I had known Srikar and Milu for a long time. But this type of unexpected decision to which I was accustomed Hirua was not. Hirua realised what these words meant after some time. He was amazed when he turned and looked towards me.

Then Srikar Mimamsak pointed a finger towards one person, an astrologer.

"Jyotishiji, you select one auspicious day. In this season this holy marriage should be held. The Leo

zodiac of the sun is arriving. Before that. Does anyone of you have any objection?"

All stood on their feet with bowed heads. Who would dare to oppose Srikar Mimamsak?

"All of us came here to discuss. But if you have already taken a decision then there remains nothing to oppose."

Mimamsak raised his hand, and all became silent.

I and Hirua moved slowly away from there.

Hirua took such a deep breath that I could feel it.

....

It was not that any other obstruction did not come. But that crazy Srikar Mimamsak was a scholar of repute. Ananda became his daughter-in-law. She was accepted not only in Milu's quarter of the village but also among all the scholars in the vicinity.

....

In Ananda's father's house, the marriage ceremony was organised. I had heard the song, full of life, I still remember:

The black bee that slept over the hill
Gardener-daughter sleeping in the garden.
Get up gardener-daughter, keep the garland.
The black bee that slept over the hill
Gardener-daughter slept in the garden.
Get up gardener-daughter, keep the garland.
With what flower I would cover Goddess Lukesari
With what I would make her clothes

With what flower I will knot to make it an ornament
Get up the gardener-daughter and place the garland.
With Arabian jasmine flowers, I will cover Bandi.
With Spanish jasmine, I will clothe her.
China rose would be the ornament of Lukesari.
Get up gardener-daughter, thread the garland.
Get up gardener-daughter, thread the garland.
....

Srikar Mimamsak became more composed after assigning the task of preserving the palm leaf inscriptions to Ananda. After his wife's death, the poor man was apprehensive regarding that important work of his.

Ananda's role in preserving these palm leaves seemed like a divine interference. In a sudden turn of events, Milu told me how he had convinced Srikar Pandit about this marriage. The daughter of a Brahmin would be busy cleaning utensils and Pooja materials; she would be busy making an earthen image of Lord Shiva, and by then the palm leaves would get damaged.

He could not allow these palm leaves to be destroyed; Ananda had to get married to his son and come to his home, Srikar Mimamsak had decided.

Milu was grateful for his decision.

Srikar had aged. Srikar and Ananda were still very

much active in holding their philosophical discussions.

Ananda sang:

When twelve years passed, and the thirteenth arrived.
When twelve years passed the thirteenth arrived
Folks my mother-in-law calls me tigress.
She would banish the tigress from her house.
Folks my mother-in-law calls me tigress.
She would banish the tigress from her house.
Outside your courtyard of yours is standing the moneylender
Folks, give me Madar and Thornapple, I will grind and will drink it.
Folks, give me Madar and Thornapple, I will grind and will drink it.
The beloved came from outside and sat on the bedstead.
The beloved came from outside and sat on the bedstead.
Folks, tell the thoughts of your heart; after that, I will drink poison.
Folks, tell the thoughts of your heart; after that, I will drink poison.
When twelve years passed, and the thirteenth arrived.
Folks, my mother-in-law calls me tigress.
I will banish the tigress from home.
My mother-in-law beats me, my sister-in-law beats me.
My mother-in-law beats me, my sister-in-law beats me.
Folks, these will go, and all the wealth would be mine

Folks, these will go, and all the wealth would be mine
Keep silence; keep silence proud women you are great, proud women.
Keep silence; keep silence proud women you are great, proud women.
Proud women, I will perform holy-basil-plant oblation and will squander all my wealth.
Folks: I will perform pond oblation and will squander all my wealth.

Srikar Mimamsak would jokingly ask- "Ananda, you do not have a mother-in-law, then can you say that she is calling you a tigress?

"Therefore, I am singing, everything I have, but ..."

While speaking Ananda's eyes were full of tears. I still remember this.

"I caused you pain by telling this."

"What pain; I do not have a mother-in-law, but I do have a father-in-law."

Seeing Srikar happy, Milu always felt satisfaction.

....

Even after Srikar Mimamsak's death, Ananda continued to instil life in these palm leaves.

At the proper time, Milu had two daughters, Vallabha, and Medha.

I had seen the joy on Ananda's face. She had gone to her mother's place, where she gave birth to the twins.

You Red Fairy. O Pink fairy

You Red Fairy. O Pink fairy
O Over the sky would dance the Indra Fairy
O. On the rose would dance the Indra Fairy
At the proper time, he had a son. When his son Megha grew up, Milu sent him to Benaras to study. The days passed, his daughters grew up, and both Medha and Vallabha were married. Milu knew inner satisfaction and peace.
His son's marriage was also performed in the meantime. Megha began teaching in Benaras. Megha, Medha and Vallabha all three came to the village at least once a year.
People forgot many things about them.

2
The Stage of Bhamati

Ananda was busy preserving the palm leaves of Milu's father; even in the intense heat, Milu still remembers.
Ananda's whole life was spent with Milu and when she was not present then how could Milu survive?...
Milu did not listen to the holy Garur Purana. Milu liked to hear Mandan's Brahmsidhi and Vachaspati's Bhamati when he felt in the mood to listen to something. If his daughters insisted, then he would hear Kumaril's philosophy about self.
Srikar often spoke many things about the science of words and the philosophical writing of Bhamati. We

ascribe too much meaning to words and then begin the confusion.

"Teacher; after my wife's death, I am in distress. What is this life? Where will Ananda be?"

"Milu; be composed. This lesson of Brahmasidhi will remove all your illusion. In Brahmsidhi there are four divisions - Brahma, Logic, Command and Accomplishment. In the Brahma division, the discussion is on forms of Brahma, in the Logic division it is on proof, in the Command division it is on the liberation of living beings and in the Accomplishment part, there is a discussion on the proof of Upanishadic thoughts. Milu, there is no subject apart from liberating knowledge. Liberation is knowledge itself. Mandan gives value to the mean knowledge of Man's intellect. He values work. But these alone are not enough for liberation. The sound word was given meaning through the explosion that Mandan saw. So, he is different from Shankar in a way that he identifies this explosion and gives identity to it, but Shankar does not believe in any identity less than that of Brahma. So, Mandan is a purer non-dualist as compared to Shankar. Milu, Mandan does not believe in abled and not-abled as mutually opposed. This sometimes means action-based difference, but that difference will not become an original element. So that Brahma would remain in all differences and still would do every

work. Look, the thought at the Bhamati stage of Vachaspati and the philosophy of Mandan, are in coherence. On Brahmsidhi of Mandan, Mishra Vachaspati wrote an elucidation called Epistemology Critique. Although that work is now not available".

"Then how did epistemology critique come forward?"

"In Bhamati of Vachaspati, there is a discussion about it."

“But before knowing the thoughts of Mandan I feel that when he lost a discussion with Shankaracharya then how one would benefit from his defeated theories and how one would get peace?”

“See, Mandan was defeated; the evidence of this is not available in the writings of Mandan. Mandan was a supporter of the theory of explosion, but Shankaracharya denied it. Mandan was a supporter of the opposite fame of Kumaril Bhatt; but Shankaracharya's pupil Sureshvaracharya, whom people often identify with Mandan Mishra, opposes the opposite fame theory.”

“That is right. If Mandan had lost, he would have followed Shankaracharya.”

“Now tell me, the Sureshvaracharya, who was appointed as head of Sringeri Math by Shankaracharya, says that ignorance is not of two types, but Mandan mentions two types of ignorance in Brahmsidhi as non-acceptance and

wrong acceptance. Mandan tells living one is an abode of ignorance, but Sureshvaracharya disagrees with it. Mandan opposes Shankaracharya but Sureshvaracharya follows him."

....

Monkeys and Nilgais are tearing down the fruit trees and the male buffaloes are trampling the cultivated land behind the dwelling houses. Now for my sake, the village people would not stop rearing buffaloes.

"Four monkeys are in the orchard, and they are damaging the mangoes. I had gone there. In the evening, all the monkeys were perched on top of the trees. Till evening we, father and son duo, took care of the orchard. Now the monkeys have fled when we threw wooden missiles, but then they went towards your orchard."

"All has been damaged. At night I am not able to see. In the morning I will go to the orchard. The Nilgais have also been damaged a lot. And now these monkeys are after mangoes. Let them damage when..."

"The Nilgais were completely gone from our area for some time. How have they resurfaced again? They must have crossed the river from the next village during the night..."

"I don't think that is true. These Nilgais have come from the Nepal side during the floods. Let them

come when..."
"I told you about the monkeys."
"That would be done."
"All right, brother: then I am going," I remember the year when Ananda and Milu had met for the first time when during the month of mangoes, the Monkeys and Nilgais had suddenly disappeared. Now when Ananda has departed, these Monkeys and Nilgais have resurfaced again from nowhere. Not even fifteen days have passed since Ananda's death...
....
Bachlu left the place and on Milu's forehead thick lines of anxiety began moving, one towards the other like waves do, interfering mutually, the old waves turning into new waves and moving forward. He calls his daughters, his voice reaching across the courtyard.
"Daughters! Jayakar and Vishwanath had gone to the orchard today; have both returned or not? I heard that the monkeys are up to mischief there. From tomorrow Jayakar and Vishwanath will not go to the orchard, tell them. Today monkeys came to the orchard; you did not tell me this. What should I do after hearing this when ..."
"I did tell you, father, but these days you remain in your thoughts. Then I got tired after repeating it, so I stopped."
Yes, Milu nowadays is lost in his world. The

mangoes had begun ripening soon after Ananda's death... After so many years these Monkeys and Nilgais have again resurfaced to remind us of something!

....

Vallabha, the mother of Jayakar, and Medha, the mother of Vishwanath, both sisters have come to their mother's house after a long time. They met each other after so many days. The sons-in-law of Ananda have also come: Visho, the husband of Vallabha; and Kanh, the husband of Medha. Megha has also come with his wife and children.

Milu is calling for his wife ... Ananda ... Ananda. Then he remembers that she is gone now. Then he begins to call ... where is Vallabha ... where are you, Medha? Where are you, Jayakar, and Vishwanath?

Vallabha and Medha both come, and Milu begins singing. Ananda often sings the song: the songs that Ananda sang for Vallabha and Medha.

Red fairy. O. The Pink fairy

Red fairy. O. The Pink fairy

O. Over the sky would dance the Indra fairy.

The Goddess of the garland of red blood is standing at the door, the devotee has become poor.

O after she became poor, she is standing near the door of the blood-garland goddess

Mother, we would have to give money to the poor.

Mother, we would have given money to the poor.

Mother, we had given money to the poor.
Red fairy O pink fairy
Mother, O after she became blind, she is standing near the door of the blood-garland goddess.
Mother O, give an eye to the blind immediately.
Mother O, give an eye to the blind immediately.

The father and both daughters began crying.
....
“Ananda's death has been a disaster for you. Even though you are from the Brahmin caste and Ananda is from the tanner caste, the love between you two is incomparable. Do not be unhappy over her death. Brahma is without sorrow. The fanciful face of Brahma is pure joy. Thereafter your unhappiness over Ananda is inappropriate. Brahma is the one who oversees. The visible ones are changeable and do not have any relation with the overseer. This world is not simply a fallacy, but it does have an existence. But this practical existence is not true. Milu, there is a difference between consciousness and unconsciousness; but that is not true. Living beings are of many types and ignorance is also of many kinds. Ignorance is one vice but the reference to it cannot be Brahma, it cannot be a complete soul. Its reference can only be an incomplete soul. Ignorance then is not true, but it is not a major untruth either. Milu; please remove this ignorance; that is called liberation, that liberation

which Ananda has achieved.”

And on Milu's face, complete peace could be seen.

....

Milu remembers the discussion he had once with Ananda, a long, long time ago...

"Ananda, when I am talking to you, again and again, I am gripped with fear. My father's weakness is his possessiveness for palm leaf inscriptions. So please remember all this: when my father asks you how these palm leaves should be preserved, then your reply should be: by protecting the books from water, oil, and loose binding, by drying these under the shadow. These books contain five hundred to six hundred leaves. I will bring some of those books for you to see. One leaf is a hand long and around four fingers broad. These are covered with wooden frames on top and bottom. On the left side, there remains a hole through which a rope passes thereby binding the leaves together."

"Your father would agree?"

“He will have to agree. He does not have the means to bring a Brahmin bride. I once gave a farmer two rupees in advance for buying some land. But my father brought the advance back. He is saving money. He will have to spend seven hundred rupees to have his son married to a good Brahmin family so that his superior genealogy is preserved.

And that Brahmin bride would come and preserve his palm leaf inscriptions?”

After the death of Milu's mother, Srikar became almost crazy; the people of his quarter of the village often said.

The village plague destroyed two-quarters of the village; those of the Mishras and the Westerners almost got annihilated. How many people in the surrounding areas died, nobody could count.

Milu got an opportunity so that his father could meet Ananda. Srikar saw in Ananda much more besides the quality of palm leaf preservation techniques.

Milu was victorious. Milu, of the Nyaya School of Philosophy, had won over Srikar of the Mimamsa School of Philosophy!

And the marriage of Ananda and Milu was thus solemnised.

***

He remembers his love talks with Ananda. Milu, it seems, is going to meet her. Ananda has died. She slipped into the Balaan River. The marks of her feet slipping into the river are quite visible.

Milu sees that mark and his heart fills with joy, he slips into the wave of emotion...

Ananda and Milu would meet very often, and take walks in the fields, the orchards, and the grazing grounds, beside the river. Milu did not jump into the river. This slope had become slippery, thanks to the

young boys. Milu has a lot of memories of this place, he had often sat over here and then rushed forward at great speed into the river, cutting the waves in the forward direction.

"Hey, come and do this.", he said.

"That is not a big deal."

"Perform first, then only I would believe."

Ananda tried carefully but...

He could not stop her, especially beside the river.

***

She must have come here ...and then she slipped ... and drowned.

She might have come to remember something.

Yes. Ananda has arrived. Bachlu, listen, listen to this song.

Behind the house is the tree of china-rose flower
It is laden with fruits and flowers.
A parrot came from the northern state.
The parrot sat on the china-rose tree.
The parrot eats neither fruit nor flower.
It is destroying branches and leaves.
The parrot eats neither flowers nor seeds.
It has destroyed branches and leaves.
Beside the house, there lives a jackal.
O Jackal, please capture this parrot sitting over the tree
Once tried.
Twice tried.
A third time the parrot flies

Neither this parrot is a mystic
Nor is the partridge.
It is like a conveyance for hen-sparrow.
“Brother; are you not able to hear this song?”
“Brother, I am hearing and seeing. Ananda, my sister-in-law, is singing. I also heard this song the day she died; it was she, singing-
In the courtyard of Goddess Lukesari, there is a tree of sandalwood.
Beneath that the cuckoos clamour.”

It was not the fallacy of words.

The next day after the ritual of fish and meat and after the Pooja of Lord Satyanarayan, Ananda neither cut the sandalwood tree nor encircled her courtyard.
The next day beneath that sandalwood tree the villagers saw two dead bodies in the tanner quarter of the village. The voice of Ananda echoed in the sky; all the village folks heard this:
Whichever jungle you would go to dear lovable cuckoo.
A mark of the garland of blood would be left.

It was not the fallacy of words.

Annexure Four

The Cattle Grazer Brahmin Village (Mahisbar Brahmanak Gaam)

One thousand heads, thousand mouths, thousand types of gossip, all true and un...

The Shudras have come out of the feet and so has the earth.

Garh Narikel, a village. Cattle-grazer Brahmins predominantly inhabit it.

Ponds and trees are all around this village. In this village one...two...three and one more, four ponds exist.
Exactly it is not so. There are three more ponds in this village. One is in the northern direction of the north pond, popularly known as the gigantic pond. People say that some monster dug this pond in just one night. But even after digging it for the whole night, the monster could not install the central sacred wooden pole in the middle of the pond. As the monster was in a hurry so he left the shoe of his one leg there beside the mound and left the place. For many years that huge shoe remained there but again after many years, during the flood, that too

got lost. So, the only evidence that was there vanished. This pond is far away from the village, so no relation between this village could be established with the Chhatha festival. Yes, but this pond is mentioned during the ceremony of the sacred thread. Distinct types of fish reside in this pond. There is never a dearth of fish here. No need has ever been felt for putting seeds of fish (small fishes) into this pond. There is an annual fish-catching festival and barring the southern quarter of the village, the whole village gets its daily share of fish for at least one month.
In the southern direction of the south pond, there is a pond called the Buchiya (in the name of a person) pond. It is also far from the village, but there is a sacred wooden pole installed in the centre of this pond. When this central sacred wooden pole was being installed a big ceremony was thrown by the great-great-grandfather of Zamindar, Piyar Bachcha (yellow boy). He had organized a grand great feast. This pond is far far away from the village and in all directions of this pond, there are fields only. People rarely come here to take a bath. Here too there is an annual fish-catching ceremony, but that is only for this southern quarter of the village. There are many things attached to this pond. During Durga Pooja goddess Durga proceeds to her husband's place, on the last day of the festivities. On that day, the idol of the goddess

Durga is immersed in this pond. Not the men, but yes, the women weep bitterly at the time of immersion of Durga. The idol of Durgaji is not made in this village, no question of it being constructed in the southern quarter of the village. But it is immersed in this pond. This idol of Durga is made and worshipped in the neighbouring Garh Tola (small village). The Garh Narikel people are mischievous ones. Till the sixth day of the Durga festival, the idol of Durgaji remains covered. Only the artist can see her because if he does not then how the idol is constructed? Any other people, however, would become blind if they see the Durga before being unveiled. Yes, but after the ceremony of Belnoti- when the eye of Durga is placed out of an invited wood-apple fruit, the idol of Durga is unveiled and then only the people can see it. And from that day the actual festival begins. If the idol of Durga is made in this village many people would become blind before the sixth day of the festival. The neighbouring village is not a less mischievous one, it is only the degree. In the name of the festival, all of them become disciplined. In the name of their village, the suffix is added, tola (quarter of a village) suffix. But that does not make it a quarter of a village; it is a full-fledged village. Garh Tola village is also inhabited by the cattle grazing Brahmins. In mischievousness, there is always competition

between these two villages. If you pass through the Garh Tola village, the lads sitting in front of the verandas of their houses beside the road would often pass comments on you. But the naughty boys of Garh Narikel will consciously go through that village. But the disciplined ones pass through the road beside this Buchiya pond. Although the route is circuitous; it is safe, do not mind.
There is one more pond in this village.
Towards the eastern side of the village, to control these two rivers Kamla and Balan, two dams were built. One is in the north-south direction, adjacent to the village and towards the eastern direction. If you move forward towards that dam, you will find the Kamla River, and then her brother the Balan River. And further towards the eastern direction, you will find another dam in the north-south direction. And between these two enclosures lies the Balli pond- in the name of a zamindar. Near this pond was a large football field. Due to siltation and due to some wrongdoing by the zamindar, this pond and that field got merged in the name of chakbandi (bringing together lands of one person at one place through mutual- often forced-exchange). The government had emphasized the chakbandi for some unknown reason, perhaps because it increases food production. The land owned by the Surju Bhai, filled with cattle dung and therefore very fertile, merged with Yellow Boy

(Piyar Bachcha)'s land due to this chakbandi. In between the dams, there is a grazing field called Bauwa Chauri, used by the herder to graze their cattle. The cattle grazers come here, play here, and swim in the Kamla River. Sometimes they let their body flow in the Kamla River and sometimes they swim against the stream of the river. Between the dams, there is one-quarter of the village, the quarters of milkmen. Earlier it was part of the village but now their voter list has been shifted to Jhanjharpur Bazaar. Long long ago, at the village school, there was a voting booth. These people were not allowed to vote at that booth, now it is the other way around.

Some of the graduates of Bauwa Chauri- as they are called jocularly- work in Delhi and Mumbai and some of them work in Saudia (Saudi Arab and Middle East). Some of them are security guards and some of them have started a firm that deals in security guard services.

In the village there are many mango orchards; the big orchard, the Kharhori (near to the habitations) where new trees had been planted, the Bhorha (near the abandoned course of a river) orchard; and the orchards over the mounds of the ponds. Earlier in Kharhori, there was agricultural land only. But once a person planted trees on his land it brought a shadow to other people's land. So, the other

people's production of paddy diminished. For some time, he talked about the mischievousness of his neighbour, but he had to plant mango trees too in his land later.

There is also an orchard of rose apples, all the sky-high trees there. The Pepper trees are all around, at the village deity's place and the school compound; you will find the root of the pepper tree here and the branches of the roots all around the place.

Beside the village, roads are trees of wild betel nuts, many types of shrubs used to clean teeth, the bamboo plantation, several types of flowers and thorns, and the sensitive plant, everywhere in all the orchards. Over the broad mango branches, the guards put their beds and slept. But there is only one banyan tree, beside the black metal road near the quarters of Muslims.

The lands are of diverse types. The land between the river dams and the sandy land is now being called the other-side land by the people. A creeper *tricosanthes dioica*, the watermelon, musk melon, sweet root; the cultivation of all these is done here. If you want to buy the cheapest land, then come here. But after the flood recedes, you will find the shape and size of the boundaries of your land changed. If in one year, after the flood, the shape and size of the boundary diminish, there is no need

of inciting any quarrel, as the goddess Kamla River might increase the area the very next year. The cultivation of paddy is also in existence. But that is often by chance, in some year even after sowing thrice it would be swiped away by the flood every time, but in some years the goddess Kamla River would fill so much fertile mud that whatever per Katha production you are expecting, it would produce even more than that.

If you have a good budget, then buy the land near the habitations or the white teak trees. Here people are buying land more for residence than for cultivation.

The land near the Dakahi pond is called Barhamottar. In the old days, some might have received this free land from the King. In the old days, it is heard, these lands had good production, but now a day these remain always filled with water. The paddy seeds are thrown (different from the usual method of sowing the saplings, it, however, results in less production) and paddy is cultivated in this manner in these lands.

The big plots, near the roads, near the Bhorha (besides the abandoned river course) and near the Purnaha (in the midfield) are used for cultivation. Besides some people have started cultivation on the curved land of the village enclosure near the dams. In geography books terrace cultivation is

said to be practised only on hills, here you will find terrace cultivation in plains on fabricated hills.

The weeping sound of people, whose milk-giving buffalo just died, can be heard often. The magical obsession can also be seen. Often some mischievous lads throw flowers and unbroken rice, worshipped by a magic man or woman, during the night at somebody's gate. It often leads to a string of abuses by the offended household, who thinks that some bad omen is going to grip their family. But the people have come to understand now that it remains the work of some naughty boys.

Agriculture-fishing-animal husbandry-based cattle grazer Brahmin dominated village is surrounded by literate (although a thief quarter also exists in this literate village), not that much literate; and a subdued and calm village (subdued and calm village=where people acquiesce to pressure). However, neighbourhood thieves do not dare to do theft in this village. If you have a social relationship in this village then all the old disputes in respect of land would stand settled. Ordinary people get transformed into strong ones, with a social relationship established through a marriage relationship. After the relationship, the weak ones turn into ones who have a say in society. From this village, the arms-wielding trouble shooters visit far-off places for settling disputes. These troubleshooters settle the disputes of relatives and

forcibly capture election booths. The rate of land in this village is Rupees twenty-five thousand per Katha (1/20th of a bigha) but the same type of land in a neighbouring village is available at a cheaper rate, say at Rupees ten thousand per Katha. The highlands in this village are cheaper because one cannot irrigate them with rainwater. But after these dams were built, the cost of land for those monkey-shaped people also increased. Earlier the mediators of marriage, even after seeing that a boy is getting his share of only ten Katha in comparison to monkey-shaped people's village boy getting one bigha, preferred boy of this village for marriage. Because in the village of those monkeys shaped people, subsistence is not possible even if the boy has ten bighas of land as his share. But the key to luck has now been unfolded to them; when the flood comes their highlands get irrigated. Monkey shaped...you did not understand? The orchards of that village are inhabited by monkeys, and the people of that village also look yellowish, the same as the monkeys! Monkeyish (yellow-like monkeys)! And nobody liked the job of a teacher, so all these monkey-shaped village people became teachers. And now look at the salary of the teachers. All monkey-shaped people, when they come out, wearing Dhoti (loincloth) then people of this village get crazy out of envy.

However, the Durga worship did not begin in this village. The submissive-village people also started it. If we try, how it is not possible? We did organise Ramlila (acts of Lord Ram performed by a theatre troupe), is it a fact or not? But look, the roads started smelling of people's urine. We are lucky that Durga Pooja is not celebrated in this village. One will have to bring one's daughters during the celebration time, and the cohesion that these villagers have among themselves would break the party politics related to the Pooja brings.

The village is, however, of cattle-grazing Brahmins. Among the Brahmins of the village are Indrakant Mishra, Raman Kishor Jha and Arun Jha. On the day of the Sukhrati festival (on the next day of the Deepawali festival, the festival of Hindus of Mithila) if you ever see the sport played by the buffalos of these cattle grazer Brahmins, you will lose interest in the game of polo. The pig purchased from the Dom caste of Samiya village is placed before the buffalos, drunk with cannabis drink. The cattle grazers who are sitting over the buffalo in the Central portion of the animal is an amazing scene to watch. In this village, there are other castes too.

Between the dams, on the high mound is the quarter of milkmen. Even during the flood this quarter of the village is never touched by flood water. Transportation during those days is by boat.

The rowers of the boat inside Kamla are not the people from the fishing community but those from the milkman caste. They receive grain from the villagers for their services. Yes, but people of other villages are charged in cash for the services.

There is one Muslim quarter in the village, they are in the vegetable business, but they do not grow vegetables but only sell them. In that quarter lives Mohammad Shamsul. His son lives in Saudia. This quarter is near the black metal road on the outskirts of the village. The people of this quarter of the village have registered their names in the voter list of the adjacent village. Near that quarters are four families of the Dom caste. The reason for enrolling themselves in the voter list of an adjacent village by these people is the same as it was for the people of milkman's quarter. But the villages are not made up of the voter list. So, these two quarters are still a part of this village. The necessity of Dom caste in festivals is well known. The Dom Caste makes all types of articles from bamboo, like the one for storage of grains and articles, and the bamboo fans. A Muslim quarter is also in the village. They are required, particularly for meat for the marriage party or the guests. The head of the poor animal is taken by the Durga Pooja Committee after the holy sacrifice ceremony for goddess Durga is over. In the off-season, the Muslims cut half the throat of the

castrated he-goat. But after cutting the meat, they take the head and the skins in place of their wages. When these cattle grazer Brahmins sing the devotional songs in front of the Hanumanji temple and perform twenty-four-hour non-stop worship at the temple, those drums which are used during the ceremony are made of those skins.

And again, there is Dhanukh-Toli. Bhagwandutt Mandal and Adhiklal Mandal are from the quarters of the Dhanukh caste. Earlier those people carried the gifts to other villages carrying a special bamboo stick on their shoulders, having two strings on the two sides. But now this work is undertaken by the people from the Dusadh caste also. Agriculture is the avocation of people from the Dhanukh quarters and Dusadh quarters. Yes, earlier these people worked as workers, but now they work on a co-sharing basis. In times of strife, there is not a single month when you will not find ladies from these quarters of the village wielding blackened earthen utensils and displaying these to the cattle grazer Brahmins. These people may be said to practice animal husbandry, as far as the rearing of a she-goat and an uncastrated he-goat is concerned, the latter is used for sacrifice to the goddess Durga. Some of them have begun keeping one ox and turn by turn these people do plough and other agriculture work by coupling their oxen together.

Even though it consists of only three houses, the

small quarters of washermen have become a separate quarter of the village. The clothes of even Marwaris (businesspeople originally from Rajasthan settled here) of Jhanjharpur town are cleaned here. The cattle grazer Brahmins go to marriage parties wearing these flashy full pants, these are not their own, these are costly clothes of those Marwaris and lent by the washermen. The washermen give these clothes on rent for two days, the clothes of the Marwaris.

Korail, Budhan and Domi Safi are washermen. Domi Safi is now Domi Das, he practices the sect of Saint Kabir now.

A quarter of barbers also consist of just three families. Jayaram Thakur, Lakshmi Thakur and Maley Thakur, all barbers are talkative. With them always remains the list of annual donations that each family must give to these families of barbers in place of the services that these barbers provide throughout the year. They are always on the run, to claim their labour, whenever a person comes to the village from town. Whoever comes during Durga Pooja from their far-off working place, must pay their due before their return to their workplace. Earlier, these barbers went from one corridor of the village to another for haircutting. But now whoever wants a shave of his head or face will have to go to the barber's house. Yes, but if it is the marriage of a

son then they go to the corridor of the bridegroom to shave the people who are going to attend the marriage party, but he sits in one place only. Whoever is there should remain in line. It should not be like that one is coming now, and another is coming after a while. Now one from each of the family of barbers has started a saloon at Jhanjharpur. A saloon is a plastic cover placed over the bamboo pillars beside the railway track. The use of nail-pairer is almost extinct. The individuals should cut the nail themselves. During the period of condolence, after the death of a person belonging to the same clan, the wife of the barber would cut the nail of the lady, only that. And while shaving a beard with a sharpened razor, if blood comes out, it would be not due to the wrong movement of the razor but as it would be because there was some blister there on the face. No dear, this razor using the topaz safety blade is for my Jhanjharpur saloon. There are other quarters of the village, of leather tanners. Mukhdev Ram and Kapildev Ram are prominent among them. Earlier they were residing outside the boundary of the village, beyond the bamboo plantations. But now the bamboo had been cut extensively, so it has thinned. The habitation of people has extended up to these quarters of the leather tanners. The construction of new buildings and the placement of bricks here and there is a normal scene. Announcing with the drum

to ward off evil spirits or to announce something, and to play drum and pipes are the works undertaken by them. If cattle die, till it is lifted by them, people are in the grip of condolence of death; people can neither eat nor bath.

Among the carpenters, the most respected in the village Garh Narikel is the family of Joginder Thakur. But when the titular head of the carpenters comes from the far-off village, then the intelligence of Joginder Thakur goes dim, and he utters only yes on both righteous and unrighteous utterances. Joginder has three sons, Bihari, Arjun and Shivanarayan. All are engaged in woodwork, but Bihari does ironwork too; and Arjun has become cycle-mechanic, side by side. He does all the work from minor repairs of rickshaws as well as bicycles and repairs punctured tubes. He has discovered the making of a cricket ball made of the root of bamboo; he has discovered a wooden circular plate to run through a crooked spike of iron wire; and many more games. So, when people say, look, if you read and write you would get a job; this exception should change their views. Look at Shivnarayan, how innovative he is, he makes many things even out of useless inappropriate wood. But the hand skill of Bihari is nowhere to be found, distinct types of cuts, vertical, horizontal, crooked, and oblique cuts, he is an expert in all.

Shivnarayan discovers, but Bihari replicates those discoveries in a better way. In villages, there is no copyright available to a discoverer. On hardwood the saw and other implements of Shivnarayan get blunt, but Bihari gets out of it, not knowing how! He makes something out of weak wood and sells those in the market. For sawing a plank if a big saw is not available, he even saws the plank using the smallest available saw. He delineates the sturdy wood from the weak wood meticulously and dexterously.

Jagdish Mile is known for the holy cloth manufacturing, which is offered to the goddess. His wife is very skilled.

Bhola Pandit is a potter, he moulds and makes earthen vessels, and he makes earthen birds and earthen animals for the children too. In the making of earthen utensils, he is unparalleled.

Satyanarayan Yadav is the Raut Sir. Now the nomenclature has changed from milkman to Yadav Sir. From the trade of milk to agriculture and to filling the village road with earthwork, all these are in his hands.

Basu Chaupal is from Khatbe Caste, he carries gifts to other villages, and gifts include fish. He sells fish in the fish market.

Chalittar Sahu and Laddulal Sahu, both are sweet manufacturers, they arranged for a temporary shop during the Durga Pooja festival. During jovial festivities or the feast related to death or death

anniversaries, he gets a contract for the preparation of vegetable dishes.

Shiv Narayan Mahto is from the Suri caste, a business class.

Laxmi Das is from the Tatma community, a thread-weaving caste.

Lal Kumar Roy is from Kurmi Caste.

Bhola Paswan and Mukesh Paswan are from Dusadh Caste, earlier the milk business was held by them, but not now.

Satyanarayan Kamti is from the Keot caste, they were stationed at the farmhouses of the Darbhanga Raj. Ramdeo Bhandari is from the Bhandari caste, this caste is a type of Keot caste, and they managed the Kitchen of Darbhanga Raj.

Kapileshwar Raut and Ramavtar Raut are from the Barai caste, they do ancestral betel-leaf business.

From the Dom caste is Bodha Malik, from the Koir caste is Dukhan Mahto, from the Bhumihar caste is Radhamohan Roy; and from the goldsmith caste, is Ashok Thakur.

Among the oil business community are Ramchandra Sao, Bauku Sao and Kari Sao.

From the fisher caste, is Jibachh Mukhiya. In Dakahi pond, once a year is held the fish catching fair. The fisher put the big net into the pond; a whole quarter of the fishers come to the pond for one whole month. Earlier the fair was extended for more than

one month but now due to the scarcity of fish, it goes hardly over twenty days. Then the head of the fisher announces- Now the big fishes are no more in this pond. If we fish through the big net, none could be entrapped. But if we fish through the delicate small nets, all the small fish would get caught. And then you will have to sow fish seeds into this pond.

During those fifteen to twenty days, there remains a festival-like atmosphere in the village. This becomes an excuse for the cleanliness of the pond. From early morning from four AM till noon, fish are caught. And till the afternoon all the villagers- except the southern quarters of the village- are given their share. All the people, the representatives from different quarters, take their share and return to their respective quarters. All the families obtain their shares out of the share of their quarters. How many shares are there out of the quarter's share, sometimes it gives cause for strife. Till she was alive, one did not talk to one's widow aunt, but after her death people remember their aunt. Maybe while she was alive, her desire to offer some share to her daughter might have been stalled by the nephew and he might have obtained a thumb impression of her dead aunt that becomes immaterial now. On this count, strife ensues, and only the wrestler whom people out of love call wrestler uncle, receives that kind of share, nobody

else. It does not matter whether this widow, of wrestler uncle's courtyard, died a long twenty years ago.
There is one more speciality of Dakahi pond. Inside this pond tortoises and fishes grow in number, on their own. Beside the pond, many types of roots and lichens are found. The cattle grazer boys eat the sweet roots.
Buchkan Saday is from Mushhar caste. Near the Dakahi pond, there are many small water bodies, and the swampy ground may be seen around it. From there the Mushhar caste people dig the roots and eat them. In the year 1967 when most of the ponds dried, even then this big Dakahi pond did not completely dry up, although the area of the pond diminished dramatically. The Prime Minister had come here during those days, and she was shown how the Mushahar caste was surviving during those days, eating these roots.
These are the people who are having a say in the village of Garh Narikel.
But the village is known as Cattle Grazer Brahmin's village.

পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন

পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতনপৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন

গজেন্দ্র ঠাকুৰ গজেন্দ্র ঠাকুৰ গজেন্দ্র ঠাকুৰ



গজেন্দ্র ঠাকুৰ

পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন

গজেন্দ্র ঠাকুৰ গজেন্দ্র ঠাকুৰ গজেন্দ্র ঠাকুৰ

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒅𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒅𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒅𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



गजेन्द्र ठाकुर

𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒅𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒅𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒅𑒣𑒩 𑒦𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒞𑒪

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩